Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ श्री धन्वन्तरये नमः ॥

माधव निदान

भाषा-टीका

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

❋ श्री धन्वन्तरये नमः ❋

श्री माधव-निदान

(भाषा-टीका)

टीकाकार—
वैद्यभूषण श्री पं० चोखेलालजी के आत्मज
पं० बद्रीप्रसाद शर्मा वैद्य

●

प्रकाशक—
पुस्तक मन्दिर, मथुरा (उ० प्र०)

द्वितीय वार]   सन् १९६५ ई०   [ग्लेज कागज
[illegible]

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

श्रीमाधव निदानकी
अनुक्रमणिका

विषय पृष्ठ
मंगलम् १
ग्रन्थकर्तुः युग्मम् १
अन्य निदान ग्रन्थों से इसकी उत्तमता रोग जानने के ५ उपाय २
निदान ने पर्यायावची शब्द २
व्याधि पापग्रह के लक्षण व पर्याय शब्द उपयश के लक्षण २
हेतु विपरीतादि का उदाहरण ३
अनुपयश संप्राप्ति के लक्षण व भेद सांख्यरूप व विकल्परूप संप्राप्ति के लक्षण ५
प्राधान्यरूप बलरूप व काल रूप संप्राप्ति लक्षण ६
निदान पंचक का उपसंहार व रोग निवृत्त रूप ७
सिद्धि के ज्ञानार्थ उपदेश ८

ज्वर निदानम्

ज्वर की उत्पत्ति ९
ज्वर की संप्राप्ति १०
ज्वर के लक्षण व पूर्वरूप ११
वात तथा पित्त ज्वरके लक्षण १२
कफ ज्वर वात पित्तज्वर आदि वात कफज्वर के लक्षण १३
पित्त कफज्वर व सन्निपात के लक्षण १४
विषय पृष्ठाङ्क
सन्निपातों के भेद व मतांतरों से भेद १६
कुंभीपाकादिसन्निपातों के लक्षण १९
सन्निपातों के षोडश भेद उत्पत्ति व संप्राप्ति २०
सन्निपातों के नाम २१
सन्निपातों की मर्यादा २२
साध्यासाध्य विचार असाध्य व कृच्छ्र साध्य के लक्षण २३
त्रयोदश सन्निपातों के पृथक पृथक लक्षण २४
सन्निपातोपद्रव व त्रिदोष ज्वरों की मर्यादा २८
धातु पाक व मल पाकके लक्षण २९
आगंतुक व विष जन्य आगंतुक ज्वर ३०
औषध गंध जनित काम ज्वर भय शोक कोप ज्वर अभिघात और अभिचार व भूतभिषंग ज्वर ३१
विषम ज्वर की संप्राप्ति ३२
धातुगत ज्वर के नाम संतत ज्वर के लक्षण ३३
संततकादि व उत्कृष्ठ भेदक तृतीयकादि लक्षण ३४
विषम ज्वर के भेद वात बलासक व प्रलेपक ज्वर ३६

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

विषय पृष्ठांक

विषम ज्वर के भेद व विपरीत द्वितीय ज्वर ३७
शीतपूर्व दाहपूर्व व सात धातुगत ज्वर लक्षण ३८
रक्तगता—मांसगत मेदोगत व अस्थगत लक्षण ३९
मज्यागत शुक्रगत प्राकृत और वैकृत लक्षण ४०
प्राकृत ज्वरों की चिकित्सा का उत्पत्ति क्रम ४१
ज्वर में दस उपद्रव पचबमान व निराम के लक्षण ४३
जीर्ण ज्वर व साध्य और असाध्य ज्वर के लक्षण ४४
गभीर एवं अन्य असाध्य ज्वर के लक्षण ४५
ज्वर मुक्ति के पूर्व रूप ४६
ज्वर मुक्ति के लक्षण ४७

अतिसार निदानम्

तिसार की संप्राप्ति ४८
अतिसार के पूर्व रूप ४९
वातातिसार पित्तातिसार व कफातिसार लक्षण ४९
सन्निपातातिसार के लक्षण ५०
शोकातिसार के कृच्छ्रसाध्य व आमातिसार लक्षण ५०
आमके पक्वके तथा असा० लक्षण ५२
दूसरे असा० लक्षण ५३
अतिसारोपद्रव असा० लक्षण
रक्तातिसार के लक्षण ३५

विषय पृष्ठांक

प्रवाहिका की सम्प्राप्ति ५४
प्रवाहिका भेद व गत अतिसार के लक्षण ५४-५५

गृहणी निदानम्

गृहणी की सम्प्राप्ति
गृहरणी के सामान्य लक्षण पूर्व रूप व वातज गृहणी निपाज ५६
वातज गृहणी का रूप पित्तज के लक्षण ५७
कफोत्पन्न गृहणी की उत्पत्ति ५८
त्रिदोष की संगृहणीके लक्षण ५९

अर्शरोग निदानम

संख्या रूप सम्प्राप्ति ६०
अर्श का रूप व वातज व बवासीर के कारण ६०
पित्तज कफज द्वन्द्वज व त्रिदोषज अर्श कारण ६१
वातज बवसीर के लक्षण ६२
पित्तज व कफज के लक्षण ६३-६४
सन्निपातिक सहज व रक्तज बवासीर लक्षण ६५
रक्तज अर्श के वातादि भेद से लक्षण ६५
कफ सम्बन्ध के लक्षण वबासीर का पूर्व रूप ६६
उत्तर सुखसा० के लक्षण ६७
कष्टसा० असा०वताप्य लक्षण ६८
वैद्य लक्षण कुत्सित वैद्यके लक्षण ६९
असा० लक्षण ७१
चर्मकील की सम्प्राप्ति वातादि भेद के लक्षण ७१

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

विषय पृष्ठांक

मन्दाग्नि निदानम्

अजीर्ण व सामान्य के लक्षण ७३

अजीर्ण निदानम्

अजीर्ण के प्रकार ७४
अजीर्ण के कारण ७५
आमादि विदग्ध विष्टब्ध अजीर्ण लक्षण ७५
रसशेष अजीर्ण उपद्रव बहुभोजन हेतु व अजीर्ण से विसूचिका की उत्पत्ति का वर्णन ७६-७७
विशूचिका की निरुक्ति व लक्षण ७८
अलस बिलम्बिका व अजीर्ण जन्य आम ७८
विशूचिका व अलम के असाध्य तथा गत अजीर्ण लक्षण ७९

कृमि रोग निदानम्

कृमि रोग के प्रकार बाह्य कृमि के नाम ८१
कृमि रोग के कारण व कृमिकी उत्पत्ति ८१
उदर में पड़ी कृमिका लक्षण ८२
कफोत्पन्न क्रिमि का लक्षण ८२
रक्तज व मलोत्पन्न क्रिमिके लक्षण ८३

पाण्डु रोग निदानम्

पाण्डु रोग के प्रकार व सम्प्राप्ति ८५
पूर्वरूप वातज पैत्तिक व कफज पाण्डु लक्षण ८५
सन्निपात युक्त व मृत्तिकोत्पन्न पांडु लक्षण ८६
विशेष व असाध्य लक्षण ८७
कामला व कुंभ कामला के लक्षण ८९-९०
असाध्य लक्षण व हलीमक रोग वर्णन ९०-९१
पानकी लक्षण ९१

रक्त पित्त निदानम्

रक्त पित्तका प्रकार पूर्वरूप श्लेष्मिक व वातज रक्त पित्त लक्षण ९२
पैत्तिक व द्विदोष जनित रक्तपित्त के लक्षण ९३
उर्ध्वगाविकों का साध्या साध्य विचार ९३
साध्य कारण साध्या साध्य लक्षण व उपद्रव ९४
राजयक्ष्मा निदानम् १००
राज यक्ष्मा की विशिष्ट सम्प्राप्ति ९७
पूर्व रूप ९८
त्रिरूप एकादश रूप षटरूप व त्र्यरूपक्षय लक्षण ९९
साध्या साध्य विचार असाध्य लक्षण व आषेव पर्यन १००
असाध्य लक्षण १०१
व्यवसाय शोषी, शोक शोषी जराशोषी लक्षण
अध्वशोषी व्यायाम शोषी व अक्षत के लक्षण १०३
पूर्वरूप क्षत क्षीण के असाध्य लक्षण १०५

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

विषय पृष्ठांक

साध्य लक्षण १०६

कासनिदानम १०६

पूर्वरूप सम्प्राप्ति वातज व पितज कास लक्षण १०७

श्लेष्मक व क्षतज कास लक्षण १०८

रक्त खांसी के लक्षण साध्यासाध्य विचार १०९

हिक्का निदानम ११०

हिक्का का स्वरूप और निरुक्ति ११०

हिक्का के भेद व सम्प्राप्ति पूर्वरूप अन्नजा यमला लक्षण १११

क्षुद्रा गभीरा महती व असाध्य लक्षण ११२

और असाध्य लक्षण यमिका के असाध्य लक्षण ११३

श्वास निदानम ११४

पूर्वरूप सम्प्राप्ति एव महाश्वास के लक्षण ११४

उर्ध्व श्वांस के लक्षण ११५

छिन्न श्वांस व तमक श्वांस के लक्षण ११६

प्रतयक श्वास व क्षुद्र श्वांस के लक्षण ११८

स्वर भेद निदानम १२०

वातज व पित्तज स्वर भेद के लक्षण १२०

कफज, त्रिदोषज, क्षयजन्य व भदोत्पन्न स्वरभेद १२१

असाध्य के लक्षण १२२

अरोचक निदानम १२२

शोकादि वातज्यादि व अन्य प्रकृति लक्षण १२३

छर्दि निदानम १२४

छर्दि क कारण और निरुक्ति १२८

पूर्वरूप वातज व पित्तज छर्दि लक्षण १२५

श्लेष्मक सन्निपातज व असाद्य छर्दि लक्षण १२६

अगन्तुक व क्रिमि जन्य लक्षण साध्या साध्य लक्षण १२७

छर्दि के उपद्रव १२८

तृष्णा निदानम १२८

तृष्ण व अन्नप्लाहिक तृष्णा की सम्प्राप्ति १२८

वातिक एवं पैत्तिक तृष्णा के लक्षण १२९

श्लेष्म जन्य क्षतज व क्षतजन्य तृष्ण लक्षण १३०

श्रमजा अन्नज व उपसर्गज तृषा लक्षण १३१

असाध्य लक्षण १३२

मूर्छा निदानम १३२

निदान सम्प्राप्ति एवं पूर्वरूप १३३

वाजत पैतिक व श्लेष्मज मूर्छा के लक्षण १३४

सन्निपातज व रक्तज मूर्छा के लक्षण १३५

विष मदिरोत्पन्न एवं रक्तयादि मूर्छाओं के लक्षण १३६

मूर्छा भ्रम,तन्द्रा व निद्राभेद

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

विषय पृष्ठांक

तन्दा लक्षण १३७
सन्यास के भेद व लक्षण १३८
मदात्य निदानम १३९
विधिपूर्वक मद्यपानके लक्षण १३९
अल लक्षण पूर्व मद व द्वितीय मद के लक्षण १४०
तृतीय एवं चतुर्थ मद के लक्षण १४१
विधिहीन मद्य पान के विकार उनका वर्णन १४२
वातिक पित्तज कफज सन्निपातज मात्यत्य एवं परमद के लक्षण १४३
पान जीर्ण पान विभुभ के लक्षण व मदात्यम के असाध्य लक्षण १४४
उपद्रव १४५
दाह निदानम १४५
रक्तज और पैत्तिक दाह के लक्षण तृषोत्पन्न शस्त्रघातज व धातु लक्षण १४७
उन्माद निदानम् १४७
उन्माद के सामान्य कारण व सम्प्राप्ति १४८
उन्माद का स्वरूप, वातज व पैत्ति के लक्षण १४९
श्लेष्मज व त्रिदोष जन्य उन्माद के लक्षण १५०
शोकजन्य उन्माद के लक्षण असाध्य लक्षण १५१
भूतज देवग्रह व असुर ग्रह— पीड़ित के लक्षण १५२
गधर्व यक्ष एवं पितृगृह के लक्षण १५३
सर्वग्रह व लक्षण ग्रहग्रस्त के लक्षण १५४
पिशाच ग्रह ग्रस्त व ऊतोन्माद के लक्षण १५५
देवताओं के प्रवेश समय का कथन १५६
अपस्मार निदानम् १६२
सुश्रतमेय निरुक्ति सम्प्राप्ति वाग्भट से निदान १५८
सामान्य लक्षण पूर्वरूप वातज मृगी लक्षण १५९
पैत्तिक श्लेष्मक सन्निपातिक व असा० लक्षण १६०
मृगी रङ्ग की बारी १६१
बात व्याधि निदानम् १६२
पूर्वरूप १६२
कोष्ठाश्रित सर्वांग कुपित गुदास्थित एवं आमाशयगत वायु के लक्षण १६४
पक्वाशय स्थित इन्द्रिय प्राप्त व त्वस्थ वायु मांस में दो गत मज्जा अस्थिगत १६५
शुक्रगत एवं शिरागत वायु के लक्षण १७६
स्नायुगत, सुगन्धित व प्राणोदानादि वायु १७७
आक्षयक के लक्षण व अपतन्त्रतादि कथन १७८

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

विषय	पृष्ठांक
दण्डवतानक व अन्तरायाम के लक्षण	१६९
बाह्ययोग, पित्त कफानुबन्धु व असाध्यत्व	१७०
पक्षाघात लक्षण व सर्वांगरोग के लक्षण	१७१
आर्दितरोग लक्षण	१७२
अर्दित के असध्य लक्षण अर्दितान्तबेग व हनुग्रह	१७३
मन्यास्तम्भ, जिव्हास्तम्भ शिराग्रह गृध्रसी	१७४
विखाची कोष्टु शीर्ष व पांगुरे के लक्षण	१७५
कलपय खञ्ज, बात कंटक, यादहर्ष असशोष एवं अपवाहुक के लक्षण	१७६
मूकादि, हनी प्रतूनी व आयतन लक्षण	१७७
प्रत्याध्यान वाताष्ठीला व प्रत्याष्ठीला लक्षण	१७८
मूत्रावरोध, कम्पवायु, खल्ली उर्ध्व बात लक्षण	१७९
प्रत्याप, रसाज्ञान लक्षण व साध्यासाध्य विचार	१८०
वातव्याधि के उपद्रव असाध्य यक्षण पंचवायु	१८१
बातरक्त निदानम्	**१८३**
बात रक्त की सम्प्राप्ति व पूर्वरूप	१८३
बातरक्त में अन्य लक्षण व रक्ताधिक लक्षण	१८४
पित्तज, कफज, वातरक्त के लक्षण	१८५
असाध्य लक्षण व वातरक्त के उपद्रव	१८६
साध्यासाध्य विचार	१८७
अरुस्तम्भ निदानम्	**१९०**
अरुस्तम्भ के पूर्वरूप	१८८
अरुस्तम्भ के लक्षण व असाध्य लक्षण	१८९
आमबात निदानम्	**१९०**
आमवात के सामान्य लक्षण	१९०
अतिवृद्धि प्राप्त आमबात के लक्षण	१९१
अन्य लक्षण साध्यासाध्य लक्षण	
शूल निदानम्	**१९२**
वातिकशूल के लक्षण और सम्प्राप्ति	१९३
पैत्तिक शूमा के कारण और लक्षण	
श्लेस्यज क लक्षण, सम्प्राप्ति आम	
द्वन्द्वज शूल के लक्षण	१९५
शूल के स्थान शू० उपद्रव व परिणाम निदान	१९६
वातज पित्ताज व श्लेष्मज परिणाम शूल	१९७
द्विदोषज, त्रिदोषज, व अन्य दोषज शूल	१९८
उदावर्त निदानम्	**१९९**

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

विषय पृष्ठांक

कारण लक्षण व मलोत्पन्न उदावर्त १९९
मूत्रावरोधज, जम्भावरोधज अमु व हिक्कावरोधज उदावर्त के लक्षण २००
उद्गारावरोधज छर्दिनिरोधज शुक्रज एवं तृष्णावरोधज उदावर्त २०१
निश्वास निदावरोधज तथा रुक्षादि कुपित वातज उदावर्त के लक्षण २०२
आनादरोगकी सम्प्राप्तवलक्षण २०३
असाध्य लक्षण २०४

गुल्म निदानम् २०४

गुल्म के सामान्य लक्षण २०४
सम्प्राप्ति पूर्व रूप एवं सामान्य लक्षण २०५
वातिक एवं पैत्तिक गुल्म के कारण व लक्षण २०६
कफज गुल्म के लक्षण २०७
द्वन्दजसन्निपातिकएवंरक्तगुल्म २०८
गुल्म के असाद्य लक्षण २१४

हृद्रोग निदानम् २११

सम्प्राप्ति, लक्षण, वातज, पैत्तिक व श्लेष्मज २१२
त्रिदोशज व कृमिज के लक्षण तथा उपद्रव २१७

मूत्र कृच्छ्र निदानम् २१८

सम्प्राप्तिपित्तजवातजकेलक्षण २१८
श्लेष्मज त्रिदोषज सल्यज सत्योपन्न एवं अश्मरी जन्य मूत्र कृच्छ्र के लक्षण २१९

विषय पृष्ठांक

वीर्यज मूत्र कृच्छ एवं अश्मरी और शर्करा और अवान्तर का भेद २२०

मूत्रघात निदानम् २२१

वातकुण्डलिका व अष्टीला के लक्षण २२१
वात वस्ति, मूत्रातीत व मूत्र ज्वर २२२
मत्रोत्संग व मत्रक्षय के लक्षण २२३
मूत्र ग्रन्थि मूत्र शुक्र व उष्ण वात २२४
मूत्रप्रसाद विड़ विघात वस्ति कुण्डल २२५
वस्ति कुण्डल के साध्यासाध्य विचार २२६

अमस्री रोग निदानम २२७

सम्प्राप्ति एवं पूर्व रूप २२७
पथरी का सामान्य लक्षण
वातिक पथरी २२८
पैत्तिक व श्लेष्मज पथरी के लक्षण २२९
शुक्राश्मरी लक्षण पथरी व शर्करा के उपद्रव २३०
असाध्य लक्षण २३१

माधव निदान का उत्तर भाग

प्रमेह निदानम २३१

सम्प्राप्ति व दोषदूष्य संग्रह पूर्वरूप, सामान्य लक्षण, २३२
कारण व कफ जन्य २३३

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

विषय	पृष्ठांक
पैत्तिक व वातिक प्रमेहों के लक्षण	२३५
कफज पित्तज व वातज प्रमेह के उपद्रव	२३६
प्रमेह के असाध्य लक्षण प्रमेह से मधुमेह	२३७
आवरण के लक्षण	२३८
प्रमेह पिडिका निदानम	२३८
सम्पूर्ण पिडिकाओं के लक्षण	२३९
पिडिका की उत्पत्ति एवं असाध्य लक्षण	२४०
मेदो निदानम	२४१
कारण और सम्प्राप्ति, मेदस्वी पुरुष लक्षण	२४२
मेदस्वी की अवस्था, मेद के असाध्य चिन्ह	२४३
कार्श्य निदानम	२४३
शीष मनुष्य के कार्श्य, आपन्तक धुर के लिए वर्णित वस्तु व रोगों का कथन	२४४
दृष्टान्त	२४५
असाध्य कार्श्य के लक्षण	२४६
उदर रोग निदानम्	२४६
उदर रोग की सम्प्राप्ति	२४६
सामान्य लक्षण रोगसंख्या वातज उदर रोग	२४७
पैत्तिक व कफज उदर रोग के लक्षण	२४८
सन्निपातोदर के लक्षण	२४९
प्लीहोदर, यकृद्दाल्युदर लक्षण	
दोष संबंध	२५०
वृद्धगुदोदर व क्षतोदर के लक्षण	२५१
जलोदर के लक्षण	२५२
साध्या सा० विचार	२५३
असाध्य लक्षण	२५४
शोथ रोग निदानम	२५४
शोथ रोग की सम्प्राप्ति	२५४
शोथ रोग का निदान	२५५
शोथ का पूर्वरूप सामान्य लक्षण वातिज शोथ	२५६
पित्तज, कफज, सान्निपातिक अभिघातज शोथ	२५७
विषज शोथ । शोथ दोषक उत्पत्ति-स्थान	२५८
सूजन के भेद व असाध्य लक्षण	२५९
शोथ के उपद्रव	२६०
अण्ड वृद्धि निदानम	२६०
वृद्धि रोग के निदान	२६०
वातज, पत्तिक व श्लेष्मज अण्ड वृद्धि लक्षण	२६१
मूत्रज वृद्धि लक्षण एवं अन्त्र वृद्धि निदान	२६२
चिकित्सा न करने का फल, ब्रध्न रोग निदान	२६३
गलगण्ड निदानम	२६४
सम्प्राप्ति एवं वातज गल गंड के लक्षण	२६४
कफज एवं मेदज गल गण्ड के	

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

विषय	पृष्ठांक
लक्षण	२६५
असाध्य लक्षण	२६६
गण्डमाला निदानम	**२६६**
अपची लक्षण व साध्यासाध्य विचार	२६७
ग्रन्थि निदानम	**२६७**
वातिक ग्रन्थि के लक्षण	,,
पैत्तिक व श्लेष्मज ग्रन्थि के लक्षण	२६८
मेदोत्पन्न व शिरोत्पन्न ग्रन्थि के लक्षण तथा साध्या साध्य लक्षण	२६९
अर्बुद निदानम	**२६९**
सम्प्राप्ति	२६९
रक्तज अर्बुद के लक्षण	२७०
मांसार्बुद अहय द्विर अर्बुद लक्षण एव साध्यासाध्य विचार	२७१
अर्बुदन पकने का कारण	२७२
श्लीपद निदानम	
सम्प्राप्ति वातिक व पैत्तिक श्लीपद लक्षण	,,
कफोत्पन्न श्लीपद लक्षण व असाध्य लक्षण	२७३
विद्रधि निदानम	२७४
वातज विद्रधि के लक्षण	२७४
पैत्तिक व कफज विद्रधि के लक्षण	२७५
परिपाक व स्राव त्रिदोषज विद्रधि	,,
आगन्तुक विद्रधि की सम्प्राप्ति	२७६
रक्तज, अन्तर्विद्रधि व विद्रधि लक्षण	,,
स्राव का निकलना	२७७
साध्यासाध्य विचार असाध्य लक्षण	२७८
व्रण शोथ निदानम	**२७८**
व्रण का पकना, लक्षण पूर्व रूप	२७९
पके हुए व्रण के लक्षण	२८०
त्रिदोष का सम्बन्ध राध का न निकलना	२८१
व्रण निदानम	
वातज पैत्तिक श्लेष्मिक, रक्तज द्वन्द्वज व्रण	२८२
सुखसाध्य कृच्छसाध्य व असाध्य व्रण	२८३
दुष्ट व्रण एवं शुद्ध व्रण लक्षण	,,
भरनेवाला, भरा हुआ व साध्या व्रण लक्षण	२८४
साध्यासा० व असा० व्रण लक्षण	,,
असा० लक्षण व्रण रोग में अपथ्य	२८५
आगन्तुक व्रण निदानम	**२८६**
सख्या सम्प्राप्ति, छिन्ना, भिन्न कोष्ठे लक्षण	२८६
विशेष लक्षण, आमाशय स्थित रक्त के लक्षण	२८७

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

विषय	पृष्ठांक
पक्काशय स्थित लक्षण विद्ध व्रणे लक्षण	,,
क्षता पिच्चियत, धृष्ट, सशल्य व्रण लक्षण	२८८
कोष्ठभेद व असा० कोष्ठ भेद लक्षण	२८९
मांस, शिरा आदि में प्रहार से उत्पन्न	,,
मर्मरहित शिराविद्ध स्नायुबिद्ध सन्धि व अस्ति बिद्ध	२९०
सर्व व्रणों के उपद्रव	२९१
भग्न निदानम	२९१
सन्धि भग्न सामान्य लक्षण	,,
अवकाण्डभग्न वर्णन	२९२
काण्ड भवन के सामान्य लक्षण	२९३
कष्ट साध्य व असाध्य लक्षण	२९४
नाडी व्रण निदानम	२९५
सख्या रूप संम्प्रप्ति वातज पित्तज लक्षण	२९७
श्लेष्मज सन्निपातिक व शल्पजं नाड़ी व्रण	२९६
सा० सा० लक्षण	९६
भगन्दर निदानम	२९७
पूर्वरूप शतपोनक के लक्षण	,,
उष्ट्र शिरोधर परिस्रावी व शंबुवर्त तथा उन्मगिं भगन्दर के लक्षण	२९८
साध्यासा० व असा० लक्षण	२९९
उपदेश निदानम	२९९
वातज पैत्तिक रक्तोय कफज एवं सन्निपातिक उपदेश असा० उपदेश लक्षण	३००
लिंग वर्ति के लक्षण	३०१
फिरग निदानम्	
विप्र कुष्ट निदानम्	,,
रूप उपद्रव, साध्यासा० लक्षण	३०२
शूकदोष निदानम्	३०३
सर्षपिका अष्ठीला ग्रन्थित लक्षण	३०३
कुम्भिका अलजी, मृदित, समूढ अवमंथ एवं पुष्कारिका के लक्षण	३०४
शतपोनक त्वक्पाक, शोषिता र्बुद, मासार्बुद मंस पाक एवं विद्रधि के लक्षण	३०५
तिलकालक व असा० शूक दोष	३०६
कुष्ठ निदानम	३०६
कुष्ठ के सात भेद	३०७
पूर्वरूप, सातमहाकुष्ठ व औदुम्बर कूष्ठ	३०८
सण्डल, यास जिह्व पुण्डरीक सिध्म, कांककुष्ठ	३०९
शुद्र कूष्ठ किटिभ वैपादिक, अलस प्रद्रमेंडल	३१०
चर्मदिल, पामा कच्छु, बिस्फोट, शतारु विचर्चिका	३११

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

विषय पृष्ठांक

वायुज, पैत्तिक रसादिक रूमस्थित माँसस्थित कूष्ठ ३१२
मेद हड्डी, मज्जा एवं वीर्यार्तवगत कूष्ठ ३१३
कूष्ठ में साध्यासाध्य विचार ,,
कूष्ठ चिकित्सा में प्रदानदोष विलास निदान ३१४
वातिकभेद से लक्षण, श्वेतकूष्ट के साध्यासाध्य लक्षण ३१५
असाध्य लक्षण सांसर्गिक रोग ,,
शीत पित्त निदानम ३१६
सम्प्राप्ति पूर्व रूप ३१६
उदर्द व कोष्ट लक्षण ३१७
अम्ल पित्त निदानम ३१८
निदान लक्षण, अधो मार्ग गामी आलपित्ता ३१८
अर्ध्वगत कफ पित्तज व साध्यासा० लक्षण ३१९
वात-कर्फ संसाजि वातज य कफ जन्य, कफ पित जन्य ३२०
बिसर्व निदानम् ३२१
निदान वातिक विसर्प लक्षण ३२१
सान्निपातिक व अग्नि विसर्प लक्षण ३२२
ग्रन्थि विसर्व लक्षण ३२३
कर्दमऔर सतजविसर्पलक्षण ३२४
उपद्रव व साध्या० विचार ३२५
विस्फोट निदानम् ३२६
स्वरूप वातज, एवं पित्तज विस्फोट लक्षण ३२६
कफज, द्विदोषज त्रिदोषज, रक्तज विस्फोट ३२७
साध्यासा० लक्षण एवं उपद्रव ३२८
मसूरिका निदानम् ३२८
कारण और सम्प्राप्ति ,,
पूर्वरूप वातिक पैत्तिक मसूरिका लक्षण ३२९
रक्तज श्लैष्मिक सन्निपातक मसूरिका ३३०
रोमान्तिका रसस्थित रक्तस्थित व मांसस्थित ३३१
गत मसूरिका धातुगत शुक्र धातु गत ३३३
मसूरिका के साध्यासा० ल० ३३३
महा असाध्य लक्षण उपद्रव ३३४
क्षुद्र रोग निदानम् ३३४
अजगल्लिक लक्षण ,,
पत्रप्रख्या, अंधासजी विवृता कच्छपिका एवं वाल्मीक के लक्षण ३३५
इन्द्र वृद्धा गर्दभिका पाषाण गर्दभ लक्षण ३३६
पनसिका जालगर्दभ हरिबेल्लिका कक्षा एवं गध नाम्नी लक्षण ३३७
अग्निरोहिणी, चित्य अनुशयी विदारिका ३३८
शर्करा ग्रन्थि, पाददारी व रुद्रर के लक्षण ३३९
अलस इन्द्र लुप्त, दारुण के लक्षण ३४०

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

विषय पृष्ठांक

असंपिका पलित मुख दूंषिक एवं पधिती कंटक के लक्षण ३४१
जन्तुमणि, माप, तिलकालक लक्षण ३४२
न्यच्छ व्यग नीलिका परिवर्तिका लक्षण ३४३
अवपाटिका व निरुद्ध प्रकाश के लक्षण ३४४
सन्निरुद्ध गुह अहिपूजण वृषण कच्छ ३४५
गुद भ्रंश व सूकर देष्ट लक्षण ३४६

मुख रोग निदानम् ३४६

मुखरोग की गणनां ३४६
निदान वातज ओष्ठ पित्तजन्य ओष्ठ कफजन्य ओष्ठ एवं सन्निपात जन्य ओष्ट के लक्षण ३४७
रुधिरजन्य मांसज . भदोज अभिघातज सोष्ठ ३४८
शीहद दन्तपुप्पुट दन्तवेष्ठ सौषिर महासौसिर परिदर उपकुश वैदर्भ ३५०
खल्लीवर्धन कराल अधिमांसका नादिगृण ३५१
कत्तगत ८ रोग, दालन लक्षण ,,
क्रमिदन्त, भंजनक दन्तहर्ष दन्त शर्करा ३५२
कपालिका श्यावदन्त हनुमोक्ष लक्षण जिव्हागत ५ रोग, वातज, पित्तज कफज, कफजन्य जिव्हा रोग ३५३

विषय पृष्ठांक

अल्लास उपजिव्ह के लक्षण ३४५
तालुस्थित ९ रोग कंठ शुचि ,,
सुन्डकेरि अधु व कच्छप अर्बुद ३५५
मांस संधात व तालघुट लक्षण ३५५
तालु शोष तालुपाक लक्षण ३५६
कंठगत १७ रोग रोहिणी की सम्प्राप्ति एवं वातिक रोहिणी के लक्षण ३५६
पैत्तिक श्लेष्मा सन्नि पातजा रूमजाकंठ सालूक एवं आदि जिह्वा के लक्षण ३५७
वलय बलाम एक वृन्द वृन्द के लक्षण ३५८
शहतनी गिलायु गुलविद्रधि गलीध लक्षण ३५९
स्वरघ्न मांसतान विदारी के लक्षण ३६०
मुखपाक वातज पैत्तिक व श्लेष्मिक सर्वसर ३६०
असाद्य मुख सेक ३६१

कर्ण रोग निदानम् ३६२

कर्णनाद वाधिर्य कर्णशूल के लक्षण ३६२
कर्ण क्ष्वेड कर्णश्राव कर्णगंडू कर्ण गूथ व कर्णयुतिनाद के लक्षण ३६३
कृमिकर्ण कर्णप्रविष्ट पतंगाधि कर्णप्रदधि ३६४

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

विषय पृष्ठ

कर्णपाक पूति कर्ण कर्णशोथ कर्णार्बुद कर्णार्श एवं ४ कर्ण रोगों के लक्षण ३६५
कर्णपाली के रोग, कर्णशोध प्ररिषोट उत्पात और उन्मेथक के लक्षण ३६६
दुक्ख वर्धन पवरिलेही के लक्षण ३६७
नास्त रोग निदानम ३६७
पोनस के लक्षण ३६७
पूति नस्य, नासिकापात, पूयरक्त, क्षवथु लक्षण ३६८
आगन्तुक क्षवथु, भ्रंशथु, दीप्त प्रतिनाह और नासा स्राव के लक्षण ६६९
नासा परि शोथ आमतथा पक्क पीनस के लक्षण एवं जुकाम की सम्प्राप्ति ३७०
पूर्व रूप, बातज, पितज प्रतिश्याय लक्षण ३७२
रक्तजन्य, असाध्य लक्षण, बृद्धगत के उपद्रव ३७३
नेत्र रोग निदानम् ३७४
उत्पत्ति ३७४
अभिष्यन्द, वाताभिष्यक पित्ताभिष्यक एवं श्लेष्मज अभिष्यक के लक्षण ३७५
रक्तजाभिष्यद्र लक्षण, सामान्य लक्षण ३७६

विषय पृष्ठाङ्क

दोषभेद से समय की अवधि के लक्षण ३७६
नेत्ररोगों के सामान्य लक्षण, शोथ युक्त नेत्रपाक ३७७
हतादिमंथ, बातपर्यत, शुष्काभियाक एवं अन्यतो बात के लक्षण ६७८
अम्लाध्युषित, सिरोत्पात, शिराहर्ष एवं सव्रण शुक्र के लक्षण ३७९
सव्रण शुक का साध्यतासा० बिचार, अव्रण शुक्र के लक्षण तथा साध्या साध्यता ६८०
असिपा कात्पय, अजकाजात के के लक्षण ३८१
प्रथम पटल में स्थित दोष के लक्षण ३८१
क्षेपका द्वितीय पटल स्थ दोष तृतीयपटलस्थ ३८२
चतुर्थ पटलस्थ दोष लक्षण ३८३
दोष विशेष से रूपका दर्शन ३८४
परिम्लायि संज्ञक पित्त से द्वितीयतिमिर ३८५
बातजादि लिंगनाश रोग व विशेष लक्षण ३८५
द्रष्टि मंडल स्थित रोग के लक्षण ३८६
सम्पूर्ण द्रष्टि रोगों की गणना पित्तविदग्ध दृष्टि, दिवांध,

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

विषय पृष्ठांक
कफवि दग्ध दृष्टि, निशांव ६८७
घूमदर्शी ह्रस्व द्रष्टि, नकुलान्ध गंमीरिका एवं सनिमित्त लिंग नाश के लक्षण ३८८
लिंग नाश निदान प्रस्तर्यमं लक्षण ३८६
शुक्ति, अर्जुन, षिटक लक्षण ३९०
शिराजाल, शिराज पिडिका, वलास ग्रन्थित ३६१
नेत्र–सन्धि रोग, पूयालस, उपनाट ३९१
स्राव सम्प्राप्ति, चारोंफाव पर्वण्यलज्यो लक्षण ३६२
कृमि ग्रन्थि, उत्सग पिडिका, कुंभीका लक्षण ३६३
पोथकी, वत्म शर्कर अर्शवर्त्म मुष्कार्श एवं अंजना के लक्षण ३६५
वहल वर्त्य वत्य बंध, क्लिष्ठ वर्य वर्त्य कध्य ३६५
श्याव वर्त्य, प्रक्लिन्न वर्त्य, वाताहृत वर्त्य एवं वर्त्तार्बुदु के लक्षण ३६६
निमेष, शोजितार्श, लक्षण विसवर्त्य एवं कुंचन के लक्षण ३९७
पश्च कोप पश्म सात के लक्षण ३६८
शिरो रोग निदानम् ३६६
वातज शिरो रोग के लक्षण ३६६
पित्तज, कफज सन्निपातिक, रक्तज एवं रस धातु सय यम शिरो रोग के लक्षण ४००
विषय पृष्ठांक
कृमिज शिरो रोग, सूर्या वर्त अनन्त वात लक्षण ४०१
अर्ध विभेदक के लक्षण ४०२
शंखक के लक्षण ४०३
प्रदर रोग निदानम् ४०३
प्रदर रोग की संख्या ४०३
सामान्य लक्षण, उपद्रव तथा कफ पित्त के प्रदर ४०४
वातिक व सन्निपातिक प्रदर शुक्लतिप लक्षण ४०५
योनि व्यापत्ति निदानम् ४०६
योनि रोग के लक्षण ४०६
स्राव औयप्त के लक्षण असमय गर्भ–पतत्र का हेतु ४०८
मृदगर्भ के निदान लक्षण व सम्प्राप्ति ४०६
असाध्य मूढ गर्भिणी व मरे हुए गर्भ के लक्षण ४१४
गर्भ स्राव कारण गर्भिणी के असाध्य लक्षण ४१०
सूतिका निदानम् ४१२
निदान, विशेषाभिधान, ४११
स्तन रोग निदानम् ४१२
सम्प्राप्ति दुग्ध के रोग, दूषित दुग्ध के लक्षण ४१२
शुद्ध दूध के लक्षण ४१३
बाल रोग निदानम् ४१४
वात एवं पित्त से दूषित दुग्ध के लक्षण ४१४
कफ दूषित दुग्ध लक्षण,

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

विषय पृष्ठांक

शरीरस्थ वेदना ४१५

द्वन्द्वज और सन्निपातज दूषित दुग्ध लक्षण ४१६

कुकूणक व परिमर्मिक के लक्षण ४१७

तालु कंटक महापवम विसर्गव अन्यविकार ४१७

सामान्य बलस्व प्रसित, स्कन्दग्रह ग्रसित ४१८

स्कन्दग्रह ग्रसित ४१८

स्कन्दा पस्मार, शकुनि ग्रह गृसित एवं रेवती तथा पूतना गृह गृसित बालक के लक्षण ५३६

अंध स्तना, शति पूतना मुखमडिका एव नेगमे गृह गृसित बालक के लक्षण ४२०

विष रोग निदानम् ४२१

स्थावर विष के दस लक्षण ४२१

जगम विष लक्षण व स्थावर विष ४२२

विषदेने वाले मनुष्य को जानना ४२३

मूलादि प्रत्येक विष के लक्षण ४१४

विषप्त शस्त्र–हतके लक्षण ४२५

भोगी सर्पादि के काटने का लक्षण ४२५

विषय पृष्ठांक

विशिष्ट देश व नक्षत्र में काटे का लक्षण ४२६

दर्वीकर जाति के सर्व दंश का लक्षण ४२६

सर्प काटे के असाध्य लक्षण ४२६

असाध्य व दूषित विषके लक्षण ४२७

दुषी विष के कार्य, स्थान भेद से विष ४२८

कुपित हुए दूषी विष का रूप व पूर्वरूप ४२८

दूषी विष की निरुक्ति व कृत्रिम विष ४२९

गरका कार्य असाध्य लक्षग ४३०

लूता नामक जन्तु का उत्पत्ति ४३०

लूता के काटने के लक्षण ४३०

प्राशहर लूता के लक्षण ४३१

मूषक विष, नौला तथा वृश्चिक देश ४३२

विष्यक विष के असाध्य लक्षण ४३३

कणभ कृमिके काटने के लक्षण ४३३

चीटा झींगर के काटने के लक्षण ४३३

मंडूक विष के लक्षण ४३३

सध्य मत्स्य के विषके लक्षण ४३३

जलौ का विष के लक्षण ४३४

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

विषय पृष्ठांक

गृह गोधिका के विष के लक्षण ४३४
शतपदी के विष के लक्षण ४३४
मशक विषके लक्षण ४३४
असाध्य मशकके के विषके लक्षण ४३४
विष मक्षिका के काटने के लक्षण ४३४
व्याघ्रादि के विष के लक्षण ४३५
विगत विष मनुष्य के लक्षण ४३५
सर्ग प्रथम सोम रोग निदानम् ४३६
क्लीव के लक्षण ४३७

विषय पृष्ठांक

नपुंसक के सामान्य लक्षण ४३७
बीजोपघात नपुसंक के लक्षण ४३८
ध्वजभंग क्लीव की उत्पत्ति ४३८
ध्वजभङ्ग क्लीव के लक्षण ४४०
आसेक्यादि नपुंसकों के लक्षण ४४१
नपुंसक विशेष, मन्थ ज्वर लक्षण ४४३
कुष्ठ' मधुर ज्वर के लक्षक्ष ४४३

सूची पत्र व पृष्ठ १ से २१६ तक श्री गोपाल प्रेस हाथरस में छपा।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

* श्री निकुञ्जविहारिणेनमः *

* अथ माधव निदानम् *

[भाषाटीका सहित]

कर्त्ताभर्तातथाहर्ताभोंगमोक्षैकदायिनम् ।
वन्देश्रीगिरिजाकान्तंशङ्करंलोकशङ्करम् ।।

युग्मम्

प्रणम्य जगदुत्पत्तिस्थितिसंहारकारणम् ।
स्वर्गापवर्गयोर्द्वारं त्रैलोक्यशरणं शिवम् ।।१।।
नानामुनीनांवचनैरिदानीं समासतःसद्भिषजांनियोगात् ।
सोपद्रवारिष्टनिदानलिंगोनिबध्यतेरोगविनिश्चयोऽयम्।२

अर्थ—संसार की उत्पत्ति, पालन और संहार (नाश) के कारण स्वर्ग अपवर्ग के द्वार अर्थात् दाता तीनों लोकों के सहायक शङ्कर को प्रणाम कर, अनेक मुनियों के वचनानुसार श्रेष्ठ वैद्यों की आज्ञा से अब मैं संक्षेप से उपद्रव अरिष्ट निदान लिंग लक्षणों से युक्त रोग विनिश्चय नाम ग्रन्थ की रचना करता हूँ ।।१-२।।

नानातंत्रविहीननां भिषजामल्पमेधसाम् ।।
सुखं विज्ञातुमातंकमयमेव भविष्यति ।।३।।

अर्थ-बहुत से ग्रन्थों के विचारांश में सामर्थ्य न रखने वाले अल्प मति वैद्यों को सुखपूर्वक जानने का कारण यही ग्रन्थ होगा ।। ३ ।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

रोग जानने के पांच उपाय, उनको कहते हैं

निदानं पूर्वरूपाणि रूपाण्युपशयस्तथा ॥
सम्प्राप्तिश्चेति विज्ञानं रोगाणां पंचधा स्मृतम् ।४।

मुनियों ने निदान, पूर्वरूप, रूप, उपशय तथा सम्प्राप्ति, इन कारणों से रोगों का जानना पांच प्रकार का कहा है ॥ ४ ॥

निमित्तहेत्वाऽऽयतनप्रत्ययोत्थानकारणैः ॥
निदानमाहुः पर्यायः प्राग्रूपं येन लक्ष्यते ॥५॥

निमित्त, हेतु आयतन, प्रत्यय, उत्थान. कारण—ये निदान के पर्यायवाचक शब्द मुनीश्वरों ने कहे हैं ॥५॥

उत्पित्सुरामयो दोषाविशेषेणाऽनधिष्ठितः ।
लिंगमव्यक्तमल्पत्वाद्व्याधीनां तद्यथायथम् ॥६॥

जंभाई, आलस्य करके उत्पन्न होने वाली बीमारी का ज्ञानहोवे इसे पूर्व रूप कहते हैं ॥६॥

तदेव व्यक्ततां यातं रूपमित्यभिधीयते ।
संस्थानं व्यञ्जनं लिंगं लक्षणं चिह्नमाकृतिः ॥७॥

जब पूर्व कथित पूर्वरूप प्रत्यक्ष हो जाय, उसको रूप कहते हैं और संस्थान, व्यञ्जन, लिंग, लक्षण, चिह्न और आकृति—ये छैः शब्द रूप के पर्यायवाचक हैं ॥ ७ ॥

उपशय के लक्षण

हेतुव्याधिविपर्य्यस्तविपर्यस्तार्थकारिणम् ॥
औषधान्नविहाराणामुपयोगं सुखावहम् ॥
विद्यादुपशयं व्याधेः स हि सात्म्यमिति स्मृतः ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अब उपशय के लक्षण कहते हैं

हेतु विपरीत, व्याधि विपरीत, हेतु व्याधि विपरीत, हेतु विपर्यस्तार्थकारी, व्याधिविपर्यस्तार्थकारी, हेतुव्याधिविपर्यस्तार्थकारी ऐसे जो औषध अन्न बिहार इनका सेवन सुखकारक जानना, उसको व्याधि का उपशय कहते हैं। इसका मतलब यह है–रोग और रोग का हेतु, इनको सुखकारक जो औषधि पथ्य आचरण रूप प्रयोग उसको उपशय कहते हैं और व्याधि सात्म्य ये पर्यायवाचक नाम उसी उपशय के हैं। सुखकारक के कहने से यह प्रयोजन है–दाह और प्यासयुक्त नवीन ज्वर में शीतल जल का पीना व्याधि का बढ़ाने वाला होता है। अतः ठण्डा जल सुखकारक नहीं हुआ, इसलिये शीतल जल को शान्तिकर्ता न समझना चाहिये, परन्तु दाहयुक्त तृषामें ठंडा जल प्यासनाशक माना जायगा क्योंकि सुखकर्ता है ॥

अब आगे क्रम से उदाहरण कहते हैं

हेतुविपरीत औषधि–जैसे शीतकफज्वर में सोंठ–तो उसमें प्रथम जानना चाहिये कि यहां हेतु कौन है ? वात (सर्दी) उस वायु का शीतल धर्म है, तो शीत कफ कब शान्त हो जब शीत कफ नाशक औषधी मिले। ऐसी ओषधि सोंठ है जो शीत कफ का नाश करती है। इसलिये शीतकज्वर में हेतु विपरीत औषधि सोंठ हुई। इसी प्रकार हेतुविपरीत व्याधि जैसे थकावट और सर्दीसे उत्पन्नबुखार में माँस का रस और चावल, इसमें हेत कौन–श्रम और सर्दी, ये कब शान्त हो, जब श्रम और सर्दी नाशक अन्न (पथ्य) मिले। ऐसा पथ्य क्या है–माँस रस और चावलों का भात, ये श्रम और सर्दी के विपरीत है अर्थात् नाश करने वाले हैं। ऐसे ही हेतुविपरीत बिहार–जैसे दिन में शयन करने से उत्पन्न कफ पर रात्रि में जागना यहाँ पर हेत क्या है–दिन का सोना, उससे उत्पन्न दोष क्या कि

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

कफ, ये कब शान्ति को प्राप्त हो जब कफ नाशक विपरीत आचरण कराया जाय, यथा निशि जागरण करना, तो रात्रि में जागने से दिवाशयनोत्पन्न कफका नाश होता है । इसी प्रकार और उदाहरण व्याधिविपरीत पूर्वोक्त आगे लिखे हुए चक्र में सज्जन महानुभाव समझने की अनुकम्पा करें ।

उदाहरण-

नाम	औषध	अन्न	विहार
हेतुविपरीत	शीतज्वर में उष्ण गुणकर्ता औषधि शुंठी	श्रम और सर्दी केरोगपर मांस कारसऔरभात	दिवाशयन से उत्पन्न कफ रोग पर विपरीत कार्य निशि जागरण करना
व्याधिविपरीत	दस्तरोग में दस्तनाशक औषधि पाठा आदि	अतिसार में अतिसारनाशक पथ्य मसूर	उदावर्तरोगमेंशब्दयुक्त अपान वायु का निकलना मंत्र औषध भक्षण, देव आचार्य पूजा ।
हेतुव्याधिविपरीत	वायु की सूजन में दशमूलादि क्वाथ शोथ का नाशकहै	कफकीसंग्रहणी में मठाका पीना लाभकारकहै	दिनके सोने में स्निग्ध जो कफ मातिस में विपरीत स्निग्धतानाशक रात्रि जागरण
हेतुविपर्यस्तार्थकारी	जैसे पित्त प्रधान व्रण शोथ में पित्तकारक उष्ण पिंडी कावांधना	पित्तशोथ में दाह करने वाला अन्न खाना	जैसे वायु से उत्पन्न उन्माद रोग में त्रास का देना ।
व्याधिविपर्यस्तार्थकारी	कफ रोग में वमनकर्ता मैनफल आदि	दस्तों में दस्तकारक दुग्ध देना	कै रोग में हस्त का अंगूठा गले में कर वमन करना ।
हेतुव्याधिविपर्यस्तार्थकारी	जैसे अनिल रोग पर गरम अगर आदि लेप	मदात्यय रोग में मदकारक मद्य पीना	व्यायाम में उत्पन्न वातरोग में जल का तैरना ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अनुपशय के लक्षण

विपरीतोऽनुपशयो व्याध्यसात्म्यमिति स्मृतः ॥९॥

जो लक्षण उपशय के कहे हैं, उससे विपरीत अनुपशय के हैं और व्याधि का असात्म्य अनुपशय का पर्यायवाचक शब्द है ॥९॥

सम्प्राप्ति के लक्षण

यथा दुष्टेन दोषेण यथाचानुविसर्पता ॥
निवृत्तिरामस्याऽसौ सम्प्राप्तिर्जातिरागतिः।१०।

वात, पित्त, कफ इन तीनों दोषों का कुपित होना अनेक प्रकार का कहा है । स्वकारण अथवा दूसरे के कारण से दोष कुपित होकर स्वस्थान को त्यागकर शरीर में ऊपर नीचे तिरछे विचरते हैं, उस विचरने से जो रोग उत्पन्नहो उसको सम्प्राप्ति कहतेहैं । जाति और आगति ये सम्प्राप्ति के पर्यायवाचक शब्द हैं, अर्थात् कुपित दोषों का आमाशय में पहुंचकर इधर उधर गमन करने से रस की बहने वाली नाड़ियों के मार्गों को रोकने से, पक्वाशय में रहने वाली अग्नि को बाहर निकालने से तथा उसी जठर अग्नि से सर्व देह के गर्म होने से जो ज्वर निश्चय किया जाय उसी को सम्प्राप्ति कहते हैं ॥१०॥

सम्प्राप्ति के भेद संख्यारूप सम्प्राप्ति के लक्षण

संख्याविकल्पप्राधान्यबलकालविशेषतः ॥
सा भिद्यते यथात्रैव वक्ष्यन्तेऽष्टौज्वरा इति।११।

संख्या, विकल्प, प्राधान्य, बल काल इन भेदों से सम्प्राप्ति पाँच प्रकार की है । संख्यारूप सम्प्राप्ति के लक्षण कहते हैं—जैसे आठ प्रकार का ज्वर, पाँच प्रकार की खाँसी इत्यादि रोगों की गणना को संख्यारूप सम्प्राप्ति कहते हैं ॥११॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

विकल्परूप संप्राप्ति के लक्षण, प्राधान्यरूप संप्राप्ति के लक्षण

दोषाणां समवेतानां विकल्पोऽशांशकल्पना ।।
स्वातन्त्र्यपारतन्त्र्याभ्यां व्याधेः प्राधान्यमादिशेत् ।।१२।

विकल्परूप संप्राप्ति के लक्षण कहते हैं—मिले हुए दोषों के अशाँश का अनुमान करना उसको विकल्प रूप-संप्राप्ति कहते हैं। व्याधिकी स्वतन्त्रता और परतन्त्रता करके प्रधानता और अप्रधानता कही है, जैसे स्वतन्त्र ज्वर की प्रधानता और ज्वराधीन श्वास आदि रोगों की अप्रधानता कही है, उसे प्रधान्यरूप संप्राप्ति कहतेहैं ।१२।

बलरूप संप्राप्ति के लक्षण, कालरूप संप्राप्ति के लक्षण

हेत्वादिकार्त्स्न्यावयवैर्बलाबलविशेषम् ।।
नक्तंदिनर्तुभुक्तांशैर्व्याधिकालो यथामलम् ।१३।

हेतु आदि शब्दों से पूर्वरूप और रूप इनके सब लक्षण मिलने से व्याधि को बलवान जानना और अल्प लक्षण मिलने से कमजोर समझना, ये बलरूप संप्राप्ति के लक्षण हैं। रात्रि, दिवस, ऋतु वसन्तादि आहार इनका अंश कहिये, एकदेश उसको यथादोष वात पित्त कफ के अनुसार व्याधि का काल अर्थात् रोज के घटने बढ़ने का समय जानना, कालरूप संप्राप्ति का लक्षण कहा है। उदाहरण दिखाते हैं–जैसे रात्रि के तीन भाग करने से प्रथम भाग कफ का, दूसरा मध्य भाग पित्त का, तीसरा अन्त्य भाग वायु का हुआ, उसी प्रकार दिन के तीन भाग करने से पूर्वाह्न भाग कफ का, मध्याह्न पित्त का, अपराह्न वायु का हुआ। ऐसे ही ऋतु से वसन्तऋतु में कफ, ग्रीष्म ऋतु में पित्त, और वर्षा ऋतु में वात कुपित हुआ करता है। ऐसे ही भोजन का–भोजन करने के समय कफ का, पचने के समय पित्त का, जब भले प्रकार परिपक्व हो गया जब वात का समय इसके

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

जानने का कारण यह है कि जिस दोष का जो समय कहा है उसका उसी समय में जान लेना कठिन मालूम नहीं पड़ता है ॥१३॥

निदानपंचक का उपसंहार

इति प्रोक्तो दिनार्थः स व्यासेनोपदेक्ष्यते ॥१४॥

इति कहिये यह सूक्ष्म रूप से जो निदानार्थ कहा उसे विस्तार पूर्वक प्रत्येक रोग के निदान पूर्वरूपादि करके कहते हैं ॥१४॥

सर्वेषामेव रोगाणां निदानं कुपिता मलाः ॥
तत्प्रकोपस्य तु प्रोक्तं विविधाऽहितसेवनम् ॥१५॥

वात पित्त कफ. ये मल कुपित होकर सर्व रोगों के कारण होते हैं और उन वात पित्त कफ दोषों के कोप का हेतु अनेक प्रकार का अपथ्य सेवन करना है ॥१५॥

निदानार्थकरो रोगो रोगस्याप्युपजायते ।
तद्यथा ज्वरसंतापाद्रक्तपित्तमुदीर्यते ॥१६॥
रक्तपित्ताज्ज्वरस्ताभ्यां श्वासश्चाप्युपजायते ॥
प्लीहाभिवृद्धया जठरं जठराच्छोफ एव च ॥१७॥
अर्शोभ्यो जाठरं दुःखं गुल्मश्चाप्युपजायते ॥
प्रतिश्यायादथोकासः कासात्संजायते क्षयः ॥१८॥

कोई प्रश्न करे कि जो पहले कह आये हैं यही निदानहै अथवा इसके अलावा और है ? अतः कहतेहैं-रोगका रोगही निदान होता है । जो निदान से काम होता है वह रोग से भी हो सकता है । इसलिये दृष्टान्त देकर कहते हैं-यथा ज्वर सन्ताप से रक्तपित्त उत्पन्न होता है और रक्तपित्त से ज्वर और रक्तपित्तज्वर से श्वाँस पैदा होता है अपरंच यथा प्लीहा के बढ़ने से उदर रोग और उदर रोग से शोथ और बवासीर से जैसे उदर रोग और वाइगोला और जुकाम से खांसी और खाँसी से क्षय होता है ॥१६॥१७॥१८॥

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

क्षयो रोगस्य हेतुत्वे शोषस्याप्युपजायते ॥
ते पूर्व केवला रोगः पश्चाद्धेत्वर्थकारिणः ।१९।

यह क्षयरोग (राजक्ष्मा) क्षय रोगों में राजा है, इसको प्रकट करते हैं। वह रोग प्रथम स्वतन्त्र थे, जब बल मिल गया तो वही रोग बलवान होकर रोगों को उत्पन्न करने वाले होते हैं, जैसे ज्वर से रक्तपित्त होता है ॥१९॥

कश्चिद्धि रोगो रोगस्य हेतुर्भूत्वा प्रशाम्यति ॥
न प्रशाम्यति चाप्यन्यो हेत्वर्थं कुरुतेऽपि च ॥
एवं कृच्छ्रतमा नृणां दृश्यते व्याधिसंकराः ॥ २० ॥

जैसे कोई रोग दूसरे रोग को प्रकट कर आपशान्ति को प्राप्त हो जाता है, जैसे प्रतिश्याय रोग आप शान्त नहीं होता और खांसी उत्पन्न होतीहै और कोई रोग दूसरे रोगको उत्पन्न कर आप जैसा का तैसा बना रहता है, जैसे बवासीर नहीं आता है और गुल्म तथा उदर रोग उत्पन्न हो जाते हैं, इस प्रकार आदमियों के घोर दुःख देने वाले मिले हुए रोग देखने में आते हैं। विशेष करके चिकित्सा रोग के माफिक न होने से यह रोग कष्टसाध्य हो जाते हैं ॥ २० ॥

तस्माद्यत्नेन सद्वैद्यैच्छद्भिः सिद्धिमुत्तमाम् ॥
ज्ञातव्यो वक्ष्यते योऽयं ज्वरादीनां विनिश्चयः ॥२१॥

इसी कारण उत्तम सिद्धि की इच्छा करने वाले सद्वैद्यों को ज्वरादि रोगों के लक्षण जो आगे कहते हैं उन्हें यत्न से जानने की कोशिश करनी चाहिए ॥२१॥

इति श्री पण्डित चोखेलाल निर्मितायां कृष्णानन्दिनी भाषाटीकायां
माधवनिदाने सर्वरोगनिदानादि पञ्चकथनं समाप्तम् ॥ १ ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ज्वरनिदान ।

तदुक्तं चरके ।

देहेन्द्रियमनस्तापी सर्वरोगाग्रजो बली ॥
ज्वरः प्रधानो रोगाणामुक्तो भगवता पुरा ॥१॥

अब सम्पूर्ण शरीर के रोगों में प्रथम उत्पन्न होने से बलवान देह, इन्द्रिय, मनकी तपायमान करने से, जन्म-मृत्यु का कारण होने से स्थावर, जङ्गम प्राणियों में स्थिति होने से सम्पूर्ण शरीर के रोगों में चरक, सुश्रुत आदि ऋषियों ने ज्वर राजा कहा है ।

तन, इन्द्रिय, मनको तपायमान करने से रोगों में प्रथम उत्पन्न होने से बलवान ज्वर को सब रोगों में प्रधान कहा है ।

ज्वर की उत्पत्ति ।

दक्षापमानसंक्रुद्धरुद्रनिःश्वाससम्भवः ॥
ज्वरोऽष्टधापृथग्द्वंद्वसंघातागंतुजः स्मृतः ॥१॥

दक्ष प्रजापति के किये हुए अपमानसे कुपित श्री शंकर भगवान के श्वांस से प्रगट जो ज्वर सो आठ प्रकार के हैं—वात, पित्त, कफ, द्वंद्वज, सन्निपातज और अगंतुज, ऐसे मिलकर सूक्ष्म रूप से ज्वर आठ प्रकार के हैं ॥ २ ॥

इस श्लोक में 'निःश्वाससम्भवः' यह जो पद धरा है, जो श्वास इस जगह क्रोध के लक्षण करके कहा है किन्तु ज्वर की श्वास से उत्पत्ति नहीं है । क्योंकि जैसे सुश्रुत में लिखाहै यथा "रुद्र कोपाग्नि संभूतः सर्वभूतप्रतापनः" अर्थात् कुपित रुद्र ने मस्तक में स्थित तीसरे अग्निमय नेत्र को छूकर आग्नेय बाण निर्माण किया तथा

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

'च चरके स्पृष्ट्वा ललाटे चत्त्रैर्दग्ध्वातानसुरान्प्रभुः । वाशं क्रोधानि सेतक्षमस्त्रजच्छत्रु नाशनम् ।' इत्यादिक वचनों से ज्वर की पित्त प्रकृति जाननी, तात्पर्य यह है सबज्वरे पित्त के विरुद्ध क्रिया न करै सो वाग्भट्ट ने कहा है यथा–(उष्मापित्तादृते नास्ति नात्युष्माणं विनाज्वरः । तस्मात्पित्तविरुद्धानि त्यजेत्पित्ताधिकेऽधिकम् इति) अर्थात् गर्मी पित्त के बिना नहीं होती और ज्वर गर्मी के बिना नहीं होता । इसी से ज्वर पित्त विरुद्ध क्रिया नहीं करनी चाहिये और पित्तज्वर में विशेष करके पित्त विरुद्ध क्रिया त्याज्य है । अन्य आचार्य कहते हैं–श्रीरुद्र से उत्पत्ति होने से ज्वर देवता है इसलिये ज्वर का पूजन करना चाहिये । जैसे विदेह का वचन है–ज्वरस्तु पूजनेर्वापि सहसैवोपशम्यति और ज्वरका स्वरूप भी हरिवंशमें लिखा है यथा–'ज्वरस्त्रिपादस्त्रिशिराः षडभुजो नवलोचनः । भस्म प्रहरणा रौद्रः कालान्तकयमेपमः ।' अर्थात् ज्वर के तीन चरण, तीन मस्तक, छैः भुजा, नौ नेत्र, भस्मयुक्त देह रौद्र काल का भी काल और यमराज के समान है ॥

ज्वर सम्प्राप्ति ।

मिथ्याहारविहाराभ्यां दोषा ह्यामाशयाश्रयाः ।
बहिर्निरस्य कोष्ठाग्निं ज्वरदाः स्यू रसागुनाः ॥३॥

मिथ्या आहार (देश,काल,प्रकृति आदि से विरुद्ध और संयोग विरुद्ध अन्न), मिथ्या विहार (देहके पुरुषार्थ से विरुद्ध कार्य करना) इन कारणों से दुष्ट भये जो वात पित्त कफ दोष सो नाभिस्तन के बीच आमाशय में प्राप्त हो रस को बिगाड़ कर कोष्ठ स्थान में रहने वाली अग्नि को बाहर निकाल कर उत्पन्न करने वाले होते हैं ।३।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ज्वर के लक्षण ।

स्वेदावरोधस्संतापः सर्वांगग्रहणं तथा ॥
युगपद्यत्र रोगे तु स ज्वरो व्यपदिश्यते ॥ ४ ॥

जिस रोग में पसीना नहीं आवै, शरीर में सन्ताप अधिक हो और सर्व देह में एकही समय पीड़ा हो, उसको ज्वर कहते हैं ॥४॥ शंका—क्योंजी पित्तज्वर में तो पसीना आता है, तो इस श्लोक में विरुद्धता आती है ? इसका उत्तर यह है–'स्विद्यते अनेनेति स्वेदः' इस व्युत्पत्ति करक स्वेद कहिये अग्नि तिसका अवरोध कहिये दोष की व्याप्ति ऐसा अर्थ करने से श्लोकार्थ में विरुद्धता नहीं पड़ती ॥

ज्वर का पूर्वरूप ।

श्रमोरतिर्विवर्णत्वं वैरस्यं नयनप्लवः ॥
इच्छा द्वेषो मुहुश्चापि शीतवातातपादिषु ॥ ५ ॥
जृम्भांगमर्दो गुरुता रोमहर्षोऽरुचिस्तमः ॥
अप्रहर्षश्च शीतं च भवत्युत्पित्सति ज्वरे ॥ ६ ॥

बिना कारण ही काम करने में अनुत्साह हो अथवा खेलने में अरुचि, शरीर में मलीनता, मुँह में विरसता, नेत्र आँसुओं से व्याप्त और सर्दी, गर्मी, पवन–इनकी बारम्बार अभिलाषा हो और बारम्बार अनिच्छा हो जंभाई आना, अङ्गों का टूटना, देह में भारापन, रोमाँचों का खड़े होना, अन्न में द्वेषतम का प्रवेश होना, शीत का लगना––ये लक्षण जब ज्वर उत्पन्न होता है, तब होते हैं ॥ ५ ॥ ६ ॥

सामान्यतो विशेषात्तु जृंभात्यर्थं समीरणात् ॥
पित्तान्नयनयोर्दाहः कफान्नान्नाभिनन्दनम् ॥ ७ ॥

विशेषतः वातज्वर में जंभाई अत्यन्त आती है, पित्तज्वर में

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

नेत्रों में जलन होती है और कफ ज्वर में विशेष करके अन्न में अरुचि पैदा हो जाती है ॥ ७

वातज्वर के लक्षण ।

वेपथुर्विषमो वेगः कंठोष्ठमुखशोषणम् ॥
निद्रानाशः क्षवः स्तंभो गात्राणीं रौक्ष्यमेव च ॥ ८ ॥
शिरोहृद्गात्ररुग्वक्त्रवैरस्यं गाढविट्कता ॥
शूलाध्माने जृंभणं च भवन्त्यनिलजे ज्वरे ॥ ९ ॥

कम्पायमान शरीर होना ज्वर का विषम वेग कंठ, ओठ, मुख इनका सूख जाना, निद्रा का न आना, छींक अवरोध होना, देह में रूखापन होना, नेत्र, विष्ठा, मूत्र–इनका काला होना, मस्तक, हृदय में अत्यन्त पीड़ा होय, मुखका मीठा होना, दस्तका न हो दर्द शरीर में होना, अफरा जंभाइयों का अत्यन्त प्रकोप होना, ये वात ज्वर के लक्षण हैं ॥ ८ ॥ ९ ॥

पित्तज्वर के लक्षण ।

वेगस्तीक्ष्णोऽतिसारश्च निद्राऽल्पत्वं तथा वमिः ॥
कंठोष्ठमुखनासानां पाकः स्वेदश्च जायते ॥ १० ॥
प्रलापो वक्त्रकटुता मूर्च्छा दाहो मदस्तृषा ॥
पीतविण्मूत्रनेत्रत्वक् पैत्तिके भ्रम एव च ॥ ११ ॥

ज्वर अत्यन्त तीक्ष्ण वेग होना, पित के वेगसे दस्त पतले होना, नींद थोड़ी आवे, पित्त का कफ के स्थान में पहुंचने से वमन का होना । कंठ, होठ, नाक, मुख इनका पकना, पसीने का आना, बकना, मुँह का कटु होना, मूर्छा दाह, पागलपन दाह, मल-मूत्र, नेत्र, देह के चर्म का पीला होना तथा भ्रम, ये लक्षण पित्तज्वर में होते हैं ॥ १० ॥ ११ ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

कफज्वर के लक्षण ।

स्तैमित्यं स्तिमितो वेग आलस्यं मधुरास्यता ॥
शुक्लमूत्रपुरीषत्वक्स्तम्भस्तृप्तिरथापि च ॥ १२ ॥
गौरवं शीतमुत्क्लेदो रोमहर्षोऽतिनिद्रता ॥
प्रतिश्यायोऽरुचिः कासः कफजेऽक्ष्णोश्च शुक्लता ।१३।

गीले कपड़े से देह को ढक देने से जैसा हो ऐसा ज्ञात हो, ज्वर का वेग मन्दा हो, आलस्य, मुख का मीठा तथा खारी होना, मल, मूत्र का सफेद रंग होना, देह का जकड़ना, तृप्त सरीखा अन्न में द्वेष पैदा हो, देह में भारापन, सर्दी का लगना, डकार का उगना अन्य ऋषियों के मत से कफ का थूकना, रोमांच का होना, निद्रा का अत्यन्त आना, रस के बहने वाली नाड़ियों के मार्ग का रुकना, दस्त का थोड़ा उतरना, पसीना मुख में नमक का सा स्वाद हो, देह का थोड़ा उष्ण होना, वमन होना, लार का गिरना, मुख नाक से कफ का झड़ना, अन्न में अरुचि, खांसी, नेत्र सफेद रंग के हों, ये लक्षण कफ ज्वर के हैं ॥ १२ ॥ १३ ॥

वातपित्तज्वर और वातकफज्वर के लक्षण ।

तृष्णा मूर्च्छा भ्रमो दाहः स्वप्ननाशः शिरोरुजा ॥
कण्ठास्यशोषो वमथू रोमहर्षोऽरुचिस्तमः ॥ १४ ।
पर्वभेदश्च जृम्भा च वातपित्तज्वराकृतिः ॥
स्तैमित्यं पर्वणां भेदो निद्रागौरवमेव च ॥ १५ ॥
शिरोग्रहः प्रतिश्यायः कासः स्वेदाप्रवर्तनम् ॥
संतापो मध्यवेगश्च वातश्लेष्मज्वराकृतिः ॥ १६ ॥

प्यास, मूर्छा, बेहोशी, दाह, निद्रा का न आना, शिर में पीड़ा

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

होना, कंठ, मुख का शुष्क होना, वमन का होना, रोमांच, अरुचि तम प्रवेश का प्रदर्शन होना, शरीर की संधियों में अत्यन्त पीड़ा और जंभाई का आना ये वातपित्तज्वर के लक्षण हैं ॥ गीले वस्त्र से देह को आच्छादित करने से जैसा हो ऐसा मालूम हो शरीर के जोड़ों में पीड़ा, नींद का आना, देह में भारीपन, शिर भारी, नाक से पानी का गिरना, खाँसी स्वेद का आना, शरीर में दाह होना, ज्वर वेग मध्यम हो ये वातश्लेष्म के लक्षण हैं ॥ १४ से १६ ॥

पित्तकफज्वर के ल

लिप्ततिक्तास्यता तंद्रा मोहः कासोऽरुचिस्तृषा ॥
मुहुर्दाहो मुहुः शीतं श्लेष्मपित्तज्वराकृतिः ॥ १७ ॥

मुख कफ से सना हो तथा पित्त के जोर से मुँह कडुआ हो, तन्द्रा, मूर्च्छा, खांसी, अरुचि प्यास बारम्बार दाह हो, बारम्बार सर्दी का लगना, सुश्रुतोक्त लक्षणों से देह का जकड़ना, स्वेद-कफ-पित्त का गिरना, ये पित्तकफज्वर के लक्षण हैं ॥ ७ ॥

सन्निपात ज्वर के लक्षण ।

क्षणे दाहः क्षणे शीतमस्थिसंधिशिरोरुजा । सास्रावे कलुषे रक्ते निर्भुग्ने चापि लोचने ॥१८॥ सस्वरौ सरुजौ कर्णौ कंठःशूकैरिवावृतः । तन्द्रामोहः प्रलापश्च कासः श्वासोऽरुचिर्भ्रमः ॥१९॥ परिदग्धा खरस्पर्शा जिह्वा स्रस्तांगता परम् ॥ ष्ठीवनं रक्तपित्तस्य कफेनोन्मिश्रितस्य च ॥२०॥ शिरसो लोठनं तृष्णा निद्रानाशो हृदि व्यथा ॥ स्वेदमूत्रपुरीषाणां चिराद्दर्शनमल्पशः ।२१। कृशत्वं नातिगात्राणां सततं कण्ठकूजनम् । कोष्ठानां श्यावरक्तानां मण्डलानां

च दर्शनम् ॥२२॥ मूकत्वं स्रोतसां पाको गुरुत्वमुदरस्य च ॥ चिरात्पाकश्च दोषाणां सन्निपातज्वराकृतिः ॥२३॥

अचानक क्षण में दाह, क्षण में शीत का प्रकोप हड्डी संधि शिर इनमें दर्द, आंसुओं से व्याप्त काले और लाल तथा फटे से नेत्र हो जावें, कानों में शब्द तथा पीड़ा का होना, गले में कांटे पड़ जाँय, तन्द्रा बेहोशी हो, व्यर्थ बकवाद करै, खांसी श्वास, अन्न में अरुचि भ्रम ये हो, जिह्वा काली और खर्दरी गौ जीभ के समान हो, पित्त और रक्तमिश्रित कफ थूके, मस्तक को इधर उधर पटके, प्यास बहुत लगे, नींद न आये, हृदय में पीड़ा, पसीना, मल मूत्र इनका बहुत देर में थोड़ा उतरना, दोषों के पूर्ण होने से देह का कृष न होना, गले में कफ का बोलना, खून से काले लाल चकतों का होना, अवाज बहुत कम निकले, कान, नाक, मुख इत्यादि छिद्रों का पकना, उदर का भारी होना, वात–पित्त इनका देर में पाक हो, शीत का लगना, दिन में नींद का अत्यन्त आना, रात्रि में जागना अथवा निद्रा का न आना, पसीनों का आना और नहीं आना, गीत गाना, नाचना, हँसना, रोना और चेष्टा बदल जाय इत्यादि लक्षण सन्निपात ज्वर के हैं ॥ १८ से २३ ॥

शङ्काः—क्योंजी वातादिक दोषों के आपस में विरुद्ध गुण हैं फिर इनका एक ही साथ मिलकर एक ही कार्य करना न हो सके क्योंकि परस्पर विरुद्ध गुण होनेसे जैसे अग्नि और जलके विरुद्ध गुण होने से एक ही कार्य नहीं हो सकता, ऐसे ही वात–पित्त–कफ के विरुद्ध गुण हैं फिर ये एक ही साथ मिलकर कैसे सन्निपात को प्रकट कर सकते हैं ? उत्तरः—दृढ़बल आचार्य ने इस प्रकार कहा है, गुण विरुद्ध भी वात-पित्त-कफ दोष हैं तथापि एक साथ पैदा होने से तथा परस्पर समान गुण होने से एक दूसरे को शान्त नहीं कर सकता है, जैसे सर्प का विष सर्प को बाधक नहीं हो सकता।

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

* सन्निपात के भेद *

सुश्रुत और वाग्भट्ट के मत से सन्निपात एक ही तरह का है, परन्तु और आचार्यों के मताविक उल्बणादि भेदों करके बावन प्रकार का है--

भ्रमःपिपासादाहश्चगौरवंशिरसोतिरुक्।वातपित्तोल्बणेवि-
द्याल्लिङ्गंमन्दकफेज्वरे॥१॥शैत्यंकासोऽरुचिस्तन्द्रापिपा-
सादाहहृद्व्यथाः।वातश्लेष्मोल्बणेव्याधौलिङ्गपित्तानुगेवि-
दुः॥२॥छर्दिःशैत्यंमुहुर्दाहस्तृष्णामोहोस्थिवेदना।मन्द-
वातेऽव्यवस्यन्तिलिङ्गंपित्तकफोल्बणे॥३॥सन्ध्यस्थिशि-
रसःशूलंप्रलापोगौरवंभ्रमः।वातोल्बणेस्याद्द्व्यनुगेतृष्णाक-
ण्ठास्यशुष्कता॥४॥रक्तविण्मूत्रतादाहःस्वेदतृष्णाबल-
क्षयः।मूर्च्छाचेतित्रिदोषेस्याल्लिङ्गंपित्तेगरीयसि॥५॥आ-
लस्यारुचिहृल्लासदाहवम्यरतिभ्रमैः।कफोल्बणंसन्निपातं
तन्द्राकासेनचादिशेन्॥३॥प्रतिश्याच्छर्दिरालस्यंतन्द्रारु-
च्यग्निमार्दवम्।हीनवातेपित्तमध्येलिंगंश्लेष्माधिकेतम्॥
॥७॥हारिद्रमूत्रनेत्रत्वंदाहस्तृष्णाभ्रमोरुचिः। हीनवाते
मध्यकफेलिंगंपित्ताधिकेमतम्॥८॥शिरोरुग्वेपथुःश्वासः
प्रलापच्छर्द्यरोचकाः॥हीनपित्तेमध्यकफेलिंगवाताधिकेमत
म्॥९॥शीतकंगौरवंतन्द्राप्रलापोस्थिशिरोऽतिरुक्॥ही-
नपित्तेवातमध्येलिंगंश्लेष्माधिकेविदुः॥१०॥वर्चोभेदोग्नि
दौर्बल्यंतृष्णादाहोरुचिभ्रमः॥कफहीनेवातमध्येलिंगंपि-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

त्ताधिकेविदुः ॥११॥श्वासःकासप्रतिश्यायौमुखशोषोतिपार्श्वरुक्॥कफहीनेपित्तमध्येलिङ्गंवाताधिकेमतम् ।१२।

ये उल्वणादि भेद चरक के मत से कहे हैं परन्तु भालुकि आचाय ने अपने ग्रंथ में उल्वणादि लक्षण और ही प्रकार से कहे हैं, यथा :—

वातपित्ताधिकोयस्यसन्निपातःप्रकुप्यति। तस्यज्वरोङ्गमर्दस्तृट्तालुशोषप्रमीलकाः ॥ १३ ॥ आध्मानतन्द्रावरुचिश्वासकासभ्रमश्रमाः । पित्तश्लेष्माधिकोयस्यसन्निपातःप्रकुप्यति।१४। अन्तर्दाहोबहिःशीतस्यस्यतन्द्राविवर्द्धते। तुद्यतेदक्षिणंपार्श्वमुरःशीर्षगलग्रहाः ॥१५॥ नीष्ठीवेत्कफपित्तञ्चतृष्णाकण्ठश्चदूयते ॥ विड्भेदश्वासहिक्काश्चबाध्यन्तेसप्रमीलकाः ।१६। [विधुफल्गू-] च तौ नाम्ना सन्निपातावुदाहृतौ॥श्लेष्मानिलाधिकोयस्यसन्निपातःप्रकुप्यति ॥ १७ ॥ तस्यशीतज्वरोनिद्राक्षुत्तृष्णापार्श्वसंग्रह॥शिरोगौरवमालस्यंमन्यास्तम्भप्रमीलकाः ॥ १८ ॥ उदरंतुद्यतेचास्यकटीबस्तिश्चदूयते॥सन्निपातःसविज्ञेयो [मकरीति-] सुदारुणः ॥१९॥ वातोल्बणःसन्निपातोयस्यजन्तोःप्रकुप्यति ॥तस्यतृष्णाज्वरग्लानिपार्श्वरुग्दृष्टिसंक्षय : ।२०। पिण्डिकोद्वेष्टनंदाहऊरुसादोबलक्षयः।सरक्तंचास्यविण्मूत्रंशूतंनिद्राविपर्ययः ॥२१॥ निर्भिद्यतेगुदंचास्यबस्तिश्चपरिकृष्यति॥ आयम्यतेभिद्यतेचहिक्कतेविलपत्यपि ।२२।

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

मूर्च्छतिस्फर्यतेरौतिनाम्ना [-विस्फुरकः-] स्मृतः ॥ पित्तोल्बणः सन्निपातोयस्यजन्तोःप्रकुप्यति ॥२३ तस्यदाहज्वरोघोरोबहिरन्तश्चवर्द्धते॥शीतंचसेवमानस्यकुप्यतःकफ मारुतौ ॥२४॥ ततश्चैनंप्रधावन्तेहिक्काश्वासप्रमीलका ॥ विषूचिकापर्व्वभेदःप्रलापोगौरवंक्लमः ।२५। नाभिपार्श्वरुजातस्यस्विन्नस्याशुविवर्द्धते॥स्विद्यमानस्यरक्तंचस्रोतोभ्यःसंप्रपद्यते ॥२६॥ शूलेनपीड्यमानस्यतृष्णादाहश्चवर्द्धते ॥ असाध्यसन्निपातोयं[-शीघ्रकारीति-[कथ्यते।२७। नहिजीवत्यहोरात्रमेतेनाविष्टविग्रहः॥कफोल्बणः सन्निपातोयस्यजन्तोः प्रकुप्यति॥२८॥ तस्यशीतज्वरस्वप्नगौरवालस्यतन्द्रिकाः।छर्द्दिमूर्च्छातृषादाहतृष्णारोचकरुद्ग्रहाः ॥ २६ ॥ ष्ठीवनंमुखमाधुर्य्यंश्रोत्रवाग्दृष्टिनिग्रहः ॥

मतान्तर भेद ।

कुम्भीपाकःप्रौर्णुनावःप्रलापी ह्यतर्दाहोदंडपातोऽन्तकश्च॥
एणीदाहश्चाथहारिद्रसंज्ञोभेदाएते सन्निपातज्वरस्य ॥१॥
अजघोषभूतहासौ यंत्रापीडश्च संन्यासः ॥
संशोषी च विशेषास्तस्यैवोक्तास्त्रयोदशान्यत्र ॥ २ ॥

१ कुम्भीपाक, २ प्रौर्णुनाव, ३ प्रलापी, ४ अन्तर्दाह, ५दण्डपात, ६ अन्तक, ७ एणीदाह, ८ हारिद्रसंज्ञक, ६ अजघोष, १० भूतहास, ११ यंत्रापीड, १२ संन्यास, १३ संशोषी, ये तेरह प्रकार के सन्निपात होते हैं ॥

इन तेरहों के क्रम से लक्षण लिखे हैं ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

कुम्भीपाक ।

घोणाविवरगलद्बहुशोणासितलोहितं सार्त्ति ॥
विलुठन्मस्तकमभितः कुंभीपाकेन पीडितं विद्यात् ॥१॥

प्रौर्णुनाव ।

उत्क्षिप्य यः स्वमंगं क्षिपत्यधस्तान्नितांतमुच्छ्वसिति ॥
तं प्रौर्णुनावजुष्टं विचित्रकष्टं विजानीयात् ॥ २ ॥

प्रलापी ।

स्वेदभ्रमांगमर्दाः कंपो दवथुर्वमिर्व्यथा कण्ठे ॥
गात्रं च गुर्वतीव प्रलापिजुष्टस्य जायते लिंगम् ॥ ३ ॥

अन्तर्दाह ।

अन्तर्दाहः शैत्यं बहिःश्वयथुररतिरपि तथा श्वासः ॥
अङ्गमपि दग्धकल्पं सोंतर्दाहार्दितः कथितः ॥ ४ ॥

दण्डपात ।

नक्तं दिवा न निद्रामुपैति गृह्णाति मूढधीर्नभसः ॥
उत्थाय दण्डपाते भ्रमातुरः सर्वतो भ्रमति ॥ ५ ॥

अन्तक ।

संपूर्य्यते शरीरं ग्रन्थिभिरभितस्तथोदरं मरुता ॥
श्वासातुरस्य सततं विचेतनस्यांतकार्त्तस्य ॥ ६ ॥

एणीदाह ।

परिधावतीव गात्रे रुक्पात्रे भुजगपतंगहरिणगणः ॥
वेपथुमतः सदाहस्यैणीदाहज्वरार्त्तस्य ॥ ७ ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हारिद्र ।

यस्यातिपीतमंगं नयने सुतरां मलं ततोप्यधिकम् ।।
दाहोतिशीतता बहिरस्य स हारिद्रको ज्ञेयः ।।८।

अजघोष ।

छगलकशरीरगंधः स्कंधरुजावान्निरुद्धगलरंध्रः ।।
अजघोसषसन्निपातादाताम्राक्षः पुमान्भवति ।।९।।

भूतहास ।

शब्दादीनधिगच्छति न स्वान्विषयान् यदिंद्रियग्रामैः ।।
हसति प्रलपति परुषं स ज्ञेयो भूतहासार्त्तः ।।१०।।

यन्त्रापीड ।

येन मुहुर्ज्वरवेगाद्यंत्रेणेदावपीड्यते गात्रम् ।।
रक्त पीतं च वमेद्यंत्रापीडः स विज्ञेयः ।। ११ ।।

सन्यास ।

अतिसरति वमतिकूजति गात्राण्यभितश्चिरंनरःक्षिपति।
संन्यासपन्निपाते प्रलपति भुग्नाक्षिमंडलो भवति ।।१२।।

संशोषी ।

मेचकवपुरतिमेचकलोचनयुगलोमलोत्सार्गात् ।।
संशोषिणिसितपिटकामंडलयुक्तोज्वरो भवति ।। १३ ।।

इति कुम्भपाकादीनां त्रयोदशानां लक्षणानि ।

सन्निपात के विस्फारकादि १६ भेदोंको कहते हैं ।

१ विस्फारक २ शीघ्रकारी ६ कम्पन ४ बभ्रु ५ विद्धाख्य ६ शर्कराख्य ७ भल्लु ८ कूटपालक ९ संमोहक १० पाकल ११ याम्य १२ संग्राम १३ क्रकच १४ कर्कोटक १५ दारिक १६

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

व्यालाकृति, इन सोलह सन्निपातों के लक्षण ग्रन्थ बढ़ने के भय से हमने नहीं लिखे । अब प्रसंगवश से सम्पूर्ण सन्निपातों की उत्पत्ति और सम्प्राप्ति ग्रंथान्तरों से लिखते हैं ।

अम्लस्निग्धोष्णतीक्ष्णतीक्ष्णैः कटुमधुरसुरातापसेवाकषायैः
कामक्रोधातिरूक्षैर्गुरुतरपिशिताहारनीहारशीतैः ।।
शोकव्यायामचिंताग्रहगणवनितात्यंतसंगप्रसंगैः
प्रायःकुप्यंतिपुंसांमधुसमयशरद्वर्षणेसन्निपाताः ।। १ ।।

अम्ल—खट्टा, चिकना, गरम, तीक्ष्ण, कटु, मधुर, सूर्य की गर्मी का सेवन से कसैला रस का भक्षण करना, काम क्रोध रूखा भारी मांस, गरिष्ट पदार्थ के भक्षण करने से, नीहार, कौल सरदी व शोक व्यायाम, प्राण गवन चिन्ता, भूत प्रेत आदिक बाधा, स्त्री के साथ अत्यन्त रमण करना, इन कारणों से चैत्र, वैसाख, क्वार, कातिक, श्रावण, भादों इन महीनों में मनुष्य को सन्निपात ज्वर का कोप होता है ॥ १ ॥

आमोह्याहारदोषात्प्रथममुपचितोहं न वह्निशरीरे
श्लेष्मत्वंयातिभुक्तंसकलमपिततोऽसौकफोवायुदुष्टः ।।
स्रोतांस्यापूर्य्यरुध्यादनिलमथ मरुत्कोपयेत्पित्तमंतः सं-
मूर्छ्याऽन्योन्यमेतेप्रबलमितनृणांकुर्वतेसन्निपातम् ।।२।।

आहार के दोष से आम इकट्ठा होकर जठराग्नि को शान्ति करे और मनुष्य जो कुछ खाये सो सब कफ हो जाय, फिर यह कफ वायु से दूषित होकर पवन के बहने वाली नसों में प्रवेश कर उनको रोक दे, फिर वायु पित्त को कुपित करे, इसलिए तीनों दोष परस्पर कुपित होकर मनुष्यों के महा भयंकर सन्निपात रोग प्रकट करते हैं ॥ २ ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

संधिकश्चांतकश्चैवरुग्दाहश्चित्तविभ्रमः ।। शीताङ्गतंद्रिकः
प्रोक्तःकंठकुब्जश्चकर्णकः ।३। विख्यातोभुग्ननेत्रश्चरक्तष्ठीवी
प्रलापकः।।जिह्वकश्चेत्यभिन्यासस्सन्निपातस्त्रयोदश।४।

सन्निपात के लक्षण १३ प्रकार के अलग अलग लिखते हैं:- (१) संधिक, (२) अन्तक, (३) रुग्दाह, (४) चित्तविभ्रम, (५) शीतांग, (६) तन्द्रिक, (७) कंठकुब्ज, (८) कर्णक, (९) भुग्ननेत्र, (१०) रक्तष्ठीवी, (११) प्रलापक, (१२) जिह्वक, (१३) अभिन्यास । ये तेरह सन्निपात कहे हैं ।। ३ ।। ४ ।।

अथ तेरह सन्निपातों की मर्यादा ।

संधिकेवासराःसप्तचान्तकेदशवासराः । रुग्दाहेविंशतिर्ज्ञे-
यावह्न्यष्टौचित्तविभ्रमे ।। ५ ।। पक्षमेकंतुशीतांगेतन्द्रिके-
पंचविंशतिः ।। विज्ञेयावासराश्चैवकंठकुब्जेत्रयोदश ।६।
कर्णकेचत्रयोमासाभुग्ननेत्रेदिनाष्टकम् । रक्तष्ठीवीदशाहा-
निचतुर्दशप्रलापके ।७। जिह्वकेषोडशाहानिकलाभिन्या-
सलक्षणे ।। परमायुरिति प्रोक्तंम्रियतेतत्क्षणादपि ।।८।।

संधिक की ७ दिन की, अन्तक की १० दिन की, रुग्दाह की २० दिन की, चित्तविभ्रम की २४ दिन की, शीतांग की १५ दिन की, तंद्रिक की २५ दिन की, कंठकुब्ज की १३ दिन की, कर्णक की ३ महीना ९० दिन की, भुग्ननेत्र की ८ दिन की रक्तष्ठीवी की १० दिन की, प्रलापक की १४ दिन की जिह्वक की १६ दिन की, अभिन्यास की १६ दिन की—ये सन्निपात की अवधि के दिन हैं, परंतु रोगी शीघ्र ही मर जाता है ।। ५ से ८ ।।

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

उक्त सन्निपातों में साध्याऽसाध्य विचार ।

सन्धिकस्तन्द्रिकश्चैवकर्णकः कंठकुब्जकः ॥
जिह्वकश्चित्तविभ्रंशः षट् साध्याः सप्त मारकाः ॥ ९ ॥

१–सन्धिक, २–तन्द्रिक, ३–कर्णक, ४–कण्ठकुब्ज, ५–जिह्वक, ६–चित्तविभ्रंश, ये सन्निपात साध्य हैं, बाकी ७ असाध्य हैं ॥९॥

असाध्याकृच्छ्रसाध्य के लक्षण ।

दोषेविवृद्धेनष्टेग्नौसर्वसम्पूर्णलक्षणः ॥
सन्निपातज्वरोऽसाध्यः कृच्छ्रसाध्यस्ततोऽन्यथा ॥१०॥

वातपित्तकफ दोष वृद्धि को प्राप्त होकर अर्थात् जिस सन्निपात में सर्व लक्षण मिलतेहों और अग्नि मन्द होगई हो वह सन्निपात ज्वर असाध्य है और दोषों का थोड़ा प्रकोप हो, अल्प लक्षण हो, अग्नि कुछ चैतन्य हो, वह सन्निपात ज्वर कृच्छ् साध्य है ॥ १० ॥

मृत्युनासहयोद्धव्यंसन्निपातंचिकित्सता ॥
यस्तुतत्रभवेज्जेतासजेताऽऽमयसंकुले ॥ ११ ॥

जो वैद्य सन्निपात रोग की औषधि करता है वह मृत्यु के साथ युद्ध करता है, जो इस सन्निपात पर विजय प्राप्त करे वह सम्पूर्ण रोगों के समूहों के जीतने वाला होता है ॥ ११ ॥

तथा च ।

सन्निपातार्णवेमग्नं योभ्युद्धरतिमानवम् ॥
कस्तेननकृतोधर्मःकांचपूजांनसोर्हति ॥ १२ ॥

जो मनुष्य सन्निपात रूपी समुद्र में डूबेहुए मनुष्य को निकालता है उसने क्या धर्म नहीं किया अर्थात् सर्व पुण्य कर चुका, वह वैद्य सब पूजाओं के योग्य है ॥ १२ ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सन्धिक ।

पूर्वरूपकृतशूलसम्भवंशोषवातबहुवेदनान्वितम् ॥
श्लेष्मतापबलहानिजागरंसन्निपातमितिसन्धिकंवदेत्॥१॥

*** सन्धि सन्निपात के लच्चण कहते हैं ***

जिस सन्निपात ज्वर के पूर्व रूप में दर्द, खुश्की, वायु सम्बन्धी पीड़ा, कफ, का थूकना, सन्ताप, बल का नाश होना, रात्रि में जागन , लच्चण हों उसको सन्धिक कहते हैं ॥ १ ॥

अन्तक ।

दाहंकरोतिपरितापनमातनोति मोहंददातिविदधाति
शिरःप्रकंपम् ॥ हिक्कांकरोतिकसनंचसमाजुहोतिजानी
हितंविबुधवर्जितमंतकाख्यम् ॥ २ ॥

दाह हो, सन्ताप हो, मोह उत्पन्न हो, मस्तक कम्पायमान हो, हिचकी आवे और खाँसी हो, ऐसे लच्चणों युक्त पूर्वजों से त्याज्य अन्तक सन्निपात जानना ॥ २ ॥

रुग्दाह ।

प्रलापपरितापनप्रबलमोहमाद्यं श्रमः परिभ्रमणवेदनाव्यथितकण्ठमन्याहनुः ॥
निरंतरतृषाकरः श्वसनकासहिक्काकुलः सकष्टतरसाधनोभवतिहन्तरुग्दाहकः ॥ ३ ॥

व्यर्थ भाषण, सन्ताप, अत्यन्त मोह, अग्नि मन्द, अनायास श्रम और पीड़ा, कंठ मन्यानाड़ी इनमें अत्यन्त तकलीफ तृषा का अत्यन्त लगना, श्वास खांसी और हिचकी, इन लच्चणों से व्याप्त रोग को कष्टसाध्य रुग्दाह सन्निपात कहते हैं ॥ ३ ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

चित्तभ्रम ।

यदिकथमपिपुंसांजायतेकायपीडा भ्रममदपरितापोमो
हवै-कल्यभावः ॥ विकलनयनहासोगीतनृत्यप्रलापी ह्यभि
दध-तिअसाध्यंकेपिचित्तभ्रमाख्यम्॥४॥

जिसके किसी प्रकार की पीड़ा हो तथा बेहोशी हो, सन्ताप मोह विकलता, आँखों में बेकली हास्य करना, नाचना-गाना ,बकवाद करना ये लक्षण हों उसको असाध्य चित्तभ्रम सन्निपातकहते हैं ॥४॥

शीतांग ।

हिमसदृशशरीरोवेपथुः श्वासहिक्का शिथिलतसकलांगः
खिन्ननादोग्रतापः ॥ क्लमथुदवथुकासच्छर्द्यतोसारयुक्तस्त्व
रितमरणहेतुः शीतगात्रप्रभावात्॥५॥

बर्फ के समान ठन्डा शरीर हो, कम्प हो, श्वास तथा हिचकी हो, शिथिल गात्र हो जाय, शब्द मन्दा निकले, शरीर के भीतर विशेष पीड़ा हो, अनायास श्रम, मन का सन्ताप, खाँसी, वमन, दस्त हों इन लक्षणों करके प्राणों का नष्ट करने वाला शीतांग सन्निपात होता है ॥५॥

तन्द्रिक ।

प्रभूतातंद्रार्त्तिज्वर कफपिपासाकुलतरो भवेच्छ्यामा-
जिह्वापृथुलकठिनाकंटकवृता ॥ अतोसारःश्वासःक्लमथुप
रितापःश्रुतिरुजोभृशंकंठेजाड्यशयनमनिशंतंद्रकगदे॥६॥

तन्द्रा बहुत हो, दर्द, बुखार, कफ, प्यास से रोगी अत्यन्त व्याकुल होय, जिह्वा काले रंग की मोटी कठोर कांटेदार हो और

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

दस्त, श्वास, घृणा, सन्ताप, कानों में दर्द, कण्ठ में तकलीफ और निद्रा रात दिन आवे, ये सर्वलक्षण तन्द्रिक सन्निपात में होते हैं, ये कष्टसाध्य होता है ॥६ ॥

कंठकुब्ज ।

शिरोर्तिकंठग्रहदाहमोहकंपज्वरारक्तसमीरणार्त्तैः ॥हनुग्रह-
स्तापविलापमूर्छास्यात्कण्ठकुब्जःखलुकष्टसाध्यः ॥ ७ ॥

मस्तक में पीड़ा हो, कण्ठ में दाह हो, बेहोशी, कफज्वर, वातरक्त सम्बन्धी अत्यन्त पीड़ा होय, हनुग्रह सन्ताप व्यर्थ भाषण और मूर्च्छा, ये लक्षण कण्ठकुब्ज सन्निपात के हैं ये कष्टसाध्य है ॥ ७ ॥

कर्णक ।

प्रलापश्रुतिह्रासकंठग्रहांगव्यथाश्वासकासप्रसेकप्रभावम् ॥
ज्वरंतापकर्णौतयोर्गल्लपीडाबुधाःकर्णकंकष्टसाध्यंवदंति

व्यर्थ भाषण करे, बधिर होजाय, गले में शूल होय, अंगों में पीड़ा, श्वास, कास, स्वेद लार का गिरना, बुखार, दाह, कान और गाल इनमें पीड़ा, इन लक्षणों से युक्त ज्वर को कष्टसाध्य कर्णक सन्निपात कहते हैं ॥ ८ ॥

भुग्ननेत्र ।

ज्वरबलापचयःस्मृतिशून्यताश्वसनभुग्नविलोचनमोहितः ॥
प्रलपनभ्रमकंपनशोफवांस्त्यजतिजीवितमाशुसभुग्नदृक् ।६।

ज्वर हो शक्ति नष्ट हो जाय, बुद्धि नाश को प्राप्त हो, श्वास, तिरछी निगाह होजाय, बेहोशी, व्यर्थ बात करे, भ्रम, शरीर कांपे, और सूजन हो, ये लक्षण जल्दी मरने वाले भुग्ननेत्र वाले रोगी के होते हैं ॥ ६ ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

रत्कष्ठीवी

रक्तष्ठीवोज्वरमितृषामोहशूलातिसारा हिक्कध्मानभ्रमणदवथुश्वाससंज्ञाप्रणाशाः ॥
श्यामारक्ताधिकतररसनामण्डलोत्थानरूपारक्तष्ठीवीनिगदितइहप्राणहंताप्रसिद्धः १०

रक्त की वमन करे, ज्वर, वमन, प्यास, मूर्च्छा, दर्द, दस्त, हिचकी, अफरा (पेट का फूलना), जंभाई आना, संताप, श्वास, बल नाश, चैतन्यता का नष्ट होना, काली और लाल रंग की जिह्वा शरीर में रक्त के विकार से चकत्ते पड़ जाँय उसे प्राण नाश करने में प्रसिद्ध ज्वर को रक्तष्ठीवी सन्निपात कहते हैं ॥ १० ॥

प्रलापक ।

कम्पप्रलापपरितापनशीर्षपीडा प्रौढप्रभावपवमानपरोऽन्यचिन्ता ॥
प्रज्ञाप्रणाशविकलप्रचुरप्रवादःक्षिप्रंप्रयातिपितृपालपदंप्रलापी ॥ ११ ॥

कम्प होना, व्यर्थ बकवाद करना, संताप, मस्तक में पीड़ा विशेष जोर से हो, पवित्रता में तत्पर रहे, पर पुरुष की चिंता करे, मति भ्रष्ठ हो जाय, बिकल और व्यर्थ भाषण बहुत करे, इन लक्षणों से युक्त यमपुर गमन करने वाले को प्रलाप सन्निपात कहते हैं ॥११

जिह्वक ।

श्वसनकासपरितापविह्वलःकठिनकंटकपरीतजिह्वकः ॥
बधिरमूकबलहानिलक्षणोभवतिकष्टतरसाध्यजिह्वकः।१२।

श्वास, खांसी, संताप, विह्वल, कठोर और कांटे से व्याप्त जिह्वा बहिरा, मूक और शक्ति नाशक, इन लक्षणों से युक्त रोग को कष्टसाध्य जिह्वक सन्निपात कहते हैं ॥ १२ ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अभिन्यास ।

दोषत्रयस्निग्धमुखत्वनिद्रा वैकल्यनिश्चेष्टनकष्टवाग्मी ॥
बलप्रमाणः श्वसनादिनिग्रहोऽभिन्यासउक्तोनमृत्यु-
कल्पः ॥१३॥

तीनों दोषों के कोप से मुख पर चिकनापन आना, निद्रा अत्यन्त हो, बेकली हो, चेष्टाहीन होजाय, कष्ट से शब्द निकले, बल का नाश होना, श्वास आदि रुक जाय, ये लक्षण अभिन्यास सन्निपात में होते हैं । यह महा असाध्य मृत्यु के सदृश है ॥१३ ॥

सन्निपातोपद्रव ।

सन्निपातज्वरस्यांतेकर्णमूलमुदारुणः ॥
शोथःसंजायतेतेनकश्चिदेवप्रमुच्यते ॥ १४ ॥
ज्वरस्यपूर्वंज्वरमध्यतोवाज्वरांततोवाश्रुतिमूलशोथः ॥
क्रमादसाध्यःखलुकष्टसाध्यःसुखेनसाध्योमुनिभिःप्रदिष्टः१५

सन्निपात ज्वर शान्त होने के पश्चात् कर्णकमूल में अत्यन्त भयानक सूजन पैदा होती है, उस सूजन से कोई रोगी बचता है, प्रायः मृत्यु के ही मुख में प्राणी प्रवेश करता है । यदि यह सूजन ज्वर के पूर्व तो असाध्य है, ज्वर के बीच में होतो कष्टसाध्य है और ज्वर के वाद में उत्पन्न होतो साध्य है ऐसा बचन प्राचीन महर्षियों ने कहा है ॥ १४ ॥ १५ ॥

सद्यस्त्रिपञ्चसप्ताहद्दशाहाद्द्वादशादपि ॥
एकविंशद्दिनैःशुद्धःसन्नपातीसुजीवति ॥ १६ ॥

जिस दिन सन्निपात उत्पन्न हो उस दिन से लेकरतीन, पांच, सात दस और बारह दिन में तथा इक्कीस दिन तक सन्निपात वाला रोगी शुद्ध होकर जीता है ॥ १६ ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

त्रिदोष ज्वरों की साधारण मर्यादा ।

सप्तमीद्विगुणायावन्नवम्येकादशीतथा ॥
एषात्रिदोषमर्यादामोक्षायचवधायच ॥ १७॥
पित्तकफानिलबृद्धयाद्दशदिवसद्धादशाहसप्ताहात् ।
हंतिविमुंचतिपुरुषत्रिदोषजोधातुमलपाकात्॥१८।

जब से त्रिदोष उत्पन्न हो तब से लेकर ७ किंवा १४ और ९ किंवा १८ तथा ११ वा २२ दिवस तक ज्वरों की म्याद है । इस अवधि में या तो ज्वर शान्त हो या मृत्यु हो जाय । सात, नौ, ग्यारह दिन में मर्यादा ,वाताधिक, पित्ताधिक, कफाधिक सन्निपातों की जाननी । पित्त कफ बात इनकी वृद्धि दस वा बारह और सात दिन की है । इसमें त्रिदोष ज्वर धातुपातक होने से मृत्यु कर डाले या मलपाक होने से रोगी रोग मुक्त हो जाय दो कारण हैं ॥१७॥ १८॥

धातुपातक लक्षण ।

निद्राबलौजोरुचिवीर्यनाशो हृद्वेदनागौरवताल्पचेष्टा ॥
नष्टंभतायस्यकिलारतिःस्यात्सधातुपाकीमुनिभिःप्रदिष्टः१९

नींद, शक्ति, तेज, रुचि, वीर्य इनका नाश होना, हृदय में पीड़ा, देह में गुरुता, चेष्टाहीन हो जाय, पेट में अफरा हो जाय, मन स्थिर न रहे, ये लक्षण धातु पकने पर होते हैं धातुपाक कहते हैं कि रोग की वृद्धि बल का नाश होकर वीर्यादि धातुयुक्त मूत्रादिकों का पाक होय उसे धातुपाक कहते हैं ॥ १९ ॥

मलपाक लक्षण ।

दोषप्रकृतिवैकृत्यंलघुताज्वरदेहयोः ॥
इन्द्रियाणांचवैमल्यंदोषाणांपाकलक्षणम्॥२०॥

दोषों का स्वभाव बदल जाय, ज्वर कम हो जाय, देह में हलकापन हो, इन्द्रियों का स्वच्छ होना, ये मलपाक के लक्षण हैं। धातुपाक और मलपाक ये भगवान की ही इच्छा से ही होते हैं इसमें दूसरा और कोई कारण नहीं है ॥ २० ॥

आगन्तुक ज्वर ।

अभिघाताभिचाराभ्यामभिषंगाभिशापतः॥
आगंतुर्जायतेदोषैर्यथास्वंतंविभावयेत् ॥ २१ ॥

तलवार, छुरी, मुक्का, लकड़ी इत्यादि हथियारों के लगने से उत्पन्न ज्वर को अभिघातक ज्वर कहते हैं और उलटा मन्त्र जपने से लोह के श्रुवा से मारणार्थ सर्षपादिक होम अथवा कृत्या का प्रयोग करने से, वात आदि के चलने से उत्पन्न ज्वर को अभिचारज कहते हैं। काम, शोक, भय क्रोध, भूतादिकों के प्रवेश से उत्पन्न ज्वर को अभिषंगज कहते हैं। विप्र, आचार्य, वृद्धजन, महात्मा इनके शाप से प्रकट ज्वर को अभिशापज कहते हैं। ये चार प्रकार के आगन्तुक ज्वर होते हैं। इस ज्वर के आरम्भ में किसी प्रकार का प्रकाश नहीं होता पीछे दोष कुपित हो उनके लक्षण मिलाकर दो निर्णय करे। यथा—"कामशोकभयाद्वायु" अर्थात् काम, शोक भय से वायु कुपित होती है॥ २१ ॥

विषजन्य आगन्तुकज्वर ।

श्यावास्यताविषकृतेदाहोतीसारएवच॥
भक्तारुचिःपिपासाचतोदश्चदसहमूर्च्छया ॥ २२ ॥

अब आगन्तुक ज्वरों के हेतु भेद करके लक्षण कहते हैं-स्थावर जंगम जहर खाने से जो ज्वर प्रकट हो उस ज्वर से मुख काले रंग

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

का हो जाय और दाह तथा अतिसार होना, अन्नमें द्वेष, तृषा, सुई चुबने की सी व्यथा और मूर्छा इत्यादिक लक्षण होते हैं ॥ २२ ॥

औषधगन्धजनितज्वर ।

औषधीगन्धजेमूर्च्छाशिरोरुग्वमथुःक्षवः ॥

तीव्र औषधि के सूंघने से जो बुखार होय उसमें मूर्छा, मस्तक में पीड़ा, कै (उल्टी) छींक, ये लक्षण होते हैं ॥

कामज्वर के लक्षण ।

कामजेचित्तविभ्रंशस्तन्द्राऽलस्यमभोजनम् ॥२३॥
हृदयेवेदनाचास्य गात्रं च परिशुष्यति ॥

सुन्दर स्त्री के देखने से मनुष्य के चित्त में घोर कामदेव शक्ति की उत्पत्ति हो उससे प्रकट ज्वर के लक्षण कहते हैं कि मन का एकाग्र म रहना, बेहोसी आलस्य, अन्न में अरुचि, छाती में अत्यन्त व्यथा और तन कृश हो जावे ॥ २३ ॥

अथ भयशोक और कोपज्वर ।

भयात्प्रलापः शोकाच्च भवेत्कोपाच्च वेपथुः ॥२४॥

डरपने से और चिन्ता करने से प्रादुर्भूत बुखार में अनर्थ भाषण, क्रोध से उत्पन्न ज्वर में कम्प, ये लक्षण होते हैं ॥ २४ ॥

अभिचार और अभिघातज्वर के लक्षण ।

अभिचाराभिघाताभ्यांमोहस्तृष्णा च जायते ॥

अभिचार और अभिघात से उत्पन्न बुखार में मोह और तृष्णा होवे ॥

भूताभिषंगज्वर के लक्षण ।

भूताभिषंगादुद्वेगोहास्यरोदनकम्पनम् ॥ २५ ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

भूत प्रेतादिक बाधा से प्रकट बुखार में मन में उद्वेग, हँसना, रोना, काँपना ये लक्षण उत्पन्न होते हैं ।। २५ ।।

कामशोकभयाद्वायुः क्रोधात्पित्तंत्रयोमलाः ।।
भूताभिषंगात्कुप्यंतिभूतसामान्यलक्षणः ।।२६।।

काम, शोक, भय इनसे वायु कुपित होती है, कोप से पित्त कुपित होता है और भूतादिक के प्रवेश से तीनों दोष कुपित होते हैं और भी लक्षण हैं जैसे कि उन्माद निदान में जिन जिन सरग्रहों के लक्षण हँसना, रुदन करना, कम्पायमान होना इत्यादिक लक्षण होते हैं ।। २६ ।।

विषमज्वर की सम्प्राप्ति ।

दोषोऽल्पोऽहितसंभूतोज्वरोत्सृष्टस्यवापुनः ।।
धातुमन्यतमं प्राप्यकरोतिविषमज्वरम् ।। २७ ।।

जिस मनुष्य के ज्वर औषधाधिक भक्षण करने से शान्त होनेके बाद और प्रारम्भ से इकीस दिन बीतने पर तथा जीर्ण दशा होने पर कुपथ्य करने से वातपित्तादिक दोष पुनः अल्प कुपित हों, रस रक्तादि धातुओं में से किसी धातु में प्राप्त हो और उनको दोषयुक्त कर विषम ज्वर प्रगट करें वा शब्द करके आरम्भ से ज्वर होय यह सूचना करी 'यथा आरम्भात्विषमोयस्य' अल्प शब्द यह सूचित किया है कि वह दोष शक्ति होने से समयान्तर में शक्तिशाली होकर ज्वर करे और जो दोष बलवान है वह नित्य ज्वर उत्पन्न करता है विषम ज्वर के लक्षण भालुकि ने कहे हैं सो ऐसे कि अनियत काल में ठण्ड उष्ण करके विषम वेग ज्वर हो उस ज्वरको विषमज्वर कहते हैं और 'मुक्तानुबंधित्वंविषमारम्भम्' अर्थात् जो ज्वर त्याग दे और फिर प्रकट होजाय उसे विषम ज्वर कहते हैं २७ ।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

धातुगतज्वर के नाम ।

संततःसततोऽन्येद्युस्तृतीयकचतुर्थकौ ॥ सततंरसरक्तस्थः सोऽन्येद्युःपिशिताश्रितः ॥ मेदोगतस्तृतीयेह्नियस्थिमज्जागतः पुनः ॥ कुर्य्याच्चातुर्थिकंघोरमंतकंरोगशङ्करम् ॥ २८ ॥

संतत सतत् अन्येद्यु तृतीयक् और चातुर्थिक ये पाँच प्रकार के विषमज्वर कहे हैं । संतत शब्द करके संतत सतत् ये दोनों जानने अर्थात् रस धातु स्थित दोष संतत ज्वर करता है और रक्तस्थितदोष सतत् ज्वर करता है इससे संतत सतत् ये दोनों शब्द केवल संज्ञावाचक हैं सातत्यवाच नहीं हैं । यह दोष भी मांसगत् अन्येद्युष्क अर्थात् द्वाह्निक् एकतरा को करते हैं और मेदगत दोष तृतीयक ज्वर करते हैं और वे ही दोष अस्थिमज्जा में प्राप्त हुए कष्टदः मृत्युकर्त्ता अनेक रोगों से व्याप्त ऐसे चातुर्थिक ज्वर को उत्पन्न करते हैं ॥२८॥

संततज्वर के लक्षण

सप्ताहंवादशाहंवाद्वादशाहमथापिवा ॥
संतत्यायोविसर्गीस्यात्संततःसनिगद्यते ॥ २९ ॥

सात दिन पर्यन्त किंवा दस दिन पर्यन्त किंवा १२ दिनपर्यन्त एकसा जो बुखार रहे उतरे नहीं उसको संतत ज्वर कहते हैं सात दश बारह ये जो कहे हैं या वातपित्तकफ इनके उल्बणादि से कहे हैं यह संतत ज्वर त्रिदोष है क्योंकि इसका १२ पदार्थों का साथ होना है ऐसे वातादि दोष धातु के प्रमाण मूल और मल इनको एक ही काल में ग्रस कर संतत ज्वर प्रकट करै है । बारह पदार्थ ये हैं वातादि दोष ३ सप्तधात ७ मूत्र १ और मल १ मिलाकर बारह हुए २९

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

संततकादिकों के लक्षण ।

अहोरात्रेसततकोद्वौकालावनुवर्त्तते ॥ अन्येद्युष्कस्त्वहोरात्रमेककालंप्रवर्त्तते ॥ ३० ॥ तृतीयकस्तृतीयेऽह्नि-चतुर्थेऽह्निचतुर्थकः ॥ केचिद्भूताभिषंगोत्थंवदन्तिविषमज्वरम् ॥ ३१ ॥

काल छः हैं—१ पूर्वाह्न, २ मध्याह्न ३ अपराह्न, ४ प्रदोष, ५ अर्द्धरात्रि, ६ प्रत्यूष । पूर्वाह्न प्रदोष ये कफ के काल हैं, मध्याह्न और अर्द्धरात्रि ये पित्त का समय है, अपराह्न और प्रत्यूष ये वातके काल हैं । संततकज्वर दिन रात्रि में दो वक्त आता है, अन्येद्युष्क ज्वर दिन रात्रि में एक समय आता है, तृतीयक ज्वर जिस दिन आता है उससे तीसरे दिन आता है, चातुर्थिक ज्वर चोथे दिन आता है, कोई २ आचार्य भूताभिषंगोत्थ विषम ज्वर मानते हैं॥३०-३१

उत्कृष्ट दोष भेद करके तृतीयक चतुर्थों के दूसरे लक्षण ।

कफपित्तात्त्रिकग्राहीपृष्ठाद्वातकफात्मनः॥ वातपित्ताच्छिरोग्राहीत्रिविधःस्यात्तृतीयकः ॥३२॥ चातुर्थैकोदर्शयतिप्रभावं द्विविधंज्वरः ॥ जंघाभ्यांश्लैष्मिकःपूर्वं शिरसोऽनिलसंभवः ॥३३॥

तृतीयक ज्वर कफपित्त के जोर से तीन अस्थियों में बाधा देता है, वात पित्त कफ के जोर से पीठ को बाधित करता है वात पित्त के बल से शिर में अत्यन्त व्यथा उत्पन्न करता है । ऐसे तृतीयक ज्वर तीन प्रकार के हैं । त्रिकग्राही जो कहा इसका तात्पर्य यह है कि त्रिक वायु का स्थान है, उसके स्थान में कफ पित्त परस्थान में प्राप्त होने से निर्बल हो जाते हैं इससे तीसरे दिन ज्वर उत्पन्न करते हैं । यदि कफपित्त स्वस्थान पर स्थित रहें तो संतत ज्वर प्रगट करते

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हैं यह जैज्जट का ध्येय है । ऐसे ही शिर कफ का स्थान है और पीठ पित्त का स्थान है, इनमें अन्य दोषों के प्राप्त होने से दोष शक्तिहीन होकर तृतीयक ज्वर उत्पन्न करते हैं ॥३२॥३३॥

शङ्का—यदि त्रिक वात का स्थान है तो फिर आप पित्त कफ का उस स्थान में गमन कैसे कहते हो ? इसका समाधान है कि यह स्थान का नियम प्रकृतिस्थित दोषों का है, क्रुद्धित दोषों का नहीं कहा है क्योंकि कुपित दोषों का सर्वत्र गमन होता है, यह सुश्रुत का मत है । ऐसेही दोषों को परस्थानगतत्व होनेसे तथा दोषों की शक्तिहीन होने से चातुर्थिक ज्वर में भी इसी प्रकार जानना । चातुर्थिक ज्वर दो प्रकार की शक्ति प्रदर्शित कराता है सो ऐसे कफ अधिक जिसमें होवें वह प्रथम जंघाओं में व्याप्त होकर पश्चात् सर्व देह में पैदा होता है । वाताधिक जिसमें होवे प्रथम शिर में व्याप्त होकर सर्व देह में व्याप्त होता है । पांच प्रकार के विषम ज्वर प्रायः त्रिदोष से ही प्रगट होते हैं, यह चरक का मत है । हारीत ऋषि कहते हैं—चातुर्थिक ज्वर में पित्त प्रधान है इन विषम ज्वरों की उत्पत्ति वृद्ध सुश्रुत में इस प्रकार लिखी है कि कफ के पांच स्थान हैं, उनमें जिस जिस स्थान में दोष प्राप्त होते हैं वहाँ उसी उसी विषम ज्वर को उत्पन्न करते हैं । उन पाँच स्थानों के नाम लिखते हैं यथा—आमाशय १, हृदय २, कण्ठ ६, शिर ४ और संधि ५ । यहाँ आमाशय में दोष प्राप्त होने से संततक ज्वर दो समय आता है, हृदयस्थित दोष आमाशय में आने से एक समय ज्वर आता है, कण्ठ में स्थित दोष एक दिन में हृदय में आता है दूसरे दिन आमाशय में प्राप्त होकर ज्वर करे उसे तृतीयक ज्वर कहते हैं । मस्तक में स्थित जो दोष सो क्रम से कण्ठ हृदय आमाशय में तीन दिनमें प्राप्त हो चौथे दिन चातुर्थिक ज्वर उत्पन्न करते हैं और उन दोषों का उलट

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

कर पुनः स्वस्थान में पहुंचना उसी दिन होता है क्योंकि दोष वेगवान होते हैं और और दोष सन्धिस्थिति होते हैं तब प्रलेपक ज्वर उत्पन्न करते हैं ये विषम ज्वर के समान है, कारण इसका यह है कि सन्धि आमाशय में स्थिति है और सुश्रुत ने कहा है कि प्रलेपक यह विषम ज्वर है, धातुशोथ रोगियोंको क्लेशदायक है।

विषमज्वर के भेद।

विषमज्वरएवान्यश्चातुर्थिकविपर्ययः।।
समध्येज्वरयत्यह्नीह्यादावन्तेचमुंचति।।३४।।

चातुर्थिक ज्वर का उलटा यह द्वितीय विषम ज्वर है यह प्रथम और अन्त का दिन छोड़ कर बीच के दो दिन आता है यथा यह चातुर्थिक का विपर्यय है तैसे ही तृतीयक ज्वर का विपर्यय कहते हैं जैसे बीच के एक दिन ज्वर आवे और आदि अन्त के दिन नहीं आवै यह तृतीयक का विपर्यय जो एक काल छोड़ कर सब दिन रात्रि ज्वर रहे वह अन्येद्युष्क का विपरीत जानना। इन के विषय में ग्रंथकारों के तरह तरह के मत हैं विस्तार के भय से इस जगह नहीं लिखे हैं ।।३४।।

वातबलासक ज्वर।

नित्यंमन्दज्वरोरूक्षः शूनकस्तेनसीदति ।।
स्तब्धांगःश्लेष्मभूयिष्ठोनरोवातबलासकी ।।३५।।

वातबलासक नाम ज्वर जिस मनुष्य के होता है उस ज्वर में सूजन होती है और मन्द ज्वर सर्वदा बना रहता है, देह में शुष्कता होती है अङ्ग जिकड़ जाते हैं, कफ अत्यन्त हो जाता है, यह ज्वर वात और कफ से उत्पन्न होता है ।।३५।।

प्रलेपक ज्वर।

प्रलिंपन्निवगात्राणिघर्मेणगौरवेणच ।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

मन्दज्वरविलेपीचसशीतःस्यात्प्रलेपकः ॥ ३६ ॥

जिस बुखार में स्वेद से तथा रवि की ताप से अथवा शरीर के गौरव से मानो तन को लिप्त करदिया-सा प्रतीत हो, दूसरे कारण से मन्दबुखार हो, सर्दी लगे, यह बुखार कफ पित्त से उत्पन्न होता है और यह बुखार राजयक्ष्मा रोग में होता है इसको कोई त्रिदोषज कहते हैं इसको प्रलेपक ज्वर कहते हैं ॥ २६ ॥

विषमज्वर विशेष भेद ।

विदग्धेऽन्नरसेदेहेश्लेष्मपित्तेव्यवस्थिते ॥
तेनार्धंशीतलंदेहमर्धमुष्णंप्रजायते ॥ ३७ ॥

अन्न का रस बिगड़ने से शरीर में कफ पित्त दुष्ट होकर स्थित होने से अर्धांग ज्वर उत्पन्न करे है अर्थात् आधी देह कफ से ठण्डी और आधी देह पित्त से उष्ण होती है ॥ ३७ ॥

कायेदुष्टंयदापित्तंश्लेष्माचान्तेव्यवस्थितः ॥
तेनोष्णत्वंशरीरस्यशीतत्वंहस्तपादयोः ॥३८॥

जिस आदमी के कोठे में पित्त दूषित होवे और कफ हाथ पैरों में दूषित होकर स्थित हो उससे सर्व शरीर गर्म और हाथ पांव शीतल रहें ॥ ३८ ॥

इन्हींका विपरीत द्वितीय ज्वर ।

कायेश्लेष्मायदादुष्टःपित्तंचांतेव्यवस्थितम् ॥
शीतत्वंतेनगात्राणामुष्णत्वंहस्तपादयोः ॥ ३९ ॥

जिस समय कोष्ठ में कफ दूषित हो और पित्त हाथ पैरों में दुष्ट होकर मौजूद रहे तब तन ठंडा और हाथ पैर गर्म रहें ॥ ३९

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

शीतपूर्व ज्वर के लक्षण ।

त्वक्स्थौश्लेष्मानिलौशीतमादौजनयतोज्वरम् ॥
तयोः प्रशांतयोः पित्तमन्ते दाहं करोति च ॥४०॥

कफ और वात ये दूषित होकर त्वचा में स्थित हों अर्थात् रस धातु को प्राप्त कर प्रथम शीत ज्वर प्रकट करते हैं और जब इनका वेग शान्तिता को प्राप्त होता है तब पिछड़ी पित्त दाह उत्पन्न करता है ॥ ४० ॥

दाहपूर्व ज्वर के लक्षण ।

करोत्यादौतथापित्तंत्वक्स्थंदाहमतीवच ॥
तस्मिन्प्रशान्ते त्वितरौकुरुत:शीतमंततः ॥४१॥
द्वावेतौदाहशीतादिज्वरौ संसर्गजौस्मृतौ ॥
दाहपूर्वस्तयो:कष्ट:सुखसाध्यतमोऽपर: ॥ ४२ ॥

उसी प्रकार पहले पित्त रस धातु का आश्रय लेकर अतीव दाह उत्पन्न करता है, पीछे उसका वेग शान्त होकर वात कफ ये शीत प्रगट करते हैं । दाह पूर्वक और शीत पूर्वक ये दोनों बुखार त्रिदोष के सम्बन्ध से होते हैं ऐसा वाक्य ऋषियों ने कहा है, उनमें दाहपूर्वक बुखार दुःख प्रद और कष्टसाध्य है और शीतपूर्वक बुखार सुखसाध्य है ॥४१ ॥४२ ॥

गुरुताहृदयोत्क्लेशः सदनंछर्द्यरोचकौ ॥
रसस्थेतुज्वरेलिंगदैन्यंचास्योपजायते ॥ ४३ ॥

यदि बुखार रस धातु में पहुँच जाय तो देह में भारापन, दोषों का हृदय में प्राप्त होने से वमन की इच्छा हो, चित्त में ग्लानि डकार, अन्न में द्वेषता, मनमें खेद ये लक्षण होते हैं ॥ ४३ ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

रक्तगतज्वर के लक्षण

रक्तनिष्ठीवनंदाहोमोहश्छर्दनविभ्रमौ ॥
प्रलापःपिडिकातृष्णारक्तप्राप्तेज्वरेनृणाम् ॥४४॥

रक्त का गिरना, दाह, मोह, वमन, भ्रम, व्यर्थ बातचीत करना, शरीर में फुन्सी, तृषा, ये चिन्ह जब रक्त में बुखार प्राप्त हो जाता है तब होते हैं ॥ ४४ ॥

माँसगतज्वर के लक्षण

पिंडकोद्वेष्टनंतृष्णासृष्टमूत्रपुरीषता ॥
ऊष्मांतर्दाहविक्षेपौग्लानिःस्यान्मांसगेज्वरे ।४५।

मांस में बुखार पहुंचने से घुटनाओं के नीचे पीड़ियों में दंड आदि के लगने की सी व्यथा, तृषा, मल मूत्र का निकलना, गर्मी, अन्तर्दाह कर पैरों का इतस्ततः पटकना और मन में ग्लानि, ये लक्षण होते हैं ॥४५॥

मेदोगतज्वर के लक्षण

भृशंस्वेदस्तृषामूर्च्छाप्रलापश्छर्दिरेवच ॥
दौर्गन्ध्यारोचकौग्लानिर्मेदःस्थेचासहिष्णुता ।४६।

जब ज्वर चतुर्थत्वग् अर्थात् मेदा में प्राप्त हो जाता है तब अत्यन्त पसीने आते हैं, तृषा, मूर्छा, आलाप, वमन, देह में बुरी गन्ध, अन्न में द्वेष ग्लानि और व्यथा की असहनता, ये लक्षण होते हैं ॥४६॥

अस्थिगतज्वर के लक्षण

भेदोस्थ्नांकूजनं श्वासोविरेकश्छर्दिरेवच ॥
विक्षेपणंचगात्राणामेतदस्थिगतेज्वरे ॥४७॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अस्थि में ज्वर प्राप्त होने पर हड़फूटनि तथा हाड़ों का शब्द करना, श्वास अतिसार होना, वमन, हाथ पैरका पटकना, ये लक्षण होते हैं ॥ ४७ ॥

मज्जागतज्वर के लक्षण ।

तमःप्रवेशनंहिक्काकासःशैत्यंवमिस्तथा ॥
अंतर्दाहोमहाश्वासोमर्मच्छेदश्चमज्जगे ॥ ४८ ॥

नेत्रों के सामने तम प्रवेश, हिचकी, खाँसी, ठण्ड का लगना कै, शरीर के भीतर दाह, महास्वास अर्थात् जो स्वासनिदान में कहेंगे और हृदयमें अत्यन्त व्यथा ये लक्षण जब ज्वर मज्जा में स्थित हो जाता है तब होते हैं ॥ ४८ ॥

शुक्रगत ज्वर के लक्षण ।

मरणंमाप्नुयात्तत्रशुक्रस्थानयतेज्वरे ॥
शेफसःस्तब्धतामोक्षःशुक्रस्यचविशेषतः ॥ ४९ ॥

जब ज्वर सातवें परदा अर्थात् वीर्य धातु में जब प्राप्त हो जाता है तब रोगी की निश्चय मृत्यु हो जाती है और इस बुखार में गुप्तेन्द्रिय का जकड़ना और वीर्य का विशेष श्राव होना और सुश्रुत ऋषि कहते हैं कि रक्त आदि धातुओं का अल्प श्राव होता है ॥ ४९ ॥

प्राकृत और वैकृत ज्वर के लक्षण

वर्षाशरद्वसंतेषुवाताद्यैःप्राकृतःक्रमात् ॥
वैकृतोऽन्यःसुदुःसाध्यःप्राकृतश्चानिलोद्भवः ॥५०॥

वर्षा ऋतु, शरद ऋतु, वसन्त ऋतु इनके बीच में वातादिक के क्रम से जो ज्वर होंय वह प्राकृत ज्वर कहलाता है, जैसे वर्षा काल में वातज्वर, शरत्काल में पित्तज्वर, वसन्तऋतु में कफज्वर, इससे

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

विरुद्ध जो ज्वर होय उसे वैकृत ज्वर कहते हैं । वर्षाकाल में पित्तज्वर, शरदऋतु में कफ और वसंतकाल में वातज्वर, यह विरुद्ध ज्वर दुःसाध्य हैं और प्राकृत ज्वर सुखसाध्य है और वातजनिक प्राकृत ज्वर यह भी दुःसाध्य है और रोगों में प्राकृततत्व दुःसाध्य है किन्तु ज्वर में व्याधि स्वभाव करके सुखसाध्यत्व कहा है ॥५०॥

प्राकृत ज्वरों की चिकित्सा के निमित्त उत्पत्ति क्रम कहते हैं ।

वर्षासुमारुतोदुष्टःपित्तश्लेष्मान्वितोज्वरम् ॥ कुर्याच्च पित्तंशरदितस्यचानुबलःकफः ॥५१॥तत्प्रकृत्याविसर्गाच्चतत्रनानशनाद्भयम् ॥ कफोवसन्तेतमपिवातपित्तं भवेदनु ॥५२॥

ग्रीष्म काल में इकट्ठा हुआ वायु वर्षा ऋतु में कुपित हो कर पित्त कफ के साथ मिल कर ज्वर को उत्पन्न करता है, उसी प्रकार वर्षा ऋतु में एकत्रित हुआ पित्त शीत काल में दुष्ट होकर ज्वर को प्रगट करता है, उसको कफ का सम्बन्ध रहता है। उस ज्वर में कफ पित्तके स्वभाव करके और विसर्ग काल करके लंघन करने से भय नहीं होता है, तैसे ही हेमंत काल में एकत्रित हुआ कफ बसंत ऋतु में दुष्ट हो कर ज्वर प्रगट करता है तिसके बाद वात पित्तरत्तक होते हैं ॥५१॥५२॥

कालेयथास्वंसर्वेषांप्रवृत्तिर्वृद्धिरेववा ॥
निदानोक्तानुपशयोविपरीतोपशायिता ॥५३ ॥

वतादिक दोषों की आप अपने काल में उत्पत्ति और वृद्धि होती है यथा समय में ये दोष विशेष जानने के लक्षण हैं, उसी प्रकार उपशय और अनुपशय भी रोग जानने के कारण हैं सो इस प्रकार जानना निदान में जो आहार विहार कहे हैं उनके सेवन करने

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

को अनुपशय कहिए, दुःख की उत्पत्ति होती है और दोषों के विरुद्ध जो आहार विहार उनसे सुख की उत्पत्ति होती है ।।५३।।

अंतर्दाहोऽधिकातृष्णाप्रलापःश्वसनंभ्रमः ।। संध्यस्थिशूलमस्वेदोदोषवर्चोविनिग्रहः ।।५४ ।। अंतर्वेगस्यलिंगानिज्वरस्यैतानिलक्षयेत् ।। संतापोऽभ्यधिकोबाह्यतृष्णादीनांचमार्दवम् ।। ५५ ।। बहिर्वेगस्यलिंगानिसुखसाध्यत्वमुच्यते ।।

पीछे जो ज्वर कहते हैं उनमें सम्प्राप्ति के भेद से कोई ज्वर अन्तर्वेग और कोई ज्वर बहिर्वेग होते हैं सो ,इन दोनों ज्वरों के लक्षण कहते हैं—शरीर के भीतर दाह, अति प्यास, व्यर्थ बकवाद करना, भ्रम सन्धि और अस्थि इनमें व्यथा, स्वेद न निकले, वायु और मल बाहर न निकले, ये लक्षण अन्तर्वेग ज्वर के होते हैं। शरीर के बाहर सन्ताप अधिक हो, तृष्णादिक लक्षण अल्प हों, ये बहिर्वेग ज्वर के लक्षण हैं, यह ज्वर सुखसाध्य है, इस ज्वर के सुखसाध्य कहने से अंतर्वेग ज्वर कृच्छ्रसाध्य और असाध्य है।।५४-५५

लालाप्रसेकोहृल्लासहृदयाशुद्ध्यरोचकाः।।तंद्रालस्याविपाकास्यवैरस्यंगुरुगात्रता ।। ५६ ।। क्षुन्नाशोबहुमूत्रत्रत्वंस्तब्धताबलवाञ्ज्वरः ।। आमज्वरस्यलिंगानिनदद्यात्तभेषजम् ।। ५७ ।। भेषजंह्यामदोषस्यभूयोजनयतिज्वरम् ।। शोधनंशमनीयंचकरोतिविषमज्वरम् ।। ५८ ।।

चिकित्सा करने निमित्त आम पच्यमान और निराम ज्वर लक्षण कहते हैं—लार का गिरना, खाली डकारों का आना, हृदय में जड़ता, अभिरुचि, तन्द्रा, आलस्य, अन्न हज़म न होय, मुख का स्वाद बिगड़जाय, देह में भारापन, भूख नष्ट हो जाय, मुहुर्मुह

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

मूत्र आवे, देह जकड़ जाय, शरीर में बलवान ज्वर हो, ये लक्षण अपक्क ज्वर के हैं। इस ज्वर में शीघ्र दवा का प्रयोग न करें, अपरिपक्क ज्वर में दवा देने से रोग बढ़ता है और शोधन तथा शमन औषधि देने स विषम ज्वर की उत्पत्ति होती है ॥ ५६ से ५८ ॥

ज्वर के दश उपद्रव

श्वासोमूर्च्छाऽरुचिस्तृष्णाछर्द्यतीसारविड्ग्रहाः ।
हिक्काकासांऽगदाहाश्चज्वरस्योपद्रवादश ॥५९॥

भावप्रकाश के मतानुसार ज्वर के दश उपद्रवों का कथन करते हैं-श्वास, मूर्छा, अन्न द्वेष, तृषा, वमन, दस्त, मल बिष्टम्भ, हिचकी, खांसी, शरीर में दाह, ये ज्वर के दश उपद्रव हैं ॥५९॥

पच्यमान ज्वर के लक्षण

ज्वरवेगोऽधिकातृष्णाप्रलापःश्वसनंभ्रमः ।
मलप्रवृत्तिरुत्क्लेशःपच्यमानस्तलक्षणम् ॥६०॥

ज्वर का वेग अत्यन्त जोर से हो, अधिक तृषा हो, प्रलाप श्वास, भ्रम, मन की प्रवृत्ति उपस्थित वमनसी ज्ञात हो, ये पच्यमान ज्वर के लक्षण हैं ॥ ६० ॥

पक्व ज्वर किंवा निराम ज्वर के लक्षण

क्षुत्क्षामतालघुत्वंचगात्राणाँज्वरमार्दवम् ।
दोषप्रवृत्तिरष्टाहोहोनिरामज्वरलक्षणम् ॥६१॥

भूख खूब लगे, देह कृश हो जाय, अङ्गों में हलकापन प्रतीत होय, मन्द २ ज्वर आवे, अपान वायु का निर्गमन होय, चित्त में प्रसन्नाता होय, ये निराम ज्वर के लक्षण हैं ॥६१॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ग्रन्थान्तर से जीर्ण ज्वर के लक्षण

त्रिसप्ताहेव्यतीतेषुज्वरोयस्तनुतांगतः ।
प्लीहाग्निसादंकुरुतेसजीर्णज्वरउच्यते ॥६२॥

२१ दिन व्यतीत होने पर जो ज्वर गुप्तरूप से सूक्ष्म हो शरीर में रहे जिससे प्लीहा रोग और अग्नि मन्द हो जाय उसको जीर्ण ज्वर कहते हैं ॥६२॥

साध्य ज्वर और असाध्य ज्वर के लक्षण

बलवत्स्वल्पदोषेषुज्वरःसाध्योऽनुपद्रवः ।
हेतुभिर्बहुभिर्जातोबलिभिर्बहुलक्षणः ॥
ज्वरःप्राणान्तकृद्यश्चशीघ्रमिंद्रियनाशनः ॥६३॥

शक्तिमान मनुष्य के अल्प दोष युक्त श्वास आदि उपद्रव करके हीन जो ज्वर होय उसे साध्य जानना चाहिये । जो ज्वर विशेष प्रवल कारणों से प्रगट भया हो और जिसमें सर्व लक्षण मिलते हों वह ज्वर प्राणों का हरण कर्ता जानना और जो ज्वर उत्पन्न होते ही दवा करते २ इन्द्रियों की शक्ति का नाश करदे अर्थात् अन्धा, वधिर, मूक इत्यादि वह भी असाध्य जानना ॥६३॥

ज्वरःक्षीणस्यशूनस्यगंभीरोदीर्घरात्रिकः ॥
असाध्योबलवान्यश्चकेशसीमंतकृज्ज्वरः ॥६४॥

जो मनुष्य ज्वर से क्षीण हो गया हो अथवा सूजन आगई हो वह ज्वर असाध्य है और जिसके ज्वर धातु के भीतर हो अथवा अन्तर्वेग ज्वर अथवा जिसमें वातादि दोषों का निश्चय न हो सके और बहुत दिवस तक रहने वाला ज्वर असाध्य है और ज्वर शक्तिशाली हो तथा जिसमें रोगी अपने करों से बालों की रचना करे वह ज्वर असाध्य होता है ॥६४॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

गम्भीर ज्वर के लक्षण

गंभीरस्तुज्वरोज्ञेयोह्यं तर्दाहेनतृष्णया ।
आनद्धत्वेनचात्यर्थंश्वासकासोद्गमेनच ॥६५॥

शरीर के भीतर दाह, तृषा दोष अर्थात् त्रिरुद्ध दोष के वृद्धित्व होने से, मल के अवरोध होने से तथा श्वास खांसी के प्रगट होने से गम्भीर ज्वर होता है ॥६५॥

दूसरे असाध्य ज्वर के लक्षण

आरंभाद्विषमोयस्ययस्यवादीर्घरात्रिकः । क्षीणस्यचाति-
रूक्षस्यगंभीरोहंतिमानवम् ।६६। विसंज्ञस्ताम्यतेयस्तु-
शेतेनिपतितोपिवा । शीतार्दितोंऽतरुष्णश्चज्वरेणम्रिय-
तेनरः ।६७।

जो ज्वर उत्पन्न होते ही विषम पड़ जाय और बहुत दिनों से आया करे और क्षीण तथा अत्यन्त रूक्ष शरीर वाले मनुष्य के जो गम्भीर ज्वर हो वह प्राणनाशक होता है और जो बेहोश होकर मोह को प्राप्त हो तथा गिरकर जिसमें बैठने की शक्ति न हो अथवा बाहरी ठण्ड लगे, देह के भीतर दाह हो, ऐसे ज्वर वाला पुरुष मृत्यु को प्राप्त हो जाता है ॥६६॥६७॥

और असाध्य लक्षण

योहृष्टरोमारक्ताक्षोहृदिसंधातशूलवान् । वक्त्रेणचैवोच्छ्व-
सितितंज्वरोहंतिमानवम् ।६८। हिक्काश्वासतृषायुक्तंमूढं-
विभ्रांतलोचनम् । सन्ततोच्छ्वासिनंक्षीणंनरंक्षपयति-
ज्वरः ॥६९॥ हतप्रभेन्द्रियंक्षाममरोचकनिपीडितम् ॥
गंभीरतीक्ष्णवेगार्तं ज्वरितंपरिवजयेत् ॥७०॥

जिसके शरीर में रोमाँच खड़े हो जांय, नेत्र रक्त वर्ण के हो

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

जांय, हृदय में ग्रन्थि के समान अत्यन्त पीड़ा होय और अनेक प्रकार का दर्द होय, मुख मार्ग होकर स्वास का निर्गमन हो उस ज्वर से अवश्य ही रोगी का मरण होता है। हिका श्वास तृषा इनसे युक्त हो, मोह से व्याप्त हो, नेत्र अत्यन्त चंचल हों, निरन्तर श्वास का आगमन हो, ऐसे लक्षणों युक्त रोगी मृत्यु को प्राप्त होता है। इन्द्रियों की शक्ति नाश होने से और तन की क्रान्ति मलीन होने से अथवा (नाक कर्ण चक्षु) ये नष्ट हो जांय, देह कृश हो जाय, अरुचि करके अतीव व्यथा होय और अत्यन्त गम्भीर तीक्ष्ण वेग करके परिपीड़ित ज्वर रोगी को वैद्य त्याग दे क्योंकि वैद्य कुयश का भागी होता है ॥ ६८ से ७० ॥

ज्वरमुक्ति के पूर्वरूप

दाहःस्वेदोभ्रमस्तृष्णाकंपोविड्भिदसंज्ञिता ।
कूजनंचास्यवैगंध्यमाकृतिर्ज्वरमोक्षणे ॥ ७१ ॥

दाह, पसीना, तृषा, कम्प, मल का अत्तन्त पतला होना, शक्ति का नाश, गूंजना, शरीर में अत्यन्त दुर्गन्धि का आना, ये लक्षण जब ज्वर जाता है तब होते हैं ॥७१॥

शङ्का—क्यों जी दोष (वातपित्त कफ) के नाश बिना रोग की निवृत्ति नहीं होती है जब दोषहीन बल होगये तो पूर्वोक्त दाहादिक किस प्रकार कर सकते हैं ? समाधान—इसका तात्पर्य यह है कि किसी वस्तु का यथा प्राकृतिक स्वभाव होता है कि क्षीण होने में अपना प्रभाव दिखलाती है, जैसे दीपक तेल न रहनेसे जब बुझने को प्राप्त होता है तब एक साथ पहिले की अपेक्षा ज्यादा प्रज्वलित होता है और थोड़ी देर जलकर शान्त हो जाता है। ऐसे ही जब दोषों का शान्त होने का समय आता है तब अपने प्रभाव दाहादि को दिखलाते हैं। दूसरा उत्तर और है जैसे वानर पेड़ की डाल को हिलाकर दूसरे स्थान पर बैठ जाता है परन्तु वह वृक्ष की डाली

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

चिरकाल तक हिलती रहती है, इसी प्रकार ज्वर शान्त होनेपर ज्वर के प्रभाव से दाहादिक रहते हैं ये चिह्न दाह से आदि ले त्रिदोष ज्वर के शान्त होने के वक्त होते हैं सर्व ज्वरों में नहीं होते और ज्वरों में सिर्फ स्वेद का ही आगमन होता है ।

त्रिदोषजेज्वरे ह्येतदन्तवर्गैंचधातुजे ।
लक्षणंमोक्षकालेस्यादन्यस्मिन्स्वेददर्शनम् ।७२।

ज्वर मुक्ति के लक्षण

स्वेदोलघुत्वंशिरसःकंडूःपाकोमुखस्यच ॥
क्षवथुश्चान्नकांक्षाचज्वरमुक्तस्यलक्षणम् ॥७३॥

पसीने आवें, शरीर में हलकापन प्रतीत हो, शिर में खुजली चले, मुखका पाक अर्थात् होटों पर पापड़ी सी पड़ जाय, छींक आवे, भोजन में रुचि उत्पन्न हो ये लक्षण ज्वर मुक्ति के हैं ॥७२-७३॥

प्रसङ्गवशाज्ज्वरमुक्त लक्षणं ग्रन्थान्तरे

देहोलघुर्व्यपगतक्लममोहतापः पाकोमुखेकरणसौष्ठवमव्यथत्वम् ॥ स्वेदः क्षवः प्रकृतियोगिमनोऽन्नलिप्साकंडूश्च मूर्ध्निविगतज्वरलक्षणानि ॥ १ ॥

पित्त ज्वर में अतिसार होता है तथा ज्वरको और अतिसारको अन्योन्य उपद्रव होनेसे ज्वरके अनन्तर अतिसार रोग को कहते हैं ।

* इति ज्वरनिदान सम्पूर्णम् *

—XXXX—

अतिसारनिदानम्

गुर्वतिस्निग्धतीक्ष्णोष्णद्रवस्थूलातिशीतलैः ॥ विरुद्धा-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ध्यशनाजीर्णैर्विषमैश्चातिभोजनैः ।१। स्नेहाद्यैरतियुक्तैश्च मिथ्यायुक्तैर्विषैर्भयैः । शोकदुष्टाम्बुमद्यातिपानैः सात्म्यर्तुपर्ययैः ।२। जलाभिरमणैर्वेगविघातैः क्रिमिदोषतः । नृणां भवत्यतीसारो लक्षणं तस्य वक्ष्यते ॥ ३ ॥

प्रमाण से अधिक अन्न भक्षण करने से अथवा स्वाभाविक जड़ पदार्थ जैसे उर्द आदि के खाने से अत्यन्त स्निग्ध अति तीक्ष्ण अति उष्ण अत्यन्त पतली और अत्यन्त मोटी अर्थात् अति स्थूल जिसके अवयव कठिन हों, जैसे मोदक घेवर गूंझा इत्यादि और अत्यन्त ठण्डे स्पर्श से तथा वीर्यसे विरुद्ध जैसे खीर मछली इत्यादि पिछले दिवस का भक्ष पदार्थ नहीं पचे और उस पर भोजन करने से अन्न के परिपक्व हुए बिना नित्य भोजन काल का परित्याग कर अल्प वा बहुत भोजन करने से स्नेह स्वेदादि पंचकर्म के अत्यन्त करने से स्थावरादिक दूषी बिष भक्षण से भय से शोक करने से अति दुष्ट जलपान करने से अत्यन्त मद्यपान से साम्य और ऋतु के बदलने से जल में अत्यन्त खेलने से मल-मूत्रादि वेगों को रोकने से कृमि रोग के उपद्रव से अथवा वातादिक के कोप से, मनुष्यों के अतिसार रोग प्रगट होता है ।। १-२-३ ।।

अतिसार रोग की सम्प्राप्ति

संशम्यापां धातुरग्निं प्रवृद्धोवर्चोमिश्रो वायुनाधःप्रणुन्नः। सरत्यतो वातिसारं तमाहुर्व्याधिं घोरं षड्विधं तं वदंति ।।४।। एकैकशः सर्वशश्चापिदोषैःशोकेनान्यःषष्ठआमेन-चोक्तः ॥

पूर्व कथित कुपथ्य सेवन से अधिक कुपित भये शरीर में रस

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

जल मूत्र पसीना मेदा कफ पित्त रक्त इत्यादि जल रूप धातु अग्नि को मन्द कर और वही वारि मलमें मिलकर वायु से प्रेरित गुदाके रास्ते से नीचे का उतरें उसे अतिसार कहते हैं। यह भयङ्कर अतिसार रोग छः प्रकार का होता है—वायु का १, पित्त का २, कफ का ३, सन्निपात का ४, शोक का ५ और छठवाँ आमातिसार होता है। द्वंद्वज अतिसार व्याधि स्वभाव करके नहीं होते, सुश्रुत में आमातिसार नहीं कहा है भय और चिन्ता से कथन कर संख्या की पूर्ति की है और आमातिसार को सन्निपातातिसार के अन्तर्गत कहा है। यहाँ माधवजी ने भयातिसार की गणना वातातिसार में की है ॥ ४ ॥

अतिसार के पूर्व रूप

हृन्नाभिपायूदरकुक्षितोदगात्रावसादानिलसन्निरोधाः।
विट्संगआध्मानमथाविपाकोभविष्यतस्तस्यपुरःसराणि५

हृदय, नाभि, गुदा, उदर, कुक्षि इनमें व्यथा हो, तन में फूटनी हो, गुदा की अपान वायु रुक जाय, मल का अवरोध हो, अफरा हो, अन्न का पाचन नहीं हो, ये चिन्ह जब अतिसार उत्पन्न होता है तब होते हैं ॥ ५ ॥

वातातिसार के लक्षण

अरुणं फेनिलंरूक्षमल्पमल्पं मुहुर्मुहुः ॥
शकृदामं सरुक्शब्दं मारुतेनातिसार्यते ॥६॥

कुछ लाल रंग का झागों से मिला तथा रूक्ष अल्प बारंबार आम मिश्रित दस्त उतरे और दर्द हो तथा मल के निकलते वक्त शब्द हो तो उसे वातातिसार कहते हैं ॥ ६ ॥

पित्तातिसार तथा कफातिसार के लक्षण

पित्तात्पीतंनीलमालोहितं वा तृष्णामूर्छादाहपाकोपपन्नम्॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

शुक्लं सांद्रं सकफं श्लेष्मयुक्तं विस्रं शीतं हृष्टरोमा मनुष्यः ॥ ७ ॥

पित्त से पीतवर्ण काला और धूंसरे रंग का मल निकलता है तथा प्यास मूर्छा और दाह होती है तथा गुदा पक जाती है, यह लक्षण पित्तातिसार के होते हैं । कफातिसार वाले मनुष्य का मल श्वेत रंग का गाढ़ा स्निग्ध कफ से मिला हुआ दुर्गन्ध युक्त और शीतल उतरताहै तथा रोमांच खड़े हो जाते हैं ये लक्षण कफातिसार के होते हैं ॥७॥

सन्निपातातिसार के लक्षण

वाराहस्नेहमांसांबुसदृशं सर्वरूपिणम् ॥
कृच्छ्रसाध्यमतीसारंविद्याद्दोषत्रयोद्भवम् ॥८॥

सूकर की चरबी के समान माँस के धोवन के समान और वातादि तीनों दोषों के जो लक्षण कहे हैं उन लक्षणों युक्त हों, यह त्रिदोष जनित अतिसार कष्ट साध्य है ॥ ८ ॥

शोकातिसार के लक्षण

तैस्तैर्भावैःशोचतोऽल्पाशनस्य बाष्पोष्मा वैवह्निमाविश्य जंतोः ॥९॥ कोष्ठं गत्वा क्षोभयेत्तस्य रक्तं तच्चाधस्तात्काकणंतीप्रकाशम् ॥ निर्गच्छेद्वै विड्वमिश्रं ह्यविड्वानिर्गन्धं वा गन्धवद्वातिसारः ॥१०॥

जिस मनुष्य के सुत, सुहृद, भार्या, द्रव्य ये नष्ट हो जाँय सो वह जन उसी नष्ट वस्तु की चिन्ता करे इसीसे भूख मन्द होने से (धातु क्षय होय) ऐसे मनुष्य के नेत्र, नासिका कण्ठ आदि से जो शोक द्वारा जल गिरै और गर्मी कहिये शोक जन्य देह तेज ये दोनों वाष्पोष्मा कोठे में प्राप्त हो मन्दाग्नि कर रक्त को दुष्ट करें तब यह रुधिर चिरमिटी के रंग के समान गुदा मार्ग होकर मलयुक्त अथवा

मल रहित हो निकले तथा गन्ध मिश्रित वा गन्धहीन दस्त उतरे उसे शोकातिसार कहते हैं, इसी प्रकार भयातिसार का भी ज्ञात कर लेना चाहिये ॥९॥१०॥

शोकातिसार के कृच्छ्रसाध्यत्व लक्षण औद आमातिसार के लक्षण

शोकोत्पन्नो दुश्चिकित्स्योऽतिमात्रं रोगो वैद्यैः कष्ट एष प्रदिष्टः ॥ अन्नाजीर्णात्प्रद्रुताःक्षोभयंतः कोष्ठं दोषा धातुसंघान्मलांश्च ॥ नानावर्णं नैकशः सारयन्ति शूलोपेतं षष्ठमेनं वदन्ति ॥११॥

शोक से प्रगट जो अतिसार है वह दवा करने में बड़ा कठिनहै क्योंकि शोक शान्ति बिना केवल औषधियों से शान्त नहीं होता, अतः वैद्यों ने इसे कष्ट साध्य कहा है । अन्न के पचे बिना (वात पित्त कफ) स्वमार्ग का त्याग कर कोठे में मिलकर कोठे को दूषित कर रक्तादि धातु और पुरीषादि मल को मुहुर्मुहुः गुदा के मार्ग से बाहर निकाले और इसका वर्ण कई प्रकार का होय तथा दर्द युक्त दस्त उतरे इसको वैद्यों ने छटा आमातिसार कहा है ॥११॥

शङ्का--पूर्व में कथन किया है कि अतिसार रोग छः प्रकार का होता है पुनः षष्ठमेनंवदन्ति यह पद क्यों धरा ? उत्तर–यह पद नियमार्थ माधवाचार्य ने धरा है अर्थात भय स्नेह अजीर्ण विषूचिका अर्श आदि निमित्त करके और अतिसार नहीं है क्योंकि भयाति अतिसारों का वातपित्त कफ अतिसारों के अन्तर्गत्व है ।

आम के लक्षण

संसृष्टमेभिर्दोषैस्तु न्यस्तमप्स्ववसीदति ।
पुरीषं भृशदुर्गन्धि पिच्छिलं चामसंज्ञितम् ॥१२॥

पूर्व कथित वातादि अतिसारोंके मिले हुए लक्षणयुक्त जो मल वह जल में गेरने से डूब जाता है कारण कि आम जड़ है और

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

उसमें बुरी गन्ध आती है तथा अत्यन्त गाढ़ा होता है उसी की आम संज्ञा है ॥१२॥

अथ पक्व लक्षण

एतान्येव तु लिंगानि विपरीतानि यस्य वै ।
लाघवं च विशेषेण तस्य पक्वं विनिर्दिशेत् ।१३।

और ऊपर के श्लोक से विरुद्ध चिन्ह होवें अर्थात् शरीर में हलकापन ज्ञात हो तथा मल जल में नहीं डूबे और बुरी गन्ध न आवे बबूला रहित हो उस रोगी का मल पक्व हुआ जाने ।१३।

असाध्य लक्षण

पक्वजांबवसंकाशं यकृत्पिंडनिभंतनु घृततैलवसामज्जा
वेशवारपयोदधि ॥ १४ ॥ मांसधावनतोयाभं कृष्णं
नीलारुणप्रभम् ॥ मेचकं कर्बुरं स्निग्धं चन्द्रकोपगतम्
घनम् ॥१५॥ कुणपं मास्तुलुंगाभं दुर्गंधं कुथितं बहु ॥
तृष्णादाहाऽरुचिश्वासहिक्कापार्श्वास्थिशूलिनम् ॥१६॥
संमूर्च्छारतिसंमोहयुक्तं पक्ववलीगुदम् । प्रलापयुक्तं च
भिषग्वर्जयेदतिसारिणम् । १७ ।

पकी हुई जामुन के रंग युक्त काला और स्निग्ध मेचक तथा काला और लोहित रङ्ग पतला घी चरबी तेल मज्जा दूध दही तथा माँस धोवन के सदृश रंग हो, कज्जल के समान वर्ण वाला या नीला रंग मिला हुआ लाल रंग अर्थात् पपैया पक्षी के पङ्ख के रंग सदृश अथवा खंजन पक्षी के वर्ण सदृश तथा अनेक वर्णका चिकना मोर की चन्द्रिकाके वर्णयुक्त दृढ़ मुर्दे की सी दुर्गन्धियुक्त शिरकी मज्जा के समान गन्ध समान बुरी दुर्गन्धिके समान तृषा दाह अरुचि श्वास हिक्का, पसवाड़ों की हड्डी में विशेष व्यथा, मन को मोह और

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

इन्द्रियों को मोह अरति ये लक्षण होय तथा गुदास्थित आंतों का पकना, व्यर्थ भाषण, ऐसा अतिसार रोग वाला मनुष्य परित्याग के योग्य है । १४ से १७ ।

दूसरे असाध्य लक्षण

असंवृतगुदंक्षीणंदुराध्मानमुपद्रुतम् ।।
गुदे पक्वेगतोष्माणमतिसारिणमुत्सृजेत् ।१८।

जिसकी गुदा दस्तके बाद सङ्कोच को प्राप्त न हो, क्षीण मनुष्य अत्यन्त अफरा से व्याप्त अथवा जिसकी इन्द्री वश में न होवे तथा अतिसार के शोथ आदि उपद्रवों से व्याप्त और गुदा के मार्ग पाक कर्ता पित्त विद्यमान होते हुए गरमी देह में न आतहो अर्थात् शरीर शीतल हो और अग्नि का नाश हो ऐसे लक्षण युक्त अतिसार रोग वाले रोगी की सद्वैद्य चिकित्सा न करे ।।१८।।

अतिसार के उपद्रव

शोथंशूलंज्वरंतृष्णां श्वासकासमरोचकम् ।
छर्दिमूर्च्छांचहिक्कांचदृष्ट्वातीसारिणंत्यजेत् ।१९।

शोथ दर्द ज्वर प्यास श्वास कास अन्न द्वेष वमन मूर्छा हिचकी ऐसे लक्षण वाले रोगी का वैद्य त्याग करदे ।।१९।।

असाध्य लक्षण

श्वासशूलपिपासार्त्तंक्षीणंज्वरेणपीडितम् ।
विशेषेणनरंवृद्धमतिसारोविनाशयेत् । २० ।

श्वास दर्द तृषा इनसे व्यथित क्षीण ज्वर से पीड़ित और वृद्ध पुरुष के ये लक्षण होंय यह अतिसार रोग मनुष्य के जीवन को नष्ट कर देता है ।।२०।।

रक्तातिसार के लक्षण

पित्तकृन्तियदात्यर्थं द्रव्याण्यश्नातिपैत्तिके ।

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

तदोपजायतेऽभीक्ष्णंरक्तातीसारउल्बणः ॥२१॥

पित्तातिसार वाला मनुष्य अथवा पित्तातिसार होने वाला जन अत्यन्त पित्तकारक वस्तु भक्षण करे तब भयङ्कर रक्तातिसार उत्पन्न होता है। उसके लाल काले पीले आदि रंग वातादि दोषों के कुपित होने से होते हैं ये भी पित्तातिसार के भेद हैं ॥२१॥

प्रवाहिका की सम्प्राप्ति

वायुप्रवृद्धोनिचितंबलासंनुदत्यधस्तादहिताशनस्य ।
प्रवाहतोल्पंबहुशोमलाक्तंप्रवाहिकातांप्रवदंतितज्ज्ञाः ।२२।

कुपथ्य भक्षण करने वाले मनुष्य के कुपित हुई जो वायु सो सञ्चित हुए कफ को मल संयुक्त करके बारम्बार गुदा के रास्ते से निकाले और मरोड़ा के साथ पीड़ायुक्त थोड़ा मल निकले इसको प्रवाहिका कहते हैं। प्रवाहिका और अतिसार इन दोनों का एक सा धर्म है इसी से अतिसार रोग में प्रवाहिका का कथन किया गया है, परन्तु अतिसार में अनेक प्रकार के द्रव धातु निकलते हैं और प्रवाहिका में सिर्फ कफ ही निकलता है, इतना ही भेद है। इसमें 'निचितंबलासं' यह जो पद कहा अर्थात् कफ मिश्रित होकर कफ का तो उप लक्षण है अर्थात् कफ के कथन से पित्त और रक्तको भी जानना। भोज ने इस रोग का नाम विवसी कहा है, पराशर मुनि ने इसको अन्तरग्रन्थि कहा है, हारीत मुनि ने निश्चारक कहा है और कोई ऋषि निर्वाहिका कहते हैं ॥२२॥

प्रवाहिका के वातादि भेद करके लक्षण

प्रवाहिकावातकृतासशूलापित्तात्सदाहासकफाकफाच्च ।स
शोणिताशोणितसंभवाचताः स्नेहरूक्षप्रभवामतास्तु ॥
तासामतीसारवदादिशेच्चलिंगंक्रमंचामविपक्कतांच ।२३।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

वायु की प्रवाहिका में दर्द होता है, पित्त की में दाह तथा कफ की में कफ आता है और रस की रसयुक्त होतीहै। यह स्निग्ध और रूक्ष पदार्थ भक्षण से होती है अर्थात् स्निग्ध पदार्थ से कफ की और रूक्ष पदार्थों से वात की 'तु' शब्द से तीक्ष्ण और खट्टे पदार्थों से पित्त की और रक्तकी होती है। इस प्रवाहिकाके लक्षण क्रम आम और पक्वावस्था यह अतिसारनिदान के तुल्य जानना ॥२३

गत अतिसार के लक्षण

यस्योच्चारंविनामूत्रंसम्यग्वायुश्चगच्छति ।
दीप्ताग्नेर्लघुकोष्ठस्यस्थितस्तस्योदरामयः ।२४।

दस्त होते वक्त जिस मनुष्य का मूत्र न निकले और अपानवायु जिसकी शुद्ध निकले, अग्नि दीप्त होवे, कोठा हलका मालूम हो, उस मनुष्य का अतिसार रोग गया समझना चाहिये ॥२४॥

इति श्री पं० चोखेलाल निर्मितायां कृष्णानन्दिनी भाषाटीकायां माधवनिदाने अतिसारनिदानम् समाप्तम् ॥

—XXXX—

अथ ग्रहणीनिदानम्

ग्रहणी की सम्प्राप्ति

अतिसारेनिवृत्तेऽपिमन्दाग्नेरहिताशिनः ।
भूयःसंदूषितोवह्निर्ग्रहणीमभिदूषयेत् ॥ १ ॥

पहिले पुरुष के दस्त होकर शान्त हो जाँय फिर कुपथ्य सेवन द्वारा अग्नि मन्द होकर उदरस्थित पित्तधरा नामक छठी कला उसको दूषित कर अपि शब्द करके अतिसारर नहीं भया हो तब भी स्वकारण से पूर्व कथित ग्रहणी को बिगाड़ कर संग्रहणी रोग को उत्पन्न करे यह सूचित किया। कोई ऋषि इस प्रकार कथन करते हैं

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अतिसार शान्त न हुआ हो मध्य में ही ग्रहणी रोग होता है, 'मन्दाग्नि' इस पद से यह सूचित किया जिस मनुष्य की तीक्ष्णाग्नि है उस मनुष्य के कुपथ्य सेवन से कुछ उपद्रव नहीं होता, अन्न को ग्रहण करने से ग्रहणी कहते हैं, अतः ग्रहणी के दूषित होने पर अन्न का अच्छी प्रकार पाचन नहीं होता अर्थात् मुहुर्मुहुः आम से मिला मल गुदा स्थान से निकलता है ॥ १

ग्रहणीरोगस्य सम्प्राप्ति पूर्वक सामान्य लक्षणम्

एकैकशःसर्वशश्चदोषैरत्यर्थमूर्च्छितैः । सादुष्टाबहुशोभुक्तमाममेवविमुंचति ।२। पक्वंवासरुजंपूतिमुहुर्बद्धं मुहुर्द्रवम् ॥ ग्रहणीरोगमाहुस्तमायुर्वेदविदोजनाः ॥३॥

अत्यन्त कोप को प्राप्त होकर पृथक २ कोष (वात, पित्त, कफ) और सम्पूर्ण दोष मिलकर ग्रहणी को दूषित करते हैं फिर वही ग्रहणी बिगड़कर कच्चे तथा पके हुए मल को गुदा से बाहर निकाले और व्यथा होय तथा उस मल में बुरी दुर्गन्ध आवे, बादी से पतला और पित्त से गाढ़ा मल बारम्बार आवे और कभी कभी कफयुक्त पानी समान अधोवायुयुक्त मलका निर्गमन होय, आयुर्वेदविद् उसे संग्रहणी कहते हैं ॥२-३॥

पूर्व रूप

पूर्वरूपंतुतस्येदंतृष्णालस्यंबलक्षयः ।
विदाहोऽन्नस्यपाकश्चचिरात्कायस्यगौरवम् ॥४॥

तृषा, आलस्य, शक्तिनाश, अन्नका दाह (पाक के वक्त अग्निसी जले) और अन्न चिरकाल में पचे, देह में गुरुता होय यह संग्रहणी रोग के पूर्व रूप हैं ॥४॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

वातज ग्रहणी का निदान

कटुतिक्तकषायातिरूक्षसंदुष्टभोजनैः ॥ प्रमितानशनात्यध्ववेगनिग्रहमैथुनैः ॥ ५ ॥ मारुतः कुपितोवह्निंसंछाद्यकुरुतेगदान् ॥

कटु, तीक्ष्ण, कसैला, अत्यन्त रूक्ष और संयोग विरुद्ध होने से भोजन से तथा अल्प भक्षण से, व्रत से, बहुत गमन से मल-मूत्रादि वेगों को रोकने से, अत्यन्त विषय से वायु कुपित होकर संग्रहणी रोग को उत्पन्न करती है ॥ ५ ॥

वातज संग्रहणी का रूप

तस्यान्नंपच्यतेदुःखंशुक्तपाकंखरांगता ॥ ६ ॥ कंठास्यशोषःक्षुत्तृष्णातिमिरंकर्णयोः स्वनः पार्श्वोरुवंक्षणग्रीवारुग्भीक्ष्णं विषूचिका ॥ ७ ॥ हृत्पीडाकार्श्यदौर्बल्यंवैरस्यंपरिकर्त्तिका ॥ गृद्धिः सर्वरसानांचमनसःस्पंदनं तथा ॥८॥ जीर्णेजीर्यतिचाध्मानंभुक्तेस्वास्थ्यमुपैतिच ॥ सवातगुल्महृद्रोगप्लीहाशंकी च मानवः ॥ ९ ॥ चिराद्दुखं द्रवशुष्कंतन्वामंशब्दफेनवत् ॥ पुनःपुनःसृजेद्वर्चः कास श्वासार्दितोऽनिलात् ॥१०॥

वातज ग्रहणी वाले के अन्न का पाक कष्ट युक्त होता है और अन्न का पाक अम्ल होय, शरीर के अङ्गों में कर्कशता, कंठ आनन का सूखना, क्षुधा और तृषा की इच्छा होय, दृष्टि मन्द हो, कर्णों में शब्द हो, पासू, जंघा, पेडू और कन्धा इनमें व्यथाहो, विषूचिका हो अर्थात् मुख और गुदा मार्ग से अपरिपक्व अन्न की प्रवृत्ति होय, वक्षस्थल में पीड़ा होय, शरीर में दुर्बलता की प्राप्ति हो, जिह्वा स्वाद रहित हो जाय, गुदा में विशेष पीड़ा हो जाय, मिष्ठानों के

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

भक्षण करने की इच्छा होय, मन में घृणा, अन्न के पाचन समय उदर में अफरा होना, अन्न भक्षणसे शान्ति न मिलना उदरमें गोला हृद्रोग, तापतिल्ली की सी शङ्का, वायु के सम्बन्ध से कास श्वास से व्यथित चिरकाल में बड़े दुःख से कभी पतला, कभी गाढ़ा अल्प सशब्द और झाग युक्त बारम्बार दस्त होय ॥६ से १०॥

पित्तज ग्रहणी के लक्षण

कट्वजीर्णविदाह्यम्लक्षाराद्यैःपित्तमुल्बणम् ॥ आप्लावयद्धंत्यनलंजलंतप्तमिवानलम् ॥११॥ सोऽजीर्णंनीलपीताभंपीताभस्सार्यतेद्रवम् ॥ सधूमोद्गारहृत्कंठदाहरुचितृडर्दितः ॥१२॥

जो मनुष्य कड़वे, कब्जकारक मिर्च आदि तीक्ष्ण दाह करने वाली खट्टी खारी (ओंगा आदि का क्षार) आदि शब्द से नमक का उष्ण पदार्थ इन हेतुओंसे दूषित हुआ पित्त जिस प्रकार तप्तोदक अग्नि को शान्त कर देता है उसी प्रकार जठराग्नि को शान्त कर देता है और अपक्व हो नील तथा पीत वर्ण के रंग मिश्रित पतले मल को निकाले तथा धूमयुक्त डकार आवे, हृदय और गले में दाह होवे, अरुचि और तृषा से व्यथित होवे, ये लक्षण पित्तकी संग्रहणी के हैं ॥ ११-१२ ॥

कफोत्पन्न संग्रहणी की उत्पत्ति

गुर्वतिस्निग्धशीतादिभोजनादतिभोजनात् । भुक्तमात्रस्य च स्वप्नाद्धंत्यग्निकुपितः कफः ॥ १३ ॥ तस्यन्नं पच्यतेदुःखं हृल्लासच्छर्द्यरोचकाः । आस्योपदेहमाधुर्यकासष्ठीवनपीनसाः ॥ १४ ॥ हृदयेमन्यतेस्त्यानमुदरस्तिमितंगुरु ॥ दुष्टोमधुरउद्गारः सदनंस्त्रीष्वहर्षणम्। १५

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

भिन्नामश्लेष्मसंसृष्टगुरुवर्चःप्रवर्त्तनम् ।। अकृशस्यापिदौर्बल्यमालस्यंचकफात्मके ।।१६।।

गुरुभोजन अत्यन्त स्निग्ध शीतल पदार्थों के भक्षण से, अत्यन्त अन्न भक्षण से तथा भोजन के उपरान्त शयन करने से, इन हेतुओं से दूषित हुआ कफ उदरस्थित अग्नि को शान्त करे तब भक्षण किया हुआ अन्न कष्टयुक्त पचे, हृदयमें व्यथा होय, वमन अन्न द्वेष मुख कफ से व्याप्त तथा मुख में मीठापन रहना, खांसी कफ का थूकना, प्रतिश्यायकी शिकायत होय, हृदय जलसे भरा हुआ प्रतीत होय, पेट में भारापन हो, दुष्ट और मीठी डकारों का आगमन हो अग्नि शान्ति को प्राप्त हो, स्त्री-सम्भोग में इच्छा न होय, पतला आम संयुक्त कफ मिश्रित और भारी मल निकले, शक्ति बिना शरीर पुष्ट मालूम हो, आलकस बहुत आवे, ये कफोत्पन्न संग्रहणी के लक्षण हैं ।। १३--१६ ।।

त्रिदोष की संग्रहणी के लक्षण

पृथग्वातादिनिर्दिष्टहेतुलिंगसमागमे ।
त्रिदोषंलक्षयेदेवंतेषांवक्ष्यामिभेषजम् ।।१७।।

वातादि त्रिदोषों के लक्षण कथन कर आये हैं, सर्व लक्षण जिसमें मिलते हों उसे त्रिदोषजनित संग्रहणी कहते हैं । 'तेषां भक्ष्यामिभेषजम्' यह पद केवल श्लोक पूर्ति के लिये लिखा है ।।१७।।

इति श्री पण्डित चोखेलाल निर्मितायां कृष्णानन्दिनी भाषाटीकायां माधवनिदाने संग्रहणी रोगः समाप्तः

अतिसार ग्रहणी और अर्श इनका परस्पर सम्बन्ध है, इसी कारण ग्रहणी रोग के

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

पश्चात, अर्शरोग का कथन करते हैं

संख्यारूप सम्प्राप्ति

पृथग्दोषैः समस्तैश्चशोणितात्सहजानिच ।
अर्शांसिषट्प्रकाराणिविद्याद्गुदवलित्रये ॥१॥

अलग २ दोषों से ३ सम्पूर्ण दोष मिलकर १ रक्त से १ और सहज ऐसे छः प्रकार का अर्श रोग होता है । यह रोग गुदास्थित तीन वली के अन्दर होता है, गुदा में अग्रग्राहिणी सर्ज्जनी ग्राहिणी ये तीन वली हैं ॥ १ ॥

सम्प्राप्ति पूर्वक अर्श का रूप

दोषास्त्वङ्मांसमेदांसिसंदूष्यविविधाकृतीन् ।
मांसांकुरानपानादौकुर्वंत्यर्शांसिताञ्जगुः ॥२॥

वातादि दोष त्वग् माँस और मेदा इनको और उस जगह के रक्तको दुष्ट कर गुदामें बहुत प्रकार की आकृति के मांस के अंकुर प्रगट करे अर्थात् मस्से उत्पन्न करे उसको बवासीर कहतेहैं । आदि शब्द से नाक, नेत्र, नाभि में भी जानना यह सुश्रुत आचार्य का मत है । कायचिकित्सक तो गुदा में होता है उसी को बवासीर कहते हैं, जो नासिका आदि में होय उसे अधिमाँस कहते हैं क्योंकि नाक आदि में जो बवासीर होता है उसमें पूर्व रूप के लक्षण मिलते नहीं हैं ॥ २ ॥

वातज बवासीर के कारण

कषायकटुतिक्तानिरूक्षशीतलघूनिच ॥ प्रमिताल्पाशनं
तीक्ष्णंमद्य मैथुनसेवनम् ॥ ३ ॥ लंघनंदेशकालौचशीतौ
व्यायामकर्मचाशोकोवातातपस्पर्शौहेतुर्वातार्शसांमतः ।४

कसैला, कटु, तीक्ष्ण, रूक्ष, ठण्डा और अत्यन्त लघु ऐसे

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

भक्ष पदार्थों के भक्षण से तथा अति अल्प खाने से, भोजन समयको उलंघन करने से, तीव्र मदिरा पान से, अत्यन्त स्त्री के साथ विषय से, व्रत, शीत, देश और शोक समय में व्यायाम करने से, चिन्ता से, हवा और ताप में भ्रमण करने से, ये वात की बवासीर के कारण हैं ॥ ३-४ ॥

पित्तज बवासीर के लक्षण

कट्वम्ललवणोष्णानिव्यायामाग्न्यातपश्रमाः ॥ देशकालावशिशिरौक्रोधोमद्यमसूयनम् । ५ । विदाहितीक्ष्ण मुष्णंचसर्वंपानान्नभेषजम् ॥ पित्तोल्बणानांविज्ञेयःप्रकोपेहेतुरर्शसाम् ॥६॥

कटु, अम्ल, नमक का, उष्ण ऐसे पदार्थों से, दंड व्यायाम से, अग्नि के निकट तथा धूप में रहने से, श्रम, उष्ण, देश (मारवाड़ आदि) और गर्म काल अर्थात् ग्रीष्मऋतु कोप, मदिरा पान, परधन देखकर जलना, दाहकारी तीक्ष्ण और उष्ण वस्तुका पान करना, अन्न का और उष्ण दवाओं का सेवन, ये सब कारण पित्ताधिक बवासीर के हैं ॥ ५-६ ॥

कफज बवासीर के लक्षण

मधुरस्निग्धशीतानिलवणाम्लगुरूणिच ॥ अव्यायामो दिवास्वप्नःशय्यासनसुखेरतिः ॥७॥ प्राग्वातसेवाशीतौ च देशकालावचिंतनम् ॥ श्लेष्मिकाणांसमुद्दिष्टमेतत्कारणमर्शसाम् ॥८॥

मीठा, स्निग्ध, ठण्डा, खारी, अम्ल, गुरु ऐसे भक्षण से और व्यायाम के न करने से, दिवाशयन से, सेज गद्दी इनके शयन सुख से, पूर्वी वायु भक्षण से, ठण्डे देश तथा शरत्काल, शोक रहित होने

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

से, ये कारण कफ की बवासीर के हैं ॥७-८॥

द्वंद्वज और त्रिदोषज बवासीर के कारण

हेतुलक्षणसंसर्गाद्विद्याद्द्वंद्वोल्वणानि च ॥
सर्वोंहेतुस्त्रिदोषाणांसहजैर्लक्षणैः समम् ॥९॥

दो दोषों के कारण और लक्षण मिले तो द्वंद्वज बवासीर जाने, पृथक वातादि बवासीर के कारण कहे हैं वे सब कारण त्रिदोष की बवासीर के हैं और जो सहज अर्श के अर्थात् सहज बवासीर के लक्षण हैं सो इनके भी जानने ॥ ९ ॥

वातज बवासीर के लक्षण

गुदांकुराबह्वनिलाःशुष्काश्चिमिचिमान्विताः ॥ ग्लानाः
श्यावारुणाःस्तब्धाविशदाःपरुषाःखराः॥१०॥ मिथोविसदृशावक्रास्तीक्ष्णाविस्फुटितानना:॥बिंबीककर्कंधुखर्जूर
कार्पासीफलसन्निभाः ॥११॥ केचित्कदंबपुष्पाभाःकेचित्सिद्धार्थकोपमाः ॥ शिरः पार्श्वांसकट्यूरुवंक्षणाभ्यधिक
व्यथाः ॥१२॥ क्षवथूद्गारविष्टंभहृद्ग्रहारोचकप्रदाः ॥
कासश्वासाग्निवैषम्यकर्णनादभ्रमावहाः ।१३। तैरार्तोग्रथितंस्तोकंसशब्दंसप्रवाहिकम् । रुक्फेनपिच्छानुगतंविबद्ध मुपवेश्यते । १४ । कृष्णत्वङ्नखविण्मूत्रनेत्रवक्त्रश्चजायते । गुल्मप्लीहोदराष्ठीलासभवस्ततएवच ।१५।

वाताधिक बवासीर से गुदा के अंकुर शुष्क (स्रावहीन) चिमचिम व्यथायुक्त, मुरझाये हुए, कृष्ण वर्ण तथा रक्तवर्ण, टेढ़े, विशद, कर्कश, खर्दरे, एक से न होंय, बाँके, तीखे, फटे आनन वाले, कंदूरी, बेर, खजूर, कपास के फल युक्त हो, कोई कदम्ब के पुष्प के

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

समान होय, कोई सरसों के समान होय, शिर, पसवाड़े, कन्धा, कमर, जाँघ, पेड़ू इनमें विशेष तकलीफ होय, छींक, डकार, दस्त साफ नहीं होय, हृदय बिंधा सा मालूम हो, अन्न द्वेष, खाँसी श्वाँस, अग्नि का मध्य गति होना अर्थात् कभी अन्न का पाचन होय कभी नहीं होय, कर्ण शब्द से व्याप्त हो, भ्रम होय, उस अर्श रोग से व्यथित पुरुष के पत्थर के सदृश अल्प- शब्दयुक्त वातज प्रवाहि के लक्षणयुक्त दर्द, झाग, चिकटा इन लक्षणों युक्त धीरे २ दस्त होय उस पुरुष की त्वचा का वर्ण तथा नाखून, मल-मूत्र, चक्षु, मुँह ये काले होंय, गोला, प्लीहा वायु की गांठ इन रोगों के उपद्रव वातज अर्श रोग में होते हैं ॥ १० से १५ ॥

पित्तकी बवासीर के लक्षण

पित्तोत्तरानीलमुखारक्तपीतासितप्रभाः । तन्वस्रस्राविणो-
विस्रास्तनवोमृदवःश्लथाः ॥१६॥ शुकजिह्वायकृत्खंड-
जलौकावक्त्रसन्निभाः ॥ दाहपाकज्वरस्वेदतृण्मूर्च्छारुचि-
मोहदाः ॥१७॥ सोष्माणोद्रवनीलोष्णपीतरक्तमवर्चसः ।
यवमध्याहरित्पीतहारिद्रत्वङ्नखादयः ॥१८।

मस्सों का मुख नीलवर्ण का रक्तपीत और श्वेतता लिये हों, उन मस्सों में से महीन धारायुक्त रक्त का स्राव हो और रक्त की बास आवे, बारीक और कोमल तथा शिथिल हो और उनका आकार तोता की जिह्वा. कलेजा और जोंक के मुख के समान हो और शरीर में दाह हो. गुदा का पाक हो, बुखार स्वेद, तृषा, मूर्छा अन्न द्वेष और मोह ये लक्षण हों और कर स्पर्श से उष्ण आम युक्त हो, यव के सदृश मध्य भाग में मोटे हों और जिसकी त्वचा, नख. चक्षु आदि हरित. पीतवर्ण और हरताल तथा हल्दी के सदृश होवे. ये लक्षण पित्ताधिक अर्श रोग के होते हैं ॥ १६ से १८ ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

कफ की बवासीर के लक्षण

श्लेष्मोल्वणामहामूलाघनमन्दरुजःसिताः ॥ उत्सन्नोपचिता स्निग्धाःस्तब्धावृत्तगुरुस्थिराः ॥१९॥ पिच्छिलास्तिमिताःश्लक्ष्णाःकंड्वाढ्याः स्पर्शनप्रियाः। करीरपनसास्थ्याभास्तथागोस्तनसन्निभाः ॥२०॥ वंक्षणानाहिनःपायुवस्तिनाभिविकर्षिणः। सश्वासकासहृल्लासप्रसेकारुचिपीनसाः ॥२१॥ मेह कृच्छ्रशिरोजाड्यशिशिरज्वरकारिणः। क्लैब्याग्निमार्दवच्छर्दिरामप्रायविकारदाः ।२२। वसाभाःसकफप्रायपुरीषाः सप्रवाहिकाः ॥ नस्रवंतिनभिद्यन्तेपाण्डुस्निग्धत्वगादयः ।२३।

कफाधिक बवासीर के लक्षण ये हैं कि गुदा के मस्से महामूल कठिन मन्द. व्यथाकारक श्वेत. लम्बे. मोटे. स्निग्ध. गोल. कई गुरु स्थिर गाढ़े कफ से लिप्त मणि सदृश स्वेद रंग के हों. खुजली विशेष चले और प्रिय मालूम हो. करील कटहर इनके कण्टक समान हों. गौ के थन के समान हों. पेढू में अफराकारक गुदा. मूत्र स्थान और नाभि इनमें व्यथा के कर्ता. श्वास. कांस. ओंकारी लार का गिरना. अरुचि. प्रतिश्याय इनके करने वाले प्रमेह. मूत्र. कृच्छ्र. शिर में भारापन. शीत. ज्वर नपुंसकता अग्नि का मन्द गति को प्राप्त होना. वमन और आम जिनमें बहुत हो. यथा अतिसार और संग्रहणी आदि रोग कर्ता चर्बी और कफ मिश्रित दस्त हो. प्रवाहिका प्रगट करने वाले और मस्सों में से रक्त का स्राव नहीं होय. गाढ़ी विष्ठा होने पर भी मस्से नहीं फूटें और शरीर का वर्ण पीत तथा स्निग्ध होय ये लक्षण श्लेष्मक बवासीर के हैं ॥१९ से २३॥

सन्निपातक और सहज बवासीर के तथा रक्तज बवासीर के लक्षण

सर्वैःसर्वात्मकान्याहुर्लक्षणैः सहजानिच। रक्तोल्वणागुदे

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

कीलाःपित्ताकृतिसमन्विताः ॥ २४ ॥ वटप्ररोहसदृशा-गुंजाविद्रुमसन्निभाः॥ तेऽत्यर्थंदुष्टमुष्णंचगाढविट्कप्रपीडिताः ॥२५॥ स्रवंतिसहसारक्तंतस्यचातिप्रवृत्तित. ॥ भेकाभः पीड्यतेदुःखैःशोणितक्षयसंभवैः ॥२६॥ हीनवर्णबलोत्साहोहतौजाः कलुषेन्द्रियः॥ विट्श्यावंकठिनं रूक्षमधोवायुनगच्छति ॥ २७ ॥

जो पूर्व वातादिक दोषों से उत्पन्न बवासीर के लक्षण कहे हैं वही पूर्वोक्त लक्षण सन्निपात तथा सहज बवासीर के होते हैं ।

गुदा के मस्सों का वर्ण चिरमिटी के समान हो अथवा वट के अंकुर सा होय, पैत्तिक बवासीर के लक्षण मिलते हों, मूँगा के समान हो, दस्त कठिन होने से मस्सों में व्यथा होय और रक्त का स्राव होय और गरम रक्त के अत्यन्त निकलने से वर्षा ऋतु के मेढक के समान पीला हो जाय, रक्त के निकलने से जो उत्पन्न त्वक् की कठोरता, नाड़ी में शिथिलता और अम्ल वस्तु तथा ठण्ड की अभिलाषा इत्यादि कष्टों से पीड़ित हो, नष्ट वर्ण शक्ति उत्साह पराक्रम नष्ट हो जाय, सम्पूर्ण इन्द्रियों में व्याकुलता हो जाय और काला रूक्ष ऐसा मल होय, अपानवायु का गमन शुद्ध नहीं होय, ये रक्तज बवासीर के लक्षण हैं ॥ २४ से २७ ॥

अब इसी रक्तज बवासीर के वातादि भेद करके लक्षण

तनुचारुणवर्णंचफेनिलंचासृगर्शसाम । कट्यूरुगुदशूलंच दौर्बल्यंयदिचाधिकम् ॥ तत्रानुबन्धो वातस्यहेतुर्यदि च रूक्षणम् ॥२८॥

बवासीर में से रक्त अल्प अरुण वर्ण और झाग मिश्रित निकले और कटि, जाँघ, गुदा इनमें शूल हो। यदि अशक्तिता

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

ज्यादा हो जावे और इसमें कोई रूक्षता का कारण पहुँच जावे तो इस रक्तज बवासीर के वायु का सम्बन्ध है ऐसा ज्ञात करना ॥२८॥

कफ सम्बन्ध के लक्षण

शिथिलंश्वेतपीतं च विट्स्निग्धंगुरुशीतलम् । यद्यर्शसांघनंचासृक्तंतुमत्पांडुपिच्छिलम् ॥२९॥ गुदंसपिच्छं स्तिमितंगुरुस्निग्धं च कारणम् ॥ श्लेष्मानुबंधोविज्ञेयस्तत्ररक्तार्शसांबुधैः ॥ ३० ॥

जिस अर्श में से शिथिल स्वेत, पीत, स्निग्ध, भारी और ठण्डा ऐसा दस्त होय और जिसका रक्त गाढ़ा तन्तुयुक्त पीतवर्ण तथा झागयुक्त निकले और गुदा बबूलयुक्त गीली होवे और गुदामें गुरुता तथा स्निग्धता आदिका कोई कारण हो तो उसे कफ सम्बन्ध जानना । शङ्का--क्योंजी पित्त के अनुबन्ध की बवासीरके लक्षणों का क्यों नहीं कथन किया गया ? उत्तर—रुधिर के और पित्त के प्रायः करके एक से लक्षण होते हैं इसलिये नहीं कहा, क्योंकि पूर्व कथित २४ वें श्लोक में 'पित्ताकृति समन्विता' ॥२९॥३०॥

बवासीर रोग का पूर्व रूप

विष्टंभोऽन्नस्यदौर्बल्यंकुक्षेराटोपएवच । कार्श्यमुद्गारबाहुल्यं सक्थिसादोऽल्पविट्कता ।३१। ग्रहणीदोषपांड्वर्त्तेराशंका चोदरस्यच ॥ पूर्वरूपाणिनिर्दिष्टान्यर्शसामभिवृद्धये ॥३२॥

अन्न का पाचन भले प्रकार नहीं होय अन्न कुक्ष में रहे शरीर दुर्बल हो जाय उदर में अफरा हो जाय और मन्दाग्नि हो जाय डकार अत्यन्त आवे जांघों में व्यथा होय दस्त अल्प उतरे संग्रहणी और पाँडु रोग की भ्रान्ति हो क्योंकि इनके लक्षण मिलते

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हैं और उदर रोग की शंका हो ये लक्षण जब बवासीर होने वाला होता है तब होते हैं ॥३१॥३२॥

शङ्का—केवल गुदा में दोषों के कोप से अर्श प्रगट होता है फिर सर्व शरीर में कृशत्व और कृष्णता कैसे हो जाती है ?

उत्तर—

पंचात्मामारुतःपित्तंकफोगुदवलित्रये। सर्वएवप्रकुप्यंतिगुदजानांसमुद्भवे। ३३। तस्मादर्शांसिदुःखानिबहुव्याधिकराणिच। सर्वदेहोपतापीनिप्रायःकुच्छ्रतमानिच। ३४।

गुदा के तीन आंटों में बवासीर के मस्से उत्पन्न होने से पांच प्रकार की वायु और पांच प्रकार का पित्त तथा पांच प्रकार का कफ ये सर्व दोष दूषित होते हैं। प्राण अपान समान उदान और व्यान ये पाँच प्रकार की वायु हृदय गुदा नाभि कण्ठ और सर्व शरीर क्रमशः स्थान है और आलोचक रंजक साधक पाचक भ्राजक इन भेदों से पांच प्रकार का पित्त होता है, इनकी जगह आलोचक नेत्रों में रंजक यकृत और प्लीह में साधक हृदय में पाचक पक्वाशय और आमाशय में भ्राजक त्वचा में रहता है। इसी प्रकार कफ भी पाँच प्रकार का होता है यह अवलुंपक क्लेदक बोधक तर्षक और श्लेषक तथा इनके रहने की जगह हृदय आमाशय जिह्वा शिर और सन्धि में है। इस प्रकार सम्पूर्ण दोष अपने २ पाँच रूपों से कुपित होते हैं इसीलिये यह रोग बहुत कष्टकारक और अनेक प्रकार की व्याधिकारक और सर्व शरीर कष्ट देने वाला विशेष कर कष्टसाध्य असाध्य होता है ॥३३॥३४॥

सुखसाध्य के लक्षण

बाह्यायांतुबलौजातान्येकदोषोल्बणानिच ॥
अर्शांसिसुखसाध्यानिनचिरोत्पतितानि च ॥३५॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

बाहर के आँटे में भई हो एक दोषाधिक हो और एक वर्ष व्यतीत न भया हो ऐसा बवासीर सुखसाध्य है ।।३५।।

कष्टसाध्य के लक्षण

द्वंद्वजानिद्वितीयायांवलौयान्याश्रितानि च ।
कृच्छ्रसाध्यानितान्याहुःपरिसंवत्सराणि च ।।३६।।

दो दोष से उत्पन्न हुआ हो और दूसरी वली में होय और जिसको एक साल बीत गई हो ऐसा बवासीर कष्टसाध्य होता है और जो बाहर की बलि में ही द्विदोषज हो एकदोषज हो दूसरी बलि में हो तो वह भी कष्टसाध्य होता है ।।३६।।

असाध्य के लक्षण

सहजानित्रिदोषाणियानिचाभ्यंतरावलिम् ।
जायंतेऽर्शांसिसंश्रित्यतान्यसाध्यानिनिर्दिशेत् ।३७।

सहज अर्थात् जन्म होने के समय से जो होय अथवा त्रिदोषजनित हो और तीसरी बलि में हो वह बवासीर असाध्य है ।।३७।।

याप्य लक्षण

शेषत्वदायुषस्तानिचतुःपादसमन्विते ।।
याप्यंतेदीप्तकायाग्नौप्रत्याख्येयान्यतोऽन्यथा ।३८।

यदि बवासीर असाध्य होय और रोगी की आयु बाकीहो और चतुःपाद सम्पत्ति (वैद्य औषध परिचायक और रोगी ठीक होवे) और रोगी मनुष्य की जठराग्नि सी दीप्त हो तो रोगी याप्य जानना और इससे विपरीत हो तो रोगी त्याज्य होता है । (प्रसंगवश से रोगी औषध वैद्य और सेवक के लक्षण कहते हैं ।।३८।।

वैद्योऽव्याध्युपसृष्टश्चभेषजंपरिचारकः ।।
एतेपादाश्चिकित्सायाःकर्मसाधनहेतवः ।।३९।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

वैद्य रोगी औषधि और सेवक ये कर्म साधन हेतु चिकित्सा के पाद हैं ।।३९।।

तत्रादौ वैद्य लक्षण कथ्यते

तत्त्वाधिगतशास्त्रार्थोदृष्टकर्मास्वयंकृती । लघुहस्तःशुचिः शूरः सज्जोपस्कृतभेषजः ।। ४० ।। प्रत्युत्पन्नमतिर्धीमान्व्यवसायी प्रियंवदः ।। सत्यधर्म्मपरोयश्चवैद्यईदृक्प्रशस्यते ।। ४१ ।।

गुरू से अच्छी प्रकार शास्त्रों का अध्ययन किया हो और वृद्ध तथा मत वैद्य की चिकित्सा जिसने देखी हो और स्वयं चिकित्सा कर्म में चतुर हो और जिस रोगी का इलाज किया हो, वह शीघ्र अच्छा हो गया हो, सिद्ध हस्त हो, पबित्र रहे शूर हो श्रेष्ठ औषधि चन्द्रोदयादि रस जिसके समीप हों तत्काल जिसकी मति स्फुरण वाली होय बुद्धिमान लौकिक व्यवहारों का ज्ञाता हो प्रिय वाक्य कहने वाला हो सत्य और धर्म का आचरणकर्ता हो ऐसा वैद्य प्रशंसा के योग्य होता है ।। ४०।।३१।।

कुत्सित वैद्य के लक्षण

कुचैलःकर्कशःस्तब्धःकुग्रामीस्वयमागतः ।।
पञ्चवैद्यानपूज्यन्तेधन्वन्तरिसमाअपि ।।४२।।

मैले वस्त्र वाला, कटुभाषी, अभिमानी, व्यवहार का अज्ञाता और बिना बुलाये आने वाला, ये पाँच वैद्य धन्वन्तरि के समान हो तब भी पूजा के योग्य नहीं हैं ।।४२।।

रोगी के लक्षण

आयुष्मान्सत्ववान्साध्योद्रव्यवानात्मवानपि ।
उच्यतेव्याधितःपादोवैद्यवाक्यकृदास्तिकः ।।४३।।

आयु वाला, बलयुक्त, साध्य, द्रव्यवान, ज्ञानी, वैद्य का आज्ञाकारी और धार्मिक ऐसा होना चाहिये ॥ ४३ ॥

उत्तम औषधि के लक्षण

प्रशस्तदेशसम्भूतंमशस्तेहनिचोद्धृतम् ॥
अल्पमात्रंबहुगुणंगंधवर्णरसान्वितम् ॥४४॥

उत्तम जगह में उत्पन्न हुई हो, शुभ दिन में उगाई होय, अल्प मात्रा देने से वहुत गुण करने वाली हो, दुर्गन्धिहीन हो, उत्तम रूप तथा रस से व्याप्त हो, वही उत्तम औषधि चिकित्सा में श्रेष्ठ होती है ॥ ४४ ॥

दुष्ट औषधि के लक्षण

वल्मीककुत्सितानूपश्मशानोषपमार्गजाः॥
जंतुवह्निहिमव्याप्तानौषध्यःकार्यसाधकाः ॥४५॥

बाँबी की, खोटी जमीन की, जल के पास की, श्मशान की, ऊसर भूमि की, जिस जगह रेहू चूना निकलता हो, उस जगह और रास्ता की, कीड़ों की खाई हुई, अग्नि से जली हुई, जाड़े की मारी ऐसी औषधि गुणकारक नहीं हुआ करती है ॥ ४५ ॥

अथ दूत के लक्षण

स्निग्धोऽजुगुप्सुर्बलवान्युक्तोऽव्याधितरक्षणे ।
वैद्यवाक्यकृदश्रांतःपादःपरिचःस्मृतः ॥ ४६ ॥

नवीन युवा वाला, शक्तिमान रोगी की सहायता करने में तैयार रहने वाला, वैद्यों के वाक्यों का आज्ञाकारी, आलस्यहीन, ऐसा परिचारक अर्थात् दूत होय, इन पूर्व कथितों को चतुष्पाद सम्पत्ति कहते हैं, यह सम्पत्ति आयु हीन को नहीं मिलती, आयुवाले को प्राप्त होती है ॥ ४६ ॥

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अथ असाध्य लक्षणानि कथ्यन्ते

हस्तेपादेगुदेनाभ्यांमुखेवृषणयोस्तथा ॥
शोथोहृत्पार्श्वशूलंचतस्यासाध्योऽर्शसोहिमः ।४७।

जिसके कर, पद. गुदा. नाभि. मुँह और अण्डकोश इनमें शोथ हो जाय. हृदय और पसवाड़े दूखें, उस रोगी को असाध्य समझना चाहिये ॥४७॥

हृत्पार्श्वशूलंसंमोहश्छर्दिरंगस्यरुग्ज्वरः ॥
तृष्णागुदस्यपाकश्चनिहन्युर्गुदजातुरम् ॥४८॥

हृदय और पाशुओं में शूल होय, इन्द्रिय और मन इनमें मोह होय. वमन. अङ्गों में व्यथा, बुखार. तृषा. गुदा का पाक अर्थात् गुदा के ऊपर पीले फोड़े इन लक्षणों से युक्त बवासीर वाला मनुष्य असाध्य जानना चाहिये ॥४८॥

तृष्णारोचकशूलार्त्तमतिप्रसृतशोणितम् ॥
शोथातिसारसंयुक्तमर्शांसिक्षपयंतिहि ॥४९॥

तृषा. अरुचि दर्द इनसे व्यथित जिसके अत्यन्त रक्त स्राव हो और शोथ दस्त हों उस रोगी का बवासीर नाश कर देती है ॥४९॥

मेढ्रादिष्वपिवक्ष्यतेयथास्वंनाभिजानिच ।
गंडूपदास्यरूपाणिपिच्छिलानिमृदूनिच ॥५०॥

लिंग आदि शब्द करके नाक कान इत्यादि स्थानों में दोषभेद से बवासीर होता है सो आगे कथन करेंगे उसी प्रकार नाभि स्थान में भी बवासीर होता है वह कैंचुआ के मुख तुल्य गाढ़ा और नरम होता है ॥५०॥

चर्म कील की सम्प्राप्ति

व्यानोगृहीत्वाश्लेष्माणंकरोत्यर्शस्त्वचोबहिः ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

कालोपमंस्थिरखरं चर्मकीलं तु तद्विदु ।५१॥

व्यान वायु कफ को लेकर त्वचा में कील के समान स्थिर और खरदरी ऐसी बवासीर को प्रगट करे उसको चर्मकील कहते हैं. 'त्वचोबहि' ऐसा कहने से गुदा होष्ठ का त्याग कहा ॥५१॥

वातादि भेद करके उसके लक्षण

वातेनतोदपारुष्येपित्तादतिसवक्त्रता ।
श्लेष्मणास्निग्धताचास्यग्रथितत्वंसवर्णता ।५२।

वात से, सुई के चुभाने से जैसी तकलीफ होती है ऐसी व्यथा हो, पित्त से कठोरता, कफ से काला और कुछ लाल तथा चिकनी गाँठ के समान देह के वर्ण के समान वर्ण होवे ॥ ५२ ॥

इति श्री प० चोखेलाल निर्मितायां कृष्णानन्दिनी भाषाटीकायां माधवनिदाने अर्श रोगः समाप्तम ॥

—XXXX—

अथ मन्दाग्निरोगनिदानम्

* * *

मन्दस्तीक्ष्णोऽथविषतः समश्चेतिचतुर्विधः ॥
कफपित्तानिलाधिक्यात्तत्साम्याज्जाठरोऽनलः।१।

पुरुष के कफ की प्रकृति से मन्दाग्नि, पित्त की से तीक्ष्णाग्नि वात की से विषमाग्नि तथा वात, पित्त, कफ इनके समान होने से समाग्नि—ऐसे चार प्रकार की अग्नि कही हैं । इसमें मन्दाग्नि को दुर्जय होने से प्रथम कथन किया और जाठर शब्द से धातु की अग्नि का त्याग जानना ॥१॥

अजीर्ण रोग

विषमोवातजान्रोगांस्तीक्ष्णःपित्तनिमित्तजान् ॥

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

करोत्यग्निस्तथामन्दोविकारान्कफसम्भवान् ॥२॥

विषमाग्नि वातजनित ८० रोगों में से किसी एक रोगको प्रगट करे और सामान्य ज्वरातिसारादि को उत्पन्न करे, विशेष करके मन्दाग्नि आलस्यादि को उत्पन्न करती है ॥२॥

सामाग्न्यादिकों के लक्षण

समासमाग्नेरशितामात्रासम्यग्विपच्यते ॥ स्वल्पापिनैवमन्दाग्नेर्विषमाग्नेस्तुदेहिनः ॥३॥ कदाचित्पच्यतेसम्यक्कदाचिन्नविपच्यते ॥ मात्रातिमात्राप्यशितासुखंयस्यविपच्यते ॥४॥

समाग्नि वाले मनुष्य के आहार का पाचन अच्छी प्रकार से होता है और मन्दाग्नि वाले के अल्पाहार भी भली प्रकार नहीं पचता और विषमाग्नि वाले के आहार का पाक कभी अच्छी प्रकार होता है और कभी नहीं होता है और बहुत भोजन करने पर भी आहार का पाचन जल्दी हो उसे तीक्ष्णाग्नि कहते हैं। इन चारों प्रकार की अग्नियों में समाग्नि श्रेष्ठ है ॥३॥४॥

यथा--

तीक्ष्णाग्निरितितंविद्यात्समाग्निःश्रेष्ठउच्यते । नरेक्षीण कफेपित्तंकुपितंमारुतानुगम् ॥५॥ सोष्मणापाचकस्थाने बलमग्नेःप्रयच्छति ॥ तदालब्धबलोदेहंरूक्षयेत्सानिलोऽनलः ॥ ६ ॥ अभिभूयपचत्यन्नंतैक्ष्ण्यादाशुमुहुर्मुहुः ॥ पक्त्वान्नंसततोधातूञ्छोणितादीन्पचत्यपि ॥७॥ ततो दौर्बल्यमातंकंमृत्युंचोपानयेत्परम् ॥ भुक्तेऽन्नेलभतेशांतिंजीर्णमात्रेप्रताम्यति ॥ ८ ॥ तृट्कासदाहमोहाःस्युर्व्याधयोऽत्यग्निसम्भवाः ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

क्षीण कफ वाले मनुष्य के कफ दूषित हो, वायु से मिलकर गर्मी के साथ पाचक स्थान में जाकर अग्नि को बल देवे तब जठराग्नि वायु का बल पाकर प्रबल होकर देह को रूक्ष कर देवे और उसके बलसे बारम्बार अन्न को हजम करे, अन्न को पचाय, पीछे रक्तादि धातुओं का पाचन करे, रुधिर आदि के पचने से देह में दुर्बलता का रोग और मृत्यु को पुरुष प्राप्त होवे जब अन्न को खावे तब तो शान्ति रहे और जब अन्न पच जाय तब मूर्छा आवे, तृषा, खाँसी, दाह, मोह ये रोग अत्यन्त तीक्ष्णाग्नि से होते हैं ॥५से८॥

इति श्री पण्डित चोखेलाल निर्मितायां कृष्णानन्दिनी भाषाटीकायां माधवनिदाने मंदाग्निरोगः समाप्तः

अथ अजीर्णनिदानम्

आमंविदग्धंविष्टब्धंकफपित्तानिलैस्त्रिभिः ॥ अजीर्णं
केचिदिच्छंतिचतुर्थंरसशेषतः ॥१॥ अजीर्णंपञ्चमंकेचि-
न्निर्दोषंदिनपाकिच।वदंतिषष्ठंचाजीर्णंप्राकृतंप्रतिवासरम्२

पुरुष के कफ करके आम, पित्त से विदग्ध, वायु से विष्टब्ध, इस तरह तीन प्रकारका अजीर्ण रोग होता है और किये हुए भोजन का अच्छी तरह पाचन नहीं हो रस बाकी रहे, उस रस से चौथा अजीर्ण होता है, और जो भोजन दिन और रात्रि में पचे और अफरा, अस्थि पीड़ा ये उपद्रव हो, यह पंचम अजीर्ण किसी के मत से है और जो नित्य ही स्वाभाविक अजीर्ण रहे अर्थात् विकृतिजन्य न हो उसे छटवां अजीर्ण कहते हैं। इस अजीर्ण के पचाने के वास्ते बांई करवट सोना आदिक उपाय लिखे हैं सो सुश्रुतोक्त करने चाहिये ॥ १ ॥ २ ॥

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

भुक्त्वाशतपदंगच्छेद्वामपार्श्वेनसंविशेत् ॥ शब्दरूप-
रसस्पर्शगन्धांश्चमनसःप्रियान् ॥ भुक्त्वानुपसेवेततेनान्नं
साधुतिष्ठति ॥३॥

भोजन करने के पश्चात् सौ कदम चलना चाहिये, वाम करवट से यतन करना स्वमन को जो मधुर शब्द, रूप, रस, स्पर्श, सुगंध इनको सेवन करना अन्न का पाचन कराने वाला होता है ॥३॥

अजीर्ण के कारण

अत्यंबुपानाद्विषमाशनाच्चसंधारणात्स्वप्नविपर्ययाच्च ॥
कालेपिसात्म्यंलघुचापिभुक्तमन्नंनपाकंभजतेनरस्य ॥४॥
ईर्ष्याभयक्रोधपरीक्षितेनलुब्धेनशुग्दैन्यनिपीडितेन ॥
प्रद्वेषयुक्तेनचसेव्यमानमन्न्नंनसम्यक्परिषाकमेति ॥ ५ ॥

अत्यन्त जलपान करने से, भोजन कालको त्याग पीछे भोजन करने से, मल-मूत्रादिक वेगों के रोकने से, दिवाशयन से, रात्रि में जागरण करने से इन हेतुओं से भोजन के वक्त यदि छोटे और बड़े पदार्थ खाने पर भी भोजन का अच्छी तरह पाचन नहीं हो, यह शरीर के हेतुओं का वर्णन किया। अब मन से सम्बन्ध रखने वाले अजीर्ण के कारणों का कथन करते हैं–ईर्ष्या, पर द्रव्य से दुखी होना, कोप करना, इन कारणों से तथा लोभ, शोक, दीनता इन हेतुओं से और मत्सरता करना इन कारणों से तथा पुरुषों के भोजन करा हुआ अच्छी तरह नहीं पचता है ॥४॥५॥

आमादिक अजीर्णों के लक्षण

तत्रामेगुरुतोत्क्लेदःशोथोगंडाक्षिकूटगः ॥
उद्गारश्चयथाभुक्तमविदग्धःप्रवर्त्तते ॥ ६ ॥

उन चारों अजीर्णों में से प्रथम आमाजीर्ण के लक्षणों का कथन

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

करते हैं–उदर और अङ्ग में भारापन हो, वमन की सी इच्छा हो, गाल और नेत्रों में सूजन हो और इसी अजीर्ण की शक्ति से जैसा मीठा, नमकीन आदि रसों से बना हुआ भोजन करा हो, वैसी ही डकार आवे ॥ ६॥

विदग्धाजीर्ण के लक्षण

विदग्धेभ्रमतृण्मूर्च्छाःपित्ताच्चविविधारुजः ॥
उद्गारश्चसधूमाम्लःस्वेदोदाहश्चजायते ॥७॥

भ्रम, तृषा और मूर्छा ये लक्षण विदग्धअजीर्ण के होते हैं और पित्त के बहुत रोग उत्पन्न हों तथा धूम के साथ खट्टी डकार तथा स्वेद का प्रदर्शन और दाह हो, ये विदग्ध के लक्षण हैं ॥७॥

विष्टब्ध अजीर्ण के लक्षण

विष्टब्धेशूलमाध्मानंविविधावातवेदनाः ॥
मलवाताप्रवृत्तिश्चस्तंभोमोहोऽङ्गपीडनम् ॥८॥

दर्द, अफरा, अनेक प्रकार की वायु सम्बन्धी पीड़ा मल और अधोवायु का न निकलना, देह जकड़ जाना, मोह और व्यथा होना ये लक्षण विष्टब्ध अजीर्ण के होते हैं ॥८॥

रसशेष अजीर्ण के लक्षण और अजीर्ण के उपद्रव

रसशेषेऽन्नविद्वेषोहृदयाशुद्धिगौरवे ॥
मूर्च्छाप्रलापोवमथुःप्रसेकःसदनंभ्रमः ॥
उपद्रवाभवंत्येतेमरणंचाप्यजीर्णतः ॥ ९ ॥

भोजन में अरुचि, हृदय में शुद्धि न हो और शरीर भारी हो जाय ये रसशेष अजीर्ण के लक्षण होते हैं। अब अजीर्ण के उपद्रव कहते हैं–मूर्छा, बड़बड़ाना, ओंकारी अर्थात् वमन, लारका टपकना, ग्लानि, भ्रम ये अजीर्ण के उपद्रव हैं। बहुत बड़ा अजीर्ण जन को मार भी डालता है ॥ ९ ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

बहुत भोजन ही अजीर्ण का हेतु है उसी का कथन करते हैं

अनात्मवंतःपशुवद्भुंजतेयेऽप्रमाणतः ।।
रोगानीकस्यतेमूलमजीर्णं प्राप्नुवंतिहि ।।१०।।

जिन मनुष्योंकी इन्द्रिय अपने वश में नहीं है वे मनुष्य पशुवत् बहु भोजन करते हैं, उनके अनेक रोगों का हेतु अजीर्ण रोग उत्पन्न होता है ।। १० ।।

अजीर्ण से विषूचिका की उत्पत्ति होती है उसी को कहते हैं

अजीर्णमामंविष्टब्धंविदग्धंचतदीरितम् ।।
विषूच्यलसकौतस्माद्भवेच्चापिविलंबिका ।।११।।

आम विष्टब्ध और विदग्ध इन अजीर्णों का जो कथन किया है इनसे हैजा और अलस विलंबिका इनकी उत्पत्ति होती है, इनमें से चतुर्थ अजीर्ण रसशेष को विशूच्यादिकों का उत्पादक नहीं लिखा है, इसका यह हेतु है कि उस रसजीर्ण को अपरिणाम मात्र करके विशूचिका आदि के आरम्भत्व स्वाभावादि कोपमत कहने से आम विदग्ध और विष्टम्भ इनसे क्रम पूर्वक विषूचिका, विलंबिका और अलस ये उत्पन्न होती है ऐसा जो कार्तिककुण्ड आचार्य्य का मतहै वह मिथ्या है, कथं कि विदग्ध अजीर्ण का विलम्बिका को उत्पन्न करना असम्भव है क्योंकि उस विलम्बिका की उत्पत्ति आगे कफ से कथन करेंगे और विदग्ध भाव को पित्तजन्यता है, अतः यह मत माननीय नहीं है इसी कारण तीनों अजीर्ण मिलकर विषूचिका को उत्पन्न करते हैं ऐसा बकुल ऋषि कहते हैं ।। ११ ।।

विषूचिका की निरुक्ति कहते हैं

सूचीभिरिवगात्राणितुदन्संतिष्टतेऽनिलः ।।
यत्राजीर्णेन सावैद्यैर्विषूचीतिनिगद्यते । १२।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

जिस अजीर्ण में बादी शरीर में सुई चुबने के समान व्यथा करे उसे वैद्य विषूचिका कहते हैं ॥१२॥

नतांपरिमिताहारालभंतेविदितागमाः ॥
मूढास्तामजितात्मानोलभंतेऽशनलोलुपाः ॥१३॥

परिमाण युक्त जिनका आहार है और जो वैद्य-विद्या के कथनानुसार चलते हैं उनके कभी भी विषूचिका रोग उत्पन्न नहीं होताहै और अज्ञानी तथा जिनकी इन्द्रिय बश में नहीं हैं, जो भोजन के लोभी हैं वे ही विषूचिका के ग्राहक हैं ॥१३॥

विषूचिका के लक्षण

मूर्च्छातिसारोवमथुःपिपासाशूलभ्रमोद्वेष्टनजृंभदाहाः ।
वैवर्ण्यकंपौहृदयेरुजश्चभवंतितस्यांशिरसश्चभेदः ॥१४॥

मूर्छा, दस्त, वमन, तृषा, दर्द, भ्रम, जाँघों में व्यथा, जंभाई, दाह, देह का विवर्ण कम्प, हृदय में व्यथा और शिर में पीड़ा, ये लक्षण हों उसको हैजा कहते हैं ॥ १४ ॥

अलस के लक्षण

कुक्षिरानह्यतेऽत्यर्थंप्रताम्येत्परिकूजति॥निरुद्धोमारुतश्चैवंकुक्षावुपरिधावति ।१५। वातवर्चोनिरोधश्चयस्यात्यर्थं भवेदपि॥तस्यालसकमाचष्टेतृष्णोद्गारौतुयस्यच ।१६।

कूख है और उदर में अफरा हो. मोह हो. व्यथा से पुकारे, वायुगमन से रुककर कूख में और गले आदिक स्थान में भ्रमण करे, मल, मूत्र, और गुदा की वायु रुकजाय, तृषा बहुत लगे डकार आवे ये अलसक रोग के लक्षण हैं ॥ १५॥१६ ॥

बिलम्बिका के लक्षण

दुष्टंतुभुक्तंकफमारुताभ्यांप्रवर्त्ततेनोर्ध्वमधश्चयस्य । विलं-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

बिकांतांभृशदुश्चिकित्स्यामाचक्षतेशास्त्रविदःपुराणाः १७

जिस पुरुष के किया हुआ आहार कफ वात से दुष्ट होय, ऊपर नीचे नहीं जाय अर्थात् बमन और दस्त न हों, जिसकी दवा कठिनता से होय, उसे वैद्य-विद्या के जानने वाले विलम्बिका कहते हैं ॥१७॥ शङ्का—कोई कहे कि अलसक और बिलम्बिका इन दोनों को वायु श्लेष्मक के प्रवल होने से अधः और ऊँचे प्रवृत्ति होती है, इन दोनों में भेद क्या है सो कहो ? उत्तर—अलसक में दर्द आदि घोर पीड़ा कारक होते हैं और बिलम्बिका में नहीं होते हैं इतना ही अन्तरहै।

अजीर्ण से उत्पन्न विषूच्यादि को कहकर अजीर्णजन्य आम के
द्वितीय कार्यान्तर कहते हैं

यत्रस्थमामंविरुजेतमेवदेशंविशेषेणविकारजातैः ॥
दोषेणयेनावततंशरीरंतल्लक्षणैरामसमुद्भवैश्च ।१८।

जिस जगह आम रहता है उस जगह जिस दोष से वह स्थान व्याप्त हो उसके लक्षण करके पीड़ा, दाह, गौरवादि और आमजन्य बिकार के आम वातादिक विशेष पीड़ा होती है, अतः ज्ञात हुआ कि और ठिकाने पर अल्प पीड़ा होती है और 'यत्र' इस सर्वनाम शब्द से कुपित हुए वातादिकों के तुल्य आम का कोई स्थान नहीं है यह दिखाया ॥१८॥

अब बिषूचिका और अलसक के असाध्य लक्षण

यःश्यावदंतोष्ठनखोऽल्पसंज्ञोवम्यर्दितोऽयंतरयातनेत्रः ॥
क्षामस्वरःसर्वविमुक्तसंधिर्यायान्नरोसौपुनरागमाय ।१९।

जिस रोगी के दाँत, नख, होंठ कृष्णवर्ण के हो जाँय, वमन से व्यथित होवे और नेत्र भीतर को बैठ जांय, स्वर मन्द हो जाय, तथा हाथ पैरों की संधि शिथिल हो जाय वह पुरुष मृत्यु को प्राप्त

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

होता है, विलम्बिका स्वरूप से ही असाध्य है यह जैज्जट आचार्य का मत है ॥१९॥

निद्रानाशोऽरतिःकम्पोमूत्राघातोविसंज्ञिता ॥ अमीउपद्रवाघोराविषूच्यांपञ्चदारुणाः ॥२०॥ प्रायेणाहारवैषम्यादजीर्णंजायतेनृणाम्॥तन्मूलोरोगसंघातस्तद्विनाशाद्विनश्यति ॥२१॥

नींद नष्ट हो जाय, मन नहीं लगे, कम्प हो, मूत्र रुक जाय, शक्ति का नाश–ये पाँच बिषूचिका के घोर उपद्रव हैं। बहुधाभोजन की विषमता से मनुष्यों के अजीर्ण रोग होता है वही अजीर्ण सर्व रोगों का हेतु है, उस अजीर्ण के नाश होने से सर्व रोग नाश को प्राप्त होते हैं ये दोनों श्लोक क्षेपक हैं ॥२०–२१॥

गत अजीर्ण के लक्षण

उद्गारशुद्धिरुत्साहोवेगोत्सर्गोयथोचितः ॥
लघुताक्षुत्पिपासाचजीर्णाहारस्यलक्षणम् ॥२२॥

डकार शुद्ध आवे, शरीर और मनमें प्रसन्नता हो, जैसा भोजन करा हो उसके तुल्य मल-मूत्र की अच्छी प्रकार प्रवृत्ति होना, शरीर में हलकापन होना परन्तु कोष्ठ विशेष हलका हो, भूख और प्यास की इच्छा हो, भोजन पचने के बाद ये लक्षण होते हैं ॥२२॥

इति श्री पं० चोखेलाल निर्मितायां कृष्णानन्दिनी भाषाटीकायां माधवनिदाने
अजीर्णरोगनिदानम् समाप्तम ॥

—XXXX—

अथ कृमि रोगनिदानम्

अजीर्णरोग से कृमि रोग की उत्पत्ति होती है इसीलिये अजीर्ण रोगान्तर कृमि रोग का कथन करते हैं

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

क्रिमयस्तुद्विधाप्रोक्ताबाह्याऽभ्यंतरभेदतः ॥
बहिर्मलकफासृग्विड्जन्मभेदाच्चतुर्विधाः ॥ १ ॥

कृमि रोग दो तरह का होता है—एक बाहर का और दूसरा भीतर का, तहाँ बाहर के मल स्वेदादि और कफ, रक्त, विष्ठा इन कारणों से कृमि रोग चार तरह का होता है उसके बीस प्रकार के नाम हैं ॥ १ ॥

बाह्य कृमियों के नाम

नामतोविंशतिविधाबाह्यास्तत्रमलोद्भवाः ॥ तिलप्रमाण
संस्थानवर्णाः केशांबराश्रयाः ॥२॥ बहुपादाश्चसूक्ष्माश्च
यूकालिक्षादिनामतः ॥ द्विधातेकुष्ठपिडिकाकंडूगंडान्
प्रकुर्वते ॥ ३ ॥

उपरोक्त कृमिरोग के बीस नामों के बीस भेद हैं, तहाँ बाहर के मल से उत्पन्न कृमि तिल के तुल्य । श्वेत, काली,कपड़े और बालों में बसने वाली होती है तथा बहुत पैर वाली लघु जूं, लीख नामों से प्रसिद्ध दो प्रकार की है । ये कृमियें कोढ़, पीड़िका, खाज, गाँठ इत्यादि रोग उत्पन्न करती हैं ॥ २—३ ॥

कृमि रोग का कारण

अजीर्णभोजीमधुराम्लनित्योद्रवप्रियःपिष्टगुडोपभोक्ता ॥
व्यायामवर्जीचदिवाशयानोविरुद्धभुक्संलभतेकृमींश्च ।४।

अजीर्ण में भक्षण करे, नित्यप्रति मधुर, खट्टा खावे तथा पतला पदार्थ जैसे (कढ़ी रायता आदि) खावे, पीसा नाज मैदा आदि और गुड़ के पदार्थ भक्षण करे और भोजन करने के बाद व्यायाम आदि करें, दिवाशयन करें, निषिद्ध भोजन यथा दूध मछली आदि का भक्षण करे, ऐसे मनुष्य के कृमि रोग उत्पन्न होता है ।।४।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

किस कारण से कौनसी कृमि उत्पन्न होती है

माषपिष्टान्नलवणगुडशाकैःपुरीषजाः ॥ मांसमाषगुडक्षीरदधिशुक्तैःकफोद्भवाः ॥ विरुद्धाजीर्णशाकाद्यैः शोणितोत्थाभवंतिहि ॥ ५ ॥

उर्द पीसा अन्न (लड्डू घेवर गूक्षा आदि) नमक के, गुड़ के तथा साग आदिक पदार्थ भक्षण से मल की कृमि उत्पन्न होती है। मांस, उर्द, गुड़, दुग्ध, दही, कांजी ऐसे पदार्थ खाने से कफ की कृमि उत्पन्न होती है। विरुद्ध पदार्थ जैसे दूध, मछली और अर्द्ध परिपक्व शाक जैसे चना आदि खानेसे रक्तज कृमि पैदा होतीहै॥५॥

उदर में कृमि पड़ गई हों उसके लक्षण कहते हैं

ज्वरोविवर्णताशूलंहृद्रोगःसदनंभ्रमः ॥
भक्तद्वेषोऽतिसारश्चसञ्जातक्रिमिलक्षणम् ॥६॥

बुखार हो जाय, तन का वर्ण अन्य प्रकार का हो जाय, दर्द है, वक्षस्थल में पीड़ा हो, वमन की सी अभिलाषा हो, भ्रम, अन्न-द्वेष, दस्त हो जाय ये लक्षण जिसके उदर में गिड़ोहा आदि कृमि पड़ जाती हैं उसके होते हैं ॥६॥

कफोत्पन्न कृमि के लक्षण

कफादामाशयेजातावृद्धाःसर्पंतिसर्वतः ॥ पृथुवध्रनिभाः केचित्केचिद्गंडूपदोपमाः ॥ ७ ॥ रूढधान्यांकुराकारास्तनुदीर्घास्तथाणवः ॥ श्वेतास्ताम्रावभासाश्चनामतः सप्तधातु ते ॥ ८ ॥ अंत्रादाउदरावेष्टाहृदयादामहागुदाः चुरवोदर्भकुसुमाःसुगंधास्तेचकुर्वते ॥ ९ ॥ हल्लासमास्यस्रवणमविपाकमरोचकम् ॥ मूर्च्छाछर्दिस्तृषानाहकार्श्यश्वयथुपीनसान् ॥ १० ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

कफोत्पन्न कृमियें जब आमाशय में बढ़ जाती हैं तब इतस्ततः भ्रमण करती है उनमें से कोई स्थूल आकार वाली चाम की बाधी के तुल्य, कोई गिड़ोहे के आकार वाली, कोई धान्य के अंकुर के तुल्य होती हैं। कितनी ही कृमियें छोटी बड़ी चौडी होती हैं और किसी का वर्ण सफेद, किसी का ताँवे के तुल्य होता है। उनके ७ नाम हैं—१-अंत्राद, २-उदरावेष्ट, ३-हृदयाद, ४-महारुज, ५-चुरु, ६-दर्भकुसुम और ७-सुगन्ध ये नाम कोई अर्थयुक्त और कोई अर्थ हीन हैं। व्यवहार के निमित्त पूर्व आचार्यों ने कथन किये हैं। इन कृमियों से वमन की इच्छा होय, मुँहसे पानी गिरे, अन्नका पाचन न होवे, अरुचि, मूर्छा, वमन, तृषा, अफरा, शरीर कृश होवे, शोथ और जुकाम इतने विकार होते हैं ॥ ७ से १० ॥

रक्तज कृमि के लक्षण

रक्तवाहिशिरास्थाना रक्तजा जंतवोऽणवः॥ अपादा वृत्तता
म्राश्च सौक्ष्म्यात्केचिददर्शनाः ११। केशादा रोमविध्वंसा रोम
द्वीपा उदुंबराः। षट्ते कुष्ठैककर्माणः सहसौरसमातरः ।१२।

रक्त की बहने वाली नसोंमें रक्तसे उत्पन्न कृमि बारीक पैरहीन गोल और तामे के वर्ण होती हैं, कोई बहुत ही बारीक होतीहै जो देखने में नहीं आवे ऐसी कृमि ६ प्रकार की होती हैं उनके नाम कहते हैं १-केशाद २-रोम विध्वंश, ३-रोमद्वीप ४-उदुंबर ५-औरस और ६-मातर। ये कुष्ट को पैदा करती है ॥११-१२॥

मलोत्पन्न कृमि के लक्षण

पक्वाशये पुरीषोत्था जायंतेऽधोविसर्पिणः ॥ प्रवृद्धाः
स्युर्भवेयुश्च ते यदाऽमाशयोन्मुखाः ॥१३ ॥ तदास्योद्-
गारनिःश्वासा विड्गंधानुविधायिनः । पृथुवृत्ततनुस्थूलाः
श्यावपीतसितासिताः ॥१४॥ ते पञ्चनाम्ना क्रिमयः ककेे-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

रुकमकेरुकाः ॥ सौसुरादामलूनाश्चलेलिहाजनयंति च ॥१५॥ विड्भेदशूलविष्टंभकार्श्यपारुष्यपांडुताः । रोमहर्षाग्निसदनगुदकंड्वर्विमार्गगाः ॥१६॥

पक्वाशय में मल से उत्पन्न कृमि गुदा मार्ग से होकर बाहर निकलती है, जब ये वृद्धिता को प्राप्त ही जाती है तब आमाशय में प्राप्त होकर डकार और श्वास से विष्टावत दुर्गन्धि आने लगती है। ये कृमि बड़ी लघु गोल मोटी काले वर्ण की पीली सफेद नील वर्ण की होती है इनके नाम पाँच हैं—१-ककेरुक २—मकेरुक ३—सौसुराद ४-आमलून, ५-लेलिह । जब ये कृमि मार्ग को त्याग कर और मार्ग में गमन करती है तब इतने रोग उत्पन्न करती है—दस्त का पतला होना दर्द पेट का फूल जाना शरीर में कृशता तथा कठोरता पांडुरोग रोमाँच मन्दाग्नि और गुदा में खुजली होना इत्यादि ॥ १३ से १६ ॥

इति श्री पं० चोखेलाल निर्मितायां कृष्णानन्दिनी भाषाटीकायां माधवनिदाने कृमिरोग समाप्तम् ॥

—XXXX—

अथ पाण्डुरोगनिदानम्

पांडुरोगाः स्मृताः पञ्चवातपित्तकफैस्त्रयः ॥
चतुर्थः सन्निपातेनपञ्चमोभक्षणान्मृदः ॥ १ ॥

विष्ठा से उत्पन्न कृमिरोग पांडुरोग को उत्पन्न करता है इसी हेतु से कृमिरोग के बाद पांडुरोग का कथन करते हैं तहां सर्व प्रथम पांडुरोग की संख्यारूप सम्प्राप्ति कहते हैं । १ वायु का २ पित्त का ३ कफ का ४-सन्निपात का ५ माटी खाने से इस प्रकार पाँडुरोग पाँच प्रकार का है ॥ १ ॥

पांडुरोग के कारण और सम्प्राप्ति का कथन करते हैं

व्यवायमम्लंलवणानिमद्यंमृदंदिवास्वप्नमतीवतीक्ष्णम् ॥
विषेव्यमाणस्यविदूष्यरक्तंदोषास्त्वचंपांडुतांनयंति ॥२॥

अत्यन्त स्त्री-प्रसंग खट्टे पदार्थ का भोजन नमक का पदार्थ भक्षण करने से अत्यन्त मदिरा पान से मृत्तिका भक्षण से दिन में शयन करने से अत्यन्त तीक्ष्ण पदार्थ भक्षण करने से इन हेतुओं से तीनों दोष रक्त को दूषित कर तन की त्वचा को पीतवर्ण की कर देते हैं इस जगह रुधिर का तो उपलक्षण मात्र है रुधिरके कथन से त्वचा मास इनको दूषित करते हैं ॥ २ ॥

पूर्व रूप

त्वक्स्फोटनष्ठीवनगात्रसादमृद्भक्षणप्रेक्षणकूटशोथाः ॥
विण्मूत्रपीतत्वमथाविपाकोभविष्यतस्तस्यपुरःसराणि ।३।

त्वचा का फटना मुँह से बारम्बार थूकना अङ्गों का जकड़ना मिट्टी खाने की अभिलाषा होना चक्षुओं पर शोथा का आना मल मूत्र का पीत वर्ण होना अन्न अच्छी तरह हजम नहीं होय ये लक्षण जब होते हैं तब पाँडुरोग होने वाला होता है ॥३॥

वातज पाँडुरोग के लक्षण

त्वङ्मूत्रनयनादीनांरूक्षकृष्णारुणात्मता ॥
वातपांड्वामयेकंपतोदानाहभ्रमादयः ॥ ४ ॥

वातज पांडुरोग में त्वचा, मूत्र, नेत्र इनमें रूक्षता कृष्णता और लाली होती है तथा कम्प सुई के चुबने के तुल्य पीड़ा उदर का फूलना, भ्रम आदि शब्दों से भेद दर्द आदिक होते हैं ॥४॥

पैत्तिक पांडुरोग के लक्षण

पीतमूत्रशकृन्नेत्रोदाहतृष्णाज्वरान्वितः ॥

भिन्नविट्कोऽतिपीताभःपित्तपाण्ड्वामयीनरः ।६।

मल-मूत्र, नेत्र पीले वर्ण के हो जाँय, दाह, तृषा, बुखार इनसे व्यथित हो, मल पतला हो और शरीरकी कान्ति अत्यन्त पीले रंग की हो जाय, ये लक्षण पित्तज पाँडुरोग के होते हैं ॥५॥

कफ पाँडुरोग के लक्षण

कफप्रसेकश्वयथुतन्द्रालस्यातिगौरवै ॥
पांडुरोगीकफाच्छुक्लैस्त्वङ्मूत्रनयनाननैः ॥६॥

मुँह से कफ का निर्गमन होना, शोथ, तन्द्रा, आलस्य, शरीर में भारापन होना, त्वचा मूत्र, नेत्र मल इनका सफेद होना। ये लक्षण कफ पांडुरोग में होते हैं। जिसमें तीनों दोषों के लक्षण मिलते हों उसे सन्निपातिक पाँडु कहते हैं ॥६॥

सन्निपात युक्त पांडुरोग के असाध्य लक्षण

ज्वरारोचकहल्लासच्छर्दितृष्णाक्लमान्वितः ।
पांडुरोगात्रिभिर्दोषैस्त्याज्यःक्षीणोहतेंद्रियः ॥७॥

ज्वर, अन्नद्वेष, डकार, वमन तृषा और क्लम इतने उपद्रवयुक्त जो त्रिदोषजनित पाँडुरोगी क्षीण होगया हो, जिसकी इन्द्रियाँ अपने विषयों को ग्रहण न करतीहों ऐसा पांडुरोगी त्यागने योग्य है ॥७॥

मिट्टी खाने से प्रगट पांडुरोग के लक्षण

मृत्तिकादनशीलस्यकुप्यत्यन्यतमोमलः ॥ कषायामारुतं-
पित्तमूषरामधुराकफम् ॥८॥ कोपयेन्मृद्रसादींश्चरौक्ष्या
द्भुक्तंचरूक्षयेत् ॥ पूरयत्यविपक्कैवस्रोतांसिनिरुणध्यपि-
॥ ९ इंद्रियाणांबलंहत्वातेजोवीर्य्यौजसीतथा ॥ पांडु-
रोगंकरोत्याशुबलवर्णाग्निनाशनम् ॥१०॥

मिट्टी खाने की जिस पुरुष को आदत पड़ जाय उसके वाता-

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

दिक दोष दुष्ट होवें, कसैली मिट्टी से वायु दूषित होय, खारी मिट्टी से पित्त और मीठी मृत्तिका से कफ दुष्ट होवे फिर वही मिट्टी उदर में प्राप्त होकर रसादिक धातुओंमें शुष्कता करे, फिर वही मृत्तिका उदर में अपक रस को रसवाहिनी नाड़ियों में प्राप्त कर उनके मार्ग को रोक दे. रसवाहिनी नसों का जब रास्ता रुक जाय तब इन्द्रियों की शक्ति नष्ट हो जाय, तन का, तेजका, कान्ति और ओज कहिये सम्पूर्ण धातुओं का सार हृदय में रहता है सो क्षीण होकर पांडुरोग उत्पन्न करे उसमें बल, वर्ण अग्नि इनका नाश होता है ॥ ८-१०

विशेष लक्षण

शूनाक्षिकूटगंडभ्रूः शूनपान्नाभिमेहनः ।
क्रिमिकोष्ठोऽतिसार्य्येतमलंचासृक्कफान्वितम् ।११

नेत्र, गाल, भोंह, पैर, नाभि और लिंग इनमें शोथ हो और कोढ़ में कीड़े पड़ जाँय तथा रक्त और कफ मिश्रित दस्त होवे, सर्व पांडुरोगों में जब उदर में कीड़े पड़ जाते हैं तब ये पूर्वोक्त लक्षण उत्पन्न होते हैं यह ध्येय जैज्जट आचार्य का है, और कोई कहता है ये मृत्तिकोत्पन्न पांडुरोग के लक्षण हैं क्योंकि मृत्तिका-जन्य पांडरोग के लक्षण अनन्तर लिखे हैं परन्तु विदेह ने तो यह मृत्तिकोत्पन्न पांडरोग के लक्षण स्पष्ट रूप से कथन किये हैं ॥११॥

असाध्य लक्षण

पांडुरोगश्चिरोत्पन्नःखरीभूतोनसिध्यति ॥ कालप्रकर्षाच्छूनांगोयोवापीतानिपश्यति ॥ १२ ॥ बद्धाल्पविट्सहरितंसकफयोऽतिसार्यते ॥ दीनः श्वेतातिदिग्धांगश्छर्दिमूर्च्छातृषान्वितः ॥ १३ ॥ सनास्त्यसृक्क्षयाद्यश्चपाडुःश्वेतत्वमाप्नुयात् ॥ पांडुदंतनखो यस्तुपाँडु-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

नेत्रश्चयोभवेत् ॥ १४ ॥ पांडुसंघातदर्शी च पांडुरोगीविनश्यति ॥ अंतेषुशूनंपरिहोसमध्यंम्लानंतथांतेषुचमध्यशूनम् ॥ १५ ॥ गुदेचशेफस्यथमुष्कयोश्चशूनं प्रताम्यंतमसंज्ञकल्पम् ॥ विवर्जयेत्पाण्डुकिनंयशोऽर्थी तथातिसारज्वरपीडितंच ॥ १६ ॥

चिरकाल का पांडरोग चिरकाल व्यतीत होने पर प्राचीन हो जाता है सो अच्छा नहीं होता अथवा सर्व देह सूजन से व्याप्त हो गई हो और रोगी को सर्व पदार्थ पीतवर्ण के दीखें सो भी असाध्य है। अथवा जिस पुरुष का बंधा हुआ मल अल्पहरित वर्ण का कफ से मिला हुआ उतरे और वह भी असाध्य है। अथवा जो मनुष्य दीन अथवा ग्लानि युक्त हो और जिसकी देह का सफेद रङ्ग हो गया हो और उल्टी मूर्छा तृषा इनसे व्यथित हो सो रोगी नष्ट होवे। अथवा जो रक्त क्षय होनेसे पांडरोग प्रगटहो सो भी असाध्य है। जिसके दन्त नाखून और चक्षु पीले रंग के होंय वह रोगी असाध्य है। जिसको सर्व वस्तु पीत रंगकी ही दिखाई दें वह मृत्यु को प्राप्त होवे। कर पद मस्तक इनमें सूजन हो और जिसका मध्य भाग पतला हो ऐसा पांडरोगी असाध्य है। इससे विपरीत लक्षण वाला साध्य होता है और जिस रोगी के देह के बीच में शोथ हो और हाथ पद मस्तक ये दुबले हो जाँय तथा गुदा लिंग में सूजन हो तथा मृत तुल्य हो गया हो ऐसे पाँडरोगी को यशका इच्छुक वैद्य त्याग दे, इसी प्रकार दस्त और ज्वर से परितापित रोगी का त्याग कर दे। परन्तु इस अन्त के श्लोक में 'पांडकिनं' यह पाठ है इस जगह 'पानकिनं' ऐसा पाठ कोई आचार्य मानते हैं सो यथार्थ क्योंकि ऐसा पाठ पढ़ने से पाण्डरोगीकी अवस्था अर्थात् पांडरोग का भेद जो पानकी है उसके भी लक्षण इस पाठ से आ गये सो

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सुश्रुत में कथन किया है और इसी का मत लेकर और किसी ने भी कहा है यथा- ॥१२-१६॥

अतेशूनःकृशोमध्येत्वथवागुदशेफसि ॥
शूनोज्वरातिसाराद्यैर्मृतकल्पस्तुपानकी ॥१७॥

जिस पुरुष के कर, पदों में सूजन हो और शरीर का बीच कृश हो गयाहो अथवा गुदा लिंग में सूजन हो तथा ज्वर और दस्तों से मृत तुल्य हो गया हो ये लक्षण पानकी रोग के हैं। पांडुरोग का भेद कामला है ॥ १७ ॥

अथ कामला के लक्षण

पांडुरोगीतुयोऽत्यर्थंपित्तलानिनिषेवते ॥ तस्यपित्तमसृङ्मांसंदग्ध्वारोगायकल्पते ॥ १८ ॥ हारिद्रनेत्रः सभृशंहारिद्रत्वङ्नखाननः ॥ रक्तपित्तशकृन्मूत्रोभेकवर्णोहतेंद्रियः ॥ १९ ॥

दाहाविपाकदौर्बल्यसदनारुचिकर्षितः ॥
कामलाबहुपित्तैषा कोष्ठशाखाश्रयामता ॥२०॥

जो पांडुरोगी अत्यन्त पित्तकारक वस्तुओं का भक्षण करे उसके पित्त रक्त मांस को भस्म कर कामलारूप रोग उत्पन्न करनेमें समर्थ हो उस मनुष्य के नेत्रों में अत्यन्त पीतता हो, त्वचा, नख, आनन ये भी पीत वर्ण हो जाँय, मल, मूत्र काले हो जांय अथवा पीले हो जाँय, वह पुरुष वर्षा ऋतुके मेंढक के समान पीला हो जाय, इन्द्रियों की शक्ति का नाश हो जाय, अन्न का पाचन नहीं होय, कमजोरी, ग्लानि, अन्नद्वेष इनसे व्यथित हो जिसमें पित्तप्रबल ऐसी कामला एक कोष्ठाश्रय और दूसरी शाखा (रक्ताधि धातवा) श्रेय है उसी तरह कामला स्वतन्त्र होती है। अब कथन करतेहैं कि पांडुरोग

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

की अपेक्षा करनेही से कामलादिक होते हैं उसी की द्वितीय अवस्था कुम्भ कामला है ॥१८-२०॥

अथ कुम्भकामला के लक्षण

कालांतरात्खरीभूताकृच्छ्रास्यात्कुंभकामला ॥

असाध्य लक्षण

कृष्णपीतशकृन्मूत्रोभृशंशूनश्चमानवः ॥
संरक्ताक्षिमुखच्छर्दिर्विण्मूत्रोयश्चताम्यति ॥२१॥

चिर समय से प्राचीन होने से जो कुम्भकामला होवे वह कृच्छ्र साध्य होती है, कुम्भ कहतेहैं कोष्ठ तद्वत जो कामला अर्थात् कोष्ठाश्रय कामला। जिस मनुष्य का मल काला और मूत्र पीला हो और देह में सूजन अत्यन्त होवे, नेत्र, आनन, मल, मूत्र वमन ये लाल हों, मोह हो वह रोगी मृत्यु को प्राप्त होता है ॥२१॥

दूसरे असाध्य लक्षण

दाहारुचितृडानाहतंद्रामोहसमन्वितः ॥
नष्टाग्निसंज्ञःक्षिप्रंचकामलावान्विपद्यते ॥२२॥

दाह अन्न द्वेष, तृषा, पेटका फूलना, तन्द्रा, मोह इन लक्षणों से व्याप्त तथा मन्दाग्नि और विस्मृतिवान काम वाला रोगी तत्क्षण मृत्यु के लिये प्राप्त होता है ॥ २२ ॥

कुम्भकामला के असाध्य लक्षण

छर्द्यरोचकहृल्लासज्वरक्लमनिपीडितः ॥
नश्यतिश्वासकासार्तोविड्भेदीकुम्भकामली ॥२३॥

उल्टी, अरुचि, ओकारी का आना, अनायास श्रम इनसे व्यथित तथा दमा कास इनसे पीड़ित और दस्तयुक्त ऐसा कुम्भकामला वाला रोगी मृत्यु को प्राप्त होवे ॥२३॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

पांडुरोग से हलीमक रोग प्रगट होता है सो कहते हैं

यदातुपांडुवर्णःस्याद्धरितःश्यावपीतकः ॥ बलोत्साहक्षयस्तन्द्रामन्दाग्नित्वंमृदुज्वरः ॥ २४ ॥ स्त्रीष्वहर्षोंगमर्दश्चदाहस्तृष्णा रुचिर्भ्रमः ॥ हलीमकंतदातस्यविद्यादनिलपित्ततः ॥ २५ ॥

जिस काल पाँडुरोगी का वर्ण हरित, कृष्ण, पीत होय व बल और उत्साह नष्ट होवे, तन्द्रा, अग्नि मन्द, महीन बुखार, स्त्री रमण की इच्छा का नाश, अङ्गों का टूटना, दाह, तृषा, अरुचि और भ्रम ये उपद्रव वात-पित्तोत्पन्न हलीमक रोग के हैं ॥२४-२५॥

पानकी लक्षण

सन्तापोभिन्नवर्चस्त्वंबहिरन्तश्चपीतता ॥
पांडुतानेत्रयोयस्यपानकीलक्षणंभवेत् ॥ २६ ॥

इन्द्रिय और मन का ताप, मल का पतलापन होना, भीतर-बाहर पीतता होने और नेत्रों में पीलापन होना ये पानकी रोग के लक्षण हैं ॥२६॥

इति श्री पं० चोखेलाल निर्मितायां कृष्णानन्दिनी भाषाटीकायां माधवनिदाने पांडु, कामला, हलीमक निदानम् समाप्तम् ॥

—XXXX—

अथ रक्तपित्त निदानम्

पाण्डुरोग के तुल्य रक्तपित्त को भी पित्तजनित होने से तदनन्तर रक्तपित्त निदान का कथन करते हैं

धर्मव्यायामशोकाध्वव्यवायैरतिसेवितैः ॥ तीक्ष्णोष्णक्षारलवणैरम्लैःकटुभिरेवच ॥ १ ॥ पित्तंविदग्धंस्वगुणैर्विदहत्याशु शोणितम् ॥ ततःप्रवर्त्ततेरक्तमूर्ध्वंवाधो-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

द्विधापिवा ॥ २ ॥ ऊर्ध्वंनासाक्षिकर्णास्यैर्मेढ्रयोनिगुदैरधः ॥ कुपितंरोमकूपैश्चसमस्तैस्तत्प्रवर्त्तते ॥३॥

ताप में अत्यन्त डोलने से, अति व्यायाम करने से, चिन्ता से, अति मार्ग गमन से, अत्यन्त स्त्री प्रसङ्ग करने से, मिर्च आदिक तीक्ष्ण वस्तुओं के सेवन से, आँच में तापने से, जवाक्षारादि खारी पदार्थ भक्षण से, नमक से आदि ले लवण पदार्थ, खट्टी कटु वस्तुओं के भक्षण से कुपित हुआ पित्त अपने तीक्ष्ण द्रव आदि गुणों से रक्त को दूषित करे तब रक्त दोनों मागसे निकले। ऊपरके मार्ग नाक, कर्ण, नेत्र, मुँह इनके द्वारा निकले और अधोमार्ग कहिये मेढ्र गुदा और भग इनके मार्ग से निकले और जब रक्त अत्यन्त कुपित हो तब दोनों मार्ग और सर्व रोम छिद्रों द्वारा निकलता है ॥१—३॥

पूर्व रूप

सदनंशीतकामित्वंकण्ठधूमायनंवमिः ॥
लोहगंधिश्चनिः श्वासोभवत्यस्मिन्भविष्यति ॥४॥

ग्लानि, सर्दी की अभिलाषा, गले से धुएँ का निर्गमन होना, उल्टी और तप्त हुए लोह पर जल डालने से जैसी गन्ध होती है यथा श्वास द्वारा गन्ध का आना जिस पुरुष के ये लक्षण होते हैं उसके रक्तपित्त होगा यह जानना चाहिये ॥४॥

श्लेष्मिक और वातिक रक्तपित्त के लक्षण

सांद्रंसपांडुसस्नेहंपिच्छिलंचकफान्वितम् ।
श्यावारुणंसफेनंचतनुरूक्षंचवातिकम् ॥ ५ ॥

सघन किंचित पीत रङ्ग का स्निग्ध तथा गाढ़ा ऐसा कफ मिश्रित रक्तपित्त होता है। नीले रंग का रक्तवर्ण वाला कुछ झाग संयुक्त पतला और रुक्ष ऐसा रक्तपित्त वात का जानना ॥५॥

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

पैत्तिक रक्तपित्त के लक्षण

रक्तपित्तकषायाभंकृष्णंगोमूत्रसंनिभम् ।।
मेचकागारधूमाभमंजनाभ च पैत्तिकम् ।।६।।

जो रक्तपित्त काढ़े के रंग सदृश हो, काला गो मूत्र तुल्य हो अथवा मोर पेच के समान नीले रङ्ग का हो अथवा बैंगनी रङ्ग तुल्य हो,धुएँ के वर्ण समान हो ये लक्षण पित्तजनित रक्तपित्त के हैं।।६।।

द्विदोषजनित रक्तपित्त के लक्षण

संसृष्टलिगंसंसर्गात्त्रिलिंगंसान्निपातिकम् ।।
ऊर्ध्वगंकफसंसृष्टमधोगंमारुतान्वितम् ।। ७ ।।
द्विमार्गंकफवाताभ्यामुभाभ्यामनुवर्त्तते ।।

दो दोषों के मिलने से जो रक्तपित्त होता है उन दोनों दोषों के लक्षण मिलने से द्विदोषज जानना और जिसके तीनों दोषों के चिन्ह मिलते हों उसे त्रिदोषज कहते हैं । ऊपरी मार्ग से कफ का और अधोमार्ग से वात का और दोनों मार्ग से जो रक्तपित्त निकले सो वातपित्त का जानना ।।७।।

ऊर्ध्वगादिकों का साध्यासाध्य विचार

ऊर्ध्वं साध्यमधोयाप्यमसाध्यंयुगपद्गतम् ।।८।।

ऊपर के मार्ग से रपिक्तत्त निकले सो साध्य है (क्योंकि कफ से उत्पन्न है सो कफ के रक्तपित्त में क्वाथ, तीखे रस कफपित्त के नाशकर्ता हैं) और नीचे के मार्ग से रक्तास्राव हो सो साध्य है (इसका कारण यह है कि पित्त के हरण में विरेचन प्रधान है और इस पर वातपित्त नाशक मधुर रस मुख्य है वमन से विरुद्धमार्गी होता है अर्थात् वेगमार्ग का अवरोधक है परन्तु पित्त का नाशक

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

नहीं है) और दोनों मार्ग से गिरने वाला रक्तपित्त असाध्य है, कारण इस पर विरुद्ध चिकित्सा करनी पड़ती है ॥ ८॥

साध्य होने के कारण

एकमार्गं बलवतोनातिवेगंनवोत्थितम् ॥
रक्तपित्तंसुखेकालेसाध्यंस्यान्निरुपद्रवम् ॥ ९ ॥

शक्तिमान मनुष्य के एक मार्ग अर्थात् ऊपर के मार्ग से आता हो, अत्यन्त वेग न हो नवीन उत्पन्न हुआ हो और हेमन्त, शिशर ऋतु में भया हो और दुर्बलता आदि उपद्रवहीन हो. ऐसा रक्तपित्त साध्य होता है ॥ ९ ॥

दोष भेद से साध्यासाध्य लक्षण

एकदोषानुगंसाध्यंद्विदोषंयाप्यमुच्यते ॥
त्रिदोषजमसाध्यंस्यान्मंदाग्नेरतिवेगितम् ॥१०॥
व्याधिभिःक्षीणदेहस्यवृद्धस्यानश्नतश्चयत् ॥११॥

एक दोषज रक्तपित्त साध्य होता है, द्विदोषज याप्य है और त्रिदोषजनित असाध्य है । मन्दाग्नि अत्यन्त वेगयुक्त हो, रोग से क्षीण शरीर वाला वृद्ध मनुष्य का और आहारहीन मनुष्य का रक्त पित्त असाध्य होता है ॥ १०-११ ॥

रक्तपित्त के उपद्रव

दौर्बल्यश्वासकासज्वरवमथुमदाः पांडुतादाहमूर्च्छाभुक्ते
घोरो विदाहस्त्वधृतिरपिसदाहृद्यतुल्याचपीडा ॥ तृष्णा
कोष्ठस्यभेदःशिरसिचतपनंपूतिनिष्ठीवनत्वंभक्तद्वेषाविपा-
कौविकृतिरपिभवेद्रक्तपित्तोपसर्गाः ॥ १२ ॥

शक्ति का नाश, श्वास, खाँसी, बुखार, कै, नशा तन का वर्ण

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

पीत हो जाय, भड़क, मूर्छा, भोजन करने में अति दाह हो, अधीरजपना, हर समय हृदय में व्यथा, प्यास, मल का पतला होना, शिर दर्द, दुर्गन्धयुक्त थूकना अन्न में अप्रीति, अन्न का पाचन न हो, ये रक्तपित्त के उपद्रव है ॥ १२ ॥

असाध्य लक्षण

मांसप्रक्षालनाभं क्वथितमिव च यत्कर्दमांभोनिबंवामेदः
पूयास्रकल्पंयकृदिवयदिवापक्वजम्बूफलाभम् । यत्कृष्णंय-
च्चनीलंभृशमतिकुणपंयत्रचोक्ताविकारास्तद्वर्ज्यंरक्तपित्तंसुर
पतिधनुषयच्चतुल्यं विभाति ॥ १३ ॥

जो रक्तपित्त मांस धोवन के जल समान हो अथवा सड़े हुए पानी के तुल्य हो अथवा कीच, मेद, रक्त, राध इनके तुल्य हो। अथवा कलेजे के टुकड़ेवत, पकी जामुन के तुल्य किंवा काले रंगका अथवा पपैया के पंख समान अथवा मृत मनुष्य की सी दुर्गन्धियुक्त बास आवे और पूर्वोक्त श्वास कासादि उपद्रवयुक्त रक्तपित्त त्याज्य है और इन्द्र धनुष के तल्य भी रक्तपित्त असाध्य है। ऐसे रक्तपित्त वाले रोगी की सद्वैद्य दवा न करें॥ १३ ॥

दूसरे असाध्य लक्षण

येनचोपहतोरक्तंरक्तपित्तेनमानवः ॥
पश्येद्दृश्यंवियच्चापितच्चासाध्यमसंशयम् ॥ १४ ॥
लोहितंछर्दयेद्यस्तुबहुशोलोहितेक्षणः ॥
लोहितोद्गारदर्शीचम्रियतेरक्तपैत्तिकः ॥ १५ ॥

जिस रक्तपित्त ने मनुष्य दबा लिया हो वह दृश्य घटपट आदि और अदृश्य नभ आदि को लाल रंग का देखे वह निःसन्देह

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

असाध्य है । जो बारम्बार रक्त की उल्टी करे और जिसके नेत्र रक्तवर्ण हो जाँय तथा डकार भी लाल आवे वह मृत्यु को प्राप्त होता है ॥१४—१५॥

इति श्री पण्डित चोखेलाल निर्मितायां कृष्णानन्दिनी भाषाटीकायां
माधवनिदाने रक्तपित्तनिदानम् समाप्तम्

अथ राजयक्ष्मानिदानम्

वेगरोधात्क्षयाच्चैवसाहसाद्विषमाशनात् ॥
त्रिदोषोजायतेयक्ष्मागदोहेतुचतुष्टयात् ॥ १ ॥

वात, मूत्र, पुरीष आदि वेगों के डाटने से अत्यन्त विषयव्रत ईर्ष्या ग्लानि इत्यादिक धातुक्षय के हेतुओं से, शक्तिमान से द्वेष करने से, कुसमय अल्प वा बहुत भोजन करने से—इन चार हेतुओं से, त्रिदोषों के दूषित होने से पुरुष के राजयक्ष्मा रोग उत्पन्न होता है । वेग को रोकना ही वातकोप का हेतु है यह यथार्थ है तथापि वातकोप से अग्नि दूषित होकर कफपित्त का कोप होता है, इन चार कारणों से अनेक कारणों का अन्तर्भाव होता है । रसादि धातुओं के शोषण से इस रोग को (शोष) कहते हैं तथा तन में पाचनादि सम्पूर्ण क्रियाओं को क्षय करे है इसी से इस रोग को (क्षय) भी कहते हैं और चन्द्रमा इससे गर्म अत्यन्त व्यथित हुआ इसी से इस रोग को राजयक्ष्मा कहते हैं । यह आशय सुश्रुतका है और वाग्भट्ट ने इसको सर्व रोगों का राजा कहा है इसीसे इसका राजयक्ष्मा नाम कहा है । इस श्लोक में जो कथन किया है कि त्रिदोष का एक ही यक्ष्मा रोग उत्पन्न होता है, उसका तात्पर्य यह है कि त्रिदोषों के

कारण भेद से अनेक प्रकार का नहीं है सो सुश्रुत में कहा भी है और इस श्लोक में 'वेगरोधात' इस पद से केवल वायु, मूत्र, मल इनका ही ग्रहण करना चाहिये, आमादिक सबों का ग्रहण नहीं है सो 'चरक' में लिखा है इति ॥ १ ॥

राजयक्ष्मा की विशिष्ट सम्प्राप्ति

कफप्रधानैर्दोषैस्तुरुद्धेषुरसवर्त्मसु ॥
अतिव्यवायिनोवापिक्षीणेरेतस्यनंतराः ॥२॥
क्षीयंतेधातवःसर्वेततःशुष्यतिमानवः ॥

कफ ही मुख्य है जिनमें ऐसे जो वातादिक दोष तिनसे रस-वाहिनी नाड़ियों का मार्ग रुक जाने से (इससे यह सूचित किया कि रस मार्ग बन्द होने से हृदयस्थित रस को दूषित कर और उसी जगह में विकृति कहिये और प्रकार का स्वरूप करके कास के वेगसे मुख मार्ग होकर निकले) सो चरक में भी उल्लेख है (इससे अनुलोम क्षय दिखाया अब प्रतिलोमक्षय का कथन करते हैं) अथवा अत्यन्त विषय से मनुष्य का वीर्य नष्ट हो जाता है । जब शुक्र का क्षय हो जाय तब समीपस्थ सर्व धातु शुष्कता को प्राप्त होय तब पुरुष सूखने लगता है,जैसे वीर्य क्षय के बाद मज्जा क्षीणताको प्राप्त हो और मज्जा से हड्डी सूखने लगती है ऐसे पूर्व धातु क्षीण हो जाय । शङ्का—क्यों जी रस, रुधिर, माँस, मेदा, अस्थि, मज्जा, वीर्य इनमें प्रत्येक क्षीण होने से वीर्य का क्षय होना ठीक है परन्तु कार्यभूत वीर्य का क्षय होने से कारणभूत धातुओं का कैसे क्षय होता है ? उत्तर—जब शुक्र क्षय हो जाता है तब वायु दूषित होता है सो तन्त्रान्तर में लिखा है अर्थात् धातु के नाश होने से वायु के बहाने वाली नाड़ियों के मार्ग रुकने से वायु कुपित हो तब वही

वायु समीप की मज्जा धातु को सुखावे तदनन्तर अस्थि मेदा आदि रस पर्यन्त धातुओं का शोषण करती है । इस स्थान पर दृष्टान्त है— यथा—अग्नि से तप्त हुआ लोहे का गोला गीली भूमि में रखने से प्रथम निकट की भूमि के गीलेपन को शोषण करे पश्चात् दूर की भूमि के गीलेपन को सोखे इसी तरह यहाँ भी जानना चाहिये ॥२॥

पूर्व रूप

श्वासांगसादकफसंस्रवतालुशोषवम्यग्निसादमदपीनसका-
सनिद्राः ॥ शोषेभविष्यतिभवन्तिसचापिजंतुःशुक्ले क्षणो
भवति मांसपरोरिरंसुः ॥३॥ स्वप्नेषुकाकशुकशल्लक-
नीलकंठगृध्रास्तथैवकपयःकृकलासकाश्च ॥ तंवाहयंति-
सनदीर्विजलाश्चपश्येच्छुष्कांस्तरून्पवनधूमदवार्दिताश्च ।४।

श्वास, का फूलना अङ्गों में पीड़ा, कफ का थूकना, तालू का खुश्क हो जाना, उल्टी, मन्दाग्नि, उन्मत्तता, पीनस, कास और नींद ये चिन्ह धातु शोष होने वाले के होते हैं और उस पुरुष के चक्षु सफेद होते हैं और उस पुरुष की माँस भक्षण तथा स्त्री प्रसंग को अत्यन्त अभिलाषा होती है और स्वप्न में काक, तोता, सेह, नीलकण्ठ, मोर, गीध, बानर, करकेंटा इन पर निज को बैठा देखे और जलहीन नदी को देखे तथा वायु धूर और धूम्र इनसे पीड़ित वृक्ष देखे, चकार से तृण, केश आदि का पतन ये होते हैं । ये सर्व स्वप्न क्षयी रोग होने वाले मनुष्य को दीखते हैं सो चरक में लिखा है । शङ्का—क्योंजी शुक्र का तो क्षय हो जाता है फिर 'रिरंसु' यह पद क्यों धरा ? उत्तर—यह केवल व्याधि के बढ़नेपन के दोष से जानना चाहिये ॥ ३–४ ॥

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

त्रिरूप क्षय के लक्षण

अंसपार्श्वाभितापश्चसंतापःकरपादयोः ।।
ज्वरःसर्वांगगश्चैवलक्षणंराजयक्ष्मणः ।। ५ ।।

कन्धा और पाशुओं में व्यथा हो, पैर में जलन और सर्व अङ्ग में ज्वर, ये राजयक्ष्मा के लक्षण हैं । ये तीन लक्षण अवश्य होते हैं ऐसा चरक ने कथन किया है ।। ५ ।।

एकादशरूप षट्रूप और त्रिरूप शोष के लक्षण

स्वरभेदोऽनिलाच्छूलंसंकोचश्चाँसपार्श्वयोः ।। ज्वरोदाहोऽतिसारश्चपित्ताद्रक्तस्यचागमः ।।६।। शिरसःपरिपूर्णत्वमभक्तच्छन्दएवच ।। कासःकंठस्यचोद्धंसोविज्ञेयःकफकोपतः ।।७।। एकादशभिरेतैर्वाषड्भिर्वापिसमन्वितम् ।। कासातिसारपार्श्वार्तिस्वरभेदारुचिज्वरैः ।। ८ ।। त्रिभिर्वापीडितंलिंगैर्ज्वरकासासृगामयैः ।। जह्याच्छोषार्दितंजंतुमिच्छन्सुविपुलंयशः ।। ९ ।।

यह राजयक्ष्मा त्रिदोष से पैदा है इसमें दोषों के अलग अलग मिश्रित कर ग्यारह लक्षण हैं । ये व्याधि के प्रकोप से होते हैं, सन्निपात के तुल्य सम्पूर्ण चिन्ह सब दोषों से नहीं होते अलग २ होते हैं सो दिखाते हैं । कब्जी के प्रभाव से स्वर भंग और कन्धे तथा पासुओं में व्यथा, पित्त से बुखार, दाह, दस्त और मुँह से रक्त का गिरना और कफ से मस्तक का भारी होना, अरुचि, खांसी, स्वर भेद ये लक्षण होते हैं, इनमें तींन तो वायु से और ४ लक्षण पित्त से और चार ही लक्षण कफ से, इन ११ लक्षणों से अथवा खांसी, दस्त, पार्श्व पीड़ा, स्वर भेद, अरुचि और बुखार

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ये छः लक्षणों से अथवा ज्वर, खाँसी और रक्तविकार इन ३ लक्षणों से व्यथित क्षयीरोग वाले को तथा जिसका बल,मांस क्षीण हो गया हो ऐसे रोगी को यश की इच्छा वाला वैद्य त्याग दे, ऐसा रोगी असाध्य होता है ॥ ६–९ ॥

साध्यासाध्य विचार

सर्वैरर्द्धैस्त्रिभिर्वापिलिंगैर्वापिबलक्षये ॥
युक्तो वर्ज्यश्चिकित्स्यस्तुसर्वरूपोऽप्यतोऽन्यथा ।१०।

स्वर भेदादिक जो ग्यारह लक्षण कहे हैं उन सब लक्षणों से अथवा छः लक्षणों से वा तीन से पीड़ित क्षयी रोगी शक्ति, मांस क्षय होने पर त्याजनीय है । यदि क्षयी पुरुष का बल, माँस नष्ट न हुआ हो, क्षय रोग के सर्व लक्षण मिलते हों तथापि त्याज्य नहीं है उसकी चिकित्सा करना उचित है ॥ १० ॥

असाध्य लक्षण

महाशिनंक्षीयमाणमतिसारनिपीडतम् ॥
शूनमुष्कोदरंचैवयक्षिणंपरिवर्जयेत् ॥ ११ ॥

अत्यन्त भोजन करे परन्तु नित्यप्रति क्षीण होता जाय, दस्तों से अत्यन्त पीड़ित हो ऐसा रोगी असाध्य है क्योंकि क्षयी रोग वाले का जीवन मल के आश्रित है, जैसा लिखा है (मलायत्तं बलं पुंसाँ शुक्रायत्त ं तु जीवनम् । तस्माद्यत्नेन संरक्षेद्यक्ष्मिणो मलरेतसी) इति और जिसके अण्डकोश और पेट में सूजन आ गई हो ऐसा रोगी त्याज्य है क्योंकि सूजन वाला दस्त कराने से आरोग्य होता है इसमें दस्त कराना निषेध है, इसी से ऐसा रोगी त्यागने के योग्य है ॥ ११ ॥

किस रोग में औषधि देनी चाहिये, कहते हैं—

ज्वरानुबंधरहितंबलवन्तंक्रियासहम् ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

उपक्रमेदात्मवंतंदीप्ताग्निमकृश नरम् ॥१२॥

जिस राजयक्ष्मा वाले को ज्वर का सम्बन्ध नहीं हो बलवान, तथा औषधादि उपचार का सहने वाला और जिसकी इन्द्रियें बलयुक्त हों, अग्नि प्रदीप्त हो और कृश न हो ऐसे रोगी की चिकित्सा करना उचित है। इस श्लोक में 'अकृश' इस पद के धरने का यह अभिप्राय है कि पुष्ट देह वाला भी क्षयी रोग से हजार दिन जीवित रह सकता है। यथा—परंदिनसहस्रं तु यदिजीवितमानवः। सुभिषग्भिरुपक्रान्तस्तरुणः शोषपीडितः ॥ १२ ॥

असाध्य लक्षण

शुक्लाक्षमन्नद्वेष्टारमूर्ध्वश्वासनिपीडितम् ॥
कृच्छ्रेणबहुमेहंतंयक्ष्माहंतीहमानवम् ॥ १३ ॥

जिसके नेत्र सफेद हो गये हों, अन्न में अरुचि हो, ऊर्ध्व श्वास से व्यथित हो, कष्ट के साथ मूतने वाला अर्थात् जो आहार खाय सो मल हो जाय अर्थात् जब आहार का मल हो जाय तब उसके माँस रक्तका क्षय हो जाय तब असाध्य हो जाताहै। शुक्लाक्षादिक ये हर एक पृथक २ भी असाध्य हैं। अब कथन करते हैं कि बहुत विषय से धातु नष्ट होती है इसीसे राजयक्ष्मा रोग उत्पन्न होता है ऐसा नहीं, अपितु अन्य और कारण भी क्षय रोग के उत्पन्न करने वाले हैं उनका कथन करते हैं ॥ १३ ॥

व्यवायशोकवार्धक्यव्यायामध्वप्रशोषिणः ॥
व्रणोरःक्षतसंज्ञौचशोषिणौलक्षणंशृणु ॥ १४ ॥

अत्यन्त बिषय से शोष, शोकशोषी, वार्द्धक्यशोषी, व्यायामशोषी, मार्गशोषी, व्रणशोषी और उरः क्षतशोषी इनके अलग अलग लक्षण सुनो ॥ १४ ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

व्यवायशोषी के लक्षण

व्यवायशोषीशुक्रस्यक्षयलिंगैरुपद्रुतः ॥
पांडुदेहोयथापूर्वंक्षीयंतेचास्यधातवः ॥ १५ ॥

व्यवायशोषी (अत्यन्त स्त्री प्रसंग से क्षीण हुआ) सुश्रुत के कथनानुसार वीर्यक्षीण लक्षणों से (शुक्र क्षीण होने से मेढ़ और अण्डकोश में व्यथा हो. स्त्री प्रसंग करने में असमर्थ और बलयुक्त स्त्री प्रसंग करने से चिरकाल में वीर्य का स्राव हो और वह स्राव अल्प हो अथवा रक्त का स्राव होय) व्यथित होय, उसके तन का रंग पीतवर्ण हो जाय और वीर्य से मज्जा, मज्जा से हड्डी ऐसे क्रमशः धातु नष्ट होती है ॥ १५ ॥

शोकशोषी के लक्षण और जराशोषी के लक्षण

प्रध्यानशीलःस्रस्तांगःशोकशोष्यपितादृशः ॥ जराशोषीकृशोमंदवीर्यबुद्धिबलेन्द्रियः ॥ १६ ॥ कंपनोऽरुचिमान्भिन्नकांस्यपात्रहतस्वरः ॥ ष्ठीवतिश्लेष्मणाहीनंगौरवारुचिपीडितः ॥ १७ ॥ संप्रस्रुतास्मनासाक्षः शुष्करूक्षमलच्छविः ॥

शोक से जिसको क्षयरोग हो वह शोच करे और अङ्ग शिथिल लगें तथा वीर्यक्षीण व्यतिरिक्त शोषवान हो और पाँडुवर्ण देह हो तो ऐसे शोक से क्षयी पुरुष होता है । वृद्धावस्था से उत्पन्न शोष वाला पुरुष कृशतनु होता है । उसके बलवीर्य बुद्धि और इन्द्रिय ये मन्द हो जाती है, कम्प हो, अन्न द्वेष, फूटे काँसेके बर्तन को बजाने से जैसा शब्द हो तद्वद शब्द हो जाय, कफहीन बारम्बार थूके, शरीर में गुरुता, अरुचि से व्यथित मुख, कर्ण, चक्षु, इनसे स्राव है

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

और मल शुष्क हो जाय, कान्ति मलीन हो जाय, ये लक्षण जराशोषी वाले मनुष्य के होते हैं ।। १६—१७ ।।

अध्वशोषी के लक्षण

अध्वप्रशोषीस्रस्तांगःसंभ्रष्टपरुषच्छविः ।।
प्रसुप्तगात्रावयवःशुष्कक्लोमगलाननः ।।१८।।

अत्यन्त मार्ग गमन से उत्पन्न क्षय रोग वाले मनुष्य के कर, पद शिथिल हो जाते हैं और उसके तन का रंग भुने पदार्थ के तुल्य खरदरा हो जाता है, सर्वाङ्ग में शुप्तता, गले और मुख में खुश्की होती है ।। १८ ।।

व्यायामशोषी के लक्षण

व्यामाशोषीभूयिष्ठमेभिरेवसमन्वितः ।।
लिंगैरुरःक्षतकृतैःसंयुक्तश्चक्षतंविना ।। १९ ।।

अत्यन्त दण्ड कसरत आदि कारणों से प्रगट शोष रोग वाले मनुष्य के विशेष करके अध्वप्रशोषी के सर्व लक्षण होतेहैं अर्थात् जो लक्षण अध्वप्रशोषी में अल्प होते हैं वे व्यायामशोषी में अधिक होते हैं और उस मनुष्य के व्रण बिना ही उरःक्षत के लक्षण मिलते हैं । उरःक्षत के लक्षण सुश्रुत में लिखे हैं ।।१९।।

रक्तक्षयाद्वेदनाभिस्तथैवाहारयंत्रणात् ।।
व्रणिनश्चभवेच्छोषःसचासाध्यतमोमतः ।। २० ।।

रक्तक्षय से व्रण की व्यथा से तैसे ही अहार के अल्प होने से व्रणी मनुष्य के जो शोष होय उसे असाध्य समझना चाहिये ।।२०।।

उरःक्षत के लक्षण

धनुषायस्यतोऽत्यर्थंभारमुद्वहतोगुरुम् ।। युध्यमानस्य-

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

बलिभिः पततोविषमोच्चतः ।।२१।। वृषंहयंवाधावंतंदम्यंवान्यंनिगृह्णतः।।शिलाकाष्ठाश्मनिर्घातान्क्षिपतोनिघ्नतःपरान् ।।२२।। अधीयानस्यवाऽत्युच्चैर्दूरंवाव्रजतोद्रुतम् ।। महानदीर्वातरतोहयैर्वासहधावतः ।। २३ ।। सहसोत्पततोदूरात्तूर्णंवातिप्रनृत्यतः । तथान्यैःकर्मभिःक्रूरैर्भृशमभ्याहतस्यच ।। २४ ।। ताडितेवक्षसिव्याधिर्बलवान्समुदीर्यते ।। स्त्रीषुचातिप्रसक्तस्यरूक्षाल्पप्रमिताशिनः ।। २५ ।।

अत्यन्त तीरन्दाजी करने से, अत्यन्त भारी चीज उठाने से, शक्तिमान मनुष्य के साथ युद्ध करने से, ऊँची जगह से कूदने से, बैल, अश्व, ऊँट इत्यादिकों को भागते हुओं को पकड़ने से, बोझ वाली शिला, लकड़ी पत्थर के फेंकने से, अरि को मारने वाला जोर से, वेदादिक शास्त्रों का अध्ययन करने वाला अथवा दूर दिशा वाला बहुत जल्दी जाने से, गङ्गा आदि नदियों के तैरने से अथवा अश्व के साथ भागने से, अचानक कला खाने से, जल्दी २ अति नाचनेसे, इसी प्रकार दूसरे मल्लयुद्धादि क्रूर कर्म करनेसे, छाती फट जाती है, ऐसे मनुष्य की छाती पीड़ित होने से बलवान उरःक्षत रूप व्याधि उत्पन्न होती है और अत्यन्त स्त्री प्रसंग से तथा छाती में चोट लगने से, अति रमण से रूक्ष और कुसमय में भोजन करने से ।। २१–२५ ।।

उरोविरुज्यतेऽत्यर्थंभिद्यतेऽथविभज्यते ।। प्रपीडयतेतथापार्श्वे शुष्यत्यंगं प्रवेपते ।।२६।। क्रमाद्वीर्यंबलंवर्णोरुचिरग्निश्चहीयते ।। ज्वरोव्यथामनोदैन्यंविड्भेदोऽग्निव-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

धादपि ॥ २७ ॥ दुष्टःश्यावोथ दुर्गंधःपीतोविग्रथितोबहुः ॥ कासमानस्यचाभीक्ष्णंकफःसास्रःप्रवर्त्तते ॥२८॥ सक्षतः क्षीयते ऽत्यर्थंतथाशुक्रौजसोःक्षयात् ॥

पूर्वोक्त लक्षणयुक्त मनुष्य का हृदय फटेके तुल्य ज्ञात हो अथवा हृदय के दो टूक कर डाले हों ऐसा ज्ञात हो और हृदय में अति व्यथा हो और पाशुओं में भी विशेष तकलीफ हो, सर्वाङ्ग सूखने लगे तथा थरथर कांपने लगे तथा बल, माँस, अग्नि, वर्ण, रुचि ये घटने लगे, ज्वर हो जाय, पीड़ा. मन में सन्ताप, दीनता, अग्नि मंद होने से दस्तों का होना, बारम्बार खाँसते २ दुष्ट काला अत्यन्त दुर्गन्धित पीला गाँठ के तुल्य रक्तमिश्रित कफ गिरे,इस प्रकार क्षत रोगी अत्यन्त क्षीण हो सो केवल क्षत से ही क्षीण हो जाय ऐसा नहीं स्त्री सेवन करने से वीर्य और ओज सर्व धातुओं का तेज इन का नाश होने से पुरुष क्षीण होता है।

पूर्व रूप

अव्यक्तलक्षणंतस्यपूर्वरूपमितिस्मृतम् ॥ २९ ॥

उस उरःक्षत के न उत्पन्न होने वाले लक्षणों को पूर्व रूप कहते हैं ॥ २९ ॥

क्षतक्षीण के असाध्य लक्षण

उरोरुक्शोणितच्छर्दिःकासोवैशेषिकःकफे ॥
क्षीणेसरक्तमूत्रत्वंपार्श्वपृष्ठकटिग्रहः ॥ ३० ॥

क्षतक्षीण मनुष्य के हृदय में व्यथा हो, रक्तकी वमन करे और कास आदि दुष्ट पूर्वोक्त कथित लक्षणों से व्याप्त और रक्तयुक्त मूत्र का आना, पासु,पीठ, कमर इनमें पीड़ाहो ये असाध्य लक्षण हैं।३०

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अथ साध्य लक्षण

अल्पलिङ्गस्यदीप्ताग्नेःसाध्योबलवतोनवः ॥
परिसंवत्सरोयांप्यःसर्वलिंगंविवर्जयेत् ॥३१॥

जिसमें अल्प लक्षण हों और अग्नि दीप्त हो ऐसे मनुष्य बलवान हों तथा नवीन रोग हो तो वह साध्य है और रोग को उत्पन्न हुए एक वर्ष व्यतीत हो गया हो सो याप्य है और जिसमें सर्व लक्षण मिलते हों सो असाध्य है वह वैद्योंको त्यागके योग्यहै ।३१।

इति श्री पण्डित चोखेलाल निर्मितायां कृष्णानन्दिनी भाषाटीकायां
माधवनिदाने राजयक्ष्मारोगः समाप्तम्

अथ कासनिदानम्

सम्प्राप्ति

धूमोपघाताद्रजसस्तथैवव्यायामरूक्षान्ननिषेवणाच्च ॥
विमार्गगत्वादपिभोजनस्यवेगावरोधात्क्षवथोस्तथैव ।१।
प्राणो ह्युदानानुगतःप्रदुष्टःसंभिन्नकांस्यस्वनतुल्यघोषः ।
निरेतिवक्त्रात्सहसासदोषोमनीषिभिःकासइतिप्रदिष्टः।२।

नाक और मुँह में धूल व धूम्र जाने से, व्यायाम शुष्क अन्नके खाने से, भोजन के कुपथ्य से, मल तथा मूत्र वेग रोकने से उसी प्रकार छींक के वेग को रोकने से प्राणवायु अत्यन्त दूषित होकर दुष्ट उदानवायु में सम्मिलित होकर कफ पित्त संयुक्त होकर सहसा बाहर निकले उसका शब्द फूटे हुए काँस के बर्तन के तुल्य हो इसे आयुर्वेदविद खाँसी कहते हैं ॥१-२॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

पंचकासाःस्मृतावातपित्तश्लेष्मक्षतक्षयैः ॥
क्षयायोपेक्षिताःसर्वेबलिनश्चोत्तरोत्तरम् ॥ ३ ॥

वात, पित्त, कफ, क्षत और क्षय इन भेदों से खाँसी ५ प्रकार की होती है, इनकी चिकित्सा न करने से सब क्षयरूपको प्राप्त होती है । ये उत्तरोचार बलवान जाननी । यथा वात से पित्त को, पित्त से कफ की, कफ से क्षत की, क्षत से क्षय की बलवान है ॥३॥

पूर्वरूप

पूर्वरूपंभवेत्तेषांशूकतूर्णगलास्यता ॥
कंठेकंडूश्चभोज्यानामवरोधश्चजायते ॥४॥

मुख और कण्ठ कंटकयुक्त हो तथा गले में खुजली चले, भोजन न किया जाय ये लक्षण कास रोग होने वाले के होते हैं ॥ ४ ॥

वातज खाँसी के लक्षण

हृच्छंखमूर्धोदरपार्श्वशूलीक्षामाननःक्षीणबलस्वरौजाः ।
प्रसक्तवेगस्तुसमीरणेनभिन्नस्वरःकासतिशुष्कमेव ॥५॥

हृदय, शिर, कनपटी, पेट, पाशू इनमें दर्द हो, मुख उतर जाय शक्तिश्वर पराक्रम ये क्षीण हो जाय, बारम्बार खांसी उठे, स्वर भेद और सूखी खाँसी उठे, ये लक्षण वातज खाँसी के हैं ॥५॥

पैत्तिक कास के लक्षण

उरोविदाहज्वरवक्त्रशोषैरभ्यर्दितस्तिक्तनुखस्तृषार्तः ॥
पित्तेनपीतानिवमेत्कटूनिकासेत्सपांडुःपरिदह्यमानः ।६।

पित्त की खांसी से हृदय में दाह, बुखार, मुख का सूखना इनसे पीड़ित हो, मुँह में कटुता रहे, तृषा लगे, पीत वर्ण की कटु पित्त के प्रभाव से वमन हो, खाँसी के वक्त रोगी का पीतवर्ण हो जाय और सर्वांग में पीड़ा हो ॥ ६ ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

श्लेष्मक खांसी के लक्षण

प्रलिप्यमानेनमुखेनसीदच्छिरोरुजाऽर्त्तःकफपूर्णदेहः ॥
अभक्तरुग्गौरवकंडुयुक्तःकासेद्भृशंसान्द्रकफःकफेन ॥७॥

कफ की खांसी से मुख कफसे लिप्त रहे, मस्तक और सर्वाङ्ग कफ से परिपूर्ण हो जाय, अन्न द्वेष, शरीर में गुरुता, गलेमें खुजली और रोगी बारम्बार खांसे, कफ की गांठ थूकने से शान्ति हो ॥७॥

क्षतज कास के लक्षण

अतिव्यवायभाराध्वयुद्धाश्वगजनिग्रहैः ॥ रूक्षस्योरः
क्षतंवासुगृहीत्वाकासमावहेत् ॥ ८ ॥ सपूर्वंकासतेशुष्कं-
ततःष्ठीवेत्सशोणितम् । कंठेनरुजताऽत्यर्थंविरुग्णेनेनचो
रसा ॥९॥ सूची भिरिवतीक्ष्णाभिस्तुद्यमानेनशूलिना ।
दुःखस्पर्शेनशूलेधभेदपीडाभिताहिना ॥ १० ॥ पर्वभे-
दज्वरश्वासतृष्णावैस्वर्यपीडितः ॥ पारावतइवाकूजन्का
सवेगात्क्षतोद्भवात् ॥ ११ ॥

अत्यन्त प्रसंग से, बोझ के उठाने से, अत्यन्त मार्ग गमन से, कुश्ती लड़ने से, गज अश्व इनको दौड़ते हुए रोकने से, इन हेतुओं से रूक्ष मनुष्य का हृदय फटकर वायु कुपितहो खांसी पैदा करे। सो मनुष्य प्रथम सूखा खांसे पश्चात् रक्तमिश्रित थूके, गला बहुत दूखे, हृदय फूटे के तुल्य मालूम हो और तीखी सुई के चुबने का सा चबका हो और हृदय का छूना अच्छा न लगे, दोनों पाशुओं में दर्द हो, यह ध्येय वाग्भट्ट आचाय का है तथा दाह हो, उस मनुष्य के गांठ २ में व्यथा हो, बुखार श्वास स्वर भंग इनसे व्यथितहो, क्षतजनित कासके प्रभावसे मनुष्य कबूतर की तुल्य घूं घूं करे ॥८-११

क्षय की खांसी के लक्षण

विषमासात्म्यभोज्यातिव्यवायाद्वेगनिग्रहात् । घृणिनांशोचतांनृणांऽपापश्चेंऽग्नौत्रयोमलाः ॥ १२ ॥ कुपिताः क्षयजंकासंकुर्युर्देहक्षयप्रदम् ॥ सगात्रशूलज्वरदाहमोहान्प्राणक्षयजंकासंकुर्युर्देहक्षयप्रदम् ॥सगात्रशूलज्वरदाहमोहान्प्राणक्षयंचापिलभेतकासी ॥ १३ ॥ शुष्यन्विनिष्ठीवतिदुर्बलस्तुप्रक्षीणमासोरुधिरंसपूयम् ॥ तंसर्वलिंगंभृशदुश्चिकित्स्यंचिकित्सितज्ञाःक्षयजंवदंति ॥ १४ ॥

कुपथ्य और विषमासन से, विशेष मैथुन से, मल-मूत्रादि वेगों को रोकने से, अति दस्त से, अग्नि मन्द होय अर्थात् आहार अल्प होने से वायु कुपित हो, मन्दाग्नि करे तब तीन दोष दूषित हों, क्षय जन्य मृत्युकारक ऐसी खाँसी उत्पन्न करे तब यह खांसी देह को क्षीण करे । दर्द, बुखार, दाह और मोह ये हो जाय तब यह प्राण नष्ट करे, शुष्क खांसी रक्त, माँस तथा शरीर सूख जाय, रक्त और राध थूके, इन सब लक्षणों से व्याप्त चिकित्सा करने में असमर्थ खाँसी के वैद्य लोग क्षयज कहते हैं ॥१२-१४॥

साध्यासाध्य विचार

इत्येषक्षयजःकासःक्षीणानांदेहनाशनः ॥ साध्योबलवतांवास्याद्याप्यस्त्वेवंक्षतोत्थितः ॥ १५ ॥ नवौकदाचित्सिध्येतामपिपादगुणान्वितौ । स्थविराणांजराकासःसर्वोयाप्यःप्रकीर्त्तितः ॥१६॥ त्रीन्पूर्वान्साधयेत्साध्यान्पथ्ययाप्यांस्तुयापयेत् ॥१७॥

यह क्षयज खाँसी क्षीण मनुष्य की नाशक होती है, शक्तिमान मनुष्य के साध्यासाध्य होती है । क्षतज खाँसी भी इसी प्रकार की

होती है । यदि वैद्यादि पाद चतुष्टय सम्पन्न हों और ये दोनों तरह की खाँसी नवीन हो तो कदाचित् साध्य होय और वृद्ध मनुष्य के जरा कास अर्थात् धातु क्षीण होने से भई जो खाँसी सो सब तरह की याप्य है, सब इन्द्रियों के अन्तर्गत जाननी । अब कहते हैं कि बात, पित्त, कफ इन दोषों से उत्पन्न खांसी साध्य है और बाकी दो याप्य हैं, ये पथ्य सेवन से नाश हो जाती हैं और अपथ्य सेवन से असाध्यता को प्राप्त हो जाती हैं ॥ १५–१७ ॥

इति श्री पं० चोखेलाल निर्मितायां कृष्णानन्दिनी भाषाटीकायां माधवनिदाने
कासरोग निदानम ममाप्तम् ॥

—XXXX—

हिक्का श्वासनिदानम्

विदहिगुरुविष्टंभिरूक्षाभिष्यंदिभोजनैः ॥शीतपानाशनस्नानरजोधूमातपानिलैः ॥१॥ व्यायामकर्मभाराध्ववेगघातापतर्पणैः ॥ हिक्काश्वासश्चकासश्चनृणांसमुपजायते ॥ २ ॥

दाहकर्ता, गुरुपदार्थ, अफराकारक रूखा, अभिष्यन्दी भोजन से, ठण्डा जल पीने से, शीत पदार्थ भक्षणसे, ठण्डे जल के स्नानसे रज और धूम्र के मुँह और नाक में जाने से, गर्मी और वायु में घूमने से, व्यायाम करने से, बोझ के उठाने से, अति मार्ग गमन से, मल मूत्रादि वेगों को रोकने से, व्रत करने से पुरुषों के श्वास, खाँसी, हिक्का ये रोग उत्पन्न होते हैं ॥ १—२ ॥

हिक्का का स्वरूप और निरुक्ति

मुहुर्मुहुर्वायुरुदेतिसस्वनोयकृत्प्लिहाँत्राणिमुखादिवाक्षिपन्

सघोषवान।शुहिनस्त्यसून्यतस्ततस्तुहिक्केत्यमिधीयतेबुधैः ३

उद्दानवायु प्राणवायु के साथ सम्मिलित होकर जब निर्गमन करे तब पुरुष हिक् २ शब्द का प्रयोग करें और कलेजा सीहा इन का मुख पर्यन्त आकर्षण कर लावे और मुख में प्राप्त होकर बड़ा गम्भीर शब्द करे, इसे शीघ्र प्राणहती वैद्य हिक्का कहते हैं ॥३॥

हिक्का के भेद और सम्प्राप्ति

अन्नजाँयमलाँच्चुद्राँगंभीराँमहतींतथा ॥
वायुःकफेनानुगतःपंचहिक्काःकरोतिहि ॥ ४ ॥

वात कफ से सम्मिलित होकर १ अन्नजा, २ यमला, ३ चुद्रा ४ गम्भीरा, ५ महती, इस प्रकार पांच तरह के हिक्का रोग को उत्पन्न करता है ॥ ४ ॥

पूर्व रूप

कंठोरसोगुरुत्वंचवदनस्यकषायतः ॥
हिक्कानांपूर्वरूपाणिकुक्तेराठोपएवच ॥५॥

गला और छाती भारी रहे, कब्ज से मुँह कषैला रहे, पेट में अफरा हो तो हिचकी का पूर्व रूप समझना चाहिये ॥ ५ ॥

अन्नजा के लक्षण

पानान्नैरतिसंयुक्तैः सहसापीडितोऽनिलः ॥
हिक्कयत्यूर्ध्वगोभूत्वातांविद्यादन्नजांभिषक् ॥६॥

अन्न और जल के अति सेवन से वायु अचानक दूषित हो, ऊर्ध्वगामी होकर पुरुषके अन्नजा नामक हिचकी उत्पन्न करतीहै ॥६

गयेमला के लक्षण

चिरेणयमलैर्वेगैर्याहिक्कासंप्रवर्त्तते ॥

कंपयंतीशिरोग्रीवांयमलांतांविनिर्दिशेत् ॥७॥

धीरे-धीरे दो दो हिचकी चलें, मस्तक और कन्धा कांपे, उसे यमला हिचकी जाननी चाहिये ॥ ७ ॥

क्षुद्रा के लक्षण

प्रकृष्टकालैर्यावेगैर्मन्दैःसमभिवर्त्तते ॥
क्षुद्रिकानामसाहिक्काजत्रुमूलात्प्रधावति ॥८॥

जो हिक्का चिरकाल में गले और हृदय की सन्धि में धीरे धीरे चले उसे क्षुद्र हिचकी कहते हैं ॥ ८ ॥

गम्भीरा के लक्षण

नाभिप्रवृत्तायाहिक्काघोरागंभीरनादिनी ॥
अनेकोपद्रववतीगंभीरानामसास्मृता ॥ ९ ॥

जो हिचकी नाभि स्थानसे उठकर घोर गम्भीर शब्द करे और जिसमें तृषा बुखार आदि लक्षण हों उसे गम्भीरा कहते हैं ॥९॥

महती के लक्षण

मर्माण्युत्पीडयंतीचसततयाप्रवर्तते ॥
महाहिक्केतिसाज्ञेयासर्वगात्रप्रकंपिनी ॥१०॥

जो हिक्का मर्म स्थान को पीड़ित करती हुई सर्वांग को कम्पित करती हुई सर्वकाल प्रवृत्त हो उसे महती हिक्का कहते हैं ॥१०॥

असाध्य लक्षण

आयम्यतेहिक्कतोयस्यदेहोदृष्टिश्चोर्ध्वंनाम्यतेयस्यनित्यम् ॥
क्षीणोऽन्नद्विट्क्षौतियश्चातिमात्रंतौद्वौचांत्यौवर्जयेद्धिक्कमानौ ॥ ११ ॥

जिसका हिचकी से शरीर तन जावे, ऊँची दृष्टि हो जाय और

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

मोह होय, क्षीण पड़ जाय, भोजन में द्वेष होय, छींक बहुत आवे, इन दोनों हिचकियों वाला मनुष्य वैद्यों से त्याज्य है ॥११॥

और असाध्य लक्षण

अतिसंचितदोषस्यभक्तच्छेदकृशस्यच ॥ व्याधिभिःक्षीणदेह स्यवृद्धस्यातिव्यवायिनः ॥१२॥ आसांयासासमुत्पन्नाहिक्काहंत्याशुजीवितम् ॥

जिसके दोष अत्यन्त बढ़ गये हों और जिसका अन्न छूट गया हो, जिसका कृशतनु होगया हो और बहु व्याधियोंमें क्षीण पड़गया हो और जो वृद्धावस्था को प्राप्त है, अति स्त्री प्रसङ्ग करने वाला है, ऐसे मनुष्य की गम्भीरा और महती ये हिचकीहों तत्क्षण उस रोगी मनुष्य को यमपुर पहुंचाती है ॥१२॥

यमिका के असाध्य लक्षण

यमिकाचप्रलापार्त्तिमोहतृष्णासमन्विता ॥१३॥

व्यर्थ बकवाद, व्यथा हो, मोह, प्यास, इन चिन्हों से उक्त जो यमिका नामक हिचकी है सो प्राणनाशिनी है ॥१३॥

**अक्षीणश्चाप्यदीनश्चस्थिरधात्विद्रियश्चयः ॥
तस्यसाधयितुंशक्यायमिकाहंत्यतोऽन्यथा ।१४।**

बलवान प्रसन्नचित्त जिसकी धातु इन्द्रियें स्थिरता को प्राप्त हों ऐसे मनुष्य की यमिका हिक्का साध्य है और इससे विरुद्ध अर्थात् क्षीण दीन इत्यादि मनुष्य को तत्क्षण ही नाशक है। अन्नजा, क्षुद्रा ये दोनों साध्य हैं दो बार आने से यमिका कहाई जाती है चरकोक्त यमला का यह ग्रहण करना ठीक नहीं है ॥ १४ ॥

इति श्री पंडित चोखेलाल निर्मितायां कृष्णानन्दिनी भाषाटीकायां माधवनिदाने
हिक्कारोगनिदानं समाप्तम् ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अथ श्वासनिदानम्

महोर्ध्वच्छिन्नतमकक्षुद्रभेदैस्तुपंचधा ।
भिद्यतेसमहाव्याधिःश्वासएकोविशेषतः ॥१॥

हिचकी और श्वास का एक हेतु होने से हिचकी के बाद श्वास रोग का कथन करते हैं । महाश्वास, ऊर्ध्वश्वास, छिन्न श्वास, तमक श्वास और क्षुद्रश्वास—इन भेदों से अकेला श्वासरोग पाँच प्रकार का है ॥ १ ॥

श्वास के पूर्वरूप के लक्षण

प्राग्रूपंतस्यहृत्पीडाशूलमाध्मानमेवच ॥
आनाहोवक्त्रवैरस्यंशंखनिस्तोदएवच ॥ २ ॥

छाती में पीड़ा हो, दर्द हो, पेट में अफरा तथा तना सा ज्ञात हो, कनपटी दूखें, मुख में रस स्वादिष्ट नहीं लगे, ये श्वास रोग के लक्षण हैं ॥ २ ॥

श्वास रोग की सम्प्राप्ति

यदास्रोतांसिसंरुध्यमारुतः कफपूर्वकः ॥
विष्वग्व्रजतिसंरुद्धस्तदाश्वासान्करोतिसः ॥३॥

सम्पूर्ण देह में गम न करने वाला वायु सब कफ से सम्मिलित होकर प्राण अन्न उदक बहने वाली सब नसों के रास्तों को रोक दे तब वायु चलने से रुककर श्वासरोग को उत्पन्न करती है ॥३॥

महाश्वास के लक्षण

उद्धूयमानवातोयः शब्दवद्दुःखितोनरः ॥ उच्चैःश्वसितिसंरुद्धोमत्तर्षभइवानिशम् ॥ ४ ॥ प्रणष्टज्ञानस्तथावि-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ज्ञानस्तथाविभ्रांतलोचनः ॥ विष्टब्धाज्ञाननोबद्धमूत्रवर्चाविशीर्णवाक् ॥ ५ ॥ दीनःप्रश्वसितंचास्यदूराद्विज्ञायतेभृशम् ॥ महाश्वासोपसृष्टस्तुक्षिप्रमेवविपद्यते ॥६॥

जिसका पवन ऊपर जाकर प्राप्त हो ऐसा मनुष्य कष्टयुक्त होकर मुख से सशब्द श्वास निकाले, उच्च स्वर से अर्थात् जैसे मदयुक्त बैल शब्द करता है उसी प्रकार निशदिन श्वास से व्यथित हो, ज्ञानादि शक्ति नाश हो जाँय, नेत्र चंचल हों और जिसका श्वास लेने से नेत्र और मुँह फट जाय, मल तथा मूत्र का अवरोध हो जाय, मन्द शब्द निकले, बोलने में कष्ट मालूम हो, मन अप्रसन्नहो और जिसका श्वास दूर से ही सुनाई दे, ये तत्काल मृत्यु करा देने वाले महाश्वास रोग के लक्षण हैं ॥४-६॥

ऊर्ध्व श्वास के लक्षण

ऊर्ध्वंश्वसितियोदीर्घंनचप्रत्याहरत्यधः ॥ श्लेष्मावृतमुखस्रोताः क्रुद्धगंधवहार्दितः ॥७॥ ऊर्ध्वदृष्टिर्विपश्यस्तुविभ्रांताक्षइतस्ततः ॥ प्रमुह्यन्वेदनार्तश्चशुष्कास्योऽरतिपीडितः ॥ ८ ॥

चिरकाल पर्यन्त ऊँचा श्वास ले नीचे आवै नहीं, कफ से मुँह व्याप्त हो जाय तथा सर्व नाड़ियों के मार्ग कफ से रुक जाँय, दुष्ट पवन से व्यथित हो, ऊपर को दृष्टि कर सर्वत्र देखे, मूर्छा की व्यथा से अत्यन्त दुःखित हो, मुख मण्डल श्वेताभ हो जाय तथा बेहोश हो, ये ऊर्ध्व श्वास रोग के लक्षण हैं ॥७-८॥

ऊर्ध्वश्वासेप्रकुपितेह्यधःश्वासोनिरुध्यते ॥
मुह्यतस्ताम्यतश्चोर्ध्वश्वासस्तस्यैवहंत्यसून् ॥९॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऊपर का श्वास दूषित होने से नीचे का श्वास रुक जाय और हृदय में रुक जाय अर्थात् वायु नीचे को न उतरे तब पुरुष के मोह और चित्त में ग्लानि हो ऐसा ऊर्ध्व श्वास रोग मनुष्य का घातक है ॥ ९ ॥

छिन्नश्वास के लक्षण

यस्तुश्वसितिविच्छिन्नंसर्वप्राणेनपीडितः ॥ नवाश्वसितिदुःखार्तोमर्मच्छेदरुगर्दितः ॥ १० ॥ आनाहस्वेदमूर्च्छार्तोदह्यमानेनबस्तिना ॥ विप्लुताक्षःपरिक्षीण श्वसन्रक्तैकलोचनः ।११। विचेताःपरिशुष्कास्योविवर्णःप्रलपन्नरः।छिन्नश्वासेनविच्छिन्नःसशीघ्रं विजहात्यसून् ।१२।

जो मनुष्य धीरे २ जितनी सामर्थ्य हो उतनीही शक्तिसे श्वास को त्यागे अथवा दुख को प्राप्त हो, श्वास के छोड़नेमें क्लेशजनित हो और हृदय मूत्र स्थान इनमें सुई के सदृश पीड़ा हो, उदर में अफरा स्वेद और मूर्छा इनसे क्लेषित हो, मूतेन्द्रिय में जलन हो, नेत्र चंचल हों अर्थात् अश्रुपातयुक्त नेत्र हों, श्वास लेते २ शक्तिहीन हो जाय और श्वास के लेने से एक नेत्र अरुणवर्ण का होजाय चित्त में उद्वेग, मुख सूखा हो, देह की कान्ति भली न हो, व्यर्थ भाषण करे, सन्धि के सब बन्धन शिथिलता को प्राप्त हो जांय, इस छिन्नश्वास से मनुष्य यमलोकगामी होता है ॥१०-१२॥

तमक श्वास के लक्षण

प्रतिलोभो यदा वायुः स्रोतांसि प्रतिपद्यते ॥ ग्रीवाँ शिरश्चसंगृह्य श्लेष्माणं समुदीर्य च ॥ १३ ॥ करोति पीनसं तेन रुद्धो घुर्घुरकं तथा ॥ अतीव तीव्रवेगेन

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

श्वासं प्राणप्रपीडकम् ॥ १४ ॥ प्रताम्यति स वेगेन
त्रस्यते सन्निरुद्धयते ॥ प्रमोहं कासमानश्च स गच्छति
मुहुर्मुहुः ॥ १५ ॥ श्लेष्मणामुच्यमानेनुभृशंभवतिदुः
खितः ॥ तस्यैवचविमोक्षांतेमुहूर्तंलभतेसुखम् ॥ १६ ॥
तथास्योद्धसते कंठः कृच्छ्रच्छक्नोति भाषितुम् ॥ न चा
पिनिद्रांलभते शयानः श्वासपीडितः ॥१७॥ पार्श्वतस्यावग्रह्णातिशयानस्यसमीरणः । आसीनोलभतेसौख्यमुष्णंचैवाभिनन्दति ॥ १८ ॥ उच्छ्रिताक्षोललाटेनस्विद्यताभृशमार्तिमान् । विशुष्कास्योमुहुःश्वासोमुहु श्चैवावधम्यते। १९। मेघांबुशीतप्राग्वातैःश्लेष्मलैश्चविवर्द्धते ।
सयाप्यस्तमकश्वासःसाध्योवास्यान्नवोत्थितः ॥२०॥

जिस समय में शरीर की वायु तिर्यङ् गति से नाड़ियोंमें प्राप्त हो, छिद्र संयुक्त होकर शिर तथा कण्ठाश्रित होकर वह वायु कफ से रुककर अत्यन्त वेगयुक्त गले में घुरघुर शब्द करे और शिर में प्रतिश्याय रोगकरे और अतीव तीव्र वेगयुक्त हृदयपीड़क श्वासको उत्पन्नकर, उस श्वासवेग से बेहोश हो त्रास को प्राप्त हो, चेष्टाहीन हो और कास के उठनेसे बड़े मोह को बारम्बार प्राप्त हो और जब छूटें तब दुःख होय और कफ छूटने के पश्चात् दो घड़ी पर्यन्त सुख को प्राप्त हो, कण्ठ में खुजली चले और कष्टयुक्त बोले, श्वास की पीड़ा से निद्रा भंग हो जाय, सोने के समय पाशुओं में अत्यन्त पीड़ा होय, बैठे रहने से सुख मालूम हो और उष्ण भोजन से सुखी होय, नेत्र शोथ से व्याप्त हो, माथे में स्वेद आवें, अत्यन्त वेदना हो, मुख सूख जाय, बारम्बार श्वास और बारम्बर हाथी पर बैठने के तुल्य सर्व शरीर कम्पायमान हो यह श्वास मेघ के वर्षने से शीत

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

से पूर्व की वायु से और कफकारक पदार्थों के सेवन करने से वृद्धि को प्राप्त होता है, यह तमक श्वास याप्यहै, यदि नवीन प्रगट भया हो तो साध्य होय है ॥१३-२०॥

पित्तानुबन्ध होकर ज्वरादिकों का योग होने से प्रतमक होय है उसको कहते हैं

ज्वरमूर्च्छापरीतस्यविद्यात्प्रतमकंतुतम् ॥

इस तमक श्वास में श्वास ज्वर और मूर्छा ये दोनों लक्षण होने से इसको प्रतमक श्वास कहते हैं ॥

प्रतमक के अन्य लक्षण कहते हैं

उदावर्तरजोजीर्णक्लिन्नकायनिरोधजः ॥२१॥
तमसावर्धतेऽत्यर्थंशीतैश्चाशुप्रशाम्यति ॥
मज्जतस्तमसीवास्यविद्यात्प्रतमकंतुतम् ॥२२॥

उदावर्त धूल, आमादि अजीर्ण विदग्धान्न मल मूत्रादि वेग के रोकने से अथवा क्लिन्नकाय कहिये वृद्ध पुरुष और निरोध कहिये वेगरोध, इन कारणों से उत्पन्न हुई जो श्वास सो अन्धकारसे अथवा तमोगुण से अत्यन्त बढ़े और शीतल उपचार से शीघ्र शान्ति को प्राप्त होजाय, इस श्वास के योग से रोगी को अन्धकार से बूढ़ा सदृश मालूम हो इसको प्रतमक श्वास ऐसे कहते हैं ॥२१-२२॥

क्षुद्र श्वास के लक्षण

रूक्षायासोद्भवःकोष्ठेक्षुद्रोवातमुदीरयेत् ॥ क्षुद्रश्वासोनसोऽत्यर्थंदुःखेनांगप्रबाधकः ॥ २३ ॥ हिनस्तिनसगात्राणिनचदुःखायथेतरे ॥ नचभोजनपानानांनिरुणद्धयुचितांगतिम् ॥२४॥ नेंद्रियाणांव्यथांचापिकांचिदा-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

पादयेद्रुजम् ॥ ससाध्यउक्तोबालिनासर्वेचाव्यक्तलक्षणाः
॥ २५ ॥ क्षुद्रःसाध्योमतस्तेषांतमकः क्षुद्र उच्यते ॥
त्रयःश्वासानसिध्यंतितमकोदुर्बलस्यच ॥ २६ ॥

रूक्ष पदार्थ भक्षण से, श्रम के करने से उत्पन्न हुई जो क्षुद्र श्वास सो पवनको ऊपर ले जाय यह क्षुद्र श्वास अत्यन्त दुःखदायक नहीं है तथा अङ्गों को कुछ विकार नहीं करे जैसे ऊर्ध्व श्वासादिक दुःखदायक हैं ऐसे यह नहीं हैं और भोजन पानादिकों की उचित गति को बन्द नहीं करे और इन्द्रिय को भी पीड़ा नहीं करे और कोई रोग को भी प्रगट नहीं करें यह क्षुद्र श्वास साध्य है। बलवान पुरुषके सब महाश्वादिकों के लक्षण प्रगट न हों तो साध्य हैं, तिनमें क्षुद्र श्वास अत्यन्त साध्य है और तमक को क्षुद्र कहते हैं। अथवा 'तमकक्षुद्र उच्यते' इस जगह तमक कृच्छ्र उच्यते ऐसा भी पाठ कोई कहते हैं उसका अर्थ यह है कि तमक कृच्छ्रसाध्य है। महान ऊर्ध्व और छिन्न तीन श्वास ये सम्पूर्ण लक्षणयुक्त साध्य नहीं है और निर्बल पुरुष के तमक श्वास भी साध्य नहीं होय ॥२३-२६॥

कामंप्राणहरारोगाबहवोनतुतेतथा ॥
यथाश्वासश्चहिक्काचहरतःप्राणमाशुच ॥२७॥

प्राण नाश करने वाले ऐसे सन्निपात ज्वरादिक रोग बहुत से हैं सो ठीक हैं, परन्तु श्वास और हिचकी ये जैसे जल्दी प्राण नाश करते हैं ऐसे और ज्वरादिक नहीं करे ॥२७॥

इति श्री पं० चोखेलाल निर्मितायां कृष्णानन्दिनी भाषाटीकायां माधवनिदाने
श्वासरोग निदानम् समाप्तम ॥

—XXXX—

अथ स्वरभेदनिदानम्

अत्युच्चभाषण विर्षाध्ययनाभिघातैसंदूषणैःप्रकुपिताःपवनादयस्तु ॥ स्रोतःसुतेस्वरवहेषुगताःप्रतिष्ठांहन्युःस्वरंभवतिचापिहिषडिवधःसः ॥ वातादिभिः प्रथक्सर्वैर्मेदसा च क्षयेण च ॥१॥

बहुत जोर से बोलने से, विष भक्षण से, ऊँचे स्वर से पढ़ने से, वेदादिकों का अध्ययन करने से, गले में काष्ठ आदि किसी शस्त्र की चोट से कोप को प्राप्त हुए जो वात, पित्त, कफ सो कंटस्थ स्वरवाहिनी चार नसें हैं उनमें प्राप्त हो अर्थात् वृद्धि को प्राप्त स्वर को नष्ट करे। यह स्वरभेद वात, पित्त, कफ, सन्निपात, क्षय और भेद इन भेदों से ६ प्रकार का है ॥ १ ॥

वातज स्वरभेद के लक्षण

वातेनकृष्णनयनाननमूत्रवर्चाभिन्नंस्वरंवदतिगर्दभवत्स्वरंच

वायु से स्वर भंग में रोगी मनुष्य के नेत्र, मुँह, मूत्र और मल यह काले रंग के होंय और आदमी टूटा हुआ शब्द बोले अथवा गर्दभवत् स्वर निकले।

पित्तज स्वरभेद के लक्षण

पित्तेनपीतनयनाननमूत्रवर्चा—
ब्रूयाद्गलेनसचदाहसमन्वितेन ॥ २ ॥

पित्तजनित स्वरभेद वाले आदमी के नेत्र, मुख, मूत्र, मल ये पीतवर्ण के होते हैं और बोलते समय कंठ में दाह होता है ॥२॥

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

कफजन्य स्वरभेद के लक्षण

ब्रूयात्कफेनसततकफरुद्धकंठः ॥
स्वल्पंशनैर्वदतिचापि दिवाविशेषात् ॥

कफोत्पन्न स्वरभेद से गला कफ से रुका रहे और धीमे धीमे अल्प भाषण करे और दिवस में अत्यन्त बात करे ॥

त्रिदोषजनित स्वरभेद के लक्षण

सर्वात्मकेभवतिसर्वविकारसंपत्तं—
चाप्यसाध्यमृषयःस्वरभेदमाहुः ॥ ३ ॥

सन्निपात के भेद में तीनों दोषों के लक्षण होते हैं । इसको ऋषि असाध्य कहते हैं ॥३॥

क्षयजन्य स्वरभेद के लक्षण

धूम्येतवाक्क्षयकृतेक्षयमामु—
याच्चवागेषचापिहतवाक्परिवर्जनीयः ॥

क्षय से प्रगट स्वरभेद वाले मनुष्यके बोलते समय मुखसे धुआँ निकले और बाणी क्षय हो जाय अर्थात् आवाज नहीं निकले, इस स्वरभेद में वाक् का नाश हो जाय अर्थात् ओज का क्षय होने से बोलने की शक्ति नहीं हो तब यह असाध्य होता है और ओज का क्षय न होने से साध्य है ॥

मेदोत्पन्न स्वरभेद के लक्षण

अंतर्गतस्वरमलक्ष्यपदंचिरेण-
मेदोन्वयाद्वदतिदिग्धगलस्तृषार्त्तः ॥४॥

मेदे के सम्बन्धसे कफ अथवा मेदसे कंठ लिप्त हो जाय अथवा मेद से स्वर के मार्ग रुक जाने से तृषा अत्यन्त लगे, कंठ के भीतर बोले और मन्द शब्द निकले ॥ ४ ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

असाध्य के लक्षण

क्षीणस्यवृद्धस्यकृशस्यचापिचिरोत्थितोयस्यसहोषजातः॥
मेदस्विनःसर्वसमुद्भवश्चस्वरामयोयोनससिद्धिमेति ॥५॥

क्षीण मनुष्य के, वृद्ध के, कृश के, चिरकाल का, जन्म के साथ ही उत्पन्न हुआ मोटे मनुष्य के और त्रिदोषोत्पन्न स्वरभेद असाध्य होते हैं ॥५॥

इति श्री पंडित चोखेलाल निर्मितायां कृष्णानन्दिनी भाषाटीकायां माधवनिदाने स्वरभेदनिदानं समाप्तम् ॥

अथारोचकनिदानम्

वातादिभिःशोकभयातिलोभक्रोधैर्मनोघ्नाशनरूपगधैः॥
अरोचकाःस्युःपरिहृष्टदंतकषायवक्रस्यनतोऽनलेन ॥१॥

पृथक् वातादि दोषों करके ३, त्रिदोष से १, चिन्ता से १, भय से १, अत्यन्त लोभ से १, अति कोप से १, ऐसे ८ प्रकार का अरुचि रोग है। वह चित्त को दुःख देमें वाला अन्न, रूप और गंध इन हेतुओं से उत्पन्न होता है। परन्तु सुश्रुत और अन्य ग्रन्थों के मत से पांच ही प्रकार का मुख्य मानते हैं। भय, लोभ, कोप की अरुचि को शोक की ही अरुचि के अन्तर्गत मानते हैं। कब्जी की अरुचि से दांत खट्टे और मुख कषैला होता है ॥ १ ॥

कट्वम्लमुष्णंविरसंचपूतिपित्तेनविद्याल्लवणंचवक्त्रम् ॥
माधुर्यपैच्छिल्यगुरुत्वशैत्यविवद्ध संबद्धयुतंकफेन ॥२॥

पित्तजन्य अरुचि से कटु, अम्ल, उष्ण, विरस, वासयुक्त मुख होता है, श्लेष्मक की अरुचि से खारा, मीठा, पिच्छल, गुरु, ठंडा

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

मुख होता है और मुख बंधा सरीखा अर्थात् खाय नहीं और भीतर कफ से लिप्त रहे ।। २ ।।

शोकादि अरुचि के लक्षण

अरोचकेशोकभयातिलोभक्रोधाद्यहृद्याऽशुचिगंधजेस्यात्।।
स्वाभाविकंचास्यमथारुचिश्चत्रिदोषजेनैकरसंभवेत्तु ।।३।।

शोक, भय, अति लोभ, क्रोध, मनको बुरी लगने वाली वस्तु अपवित्र बास इनमें उत्पन्न हुई अरुचिमें मुख स्वाभाविक रहे अर्थात् वातजन्य आदिकों के तुल्य कसैला अम्ल आदि नहीं होय, त्रिदोष की अरुचि में अन्न से द्वेष तथा मुख से अनेक रस मालूम हों ।३।

वातजादि भेद से मुख की विकृति को कहकर अन्य स्थान पर जो विकृति होती है उसका कथन करते हैं

हृच्छूलपीडनयुतं पवनेनपित्तातृड्दाहशोषबहुलंसकफ-प्रसेकम् ।। श्लेष्मात्मकंबहुरुजंबहुभिश्चविद्याद्वैगुण्यमोह-जडताभिरथापरंच ।।४।।

वात की अरुचि से हृदय में दर्द और पीड़ा होती है, पित्त से तृषा दाह और चुभने के तुल्य व्यथा होय। कफ की अरुचि में मुख से कफ गिरे, त्रिदोष की अरुचि में पीड़ा अत्यन्त होय, वैगुण्य कहिये मनकी व्याकुलता, मोह, जड़तत्व इन लक्षणों से अपर कहिये आगन्तुक अरुचि जाननी । भूख होय परन्तु खाने की सामर्थ्य न हो उसे अरूचि कहते हैं । आपको प्रिय भी अन्न दिया जाय खाया नहीं जाय उसे अन्नाभिनन्दन कहते हैं । अन्नके स्मरण श्रवणदर्शन और गन्ध इनसे जिसजो त्रास हो उसको भक्तद्वेष कहते हैं, इस तरह यह रोग तीन प्रकार का है ।।४।।

इति श्री पं० चोखेलाल निर्मितायां कृष्णानन्दिनी भाषाटीकायां माधवनिदाने ऽरोचक निदानम् समाप्तम ।।

—XXXX—

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

अथ छर्दिनिदानम्

छर्दि के कारण और निरुक्ति

दुष्टैर्दोषैःपृथक्सर्वैर्बीभत्सालोचनादिभिः ॥ छर्दयः पंचविज्ञेयास्तासालक्षणमुच्यते ॥ १ ॥ अतिद्रवैरतिस्निग्धैरहृद्यैर्लवणैरपि । अकालेचातिमात्रैश्चतथासात्म्यैश्चभोजनैः ॥ २ ॥ श्रमाद्भयादथोद्वेगादजीर्णात्कृमिदोषतः ॥ नार्य्याश्चापन्नसत्त्वायास्तथातिद्रुतमश्नतः । ३ । बीभत्सैर्हेतुभिश्चान्यैर्द्रुतमुत्क्लेशितोबलात् । छादयन्नाननंवेगैरर्दतन्नङ्गभञ्जनैः ॥ ४ ॥ निरुच्यतेछर्दिरितिदोषोवक्त्रंप्रधावितः ॥

दुष्ट हुए पृथक् और सब दोषों करके तथा दूषित वस्तु के देखने से बुरी गन्ध के सूँघने से ५ तरह की छर्दि होती है अर्थात् जिसके रद्द, वमन, उल्टी ये पर्यायवाचक शब्द हैं । अब छर्दिरोगके लक्षणों का कथन करते हैं । अति द्रव अथवा स्निग्ध अप्रिय वस्तु खार के पदार्थ इनके भक्षण करने से, समय विरुद्ध भोजन करने से अथवा अति भोजन से अथवा अपच्यमान भोजन करने से, श्रम, भय, उद्वेग, अजीर्ण, कृमिदोष से गर्भिणी स्त्री के गर्भ की व्यथा से तथा जल्दी जल्दी भोजन करने से और खोटे कारणों से जैसे मल, राध आदि का देखना, इनसे तीनों दोष दुष्ट हों, बल से मुख को आच्छादन करें ओर अङ्गों को व्यथित कर मुख द्वारा किया हुआ भोजन सब निकाल दे इसको छर्दि कहते हैं, इस जगह उदानवायु वमन कराती है ॥१-४॥

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

पूर्वरूप

हृल्लासोद्गारसंरोधौप्रसेकोलवणास्यताः ॥
द्वेषोन्नपानेचभृशंवमीनांपूर्वलक्षणम् ॥ ५ ॥

हृदय में खारा अम्ल प्रथम ही निकले अथवा सूखी रद्द होय डकार नहीं आवे, लार गिरे, मुख खारी होजाय,जल और अन्न से अत्यन्त अरुचि होय ये छर्दि के पूर्वरूप हैं ॥ ५ ॥

वातज छर्दि के लक्षण

हृत्पार्श्वपीडामुखशोषशीर्षनाभ्यर्त्तिकासस्वरभेदतोदैः ॥
उद्गारशब्दंप्रबलंसफेनंविच्छिन्नकृष्णंतनुकंकशायम् ।६।
कृच्छ्रेणचाल्पंमहताचवेगेनाऽर्तोऽनिलाच्छर्दयतीहदुःखम्।

हृदय और पाशुओंमें तकलीफ होय, मुखशोष, शिर और नाभि में दर्द होय, कास स्वरभेद सुई चुभने की सी व्यथा होय, डकार का शब्द प्रबल होय, बमन झागयुक्त हों, धीरे धीरे कै आवे तथा अल्प आवे, वमन का कृष्णवर्ण होना पतली और कषैली होना और उल्टी का वेग अत्यन्त होय परन्तु वमन थोड़ी होय और वमन के वेग से दुःख अति होय तो ये लक्षण वातज छर्दि में हैं ॥ ६ ॥

पित्त की छर्दि के लक्षण

मूर्च्छापिपासामुखशोषशीर्षताल्वक्षिसंतापतमोभ्रमार्तः ।
पीतंभृशोष्णंहरितंसतिक्तंधूम्रंचपित्तेनवमेत्सदाहम् ॥७॥

मूर्छा, तृषा, मुख सूखना, शिर तालू नेत्र इनमें सन्ताप अर्थात् तप्त रहे, तम का प्रवेश, चक्कर आवें और रोगी पीत उष्ण हरित रङ्ग की कटु धूम्र वर्ण समान दाहयुक्त ऐसी वमन करेतो उसे पैत्तिक छर्दि समझनी चाहिये ॥ ७ ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

श्लेष्मिक छर्दि के लक्षण

तंद्रास्यमाधुर्यकफप्रसेकसंतोषनिद्राऽरुचिगौरवार्त्तः ॥
स्निग्धंघनंस्वादुकफाद्विशुद्धंसरोमहर्षोऽल्परुजंवमेत्तु ॥८॥

तन्द्रा, मुख मीठा, कफ का होना, सन्तोष, भोजन बिना ही तृप्ति सी ज्ञात होना, नींद, अन्न द्वेष, गुरुता इनसे व्यथित, स्निग्ध गाढ़ा मीठा श्वेत ऐसे कफ को वमन द्वारा निकाले जब कै करे तब पीड़ा होय ये कफ की छर्दि के लक्षण हैं ॥८॥

अथ सन्निपात की छर्दि के लक्षण

शूलाविपाकाऽरुचिदाहतृष्णाश्वासप्रमोहप्रबलाप्रसक्तम् ॥
छर्दिस्त्रिदोषाल्लवणाम्लनीलसांद्रोष्णरक्तंवमतांनृणाँस्यात् ९

दर्द, अन्नद्वेष, अजीर्ण, प्यास, दाह, श्वास, मोह इन चिन्हों से प्रबल हुई जो वमन सो त्रिदोष से होती है. रद्द करने वाले की वमन खारी, अम्ल, नीली, संघट्ट, उष्ण, लाल ऐसी होती है ॥९॥

असाध्य लक्षण

विट्स्वेदमूत्रांबुवहानिवायुःस्रोतांसिसंरुद्धययदोर्ध्वमेति ॥
उत्पन्नदोषस्यसमाचितंदोषंसमुद्धूयनरस्यकोष्ठात् ।१०।
विण्मूत्रयोस्तत्समगन्धवर्णतृट्श्वासकासार्त्तियुतंप्रक्तसम् ।
प्रच्छर्दयेद्दुष्टमहातिवेगात्तयार्दिश्चाशुविनाशमेति ।११।

जिस काल यह वायु पुरीष, स्वेद मूत्र और ज़ल इनके बहने वाली नाड़ियों के मार्ग को रोककर ऊपर आवे तब ऊपर आने वाला दोष कोठे से बाहर निकाल वमन करावे तब वमन में मल, पेशाब की सी दुर्गन्धि आवे तथा रंग भी मल मूत्र के तुल्य हो, प्यास कास, श्वास और दर्द हो और यह उल्टी बारम्बार बड़े वेगसे

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हो, इस वमन से व्यथित पुरुष अल्प काल में मृत्यु को प्राप्त होता है, यह भी सन्निपातिक है ऐसा कोई आचार्य कहते हैं और अन्य आचार्यों का मत है कि सब छर्दि प्रबल हैं परन्तु पूर्वोक्त लक्षणयुक्त छर्दि असाध्य है ॥१०—११॥

आगन्तुक छर्दि के लक्षण

बीभत्सजादौर्हृदजाऽमचह्यऽसात्म्यजावाकृमिजाचयाहि ॥
सापंचमीतांचविभावयेच्चदोषोच्छ्रयेणैवयथोक्तमादौ ।१२।

राध, रक्त आदि भ्रष्ट वस्तु के दर्शन से, गन्ध और स्वाद से स्त्री के गर्भस्थित होने से, आम से, असमान भक्षण से अथवा कृमि दोष से, इन हेतुओं से उत्पन्न हुई आगन्तुक पांचवीं छर्दि होती है। उस छर्दि ४वीं लक्षणों में से त्रिशेष लक्षण मिलते हों उसी दोष को प्रबल जानना ॥ १२ ॥

कृमिजन्य छर्दि के लक्षण

शूलहृल्लासबहुलाकृमिजाचविशेषतः ॥
कृमिहृद्रोगतुल्येनलक्षणेनचलक्षिता ॥ १३ ॥

कृमि की वमन में दर्द, खाली उल्टी ये विशेषकर होते हैं और बहुधा कृमि और हृदयरोग इनके लक्षण सदृश लक्षण जानना जैसा पिछाड़ी कथन कर आये हैं। 'उत्क्लेदःष्ठीवनं तोदः शूलं हल्लासक तमः ॥ अरुचिः श्यावनेत्रत्व शोषश्च कृमिजे भवेत्' इति॥१३

अथ साध्यासाध्य लक्षण

क्षीणस्ययाछर्दिरतिप्रसक्तासोपद्रवाशोणितपूययुक्ता ॥
सचंद्रिकांतांप्रवदेदसाध्यांसाध्यांचिकित्सेन्निरुपद्रवांच।१४।

क्षीण मनुष्य की अथवा बारम्बार एकसी उत्पन्न होने वाली और खाँसी आदिक उपद्रवों से व्याप्त और रक्त, राध मिश्रित मोर-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

पंच के तुल्य ऐसी छर्दि असाध्य है और जो उपद्रव रहितहो उसको साध्य जानकर चिकित्सा करना उचित है ॥१४॥

छर्दि के उपद्रव

कासश्वासौज्वरोहिक्कातृष्णावैचित्यमेवच ॥
हृद्रोगस्तमकश्चैवज्ञयाश्छर्देरुपद्रवाः ॥१५॥

खांसी, श्वास, ज्वर, हिक्का, तृषा, अचेतपना हृदयरोग, अँधेरा आना ये छर्दि रोग के उपद्रव हैं ॥१५॥

इति श्री पण्डित बोखेलाल निर्मितायां कृष्णानन्दिनी भाषाटीकायां
माधवनिदाने छर्दिरोग:निदानम् समाप्तम्

अथ तृष्णानिदानम्

तृष्णा की सम्प्राप्ति

भयश्रमाभ्यांबलसंक्षयाद्वाह्यूर्ध्वंचितंपित्तविवर्धनैश्च ॥
पित्तंसवातंकुपितंनराणांतालुप्रपन्नंजनयेत्पिपासाम् ॥१॥

भय से, श्रम से, बल के क्षय से और पित्त के बढ़ाने वाले व्रतादिकों से स्वर स्थान में एकत्रित हुआ जो पित्त और वात ये कुपित हों, पिपासा स्थान में जाकर प्यास को प्रगट करे। इस जगह तालुका तो उपलक्षण मात्र है तालु के कहने से क्लोम स्थान (हृदय में जो तृषा का स्थान है) उसका भी ग्रहण है क्योंकि वहभी प्यास का स्थान है सो चरक में लिखा है 'रसवाहिनी च धमनी जिह्वा मूलगलतालुक्लोम्नः। संशोष्य नृणां देहे कुरुते तृष्णामति प्रवलाम् ॥' इति ॥ १ ॥

अन्नजादिक तृष्णा की सम्प्राप्ति

स्रोतःस्वपांवाहिषुदूषितेषुदोषैश्चतृष्णाभवतीहजंतोः ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

तिस्रःस्मृतास्ताःक्षतजाचतुर्थीक्षयात्तथाह्यामसमुद्भवाच २
भक्तोद्भवासप्तमिकेतितासांनिबोधलिंगान्यनुपूर्वशस्तु ॥

जलवाहिनी नसके दूषित होने से दोष (अन्न, कफ औरआम) इनसे तृष्णा रोग होता है सो तीन हैं और चौथा क्षतज तृष्णा जो व्रण वाले मनुष्य के होती है, पाँचवी क्षय से होती है, छटी आम तृष्णा होती है और सातवीं अन्न से होती है । उनके लक्षण क्रमानुसार कहते हैं । इनमें पूर्व की चार तृष्णा सुखसाध्य हैं और बाकी तीन कष्टसाध्य हैं ॥ शङ्का—क्योंजीं इस श्लोक में "स्रोतःसु" यह बहुवचन क्यों धरा यह विरुद्ध है, क्योंकि सुश्रुत में तो जलवाहिनी दो नाड़ी मानी हैं ? समाधान—अन्न, कफ, आम को दुष्ट करने से तथा दुष्ट रोगी मनुष्य के सम्बन्ध से अन्न, आम, कफ को दोषत्व ग्रहण है यह ध्येय 'गयदास' का है अथवा दोष के कहने से वात, पित्त कफ का ही ग्रहण करना चाहिये ॥ २ ॥

वातिका तृष्णा के लक्षण

क्षामास्यतामारुतसंभवायातोदस्तथाशंखशिरःसुचापि ।
स्रोतोनिरोधोविरसंचवक्त्रंशीताभिरद्भिश्चविवृद्धिमेति ।३।

वातज तृषा से मुख उतर जाय, अथवा दीन हो, कनपटी और शिर में नोचने के समान पीड़ा होय । रस और जल बहने वाली नाड़ियों का मार्ग रुक जाय, मुख से स्वाद जाता रहे और शीतल जल के पीने से प्यास बढ़े ये लक्षण अनुपशय के हैं । चकार से निद्रा नाश हो जाती है ॥३॥

पैत्तिक तृषा के लक्षण

मूर्च्छान्नविद्वेषविलापदाहारक्तेक्षणत्वंप्रततश्चशोषः ॥
शीताभिनंदामुखतिक्तताचपित्तात्मिकायांपरिदूयनंच॥४॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

पैत्तिक तृषा में मूर्छा, अन्न द्वेष, बड़बड़, भड़कन, नेत्रों में लाली अत्यन्त खुश्की, शीतेच्छा, मुँह कड़ुआ और सक्ता, ये लक्षण होते हैं ॥ ४ ॥

श्लेष्मजन्य तृषा के लक्षण

बाष्पावरोधात्कफसंवृतेऽग्नौतृष्णावलासेनभवेत्तथातु ॥
निद्रागुरुत्वंमधुरास्यताचतृष्णार्दितःशुष्यतिचातिमात्रम् ५

स्वकारण से दूषित कफ करके जठराग्नि आच्छादित होय तब अग्नि की उष्णता अधोगत जल के बहने वाली नाड़ियों को सुखाय कफ की तृषा को उत्पन्न करे. केवल कफ से तृषा का उत्पन्न होना असम्भव है, केवल कफ बढ़े, भय का द्रवीभूत धर्म पतला होने से प्यासकर्तत्व असम्भव है और बात, पित्त को तृषा करने वाले होनेसे होय है सो ग्रन्थान्तर में उल्लेख किया है। इसी से चरकाचार्य ने कफ की तृष्णा नहीं कही है, सुश्रुत ने चिकित्साभेदसे कही है और हारीत ने भी सपित्त कफ की तृषा मानी है। केवल कफ की नहीं मानी। इस तृषा में नींद, गुरुता, मुख मीठा ये लक्षण होते हैं, इस तृषा से मनुष्य सूख जाता है ॥५॥

क्षतज तृषा के लक्षण

क्षतस्यरुक्शोणितनिर्गमाभ्यांतृष्णाचतुर्थीक्षतजामतातु।६

शस्त्रादिक के लगने से व्रण होय तब उस मनुष्यके पीड़ा और रक्त स्राव होने से तृषा होय यह चौथी तृषा है ॥६॥

क्षयजन्य तृष्णा के लक्षण

रसक्षयाद्याक्षयसंभवासातथाऽभिभूतश्चनिशादिनेषु ॥
पेपीयतेंभःससुखंनयान्तितांसन्निपातादितिकेचिदाहुः ।७।
रसक्षयोक्तानिचलक्षणानितस्यामशेयेणभिविगृह्यवस्येत् ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

रस क्षय से जो तृषा होय उसमें जो लक्षण होते हैं सो सब क्षयज तृष्णा में होते हैं तिससे व्यथित मनुष्य रातदिन बारम्बार पानी पीवै परन्तु सन्तोष नहीं होय, कोई आचार्य इसे सन्निपात से प्रगट मानते हैं, इस क्षय से जो लक्षण कहे सो सब होतेहैं सो वैद्यों को जानने चाहिये । रसक्षय लक्षण सुश्रुत में कहे हैं सो इस प्रकार हैं । हृदय में व्यथा, कम्प, शोष, बहरापन और प्यास ॥७॥

आमज तृषा के लक्षण

त्रिदोषलिंगाऽमसमुद्भवाचहृच्छूलनिष्ठीवनसादकर्त्री ।८।

अजीर्ण से जो तृषा होती है उसमें तीनों दोषों के लक्षण होते हैं सो सुश्रुत में लिखे हैं और हृदय में दर्द, लार का गिरना, ग्लानि ये सब होते हैं ॥ ८ ॥

अन्नज तृषा के लक्षण

स्निग्धंतथाम्लंलवणंचभुक्तंगुर्वन्नमेवाशुतृषांकरोति ॥

स्निग्ध, अम्ल, खारी, कड़ुआ, कसैला आदि भोजनों से तथा मात्राधिक और भारी अन्न भक्षण से अवश्य ही प्यास उत्पन्न होती है । दृढ़बल आचार्य ने पाँच ही प्रकार की तृषा कही हैं । वात, पित्त, क्षय आम और उपसर्ग की तहां कफ की आम की तृषा के अन्तर्गत कही है और क्षतज वात की तृषाके अन्तर्गत जाननी और अन्नजा भी वात की तृषा के अन्तर्गत कही है, क्योंकि भोजन से वात का कोप होता है । शङ्का–क्योंजी सुश्रुत ने मद्य के प्रकरण में मद्य की तृषा का कथन किया है फिर माधवाचार्य ने सात ही तृष्णा क्यों कहीं ? उत्तर--दृढ़बलाचार्य के मत से मद्य की तृषा को वातकी तृषा के अन्तर्गत होने से माधवाचार्य ने सात ही कही हैं ॥८॥

उपसर्गज तृषा के लक्षण

दीनस्वरःप्रताम्यन्दीनसेशुष्कहृदयगलतालुः ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

भवतिखलुपोपसर्गातृष्णासाशोषिणीकष्टा ॥९॥
ज्वरमोहक्षयकासश्वासाद्युपसृष्टदेहानाम् ॥१०॥

स्वरहीन, मोह, चित्त में ग्लानि हो, मुख दीन हो जाय, हृदय, कण्ठ और तालू सूख जाय ये तृषा के उपद्रव हैं यह मनुष्यको सुखा डालते हैं और व्याधि से शरीर कृश होने से यह कष्टसाध्य होती है वे उपद्रव ये हैं कि बुखार, मोह, क्षय, कास श्वास आदि शब्द से अतिसारादिकों का ग्रहण है। ये लक्षण जिसके हों उसको कष्टसाध्य समझना चाहिये ॥ ९—१० ॥

असाध्य लक्षण

सर्वास्त्वतिप्रसक्तारोगकृशानांवमिप्रयुक्तानाम् ॥
घोरोपद्रवयुक्तास्तृष्णामरणायविज्ञेयाः ॥११॥

वातजादि सब प्रकार की तृषा अत्यन्त बढ़ी हुई अथवा रोगसे कृश भया ऐसे पुरुष के जो तृषा है सो अथवा छर्दि से उत्पन्न भई जो तृषा और जो भयंकर उपद्रव युक्त तृष्णा मृत्यु का कारण है।११।

इति श्री पं० चोखेलाल कृतायां कृष्णानंदिनी भाषाटीकायां माधवनिदाने
तृष्णारोगनिदानं समाप्तम्

अथ मूर्च्छानिदानम्

क्षीयस्यबहुदोषस्यविरुद्धहारम्सेविनः ॥ वेगाघातादभि-
घाताद्धीन सत्त्वस्यवापुनः ॥१॥ करणायतनेषूग्राबाह्ये-
ष्वाभ्यंतरेषुच ॥ निविशंतेयदादोषास्तदामूर्च्छंतिमानवाः
॥ २ ॥ संज्ञावहासुनाडीषुपिहितास्वानिलादिभिः ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

तमोभ्युपैतिसहसासुखदुःखव्यपोहकृत् ॥३॥ सुखदुःख-
व्यपोहाच्चनरःपततिकाष्ठवत् ॥ मोहोमूर्च्छेतितामाहुःष
ड्विधासाप्रकीर्तिता ॥४॥ वातादिभिःशोणितेनमद्येनच
विषेणच ॥ षट्स्वप्येतासुपित्तंतुप्रभुत्वेनावतिष्ठते ॥५॥

निदान और सम्प्राप्ति

तृषा में मोह प्रगट होता है इसी से तृषा के बाद मूर्छा का कथन करते हैं, क्षीण मनुष्य के अति दोषों के एकत्रित होने पर विरुद्ध भोजन खीर, मछली आदिकों के भक्षण से मल, मूत्रादि वेगों को रोकने से, लकड़ी आदि की चोट लगने से, अथवा जिस आदमी का सतोगुण नष्ट हो गया हो ऐसे आदमी की बाहर और भीतर की मन के बहने वाली नाड़ियों में वातादि दोषों करके आच्छादित होने से सुख दुःख का ज्ञान नष्ट होय तब पुरुष भूमि पर काष्ठ की तरह गिरे तो उसे मूर्छा कहते हैं अथवा बाहर की इन्द्रिय नेत्र, कान आदि कर्मेन्द्रिय और बुद्धीन्द्रिय इनमें शक्तिमान दोष वात पित्तादि प्रवेश कर संज्ञा की बहने वाली जो नाड़ी तिनको वात पित्त कफ रोक अन्धकार उत्पन्न करे तब आदमी काष्ठ तुल्य भूमि पर गिरे उसे मूर्छा कहते हैं। वह मूर्छा ६ प्रकार की है। वात, पित्त, कफ से तीन तरह की और रक्त विष, मद्य इन हेतुओं से तीन तरह की। इन तीनों मूर्छाओं में पित्त प्रधान है अर्थात् व्यापक है ॥ १—५ ॥

मूर्छा का पूर्वरूप

हृत्पीडाजृंभणंग्लानिःसंज्ञादौर्बल्यमेवच ॥
सर्वासांपूर्वरूपाणियथास्वंताविभावयेत् ॥ ६ ॥

वक्षस्थल में व्यथा, जंभा और ग्लानि, भ्रांति ये मूर्छा के

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

पूर्वरूप हैं । आगे मूर्छा के भेदों का कथन इस प्रकार है सो अब कहते हैं ॥ ६ ॥

वातज मूर्छा के लक्षण

नीलंवायदिवाकृष्णमाकासमथवाऽरुणम् ॥ पश्यंस्तमःप्रविशतिशीघ्रंचप्रतिबबुध्यते ॥७॥ वेपथुश्चांङ्गमर्दश्चप्रपीडाहृदयस्यच ॥ कार्श्यंश्यावारुणाच्छायामूर्च्छायेवातसंभवे ॥ ८ ॥

जो पुरुष नीलवर्ण वा कृष्णवर्ण वा रक्तवर्ण के नभ को अवलोकन करे पीछे मूर्छा को प्राप्त और जल्दी सावधान हो जाय, शरीर में कम्प, अङ्गों में वेदना, हृदय में तकलीफ़, शरीर कृश हो जाय और काला लाल पड़ जाय उसे वातिक मूर्छा कहते हैं ॥ ७–८ ॥

पैत्तिक मूर्छा के लक्षण

रक्तंहरितवर्णंवावियत्पीतमथापिवा ॥ पश्यंस्तमःप्रविशतिसस्वेदश्चप्रबुध्यते ॥ ९ ॥ सपिपासःससंतापोरक्तपीताकुलेक्षणः ॥ संभिन्नवर्चापीताभोमूर्च्छायेपिपत्तसंभवे ॥ १० ॥

जिसको आकाश लाल, हरित पीत इन वर्णों का दीखे पीछे मूर्छा हो और होश होते वक्त स्वेद का आगमन हो, तृषा हो, नेत्र लाल पीले होंय, विष्ठा पतली होय, शरीर का तेज पीतवर्ण हो जाय तो उसे पैत्तिक मूर्छा कहते हैं ॥९–१०॥

श्लेष्म की मूर्छा के लक्षण

मेघसंकाशमाकाशमावृतंवातमोघनैः ॥ पश्यंस्तमःप्रविशतिचिराचप्रतिबुध्यते ॥ ११ ॥ गुरुभिःप्रावृतैरंगैर्यथै-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

वार्द्रेणचर्मणा । सप्रसेकःसहल्लासोमूर्च्छायैकफसंभवे ।१२।

जिस मनुष्य को नभ मेघवत् दीखे अथवा तम के तुल्य दीखे और बादल के तुल्य आकाश को देख मूर्छा को प्राप्त हो, चिरकाल में होश हो भारी भार सा देह पर प्रतीत हो अथवा स्तैमित्त त्वचा सी ज्ञात होय मुख से पानी गिरे वमन सी मालूम हो उसे कफ की मूर्छा कहते हैं ॥११-१२॥

सन्निपात की मूर्छा के लक्षण

सर्वाकृतिःसन्नपातादपस्मारइवापरः ॥
सजंतुं पातयत्याशुविनाबीभत्सचेष्टितैः ॥१३॥

सन्निपात की मूर्छा में सर्व दोषों के चिन्ह मिलते हैं । इस रोग को द्वितीय अपस्मार जानना चाहिये । परन्तु अपस्मार रोग में दाँतों को चबाना मुँह में झाग का आना नेत्रों का वर्ण बदल जाना इत्यादि लक्षण होते हैं सो इसमें नहीं होते इतना ही अन्तर है ।

शङ्का—[illegible] जी पहिले [illegible] ६ प्रकार की कथन को अब सन्निपात की क्यों कही ? उत्तर—चरक में लिखा है कि जिस तरह मृगी रोग चार प्रकार का [illegible] वात का पित्त का कफ का सन्निपात का उसी प्रकार मूर्छा रोग भी चार प्रकार का है । यही मत को ग्रहण कर माधवाचार्य ने सन्निपात की मूर्छा कही है ।१३।

रक्तज मूर्छा के लक्षण

पृथिव्यापस्तमोरूपंरक्तगंधस्तदन्वय. ॥ तस्माद्रक्तस्यगंधेनमूर्च्छंतिभुविमानवाः ॥ १४ ॥ द्रव्यस्वभावइत्येकेदृष्ट्वायदभिमुह्यति ॥

सुश्रुत में लिखा है कि पृथ्वी और जल ये दोनों तमोगुणयुक्त हैं और रक्तगन्धि भी पृथ्वी और जल से उत्पन्न है इसलिये रक्त-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

गन्ध भी तमोगुणयुक्त हुई, अतः जो तमोगुणी आदमी हैं वे रक्तकी गन्ध से बेहोश हो जाते हैं और जो आदमी रजोगुणी वा सतोगुणी हैं वे रक्तगन्ध से मूर्छित नहीं होते हैं। शङ्का—क्योंजी चम्पा के पुष्प की सुगन्धि से मूर्छा होनी चाहिये। क्योंकि उसमें भी तमोगुण विशिष्ट गन्ध है इसलिये कहते हैं 'द्रव्यस्वभावइत्येकं' अर्थात् कोई आचार्य कहते हैं कि ये द्रव्य का ही स्वभाव है अर्थात् रक्त का यही स्वभाव है कि जिसकी गन्ध से पुरुष मूर्छा को प्राप्त हो जाता है। अब शक्ति को दृढ़ात्मक करते हैं 'दृष्ट्वा यदभिमुह्यति' अर्थात् खून के दर्शन मात्र से ही मूर्छागत होता है ॥१४॥

विष और मदिरा से प्रगट मूर्छा का कथन करते हैं

गुणास्तीव्रतरत्वेनस्थितास्तुविषमद्ययोः ॥१५॥
तएवतस्मादाभ्यांतुमोहौ स्यातांयथेरितौ ॥

तैलादिकों में जो १० गुण हैं वे ही गुण विष और मदिरा में अत्यन्त तीव्र हैं। अतः विष और मदिरापान से मोह होता है। इसमें भी और मद्य में भी तीव्र रहता है इसलिये विष का मोह स्वयं शान्तित्वता को प्राप्त नहीं होता क्योंकि विष अपक्क है और मदिरा से उत्पन्न मोह नशा उतरने पर शान्त हो जाता है विष और मद्य में यही अन्तर है ॥१५॥

रक्तजादि मूर्छाओं के लक्षण

स्तब्धांगदृष्टिस्त्वसृजामूढोच्छ्वासश्चमूर्छितः ॥ १६ ॥ मद्येनविलपञ्छेते नष्टविभ्रांतमानसः। गात्राणिविक्षिपन्भूमौजरायायावन्नयातितत् ॥ १७ ॥ वेपथुस्वप्नतृष्णाः स्युस्तमश्चविषमूर्च्छिते ॥ वेदितव्यंतीव्रतरंयथास्वंविषलक्षणैः ॥ १८ ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

रक्त की मूर्छा में अङ्ग और चक्षु निश्चल होते हैं और श्वांस का निर्गमन अच्छी प्रकार नहीं होता है। अत्यन्त मद्यपान से उत्पन्न मूर्छा में अत्यन्त बकवाद, सोना, संज्ञा नाश, भ्रमयुक्त होना और यावत मद्य पच्यमान न हो तावत भूमि में कर, पदोंका फेंकना इत्यादिक लक्षण होते हैं और विषजनित मूर्छामें कम्प, सोना, तृष्णा तम और मल, मूत्र, दुग्ध इनके भेद करके जो विष भक्षणके लक्षण होते हैं सो सर्व लक्षण इस मूर्छा में होते हैं ॥१६-१८॥

मूर्छा, भ्रम, तन्द्रा और निद्रा इनके भेद

मूर्च्छापित्ततमःप्रायाराजःपित्तानिलाद्भ्रमः ॥
तमोवातकफात्तन्द्राश्लेष्मतमोभवा ॥ १६ ॥

मूर्छा में पित्त और तमोगुण उत्पन्न होता है। भ्रम में रजोगुण पित्त और वायु की अधिकता होती है और तन्द्रा में तमोगुण वायु और कफ अत्यन्त होता है और कफ तथा तमोगुण इनसे निद्रा प्रगट होती है ॥१६॥

तन्द्रा के लक्षण

इन्द्रियार्थेष्वग्रंविप्तिगौरवजृंभणंक्लमः ॥
निद्रार्तस्येवयस्यैतेतस्यतंद्रांविनिर्दिशेत् ॥२०॥

सर्वेन्द्रिय अपने २ बिषयों का त्याग कर दें, शरीर में भारापन हो जाय अर्थात् आलस्य हो और जंभाई कम हों ये लक्षण निद्रित मनुष्य के तुल्य जिसके हों उसे तन्द्रा कहते हैं। इसमें आधे चक्षु खुले रहते हैं। निद्रा में इन्द्रिय और चित्त को मोह होताहै। तन्द्रा में केवल इन्द्रियाँ ही मोहवश होती हैं, निद्रा और भ्रम ये दोनों अति मुख्य होने से माधवाचार्य ने कथन नहीं की हैं, परन्तु चरक ने कथन किया है कि जिस काल मन और इन्द्रियों को खेद प्राप्त

हो और अपने २ विषय (शब्द, रूप, रस, गन्ध, स्पर्श) को त्याग दे तब पुरुष को निद्रा आती है ॥२०॥

सन्यास के भेद कहते हैं

दोषेषुमदमूर्च्छाद्याःगतवेगेषुदेहिनाम् ॥
स्वयमेवोपशाम्यंतिसंन्यासोनौषधैर्विना ॥२१॥

दोषों के वेग शान्त होने पर मद मूर्छादि स्वयं शान्त हो जाते हैं, परन्तु यह सन्यास औषधि बिना शान्त नहीं होता है ॥२१॥

सन्यास के लक्षण

वाग्देहमनसांचेष्टाआक्षिप्यातिबलामलाः ॥ संन्यस्यंत्य बलं जंतुं प्राणायतनमाश्रिताः ॥२१॥ सनसंन्याससंन्यस्तः काष्ठीभूतोमृतोपमः ॥ प्राणैर्विमुच्यतेशीघ्रं मुक्त्वा-सद्यःफलां क्रियाम् ॥२३॥

अत्यन्त बलवान हुए दोष सो वाक् शरीर, गन इनके व्यापार को बन्द कर हृदय में प्राप्त हो. शक्तिहीन पुरुष को मूर्छित करे, तब वह सन्यास से व्यथित हो भूति पर काष्ठवत उसकी सद्यःफल चिकित्सा अर्थात् सुई से छेदना, तीक्ष्ण अञ्जन लगाना, अनामिका को व्यथित करना, कांच की फली लगाना, नस्य देना इत्यादिक क्रिया न करे तो वह पुरुष मरण को प्राप्त हो, अतीव भाग्यवशात् बचे हैं ॥२२-२३॥

इति श्री पं० चोखेलाल वैद्यात्मज वैद्यभूषण पं० बद्रीप्रसाद विनिर्मितायां कृष्णानन्दिनी भाषाटीकायां माधवनिदाने मूर्छानिदानं समाप्तम् ॥

—XXXX—

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अथ मदात्ययनिदानम्

येविषस्यगुणाःप्रोक्तस्तेपिमद्येप्रतिष्ठिताः ॥ तेनमिथ्योपयुक्तेन भवत्युग्रोमदात्ययः ॥१॥ किंतुमद्यंस्वभावेनयथैवान्नंतथास्मृतम् । अयुक्तियुक्तंरोगाययुक्तियुक्तंयथाऽमृतम् २

जो गुण विष में होते हैं वही गुण मद्य में हैं, अर्थात् यही मद अविधि से भक्षण किया हुआ घोर महा भयंकर मदात्य रोग पैदा करता है । कोई शङ्का करे कि विष के गुण मद्य में हैं । इससे विष के तुल्य मद्य सेवन न करें । इस विषय में कहते हैं कि मद्य स्वभाव से ही जिस प्रकार अन्न देह धारक है ऐसा ही है परन्तु अविधि से पान करने पर रोगकारक होता है और विधि से भक्षण किया जाय तो अमृत तुल्य गुणकारक है ॥१—२॥

विधि से मद्यपान करने के लक्षण कहते हैं

विधिनामात्रयाकालेहितैरन्नैर्यथाबलम् । प्रहृष्टोयःपिबेन्मद्यंतस्यस्यादमृतंयथा ॥ ३ ॥ स्निग्धैःसदन्नैर्मांसैश्च भक्ष्यैश्चसहसेवितम्।भवेदायुःप्रकर्षाथबलायोपचयायच॥४

विधि पूर्वक प्रमाण के संग योग्य समय में स्निग्ध आदि अच्छे अन्न के साथ बलानुसार अत्यन्त प्रसन्नता के साथ जो मद्य भक्षण करे उसे अमृत तुल्य गुणकारी होता है । सो विधि, मात्रा, काल का कथन करते हैं—अर्थात् शुद्ध शरीर होकर प्रातःकाल मद्य पान के बाद जो व्यञ्जन आदि लेह्य पदार्थ चाटे जाते हैं सो इनके सहित दोपल पीवे, मध्याह्न को चारपल पीवे तदनन्तर स्निग्ध भोजन करे और सायंकाल को आठ पल पीवे, इस जगह पल जयपुरसाई

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

पक्के १ टके को कहते हैं । स्निग्ध भोजन के साथ, माँस के साथ और जो भक्षण वस्तु हैं उनके साथ सेवन करने से मनुष्य की आयु बढ़ती है ॥३—४॥

विधियुक्त मद्यान के अन्य लक्षण

काम्यतामनसस्तुष्टिस्तेजोविक्रम एव च ॥
विधित्सेव्यमानेतुमद्येसंतिहितागुणा ॥ ५ ॥

मद्य को विधिपूर्वक पीने से सुन्दर स्वरूप, मन को सन्तोष, उत्साह, दूसरे को पराजय करनेका शक्ति इत्यादिक हितकारक गुण होते हैं । कथन की हुई विधि का उलंघन करने से किया हुआ मद्यपान मदात्य रोग को उत्पन्न करता है, सो मदात्य के तीन भेद हैं-पूर्व मद, मध्य मद और अन्त्य मद ॥ ५ ॥

पूर्व मद के लक्षण

बुद्धिस्मृतिप्रीतिकरःसुखश्चपामान्ननिद्रारतिवंधनश्च ।
संपाठगीतस्वरवर्धनश्चप्रोक्तोऽनिरम्यःप्रथमोमदेहि ।६।

मति, स्मरण और प्रेम इनको आनन्दित करे । पान, अन्न निद्रा और रति इनको वर्धित करें, अच्छे पाठ करें, गायन करें, गीत में वृद्धि करें, ऐसा ये पूर्व मद अत्यन्त रमणीय कहा है । शङ्का—क्यों जी मद तो मन में विकार पैदा करते हैं फिर भी आपने इसे रमणीय क्यों कहा ? उत्तर-आपने कहा सो यथार्थ है, परन्तु दुःख को दूर करने से इसका रमणीय कहा है । इसी कारण सुश्रुत ने हर्ष को मनोविकारों में कथन किया है ॥ ६ ॥

द्वितीय मद के लक्षण

अव्यक्तबुद्धिस्मृतिवाग्विचेष्टाःसोन्मत्तलीलाकृतिरप्रशांतः।
आलस्यनिद्राभिहतोमुहुश्चमद्येनमत्तःपुरुषोमेदेन ॥७॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

मध्यम मद से मत्तवाले मनुष्य की मति स्मरण व वाणी यथार्थ नहीं होतीहै किन्तु विरुद्ध चेष्टाकरे और बावले की सी चेष्टा करे, प्रचण्ड होना एवं मुहुर्मुहुः आलस्य और निद्रा से व्यथित हो जाय ॥ ७ ॥

तृतीय मद के लक्षण

गच्छेदगम्यांनगुरूंश्चपश्येत्खादेदभक्ष्याणिचनष्टसंज्ञः ॥
ब्रूयाच्चगुह्यानिहृदिस्थितानिमदेतृतीयेपुरुषोस्वतंत्रः ।८।

तृतीय मद से मदोन्मत्त हुआ मनुष्य अगम्या गमन करे, सज्जनों का अनादर करे, अभक्ष वस्तु का भक्षण करे, चेतना नष्ट हो जा और गुप्त बातों को कहने लगे है ॥८॥

चतुर्थ मद के लक्षण

चतुर्थेतुमदेमूढोभग्नदार्विवनिष्क्रियः ॥ कार्याकार्यविभागाज्ञो मृतादप्यपरोमृतः ॥ ९ ॥ कोमदंतादृशंगच्छेदुन्मादमिवच:परम् ॥ बहुदोषमिवारूढः कांतारंस्ववशः कृती ॥ १० ॥

चतुर्थ मद से पुरुष मूर्ख होकर पतित वट की तरह क्रियाहीन होय। कार्याकार्य का बिचार नहीं करे, वह पुरुष मृत से भी अत्यन्त मृतज के तुल्य है। कौन ऐसा सुकृती मनुष्य ऐसे निन्दनीय मद्य का सहनशील होता है किन्तु कोई नहीं होता, जैसे कि सिंह, व्याघ्रादि हिंसक जीवों से व्याप्त बन में कोई भी चतुर मनुष्य गमन नहीं कर सकता है। शङ्का—चरक, विद्रोह, वाग्भट्ट आदि ऋषियों ने चतुर्थ मद नहीं कहा है और सुश्रुत ने कहा है. इनमें विरोध क्यों है ? समाधान—चरक में जो दूसरा और तृतीय भेद दर्शित कियाहै वही सुश्रुत ने तीसरे मद का स्वीकृत कर लक्षण कथन किये हैं। ऐसे

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

विरोध नहीं है। यथार्थ में मद तीन ही हैं। शङ्का—एक मदात्य से तीन मद के भेद होते हैं इसमें क्या हेतु है? उत्तर-मद्य अग्नि के समान है, जिस प्रकार अग्निमें तप्त किये हुए सुवर्ण उत्तम, मध्यम अधमादि की परीक्षा होती है, उसी प्रकार मद्य भी सात्विक, राजस, तामसी मनुष्यों की प्रकृति का सूचक है ॥९-१०॥

विधिहीन मद्यपान के विकार

निर्भक्तमेकान्ततएवमद्यंनिषेव्यमाणंमनुजेननित्यम् ॥
आपादयेत्कष्टतमान्विकारानापादयेच्चापिशरीरभेदम्।११

जिस मनुष्य ने अन्नहीन नित्यप्रति मद्यपान किया हो, उस मनुष्य के अत्यन्त दुःखदायक विकार प्रगटहो, शरीरके घातकहै॥११

अन्नयुक्त मद्यपान भी कोपादि हेतुओं से विकार कारक है

क्रुद्धेनभीतेनपिपासितेनशोकाभितप्तेनबुभुक्षितेन ।
व्यायामभाराध्वपरिक्षतेनवेगावरोधाभिहतेनचापि ।१२।
अत्यम्लभक्ष्यावततोदरेणसाजीर्णभुक्तेनतथाऽबलेन ॥
उष्णाभितप्तेनचसेव्यमानंकरोतिमद्यंविविधान्विकारान्१३

कोपयुक्त, भययुक्त, तृषित, शोकयुक्त, बुभुक्षित, व्यायाम और बोझ से जो क्षीणतायुक्त हो गया हो, मल-मूत्रादि वेगों से व्यथित, अति अम्ल रस से उदर पूर्ति हो गई हो, अजीर्ण में भक्षण वाले मनुष्य के, कमजोर मनुष्य के, उष्मा पीड़ित मनुष्य के मद्यपान से अनेक विकार पैदा होते हैं ॥१२-१३॥

उन विकारों को कहते हैं-

पानात्ययंपरमदंपानाजीर्णमथापिवा ॥
पानविभ्रममुग्रंचतेषांवक्ष्यामिलक्षणम् ॥१४॥

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

पानात्यय, परमद, पानाजीर्ण और पान विभ्रम इत्यादि भयंकर विकार पैदा होते हैं ॥१४॥

वातिक मदात्यय के लक्षण

हिक्काश्वासशिरःकंपपार्श्वशूलप्रजागरैः ॥
विद्याद्बहुप्रलापस्यवातप्रायंमदात्ययम् ॥१५॥

हिक्का, श्वास, शिर कम्प होना, पाशुओं में व्यथा, नींद का न आना और अत्यन्त बकवाद ये लक्षण जिसमें हों उसको वात, वाताधिक्य मदात्य कहते हैं ॥१५॥

पित्तज मदात्यय के लक्षण

तृष्णादाहज्वरस्वेदमोहातीसारविभ्रमैः ॥
विद्याधरितवर्णस्यपित्तप्रायंमदात्ययम् ॥१६॥

तृषा, दाह, बुखार, स्वेद, मोह, दस्त, विभ्रम ये हरित वर्ण की हो जाय, इन लक्षणों से युक्त पित्तप्रधान मदात्यय होता है॥१६॥

कफ के मदात्यय के लक्षण

छर्द्यरोचकहृल्लासतन्द्रास्तैमित्यगौरवैः ॥
विद्याच्छीतपरीतस्यकफप्रायंमदात्ययम् ॥१७॥

उल्टी अन्नद्वेष, खांसी रद, तन्द्रा देह स्तैमित्य और भारी हो ठण्ड लगे ये लक्षण कफ मदात्यय में होते हैं ॥१७॥

सन्निपात के मदात्यय के लक्षण

ज्ञेयस्त्रिदोषजश्चापिसर्वलिंगैर्मदात्ययः ॥१८॥

जिसमें तीनों दोषों के लक्षण मिलते हों उसे त्रिदोष जनित मदात्यय कहते हैं ॥१८॥

परमद के लक्षण

श्लेष्मोच्छ्र्योऽङ्गगुरुतामधुरास्यता च विण्मूत्रसक्तिरथ

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

तंद्रिररोचकश्च ।। लिंगंपरस्यचमदस्यवदंतितज्ज्ञास्तृष्णारुजाशिरसिसंधिषुचातिभेदः ।। १९ ।।

तफ का कोप, देह का जड़ होना, मुँह मीठा, मलमूत्र का रुकना, तन्द्रा, अन्न द्वेष, तृषा, शिर पीड़ा और सन्धियों में कुष्ठ से तोड़ने के तुल्य पीड़ा ये लक्षण परमद के हैं ।।१९।।

पानाजीर्ण तथा पान विभ्रम के लक्षण

आध्मानमुग्रमथचोद्गिरणंविदाहःपानेत्वजीर्णमुपगच्छतिलक्षणानि । हृद्गात्रतोदकफसंस्रवकंठधूमामूर्च्छावमिज्वरशिरोरुजनप्रदाहाः ।२०। द्वेषःसुरान्नविकृतेष्वपितेषुतेषुतंपानविभ्रममुशंत्यखिलेनधीराः ।।

पेट में अफरा, उल्टी, डकार का आना, दाह होना, ये लक्षण मद्याजीर्ण होता है तब होते हैं । हृदय और नाभि में व्यथा होय, कफ थूकना, गले में पीड़ित धूम्र निकलना, मूर्छा, उल्टी, बुखार, मस्तक पीड़ा, मुख कफ से लिप्त हो, अन्न द्वेष हो, इन सर्व चिह्नों से युक्त इस रोग को पान विभ्रम कहते हैं ।।२०।।

अथ मदात्यय के असाध्य लक्षण

हीनोत्तरौष्ठमतिशीतममन्ददाहंतैलप्रभास्यमपिपानहतंत्यजेत्तु ।।२१।। जिह्वौष्ठदंतमसितंत्वथवापिनीलंपीतेचयस्यनयनेरुधिरप्रभेवा ।।

ऊपर के होष्ठ से नीचे का होष्ठ लम्बा हो जाय, शरीरके बाहर शीत लगे और भीतर दाह हो, तेल से लिप्त मुख हो जाय, जिव्हा, होठ, दाँत कृष्णवर्ण के हो जाँय या नीले पड़ जाँय, चक्षु पीतवर्ण हो जांय वा सम सदृश हो जाय, ऐसे लक्षणों युक्त रोगी को वैद्य त्याग दे ।।२१।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

उपद्रव कहते हैं

हिक्काज्वरौवमथुवेपथुपार्श्वशूलाः ।।
कासभ्रमावपिचपानहतंत्यजेत्तम् ।।२२।।

हिक्का, बुखार, उल्टी, कम्प, पाशुओं में पीड़ा, कास भ्रम, ये उपद्रव होंय, तो उसे वैद्य त्याग दे, परन्तु जैज्झट आचार्य कहते हैं कि असाध्य लक्षण से अलग पाठ होने पर और यह लक्षण होनेसे कृच्छ्रसाध्य जानना असाध्य नहीं होता है ।।२२।।

इति श्री पण्डित चोखेलाल निर्मितायां कृष्णानन्दिनी भाषाटीकायां
माधवनिदाने मदात्ययरोगःनिदानम् समाप्तम्

अथ दाहनिदानम्

मद्यजदाह

त्वचंप्राप्तःचपानोष्मापित्तरक्ताभिमूर्च्छितः ।।
दाहं प्रकुरुते घोरं पित्तवत्तत्रभेषजम् ।। १ ।।

दाह रोग सात प्रकार का होता है जिसमें प्रथम मद्यजन्य दाह के लक्षण कहते हैं । मद्यपान से दूषित हुआ पित्त, उस पित्त की गर्मी पित्त रुधिर को बढ़ाय कर घोर दाह पैदा करे, इसमें पित्तनाशक औषधि करे ।। १ ।।

रक्तज और पैत्तिक दाह के लक्षण

कृत्स्नदेहानुगं रक्तमुद्रिक्तंदहतिध्रुवम् ।। सउष्यतेतृष्यते-
चताम्राभस्ताम्रलोचनः ।। २ ।। लोहगंधांगवदनोवह्निने-
वावकीर्यते।।पित्तज्वरसमःपित्तात्सचाप्यस्यविधिःस्मृतः।३

सर्व शरीर का रक्त कुपित हो, अत्यन्त दाहकरे तब वह मनुष्य

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

अग्नि के पास रहने से जैसा तपै उस प्रकार तपै, प्यासयुक्त तांबे के समान तन का रङ्ग हो जाय और चक्षु लाल वर्ण के हो जाँय और मुख तथा शरीर में गर्म लोहे पर जल गेरने से जैसी गन्ध हो वैसी गन्ध आवे और शरीर में आग लगने के समान पीड़ा होय, पित्त से जो दाह होतीहै उसमें पित्तज्वर के लक्षण होतेहैं उसपर पित्तज्वर वद औषधि देनी चाहिये। पित्तज्वर और पैत्तिक दाह में केवल इतना भेद है कि पित्तज्वर में अग्नि और आमाशय दूषित होते हैं पित्तकी दाह में नहीं होते और सब लक्षण होते हैं ॥२–३॥

तृषा रोकने से उत्पन्न दाह के लक्षण

तृष्णानिरोधादब्धातौक्षीणेतेजःसमुद्धतम् ॥ सबाह्याभ्यन्तरं देहंप्रदहेन्मन्दचेतसः ॥ संशुष्कगलताल्वोष्ठो जिह्वांनिष्कृष्यवेपते ॥ ४ ॥

तृषा रोकने से जल रूप धातु नाश होकर पित्त को उष्मा को उत्तेजित करे तब वह उष्मा शरीर के बाहर और भीतर दाह करे, इस दाह से मनुष्य बेहोश हो जाय और गला, तालु, होठ यह बड़े शुष्क हो जांय और जिह्वा बाहर निकल आवे, कांपे इत्यादिक लक्षण होते हैं ॥४॥

शस्त्राघातज दाह के लक्षण

असृजःपूर्णकोष्ठस्यदाहोऽन्यःस्यात्सुदुःसहः ॥५॥

तलवार आदि के लगने से उत्पन्न रक्त, उस रक्त से हृदय भर जाय तब अत्यन्त दुःसह दाह पैदा होती है ॥ ५ ॥

धातु क्षयजन्य दाह के लक्षण

धातुक्षयोत्थोयोदाहस्तेनमूर्च्छातृषान्वितः ॥
क्षामस्वरःक्रियाहीनःससीदेद्भृशपीडितः ॥६॥

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

क्षय धातु से जो दाह पैदा होती है उसमें मूर्छा, दाह इनसे युक्त तथा स्वरभेद और चेष्टा नाश हो जाय और चिकित्सा न करने पर मृत्यु प्राप्त रोगी हो जाता है ॥ ६ ॥

क्षतज दाह के लक्षण

क्षतजोऽनशतश्चान्नं शोचतोवाप्यनेकधा ॥
तेनांतर्दह्यतेऽत्यर्थ तृष्णामूर्च्छाप्रलापवान् ॥७॥

घाव के होने से उत्पन्न दाह में आहार कम होता है और बहु प्रकार की शोक कारक दाह हो और इस दाह से अभ्यन्तर दाह हो और प्यास, मूर्छा. प्रलापादि होते हैं ॥७॥

मर्माभिघातज दाह के लक्षण

मर्माभिघातजोऽप्यस्तिसोऽसाध्यःसप्तमोमतः ॥
सर्वएवचवर्ज्याःस्युःशीतगात्रस्यदेहिनः ॥ ८ ॥

मर्म स्थान में चोट लगने से जो दाह होती है वह असाध्य है और सब दाहों में शीतल शरीर वाला रोगी मनुष्य त्याज्य है ॥८॥

इति श्री पं चोखेलाल कृतायां कृष्णानंदिनी भाषाटीकायां माधवनिदाने
दाहरोगनिदानं समाप्तम्

अथ उन्मादनिदानम्

मदयंत्युद्गतादोषायस्मादुन्मार्गमाश्रिताः ॥
मानसोऽयमतोव्याधिरुन्मादइतिकीर्त्तितः ॥१॥

दोष वृद्धि को प्राप्त होकर निज मार्ग को त्यागकर अन्य मार्ग अर्थात् मनोवह धमनियों में प्राप्त होकर मन को उन्मत्त करे और यह व्याधि मानसी है इसलिये इसे उन्माद कहते हैं ॥ १ ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

एकैकशःसर्वशश्चदोषैरत्यर्थमूर्च्छितैः ॥ मानसेन च दुःखेनसपंचविधउच्यते ॥ २ ॥ विषाद्भवतिषष्ठश्चयथास्वंतत्रभेषजम् ॥ सचाप्रवृद्धस्तरुणोमदसंज्ञांबिभर्तिच ॥ ३ ॥

अति दूषित हुए अलग २ दोषों से तीन और मानसी दुःख के सन्निपात से यह रोग पांच प्रकार का है और विष भक्षण से छटाँ इनमें दोष के अनुकूल औषधि देनी चाहिये जब तक इस रोग की वृद्धि नहीं होती है और जब तक तरुण रहता है तब तक इस रोग को मद कहते हैं ॥२—३॥

उन्माद रोग के सामान्य कारण और सम्प्राप्ति

विरुद्धदुष्टाऽशुचिभोजनानिप्रधर्षणंदेवगुरुद्विजानाम् ॥
उन्मादहेतुर्भयहर्षपूर्वोमनोऽभिघातोविषमाश्चचेष्टाः ॥४॥
तैरल्पसत्त्वस्यमलाःप्रदुष्टाबुद्धेर्निवासंहृदयंप्रदूष्य । स्रोतांस्यधिष्ठायमनोवहानिप्रमोहयंत्याशुनरस्यचेतः ॥५॥

विष मिश्रित अन्न, अछूत से छुआ हुआ भोजन, देवता, गुरु, ब्राह्मण इनका अनादर करने से, भय और हर्ष के होने से, मनको बिगाड़कर सर्व शरीरस्थ चेष्टा विरुद्ध करे तब मनुष्य उन्माद से व्यथित हो तिरछा चले, सामर्थ्यवान से द्वेष करे और व्यर्थ भाषण करे। इस श्लोक में पूर्व शब्द कारण का है और चकार से काम, कोप, लोभ आदि भी उन्माद के हेतु हैं, यह ध्येय जैज्जट आचार्य का है। पूर्व कथित कारणों से अल्प गुण मनुष्य के वायु आदिक दोष कुद्धित हो बुद्धि वासस्थानस्थ हृदयस्थित मन को बिगाड़कर मनोवाहिनी नाड़ियों में प्राप्त हो मनुष्य के अन्तःकरण को मोहित करे ॥ ४—५ ॥

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

उन्माद का स्वरूप

धीविभ्रमःसत्त्वपरिप्लवश्चपर्याकुलादृष्टिरधीरताच ॥
अबद्धवाक्त्वंहृदयंचशून्यंसामान्यमुन्मादगदस्यचिह्नम्।६।

मति में भ्रम, मन का चाञ्चल्य होना, दृष्टि का सर्वत्र गमन करना, डरपना, कुवाक्य भाषण करना, हृदय का शून्य हो जाना, ये लक्षण उन्माद होने वाला होता है तब होते हैं ॥६॥

वातज उन्माद के लक्षण

रूक्षाल्पशीतान्नविरेकधातुक्षयोपवासैरनिलोतिवृद्धः ॥
चिन्तादिदुष्टंहृदयंप्रदूष्यबुद्धिंस्मृतिंचाप्युपहन्तिशीघ्रम् ॥७
अस्थानहासस्मितनृत्यगीतवागंगविक्षेपणरोदनानि।
पारुष्यकार्श्यारुणवर्णताश्चजीर्णेबलंच।निलजः स्वरूपम्।८।

रूक्ष अल्प और ठण्डा ऐसा अन्न विरेक शब्द से अतिसार और वमन । धातुक्षय और व्रत इन कारणों से अत्यन्त कोप को प्राप्त हुई वायु सो चिन्ता शोकग्रस्त हो मन को अत्यन्त दूषित कर बुद्धि और स्मरण शक्ति का नाश करे और हास्य कारण बिना ही हँसे मन्द मुसकान करे नृत्य करे बिना प्रसंग ही गीत और भाषण करे हाथों को इधर उधर चलावै रुदन करे और तन दुबला लाल हो जाय और अन्न का पाचन होने पर अति शक्ति होय ये लक्षण वातज उन्माद के हैं ॥७-८॥

पैत्तिक उन्माद के लक्षण

अजीर्णकट्वम्लविदाह्यशीतैर्भोज्यैश्चितंपित्तमुदीर्णवेगम् ।
उन्मादमत्युग्रमनात्मकस्यहृदिस्थितंपूर्ववदाशुकुर्या
॥ ९ ॥ अमर्षसंरंभविनग्नभावाः संतर्जनातिद्रवणोष्णरो

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

षा: ।। प्रच्छायशीतान्नजलाभिलाषा:पीताचभा:पित्तकृतस्यलिंगम् ।। १० ।।

अपरिपक्व, कटु, अम्ल, दाहकारक और उष्ण वस्तु के खाने से, एकत्रित हुआ जो पित्त सो तीव्र वेग होकर अजितेन्द्रिय मनुष्य के हृदय में प्रविष्ट हो उन्माद को प्रगट करे । इस उन्माद से असहनशील कर, षदों को फेंकने वाला नग्न हो जाना, भयभीत हो भागने लगे, देह उष्ण हो जाय, कोप करे, छाया में रहे, शीतल पानी अन्न की इच्छा करे, पीतवर्ण मुख हो जाय, ये पैत्तिक उन्माद के लक्षण हैं ।।९-१०।।

श्लेष्मजन्य उन्माद के लक्षण

सम्पूरणैर्मन्दविचेष्टितस्यसोष्माकफोमर्मणिसंप्रदुष्टः ।।
बुद्धिंस्मृतिंचाप्युपहन्तिचित्तंप्रमोहयन्संजनयेद्विकारम् ।११
वाक्चेष्टितंमन्दमरोचकश्चनारीविविक्तप्रियताऽतिनिद्रा ।
छर्दिश्च लाला च बलं च भुंक्तेनखादिशौक्ल्यं चकफात्मके
स्यात् ।। १२ ।।

मन्द क्षुधा में भक्षण कर किञ्चित् मात्र भी काम न करे ऐसे मनुष्य के पित्तयुक्त कफ हृदय में अत्यन्त बढ़कर बुद्धि, स्मरण, मन इनकी सामर्थ्य का नाश कर उन्माद को उत्पन्न करे तब वाणीमन्द हो जाय, अन्न द्वेष होना, योषित का प्रिय लगना, एकान्त निवास करे, नींद अत्यन्त आवे, उल्टी होना, मुख से लार गिरे, भोजन के बाद रोग अधिक जोर करे, नख, नेत्र, त्वचा मूत्रादि सफेद हो जांय तो ये लक्षण कफजन्य उन्माद में होते हैं ।।११-१२।।

त्रिदोषजन्य उन्माद के लक्षण

य:सन्निपातप्रभवोऽतिघोर:सर्वै:समस्तैरपिहेतुभि:स्यात् ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सर्वाणिरूपाणिबिभर्त्तितादृग्विरुद्धभैषज्यविधिर्विवर्ज्यः।१३

जो उन्माद वातादिक दोष से हो वा त्रिदोषों के कोप से होय वह उन्माद बड़ा भयकर होता है । उसमें सब दोषों के लक्षण होतेहैं इसमें विरुद्ध औषधि की विधि वर्जित है । यह उन्माद असाध्य है त्याज्य के योग्य है ॥१३॥

शोकजन्य उन्माद के लक्षण

चौरैर्नरेन्द्रपुरुषैररिभिस्तथान्यैर्वित्रासितस्यधनबांधवसंक्षयाद्वा।गाढंक्षतेमनसिचप्रिययारिरंसोर्जायेतचोत्कटतमोमनसो विकारः ॥ १४ ॥ चित्रब्रवीतिचमनोनुगतंविसंज्ञोगायत्यथो हसतिरोदितिचातिमूढः ॥ रक्तेक्षणो हतबलेंद्रियभाःसुदीनःश्यावाननोविषकृतेनभवेद्विसंज्ञः।१५

चोरों ने, राजजनों ने, अथवा बैरियों ने, उसी प्रकार सिंह,गज व्याघ्रादि जीवों ने भय दिया हो अथवा द्रव्य और बान्धव नाश से मनुष्य का हृदय अत्यन्त दुःखित हो और सुन्दर स्त्री से विषय करने की वाञ्छा से घोर काम उत्पन्न हो, वह मनुष्य गुप्त विचारों को कथन करने लगे और अनेक प्रकार के भाषण करे, ज्ञान बिपरीत हो जाय, गायन करे, हँसे, रुदन करे मूर्ख हो जाय, ये लक्षण शोकज उन्माद के हैं । और विष से उत्पन्न उन्माद में चक्षु समवर्ण होते हैं, बल, इन्द्रिय और शरीर की कान्ति नाश हो जाती है, अत्यन्त दीनता हो जाय, मुख काला पड़ जाय और शक्ति नाश हो जाती है ॥१४–१५॥

असाध्य लक्षण

अवाङ्मुखस्तून्मुखोवाक्षीणमांसबलोनरः ॥
जागरूकोह्यसन्देहमुन्मादेनविनश्यति । १६॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

जिसका मुँह अधोमार्ग या ऊपरको हो और मांस एवं बल नष्ट होगया हो तथा निद्रा नाश हो गई हो ऐसा जन अवश्य ही उन्माद रोग से कष्ट प्राप्त कर मृत्यु को प्राप्त होता है ।।१७।।

आगन्तुक उन्माद के लक्षणों का कथन करते हैं

सर्व प्रथम भूतज उन्माद के लक्षण

अमर्त्यवाग्विक्रमवीर्यचेष्टोज्ञानादिविज्ञानबलादिभिर्यः ।
उन्मादकालोनियतश्चयस्यभूतोत्थमुन्मादमुदाहरेत्तम्।१७

वाक् बल शक्ति देह का व्यापार तत्त्वज्ञान शिल्पादि ज्ञान शास्त्र ज्ञान और विज्ञान नाम तदर्थ निश्चय आदि शब्द से स्मृत्यादिक जिसकी मनुष्य की सी न होय और जिसका उन्मत्त होने का समय निश्चय हो ऐसे उन्माद को भूतोन्माद कहते हैं । भूत नाम देवताओं का है ।।१७।।

देवग्रह के लक्षण

सन्तुष्टः शुचिरतिदिव्यमाल्यगन्धो निस्तंद्रस्त्ववितथसंस्कृतप्रभाषी।।तेजस्वीस्थिरनयनोवरप्रदाताब्रह्मण्योभवति नरः स देवजुष्टः ।।१८।।

सदा सन्तोषयुक्त रहे पवित्र रहे देह में सुगन्धि और नेत्रों के पलक लगें नहीं सत्य और संस्कृत का बोलने वाला हो, तेजस्वी स्थिर दृष्टि वर का देने वाला ब्राह्मण से प्रेम रखने वाला ऐसे लक्षणयुक्त मनुष्य को देवग्रह पीड़ित जानना ।।१८।।

असुरग्रह पीड़ित मनुष्य के लक्षण

संस्वेदीद्विजगुरुदेवदोषवक्ताजिह्माक्षोविगतभयो विमार्गदृष्टिः । सन्तुष्टोनभवतिचान्नपानजातैर्दुष्टात्माभवति स देवशत्रुजुष्टः ।।१९।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

स्वेदयुक्त शरीर, विप्र, गुरु, और देव इनमें दोष बताने वाला वक्र दृष्टि से देखने वाला, भय रहित. निषिद्ध मार्ग गमन करने वाला और अति अन्न जल से सन्तोष को प्राप्त न होने वाला, दुष्ट बुद्धि वाला मनुष्य राक्षस ग्रह से पीड़ित जानना ।।१९।।

गन्धर्व ग्रह के लक्षण

दुष्टात्मापुलिनवनांतरोपसेवीस्वाचारःप्रियपरिगीतगन्धमाल्यः ।। नृत्यन्वैप्रहसतिचारुचाल्पशब्दंगन्धर्वग्रहपरिपीडितोमनुष्यः ।।२०।।

गन्धर्व ग्रह से व्यथित मनुष्य प्रसन्नचित्त वाटिका में रहने वाला, निन्दनीय कर्म्म का करने वाला, गायन, सुगन्ध जिसको प्रिय लगे, नाचे, हास्य करे, सुन्दर भाषण करे, अल्प बोले, उसे गन्धर्वग्रह पीड़ित जानना चाहिये ।। २० ।।

यक्ष ग्रह के लक्षण.

ताम्राक्षःप्रियतनुरक्तवस्त्रधारीगम्भीरोद्रुतगतिरल्पवाक्सहिष्णुः ।। तेजस्वीवदतिचकिंददामिकस्मैयोयक्षग्रहपरिपीडतोमनुष्यः ।।२१।।

यक्षग्रह से व्यथित मनुष्य के चक्षु रक्तवर्ण हों, सुन्दर महीन लाल कपड़े का पहिनने वाला हो, गम्भीर मति वाला शीघ्रगामी, प्रमाणयुक्त बोलने वाला, सहनशील, पराक्रमी, क्या देऊँ ऐसा बोलने से इत्यादिक लक्षण होते हैं ।।२१।।

पितृग्रह के लक्षण

प्रेतानांसदिशातिसंस्तरेषुपिण्डान्प्रशातात्माजलमपिचाय सव्यवस्त्रः ।। मांसेक्षुस्तिलगुडपायसाभिकामस्तद्भक्तो-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

भवतिपितृग्रहाभिजुष्टः ॥२२॥

कुशाग्र भाग के ऊपर पितृओं को पिंड दे, मनमें भ्रान्ति रहना और उत्तरीय कपड़े अपसव्य कर तर्पण करना, माँस भक्षण की इच्छा होना तथा तिल, गुड़ खीर पर मन का चलायमान होना। इसके कथन करने का मुख्य उद्देश्य यह है कि जिसकी जिस पर अभिलाषा हो उसको उसी वस्तु का बलिदान देने से रोग का शान्तिकारक है, यह डल्लन का ध्येय है। और पित्रोंकी भक्तिकरना इत्यादिक लक्षण पितृग्रह पीड़ित मनुष्य के होते हैं ॥२२॥

सर्पग्रहयुक्त के लक्षण

यस्तूर्व्यांप्रसरतिसर्पवत्कदाचित्सृक्किण्यौ विलिहतिजिह्वया तथैव ॥ क्रोधालुर्मधुगुडदुग्धपायसेप्सुर्विज्ञेयोभवतिभुजङ्गमेनजुष्टः ॥२३॥

जो मनुष्य सर्पवत भूमि में शयन करे अर्थात् छाती के बल चले और सर्प के सदृश अपने होठों को जिह्वा से चाटा करे, सर्वदा कोपयुक्त रहे, मधु, गुड़, दुग्ध और खीर की इच्छा हो तो उसे सर्प ग्रह पीड़ित समझना चाहिये ॥२३॥

राक्षसग्रह ग्रस्त के लक्षण

मांसासृग्विविधसुराविकारलिप्सुर्निर्लज्जोभृशमतिनिष्ठुरोऽतिशूरः ॥ क्रोधालुर्विपुलबलोनिशाविहारीशौचद्विड्भवति च राक्षसैर्गृहीतः ॥२४॥

जो पुरुष माँस, रक्त, अनेक प्रकार के मद्यपान की वाञ्छा करे और लज्जाहीन अति निष्ठुर, अत्यन्त वलवान, क्रोधी अत्यन्त वली, रात्रि में भ्रमण करने वाला, अपवित्र रहने बाला जन राक्षस ग्रह ग्रस्त जानना चाहिये ॥२४॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

पिशाचग्रह ग्रस्त के लक्षण

उद्धस्तः कृशपरुषश्चिरप्रलापीदुर्गन्धोभृशमशुचिस्तथाऽतिलोलः ॥ बह्वाशीविजनवनांतरोपसेवीव्याचेष्टन्भ्रमति रुदन्पिशाचजुष्टः ॥२५॥

जो निज करों को ऊपर उठावे, तेजहीन, बहुत देर पर्यन्त बकवाद करे, देह दुर्गन्धित हो, अत्यन्त भोजनेच्छुक, एकान्त कान में बात करने वाला, विरुद्धि प्रकृति वाला तथा सहन करने वाला पुरुष पिशाच ग्रह पीड़ित जानना ॥ २५ ॥

प्रसंग वश से भूतोन्माद के लक्षण कहते हैं

देवविप्रगुरुद्वेषीवेदवेदांगविच्छुचिः ॥
आशुपीडाकरोऽहिंस्रोब्रह्मराक्षससेवितः ॥२६॥

सुर, विप्र, आचार्य से वैर रखने वाला, वेदज्ञानी, शुद्ध रहने वाला, शीघ्र पीड़क हिंसा करने वाला मनुष्य ब्रह्मराक्षस सेवी जानना ॥ २६ ॥

भूतोन्माद के लक्षण

महापराक्रमोयश्चदिव्यंज्ञानंचभाषते ॥
उन्मादकालोनैश्चित्योभूतोन्मादीसउच्यते ॥२७॥

अति पराक्रमी और श्रेष्ठ ज्ञान का कथन करने वाला और उन्माद समय का निश्चय न होय उसे भूतोन्मादी कहते हैं । आप कहते हैं कि देवादिक ग्रह पुरुष के तीन कार्यों के निमित्त ग्रहण करते हैं । मृत्यु के निमित्त और अर्चना के निमित्त तथा विहारार्थ इनमें मृत्यु के निमित्त पुरुष साध्य नहीं होता उसके लक्षण कहते हैं ॥ २७ ॥

स्थूलाक्षोद्रुतमटनःसफेनलेहीनिद्रालुःपतति च कंपतेच

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

योहि ॥ यश्चाद्रिद्विरदनगादिविच्युतः स्यात्सोऽसाध्यो भवतितथात्रयोदशेऽब्दे ॥२८॥

नेत्र भयानक हो जांय, शीघ्रगामी मुखास्थित झागों का चाटने वाला और निद्रा का विशेष आना तथा पतित हो जाय, काँपने वाला और जो पहाड़, गज अथवा वृक्ष, भीति, मन्दिर इनसे पतित हो ग्रह ग्रस्त हो जाय वह असाध्य है इसी प्रकार १३ वें वर्ष में सर्व ग्रह पीड़ित उन्माद रोग असाध्य है ॥२८॥

देवों के प्रवेश समय का कथन करते हैं

देवग्रहाःपौर्णमास्यामसुराःसंध्ययोरपि । गन्धर्वाः प्रायशोऽष्टम्यांयक्षाश्चप्रतिपद्यथ ॥२९॥ पितृग्रहास्तथा दर्शेपंचम्यामपिचोरगाः ॥ रक्षांसिरात्रौपैशाचाश्चतुर्दश्यां विशंतिहि ॥३०॥

देवग्रह पूर्णिमा को प्रवेश करते हैं । राक्षसग्रह सायंकाल को, अपिशब्द से पूर्णिमा को भी जानना, गन्धर्व ग्रह बहुधा अष्टमी तिथि को प्रायः शब्द से सायंकाल को भी प्रवेश करते हैं । यक्षग्रह प्रतिपदा को, पितृग्रह मावस्या को, सर्व ग्रह पंचमी को, अपिशब्द से अमावस्या को भी प्रवेश करते हैं । राक्षस रात्रि में, पिशाच चौदश को पुरुष के शरीर में आक्रमण करते हैं । तिथि कहने का आशय ये है कि जिस तिथि को मनुष्य ग्रह ग्रस्त हो उसी तिथि में शान्ति के निमित्त बलिदान देना चाहिये । शङ्का—मनुष्यके शरीर में उन्माद करने वाले सर्व ग्रह प्रवेश होते हुए क्यों नहीं दीखते हैं? उत्तर—॥२९-३०॥

दर्पणादीन्यथाच्छायाशीतोष्णं प्राणिनोयथा ॥ स्वमणिं

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

खास्करांश्चिश्चयथादेहंचदेपधृक्। विशंतिनचतृश्यंतेग्रहास्तद्वच्छरीरिणाम् ॥३१॥

जिस प्रकार आदर्श में मनुष्य का फोटू दिखाई देता है और सर्दी गर्मी जिस प्रकार लगती है और सूर्य किरण जैसे सूर्य-कान्त मणि में प्रवेश करती परन्तु दिखाई नहीं देती और जीव जिस तरह शरीर में प्रवेश करता है दीखता नहीं, उसी तरह सर्वग्रह मनुष्य के शरीर में प्रवेश करते हुए दिखाई नहीं देते ॥३१॥

इस उन्माद रोग में देवताओं का मनुष्य के अपवित्र शरीर में प्रवेश करना असम्भव है सो सुश्रुत में लिखा है यथा—

नतेमनुष्यैःसहसंविशंतिनवामनुष्यान्कचिदाविशन्ति।ये
त्वाविशन्तीतिवदन्तिमोहात्तेभूतविद्याविषयाद्पाह्याः।३२
तेषांग्रहाणांहरिचारिकायेकोटिसहस्रापुतपद्मसंख्याः। असृग्वसामांसभुजःसुभीमानिशाविहाराश्चतथाविशंति।३३

जो देवादिक मनुष्य के साथ रहते नहीं हैं नवीन मनुष्य की देह में प्रवेश करते हैं और जो वैद्य प्रवेश करते हैं इस प्रकार कहते हैं वे अज्ञान से कहते हैं। ऐसा वैद्य भूत विद्या वाला जानकर त्याग के योग्य है। वो कौन प्रवेश करते हैं इसलिये कहते हैं कि उन देवों के नौकर चाकर जो करोड़ों सहस्रों पद्म संख्या वाले रक्त चर्बी और मांस भक्षण वाले भयानक शरीर वाले जो निशि में विचरण करते हैं वे ही अनुचर आदमी के शरीर में प्रवेश करते हैं, देवता नहीं करते हैं ॥३२-३३॥

इति श्री पंडित चोखेलाल निर्मितायां कृष्णानन्दिनी भाषाटीकायां माधवनिदाने
उन्मादरोगनिदानं समाप्तम् ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अथ अपस्मारनिदानम्

सर्व प्रथम सुश्रुतोक्त इस रोग की निरुक्ति कहते हैं

स्मृतिर्भूतार्थविज्ञानमपस्तत्परिवर्जने ॥
अपस्मारइतिप्रोक्तस्ततोऽयंव्याधिरंतकृत् १॥

स्मृति शब्द प्राणियोंके अर्थ ज्ञान का सूचक है और अपशब्द नाशक है, अतः स्मृति और अप इन शब्दों से अपस्मार सिद्ध हुआ अतः पूर्व कथित हेतु के नाश से यह रोग जलादिक के निमित्त प्रवेश होने से मृत्युकारक है ॥ १ ॥

अपस्मार की सम्प्राप्ति

चिंताशोकादिभिर्दोषाःक्रुद्धाहृत्स्रोतसिस्थिताः ॥
कृत्वा स्मृतेरपध्वंसमपस्मारंप्रकुर्वते ॥ २ ॥

चिन्ता, शोक, कोप, लोभ, मोहसे दूषित हुए दोष सो हृदयस्थ मनोवाहिनी नाड़ियों में प्राप्त हो स्मरण शक्ति को नष्टकर अपस्मार 'मृगी' को उत्पन्न करते हैं ॥ २ ॥

वाग्भट्ट मत से निदान

मिथ्यायोगेंद्रियार्थानांकर्मणामतिसेवनात् । विरुद्धमलिनांकर्मविहारकुपितैर्मलैः ॥ ३ ॥ वेगनिग्रहशीलानामहिताशुचिभोजनात् । रजस्तमोभिभूतानांगच्छतांवारजस्वलाम् ॥ तथाकामभयोद्वेगक्रोधशोकादिभिर्भृशम् ॥ चेतसोऽभिभवैःपुंसामपस्मारोऽभिजायते ॥ ४ ॥

इन्द्रियों के अर्थ मिथ्या योग, अति योग और अयोगके सेवन से, तथा विरुद्ध मल, भोजन और विहार से कुपित हुए जो दोष

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

उनसे तथा मल मूत्रादि वेग धारण करने वाले के अहित और अपवित्र भोजन से रजोगुणी और तमोगुणी मनुष्यों के, रजस्वला स्त्री के साथ गमन करनेसे तथा काममय उद्वेग, शोक, क्रोध इन कारणों से, चित्तके बिगड़नेसे मनुष्यों के मृगी रोग उत्पन्न होताहै ॥३–४॥

अपस्मार के सामान्य लक्षण

तमःप्रवेशःसंरंभोदोषोद्रेकहतस्मृतेः ॥
अपस्मारइतिज्ञेयोगदोघोरश्चतुर्विधः ॥१॥

अन्धकार में प्रवेश करने के तुल्य ज्ञान का नष्ट होना, चक्षु तिरछे फिरें, दोषों के बढ़नेसे ज्ञान नष्ट हो जाय, ये लक्षण अपस्मार रोग में होते हैं सो यह रोग चार प्रकार का है ॥ १ ॥

पूर्वरूप

हृत्कंपःशून्यतास्वेदोध्यानंमूर्च्छाप्रमूढता ॥
निद्रानाशश्चतस्मिंश्चभविष्यतिभवत्यथ ॥२॥

हृदय काँपे और शून्य पड़ जाय, कुछ ध्यान नहीं रहै, मूर्छा, पसीनों का आना, ध्यान लग जाना, मन का मोह तथा इन्द्रियों का मोह हो और निद्रा नाश हो जाय, ये लक्षण जब अपस्मार होनेको होता है तब होते हैं ॥ २ ॥

वातज मृगी के लक्षण

कम्पतेप्रदशेद्दंतान्फेनोद्वामीश्वसित्यपि ॥
परुषारुणकृष्णानिपश्येद्रूपाणिचानिलात् ॥३॥

वातज अपस्मार में कम्प एवं दाँतों को चबाना, मुँह से झाग गिरना और श्वास भरना तथा कठोर रक्तवर्ण और कृष्णवर्ण वाले पुरुषों को देखे अर्थात् कोई नील वर्णयुक्त आदमी मेरे पास दौड़ा आता है ऐसा ज्ञात होना ये लक्षण होते हैं ॥ ३ ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

पैत्तिक मृगी के लक्षण

पीतफेनांगवक्त्राक्षःपीतासृग्रूपदर्शनः ॥
सतृष्णोष्णाऽनलव्याप्तलोकदर्शीचपैत्तिकः ॥४॥

पैत्तिक अपस्मार वाले आदमी के झाग, तन, मुख और नेत्र ये पीतवर्ण हों और वह पीतवर्ण रक्तवत वस्तु देखे और तृषायुक्त और उष्मा के साथ वह्नि पीड़ित सर्व संसार को देखे ये लक्षण होते हैं ॥ ४ ॥

श्लैस्मिक मृगी के लक्षण

शुक्लफेनांगवक्त्राक्षःशीतहृष्टांगजोगुरुः ॥
पश्येच्छुक्लानिरूपाणिमुच्यतेश्लैष्मिकश्चिरात ॥५॥

कफोत्पन्न मृगी वाले आदमी के झाग, शरीर, मुख, और नेत्र श्वेत हों तथा तन के रोमाँच खड़े रहें भारापन होना और सब वस्तु सफेद दीखे, ये लक्षण चिरकाल त्याज्य करने वाले होते हैं॥५॥

सन्निपातिक मृगी के लक्षण

सवरेतैःसमस्तैश्चलिंगैर्ज्ञेयस्त्रिदोषजः ॥
अपस्मारःसचासाध्योयःक्षीणस्याऽनवश्चयः ॥६॥

जिसमें तीनों दोषों के लक्षण मिलते हों उसे त्रिदोष जनित अपस्मार जानना यह असाध्य होता है और प्राचीन मृगी रोग भी असाध्यता को प्राप्त होता है ॥६॥

असाध्य लक्षण

प्रतिस्फुरन्तंबहुशःक्षीणंप्रचलितभ्रुवम् ॥
नेत्राभ्याचविकुर्वाणमपस्मारोविनाशयेत् ॥७॥

बारम्बार काँपे, क्षीण हो गया हो, भौंह का चलाने वाला और तिरछे नेत्रों वाला, मृगी रोग वाला रोगी त्याज्य है ॥ ७ ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

मृगी रोग की बारी-

पक्षाद्वाद्वादशाहाद्वामासाद्वाकुपितामलाः ॥
अपस्मारायकुर्वन्तिवेगंकिंचिदथोत्तरम् ॥ ८ ॥

कोप को प्राप्त हुए दोष १५ दिन में वा १२ वें वा तीसवें दिन मृगी रोग को उत्पन्न करते हैं, तिनमें पैत्तिक १५ दिन, वातिक १२ दिन, श्लेष्मक तीस दिन में आती है। शङ्का—वेगोत्पन्न करके अपस्मार के उत्पन्नकर्ता दोष शरीर में सर्वदा रहते हैं फिर सर्वकाल में वेग क्यों नहीं करते, द्वादश आदि दिनों में क्यों करते हैं? उत्तर—॥ ८ ॥

देवेवर्षत्यपियथ भूमौबीजानिकानिचित् ॥
शरदिप्रतिरोहन्तितथाव्याधिसमुच्छ्रयाः ॥९॥

जैसे वर्षाकाल में इन्द्र वर्षा करता है परन्तु जब कोई जौ, गोधूम, चणक आदि बीज शरदृतु में ही उपजते हैं उसी प्रकार सब रोगों के बीजरूप वातादिक दोष कदाचित् किसी अपस्मारादि व्याधि विशेष के निदानादिक के सगम होने से उस रोग को प्रगट करते हैं अथवा इसका मुख्य कारण यह है कि बीज के अंकुर फूटने में तेज वायु भूमि जल ये रक्षक भी हैं परन्तु वे सब काल विशेषकी प्रतीक्षा करते हैं, अङ्कुर के लिये काल रक्षक की आवश्यकता है। अर्थात् जिस समय में जिस अंकुर का बीज उत्पन्न होता है वह उसी समय में आवेगा बीच में नहीं, यही न्याय चातुर्दिक ज्वरों में जानना।

इति श्री पं० चोखेलाल कृतायां कृष्णानंदिनी भाषाटीकायां माधवनिदाने
अपस्माररोगनिदानं समाप्तम्

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अथ वातव्याधिनिदानम् प्रारभ्यते

रुक्षशीताल्पलध्वन्नव्यवायातिप्रजागरैः ॥ विषमादुपचाराच्चदोषासृक्स्रवणादपि ॥ १ ॥ लङ्घनप्लवनात्यध्वव्यायामातिविचेष्टितैः । धातूनांसंक्षयाच्चिन्ताशोकरोगार्त्तिकर्षणात् ॥२॥ वेगसंधारणादामादभिघातादभोजनात् ॥ मर्माबाधाद्गजोष्ट्राश्वशीघ्रयानादिसेवनात् ।३। देहेस्रोतांसिरिक्तानिपूरयित्वाऽनिलोबली ॥ करोतिविविधान्व्याधीन्सर्वांगैकांगसंश्रयान् ॥४॥

रुक्ष, ठण्डा अल्प और हलका अन्न भक्षण से, अति मैथुन के करने से, बहुत जागरण से, विषम उपचार करने से, दोष वातपित्त कफ मल मूत्रादि और रुधिर इनके निर्गमन से अर्थात् उल्टी और दस्तों से, लङ्घन, कला खेलने से, नदी आदि में तैरने से, अधिक चलने से, अति दण्ड कसरत आदि व्यायाम से, अति विरुद्ध चेष्टा से,रस रक्त के क्षय होने से, चिन्ता शोक और रोग द्वारा क्षय होने से, मल मूत्रादिकों के अवरोध से, आगे से लकड़ी की चोट लगने से, व्रत करने से गज, अश्व, ऊँट आदि शीघ्रगामी सवारियों पर बैठने से कोप प्राप्त हुई जो बलवान वायु सो शरीर में खाली जो नस उनमें प्राप्त हो, सर्वाङ्ग अथवा एक अंग में व्याप्त होने वाली ऐसी बहुत भाँति की व्याधि प्रगट करती है ॥ १—४ ॥

पूर्वरूप

अव्यक्तंलक्षणंतेषांपूर्वरूपमितिस्मृतम् ॥
आत्मरूपंतुयद्व्यक्तमपायोलघुतापुनः ॥५॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

पूर्वोक्त कथित व्याधि के जो अप्रगट चिह्न हैं उन्हें पूर्वरूप कहते हैं, बुखार आदिकों के तुल्य विशिष्ट नहीं है और जो रूप उत्पन्न होय अर्थात् दोषादि भेद करके यथार्थ दीखें उसको उस व्याधि का लक्षण जानना अपानवायु को चंचल होने से स्तम्भ, सङ्कोच करूरादिक का कदाचित् अभाव होय है और लघुता शरीर की उस वाय करके धातु शोषण करने से और अपाय लघुता कहिये सब वात विकारों का अपाय कहिपे अभाव होय और वायु उपद्रवों की जो लघुत्व स्थिति है सो विशेष रिवृत्ति नहीं होय । अब अनेक प्रकार की उत्पन्न व्याधियों का जो कथन किया है उनको आगे कहते हैं ॥५॥

संकोचःपर्वणांस्तंभोभंगोऽस्थ्नांपर्वणामपि ॥ लोमहर्षः
प्रलापश्चपाणिपृष्ठशिरोग्रहः ॥६॥ खांज्यपांगुल्यकुब्जत्वंशोथोंऽगानामनिद्रता ॥ गर्भशुक्ररजोनाशःस्यंदनंगात्रसुप्तता ॥७॥ शिरोनासाक्षिजत्रूणांग्रीवायाश्चापिहुँडनम् ॥ भेदस्तोदोऽर्तिहाक्षेपोमोहश्चायासएवच ॥ ८ ॥
एवंविधानिरूपाणिकरोतिकुपितोऽनिलः । हेतुस्थानविशेषाच्चभवेद्रोगविशेषकृत् ॥ ९ ॥

सन्धियों का संकोच और स्तम्भ, अस्थियों तथा सन्धियों में फूटने के तुल्य व्यथा होना, रोमाँच, व्यर्थ वार्तालाप, कर पदों का जकड़ना. खंजत्व और पंगु होना, कुबड़ापन, अङ्गों का शुष्क होना निद्रा नष्ट, गर्भ न रहना, वीर्य और रज का नष्ट होना, कम्प, अङ्गों में शून्यता, शिर, नाक, मुँह, जानु और ग्रीवा इनका भीतर जाना अर्थात् वक्र गति को प्राप्त होना,भेद तुल्य व्यथा,नोचने के समान वेदना, दर्द, मोह, श्रम इन लक्षणों को वायु दूषित होने पर करती

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

है और वही वायु हेतु और स्थान भेद से अनेक रोगकारक होती है। जैसे कफ संयुक्त होकर मन्यास्तम्भ रोग करे, यदि पक्वाशय में वायु स्थित हो तब आंतों का गुञ्जार करना इत्यादिक लक्षण होते हैं ॥ ६–९ ॥

कोष्ठाश्रित वायु के कर्म्म

तत्रकोष्ठाश्रितेदुष्टेनिग्रहोमूत्रवर्चसोः ॥
ब्रध्नहृद्रोगगुल्मार्शःपार्श्वशूलंचमारुते ॥१०॥

कोठे में प्राप्त वायु दूषित होने से मल मूत्र का विष्टम्भ हो, बद रोग, हृदय रोग, वायु गोला, अर्श और पाशुओं में वेदना, इतने रोग प्रगट करती है ॥ १० ॥

सर्वाङ्ग कुपित वायु के लक्षण

सर्वाङ्गकुपितेवातेगात्रस्फुरणजृम्भणम् ॥
वेदनाभिःपरीतस्यस्फुटंतीवास्यसंधयः ॥११॥

सम्पूर्ण अवयवों की वायु बिगड़ने से अङ्गों का फड़कना, जंभाई और सन्धि पीड़ायुक्त होना इत्यादिक लक्षण होते हैं ॥११॥

गुदास्थित वायु के लक्षण

ग्रहोविण्मूत्रवातानांशूलाध्मानाश्मशर्कराः ॥
जंघोरुत्रिकहृत्पृष्ठरोगशोफोगुदेस्थिते ॥ १२ ॥

वायु गुदा में प्राप्त होने से मलमूत्र और अपानवायु का अवरोध. दर्द, पेट का फूलना, पथरी, उरु, त्रिकस्थान, हृदय कमर में वेदना और उपद्रव करती हैं

आमाशयगत वायु के लक्षण

रुक्पार्श्वोदरहृन्नाभेस्तृष्णोद्गारविषूचिकाः ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

कासःकंठास्यशोषश्च श्वासश्चामाशयस्थिते ॥१३॥

वायु आमाशय में प्राप्त होने से पाशु, पेट, हृदय और नाभि इनमें वेदना होय, तृषा, ओकारी, विसूचिका, कास, गला और मुख का शुष्क होना, श्वास आदि रोग करती है ॥१३॥

पक्वाशय स्थित वायु के लक्षण

पक्काशयस्थोऽत्रकूजंशूलाटोपौकरोतिचः ॥
मूत्रकृच्छ्रपुरीषत्वमानाहंत्रिकवेदनाम् ॥ १४ ।

वायु पक्वाशय में गमन करने से आँतों का गूँजना, दर्द, पेट में शब्द, मल मूत्र का सकष्ट उतरना, अफरा, कमर में वेदना करता है ॥१४॥

इन्द्रिय प्राप्त वायु के कर्म्म

श्रोत्रादिष्विंद्रियवधंकुर्यात्क्रुद्धसमीरणः ॥
त्वग्रूक्षास्फुटितासुप्ताकृशाकृष्णाचतुद्यते ॥
आतन्यतेसरागाचमर्म्मरुक्त्वग्गतेऽनिले ॥१५॥

वायु त्वचा स्थित होने से रुक्षता, फटी और त्वचा को शून्य कर्कश काली करता है और आँख त्वचा में चमका होना किंचित् ताम्रवर्णवत् लाल होना और हृदय आदि में, गर्म स्थानों में वेदना होना इत्यादिक लक्षण होते हैं ॥१५॥

रक्तस्थ वायु के लक्षण

रुजस्तीव्राःससंतापावैवर्ण्यंकृशतारुचिः ॥
गात्रेचारूंषिभुक्तस्यस्तंभश्चासृग्गतेऽनिले ॥१६॥

रक्तगत वायु सन्तापयुक्त तीव्र वेदना, देह का अल्पबल होना, कृशता, अन्न द्वेष, और शरीर में फोड़े होना तथा भोजन के बाद

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

देह का जकड़ना, ये लक्षण रक्तगत वायु करती है ॥१६॥

मांस मेदोगत वायु के लक्षण

गुर्वंगंतुद्यतेस्तब्धंदंडमुष्टिहतंयथा ॥
सरुक्छ्रमितमत्यर्थंमांसमेदोगतेऽनिले ।१७।

माँस और मेदास्थित वायु होने से शरीर में भारापन, चोट लगने के तुल्य वेदना अथवा निश्चल हो जाय अर्थात् लकड़ी के प्रहार सदृश तकलीफ होना इत्यादि लक्षण होते हैं ॥ १७ ॥

मज्जागत और अस्थिगत वायु के लक्षण

मेदोऽस्थिपर्वणांसन्धिशूलंमांसबलक्षयः ॥
अस्वप्नःसंततारुक्चमज्जास्थिकुपितेऽनिले ।१८।

मज्जा और हड्डी में वायु पहुंचने से हड़फूटन होना, सर्वाङ्ग में वेदना, माँस तथा शक्ति का नाश, नींद का न आना और सहसा वेदना होना ये लक्षण होते हैं ॥१८॥

शुक्रगत वायु के लक्षण

क्षिप्रंमुंचतिबध्नातिशुक्रं गर्भमथापिवा ।
विकृतिंजनयेच्चापिशुक्रस्थःकुपितोऽनिलः ॥१९॥

शुक्रगत वायु होने से शुक्र का शीघ्र ही पतन होना और बंधन होना अथवा गर्भ को जल्दी छोड़ना और बन्धन करना और गर्भ तथा शुक्र का विकार पैदा करना ये लक्षण होते हैं ॥१९॥

शिरागत वायु के लक्षण

कुर्याच्छिरागतःशूलंशिराकुंचनपूरणम् ॥
सबाह्याभ्यन्तरायामंखल्लींकुब्जत्वमेवच ॥२०॥

वायु शिरागत होने से दर्द नाड़ी का संकोच और स्थूलत्व व

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

करे और बाह्यायाम आभ्यंतरायाम खल्ली और कूबड़ापना इन रोगों को उत्पन्न शिरस्थितवायु करता है ॥ २० ॥

स्नायुगत और सन्धिगत वायु के लक्षण

सर्वांगैकांगरोगांश्चकुर्यात्स्नायुगतोऽनिलः ।
हंतिसंधिगतःसंधीञ्छूलशोलौकरोतिच ॥२१॥

वाय स्नायुगत होने से सर्वांग और एकांग रोगों को करे, सन्धिगत होने से सन्धि का अलग सा मालूम होना और जकड़ामा जाना तथा दर्द और सूजन होना यह लक्षण होते हैं ॥२१॥

पित्त और कफ इनसे आवृत हुई प्राणोदानादि वाय के लक्षण

प्राणेपित्तावृतेछर्दिर्दाहश्चैवोपजायते । दौर्बल्यंसदनं
तंद्रावैरस्यंचकफावृते ॥ २२ ॥ उदानेपित्तयुक्तेतुदाहो
मूर्च्छाभ्रमःक्लमः ॥ अस्वेदहर्षौमन्दाग्निःशीतताचकफा
वृते ॥२३॥ स्वेददाहौष्ण्यमूर्च्छाःस्युःसमानेपित्तसंयुते ।
कफेनसंगेविण्मूत्रेगात्रहर्षश्चजायते ॥२४॥ अपानेपित्त-
युक्तेतुदाहौष्ण्यंरक्तमूत्रता ॥ अधःकायेगुरुत्वंचशीतता च
कफावृते ।२५। व्यानेपित्तावृतेदाहोगात्रविक्षेपणंक्लमः॥
स्तंभनोदंडकश्चौपिशोथशूलौकफावृते ॥२६॥

प्राणवायु पित्त में प्राप्त होने से उल्टी और दाह का होना और कफावृत्त होने से कमजोरी, घृणा, तन्द्रा, मुख का रस रहित होना उदानवाय कपित युक्त होने से दाह मूर्च्छा भ्रम अनायास थकावट ये होय और कफयुक्त होने से स्वेद का अवरोध रोमाँच मन्दाग्नि और सर्दी का लगना । समानवाय पित्तगत होने से स्वेद का आना गर्मी और मूर्छा ये होते हैं और कफयुक्त होनेमे मलमूत्र

का विष्टम्भ और रोमाँच होना ये लक्षण होते हैं। अपान वायु पित्तगत होने से कमर के अधोभाग में भारापन और सर्दी का लगना, व्यानवायु पित्तयुक्त होने से दाह गात्रों का विक्षेप अर्थात् इतस्ततः चलना और थकावट होना और कफयुक्त होने से तन काष्ठवत स्थिर हो, सूजन और दर्द हो ये लक्षण पित्त कफगत वायु होने से होते हैं॥ २२-२६ ॥

आक्षेपक के सामान्य लक्षण

यदातुधमनीःसर्वाःकुपितोऽभ्येतिमारुतः ॥ तदाक्षिपत्याशु मुहुर्मुर्देहंमुहुश्चरः ॥ मुहुर्मुहुस्तदाक्षेपादाक्षेपकइतिस्मृतः ॥ २७ ॥

जिस समय में वायु पुष्ट होकर सब धमनी नाड़ियों में जाकर युक्त हो तब उस जगह वह वायु शरीर को बारम्बार संचार करके आक्षिप्त करती है अर्थात् गज पर बैठने से जिस तरह मनुष्य हिलता है उसी तरह देह को आक्षिप्त याने चलायमान करती है ॥२७॥

आक्षेपक के अपतन्त्र और अपतानक का कथन करते हैं

क्रुद्धःस्वैःकौपनैर्वायुःस्थानादूर्ध्वंप्रवर्त्तते ॥ पीडयन्हृदयं गत्वा शिरःशंखौ च पीडयेत् ॥२८॥ धनुर्वन्नामयेद्गात्राण्याक्षिपेन्मोहयेत्तथा ॥ स कृच्छ्रादुच्छ्वसेच्चापिस्तब्धक्षोऽनिमीलकः ॥ २९ ॥ कपोतइवकूजेच्चनिःसंज्ञःसोऽपतंत्रकः ॥ दृष्टिंसंस्तभ्यसंज्ञां च हत्वा कंठेनकूजति ॥३०॥ हृदिमुक्तेनरःस्वास्थ्यंयातिमोहंबृतेपुनः ॥ वायुनादारुणं प्राहुरेकेतमपतानकम् ॥ ३१ ॥

रुक्षादि निज हेतुओं से दूषित हुई वायु निज स्थान का त्याग

कर ऊपरी भाग में प्राप्त हो हृदय में जाकर वेदना करे, शिर और कनपुटियों में व्यथा हो और शरीर को धनुष के तुल्य तिरछा करदे और चलते समय मूर्छित करे वह मनुष्य सकष्ट श्वास का ले, नेत्र बन्द हो जावें अथवा नेत्र तिरछे हो जावें, कबूतर के तुल्य शब्द करे तथा बेहोशहो जाय तो इस रोग को अपतन्त्रक कहते हैं। दृष्टि स्थिति हो जाय, शक्ति भी नष्टगत हो जाय कण्ठ में घुर २ शब्द हो, वायु जब हृदय से गमन करे तब मनुष्य होशको प्राप्त हो जाय और वायु का हृदय में आने से पुनः मोह हो जाय इस घोर व्याधि को अपातनक कहते हैं। अब कहतेहैं कि आक्षेपकरोग दण्डापतानक, अन्तरायाम, बहिरायाम और अभिघात इन भेदों से चार प्रकार का होता है। उनके लक्षणों का कथन करते हैं ॥२८-३१॥

दण्डापतानक के लक्षण

कफान्वितोभृशंवायुस्तास्वेवयदितिष्ठति ॥
सदंडवत्स्तंभयतिकृच्छ्रोदंडापतानकः ॥ ३२ ॥

वायु अत्यन्त कफयुक्त होकर सब नाड़ियों में प्राप्त हो तब सर्वाङ्ग को डण्डे के तुल्य करदे उसे दंडापतानक कहते हैं और जो वायु शरीर को धनुष समान तिरछा करदे उसे धनुस्तम्भ कहते हैं।३१

अन्तरायाम के लक्षण

धनुस्तुल्यंनमेद्यस्तुसधनुःस्तंभसंज्ञितः ॥ अंगुली-
गुल्फजठरहृद्वक्षोगलसंश्रितः ॥ स्नायुप्रतानमनिलोयदा
क्षिपतिवेगवान् ॥३३॥ विष्टब्धाक्षःस्तब्धहनुर्भग्नपार्श्वः
कफंवमन् । अभ्यंतरंधनुरिवयदानमतिमानवम् ॥३४॥
तदासोऽभ्यन्तरायामंकुरुतेमारुतोबली ॥३५॥

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

पैर की अंगुली, जानु, हृदय ऊपर, उरःस्थल और कण्ठ इन स्थानों में स्थित वायु वेगवान हो नाड़ियों के जाल को शुष्क कर बाहर निकाल दे उस मनुष्य की दृष्टि स्थिरहो जाय, ठोड़ी रह जाय पाशुओं में वेदना हो, मुख से कफ गिरे और जिस समय मनुष्य धनुष के तुल्य नीचे को झुक जाय तब वह बलवान वायु अन्तरायाम रोग को उत्पन्न करती है ॥३३-३५॥

वाह्यायामरोग के लक्षण

बाह्यःस्नायुप्रतानस्थोवाह्यायामंकरोतिच ॥
तमसाध्यंबुधाःप्राहुर्वक्षःकट्यूरुभंजनम् ॥३६॥

बाहर की नसों में स्थित वायु सो वाह्ययाम अर्थात् कमर को तिरछी कर दे,उरःस्थल, कटि, जंघा इनको मोर दे तो इस वाह्ययाम रोग को असाध्य कहते हैं ॥ ६६ ॥

पूर्वोक्त आक्षेपक का पित्त कफानुबन्ध होना कहते हैं

कफपित्तान्वितोवायुर्वायुरेवचकेवलः ॥
कुर्यादाक्षेपकंत्वन्यंचतुर्थमभिघातजम् ॥३७॥

वायु कफ पित्तयुक्त होने से या केवल वायु दूषित होने से आक्षेपक रोग को करे हैं और दूसरा कहिये दंडपतानकादि तीनों की अपेक्षा चतुर्थ अभिघातज आक्षेपक रोग को करे है ॥३७॥

असाध्यत्व के लक्षण

गर्भपातनिमितश्चशोणितातिस्रवाच्चायः ॥
अभिघातनिमित्तश्चनसिध्यत्यपतानकः ॥३८॥

गर्भपात के होने से अथवा अत्यन्त रक्तस्राव से अथवा अभिघात कहिये डंडादिकों की चोट लगने से जो उत्पन्न अपतानक उसे असाध्य कहते हैं ॥३८॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

पक्षाघात के लक्षण

गृहीत्वार्धंतनोर्वायुःशिरास्नायूविशोष्यच ।। पक्षमन्यतरंहन्ति संधिबंधान्विमोक्षयन् ।। ३९ ।। कृत्स्नोर्द्धकायस्तस्यस्याद कर्मण्योविचेतनः ।। एकांगरोगतंकेचिदन्ये पक्षबधंविदुः ।।४०।।

वायु अर्धाङ्ग को ग्रहण कर सर्व शरीरस्थ नाड़ियों को सुखा कर अर्धाङ्ग को कार्य करने में असमर्थ करदे और सन्धिस्थ बन्धनों को शिथिल कर दे पश्चात् उस रोगी का सम्पूर्ण वा अर्धाङ्ग हिले चले नहीं और उस रोगी का अल्प ज्ञान स्पर्श वा देखने का न रहे इसको एकांग रोग कहते हैं और दूसरे को पक्षवध कहते हैं, इसी को पक्षाघात कहते हैं ।। ३९—४० ।।

सर्वाङ्ग रोग के लक्षण

सर्वाङ्गरोगंतंकेचित्सर्वकायाश्रितेऽनिले ।।
दाहसन्तापमूर्च्छाःस्युर्वायौपित्तसमन्विते ।।४१।।

सर्व नाड़ियों में वायु प्राप्त होकर वेदना करे उसे सर्वांग रोग कहते हैं । अब साध्य और असाध्य के ज्ञान के लिये और दोषों का सम्बन्ध कहते हैं ।।४१।।

शैत्यशोथगुरुत्वानितस्मिन्नेवकफान्विते । शुद्धवातहतं पक्षंकृच्छ्रसाध्यतमंविदुः ।। साध्यमन्येनसंयुक्तमसाध्यं क्षयहेतुकम् ।। ४२ ।। गर्भिणीसूतिकाबालवृद्धक्षीणेष्वसृक्स्रुते ।। पक्षाघातंपरिहरेद्वेदनारहितोयदि ।।४३।।

पक्षवध की वायु कफपित्तयुक्त हो तब दाह, सन्ताप, मूर्च्छा होय और वही वायु कफयुक्त होय तो सर्दी, सूजन, भारापन यह

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

लक्षण होंय और केवल वायु से उत्पन्न पक्षघात अत्यन्त कष्टसाध्य होता है और दोषों के संसर्ग होने से साध्य होता है। क्षय से उत्पन्न पक्षाघाम असाध्य होता है। गर्भिणी, बालक, वृद्ध और क्षीण मनुष्य के हुआ तथा रक्तस्राव से उत्पन्न पक्षाघात रोग वेदना हीन होने पर असाध्य समझकर वैद्य उसे त्याग दे ॥४२—४३॥

अर्दित रोग के लक्षण

उच्चैर्व्याहरतोऽत्यर्थंखादतःकठिनानिच ॥ हसतोजृम्भमाणस्य विषमाच्छयनासनात् ॥ ४४ ॥ शिरोनासौष्ठचिबुकललाटेक्षणसंधिगः अर्दयत्यनिलोवक्त्रमर्दितंजनयत्यतः ॥४५॥ वक्रीभवतिवक्त्रार्धंग्रीवाचास्यात्प्रवर्त्तते ॥ शिरश्चलतिवाक्यस्तंभो नेत्रादीनांचवैकृतम् ॥४६॥ ग्रीवाचिबुकदन्तानांतस्मिन्पार्श्वे च वेदना। तमादर्तमितिप्राहुर्व्याधिविशारदाः ॥ ४७ ॥

ऊँचे स्वर से वेदादिकों के पठन-पाठन से अथवा कठिन पदार्थ सुपारी आदि के भक्षण से, बहुत हास्य करने से, अत्यन्त जंभाई के लेने से, ऊँचे नीचे स्थान में शयन करने से, विषमाशन के करने से कुपित हुई जो वायु शिर, नाक, होठ, ठोड़ी, माथा और चक्षु इनकी सन्धियों में प्राप्त हो मुख में वेदना करे अर्थात् अर्दित रोग को पैदा करे तब उसका अर्ध मुख तिर्यङ्गगामी हो जाय, अत्यन्त थूके, शिर कम्पिति हो, बोल नहीं सके, नेत्र, भौंह, गाल इनमें व्यथा हो, जिस तरफ अर्दित रोग हो उस तरफ ग्रीबा, ठोड़ी, और दन्त इनमें वेदना होय, व्याधि ज्ञाता जो वैद्य हैं वे इसे अर्दित रोग कहते हैं। शंका—क्यों जी पक्षाघात और अर्दित में क्या भेद है?

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

उत्तर–अर्दितसे गर्भ पीड़ित होता, कभी नहीं होताहै और पक्षाघातमें सर्वदा एकसी पीड़ा विद्यमान रहतीहै । वह अर्दितरोग चार तरहका है ॥ ४४–४७ ॥

अर्दित रोग के असाध्य लक्षण

क्षीणस्याऽनिमिषाक्षस्यप्रसक्ताव्यक्तभाषिणः ॥
नसिध्यत्यर्दितंगाढं त्रिवर्षवेपनस्यच ॥ ४८ ॥

क्षीण मनुष्य के पलक नहीं लगें ऐसे मनुष्य के, अत्यन्त शुद्ध नहीं बोले ऐसे पुरुष के अर्दित रोगको उत्पन्न तीन वष हो गये हों अथवा त्रिवर्ष कहिये मुख नाक और नेत्र इनका स्राव हो ऐसे तथा कम्पयुक्त मनुष्य का अर्दित रोग साध्य नहीं होता है ॥४८॥

अब आक्षेपक से अर्दितान्तवेग कहते हैं

गतेवेगेभवेत्स्वास्थ्यंसर्वेष्वाक्षेपकादिषु ॥

आक्षेपकादि सब वायु रोगों में वेग शान्त होने से स्वास्थ्य कहिये वेदना न्यून हो और शिरस्थ भार उतारने से सुख की प्राप्ति होती है ।

हनुग्रह के लक्षण

जिह्वानिर्लेखनाच्छुष्कभक्षणादभिघाततः ॥ कुपितोहनुमूलस्थःस्रंसयित्वाऽनिलोहनुम् ॥ ४९ ॥ करोतिविवृतास्यत्वमथवासंवृतास्यताम् ॥ हनुग्रहःसतेनस्यात्कृच्छ्राच्चर्वणभाषणम् ॥ ५० ॥

जिह्वा के अतिघर्षण से, छणकादि शुष्क पदार्थ के भक्षण से, अथवा किसी तरह चोट लगने से, कपोलस्थ जो वायु सो दूषित हो, हनुमूल को नीचा कर मुख खुला ही रखदे अथवा मुख को बन्द

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

कर दे उसे हनुग्रह कहते हैं। तब वह मनुष्य खाना पीना बड़े कष्ट के साथ करता है ॥४६–५०॥

मन्यास्तम्भ के लक्षण

दिवास्वप्नासमस्थानविवृतोर्ध्वनिरोक्षणैः ॥
मन्यास्तंभंप्रकुरुतेसएवश्लेष्मणायुतः ॥५१॥

दिवाशयन से, असम स्थान में सोने से, ऊपर को विकृति पूर्वक देखने से, इन हेतुओं से कुपित हुई वायु सो कफयुक्त हो मन्यानाड़ी को स्तभित करदे उसे मन्यास्तम्भ कहते हैं ॥५१॥

जिह्वास्तम्भ के लक्षण

वाग्वाहिनीशिरासंस्थोजिह्वांस्तंभयतेऽनिलः ॥
जिह्वास्तंभःसतेनान्नपानवाक्येष्वनीशता ।५२।

वायु वाणी के बहने वाली नसों में प्राप्त हो, जिह्वा को स्तंभित करदे उसको जिह्वास्तम्भ कहते हैं। यह रोग अन्नपान ग्रहण करने तथा बोलने की शक्ति का नाश करता है ॥५२॥

शिराग्रह के लक्षण

रक्तमाश्रित्यपवनःकुर्यान्मूर्धधराःशिराः ॥
रूक्षाःसवेदनाःकृष्णाःसोऽसाध्यःस्याच्छिराग्रहः ।५३।

वायु रक्तगत होने से शिरस्थ नसों में व्यथा और कृष्णता करदे उसे शिराग्रह रोग कहते हैं ॥५३॥

गृधसी के लक्षण

स्फिक्पूर्वाकटिपृष्ठोरुजानुजंघापदंक्रमात् ॥
गृध्रसीस्तंभरुक्तोदैर्गृह्णातिस्पंदतेमुहुः ॥५४॥
वाताद्वातकफात्तन्द्रागोरवारोचकान्विता ।५५।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

वायु कमर के नीचे भाग को स्वम्भित करदे पश्चात् कमर, पीठ उरु, घोटू, जाँघ और पैर इनको स्मम्भित करदे अर्थात् ये रह जांय, व्यथा और तोड़ने की सी पीड़ा हो और बार बार कम्प हो, यह रोग कब्जी से होता है, और वात कफ से होय तो इसमें तन्द्रा और गुरुता, अन्नद्वेष ये अत्यन्त हो । इस प्रकार गृध्रसी रोग दो प्रकार का होना है ।५४—५५।।

विश्वाची के लक्षण

तलंप्रत्यगुलीनां याः कंडराबाहुपृष्ठतः ।।
बाह्वोःकर्मक्षयकरीविश्वाचीचेतिसोच्यते ।।५६।।

बाहु के अन्तिम भाग से लेकर हस्त के ऊपरी भाग तक हर एक अंगुली के नीचे जो मोटी नसें हैं उनको दूषित कर, कर से देना लेना, मुट्ठी मारना, हाथ पसारना, जो करके कर्म्महैं वे न होंय तो उसको विश्वाचो रोग कहते हैं ।।५६।।

कोष्टुशीर्ष के लक्षण

वातशोणितजःशोथोजानुमध्येमहारुजः ।।
ज्ञेयःक्रोष्टुकशीर्षस्तुस्थूलःक्रोष्टुकशीर्षवत् ।।५७।।

वातरक्त से दोनों जानुओं में और घुटनों की सन्धि में विशेष व्यथाकारक सूजन हो और गीदड़ के शिर समान स्थूल हों तो उस रोग को क्रोष्टु शीर्ष कहते हैं ।।५७।।

खंज और पांगुरे के लक्षण

वायुःकट्याश्रितःसक्थ्नःकंडरामाक्षिपेद्यदा ।।
खंजस्तदाभवेज्जंतुःपंगुःसक्थ्नोर्द्वयोर्वधात् ।।५८।।

कटि में स्थित जो वायु सो जाँघ की नसों को ग्रहण कर एक एक पग को स्तम्भित कर दे उसको खंज कहते हैं । और दोनों

जघाओं की नसों को पकड़कर दोनों पगों को स्तम्भित कर दे, उसे पंगु कहते हैं ॥५८॥

कलायखंज के लक्षण

प्रकामंवेपतेयस्तुखंजन्निवचगच्छति ॥
कलायखजंतंविद्यान्मुक्तसंधिप्रवन्धनम् ॥५९॥

जो मनुष्य चलते समय थर थर काँपे और खंज अर्थात् एक पद से ही ज्ञात न होय, इस रोग से सन्धि के बन्धन शिथिल होते हैं इसी से इसे कलायखंज कहते हैं ॥५९॥

वातकंटक के लक्षण

रुक्पादेविषमन्यस्तेश्रमाद्वाजायते यदा ।
वातेनगुल्फमाश्रित्यतमाहुर्वातकण्टकम् ॥ ६० ॥

ऊँची नीची ठौर में पाँव के पड़ने से अथवा श्रम के होने से कुपित वायु टकनोंमें प्राप्त हो पीड़ा करे तो इस रोग को वातकंटक कहते ॥ ६० ॥

पादहर्ष के लक्षण

पादयोःकुरुतेहर्षपित्तासृक्सहितोऽनिलः ॥
विशेषतश्चक्रमतःपादहर्षनमादिशेत् ॥ ६१ ॥

जिस पुरुष के पद सहर्ष झनझनाहट वेदनायुक्त हों और सोये से हो जावें उसको कफ वातसे उत्पन्न पादहर्ष जानना चाहिये ॥६१॥

अंसशोष और अपबाहुक के लक्षण

अंसदेशेस्थितोवायुःशोषयेदंसबन्धनम् ॥
शिराश्चाकुंच्यतत्रस्थोजनयेदपबाहुकम् ॥६२॥

कन्धे में स्थित वायु के कुपित होने से, बन्ध का सूखना होनेसे

अंसशोष और कन्धे की नसों के संकोच से अपबाहुक रोग होता है ॥ ६२॥

मूकादिक तीन रोगों के लक्षण

आवृत्तवायुःसकफोधमनीःशब्दवाहिनीः ।
नरान्करोत्यक्रियकान्मूकमिम्मिणगद्गदान्।६३।

कफयुक्त वायु शब्दवाहिनी नसों में प्राप्त हो मनुष्य के वाक्य को क्रियाहीन मूक और मिम्मिण करदे , गद्गद् करदे, मूक याने बोला नहीं जाय और मिम्मिण माने गिनगिनाकर नासिका से बोले और गद्गद् माने बोलते समय मध्य पदों को न बोले और मन्द बोले, इन रोगों के कारण तुल्य होकर रोगों के अनेक कारण होते हैं ॥ ६३ ॥

तूनी रोग के लक्षण

अधोयावेदनायातिवर्चोमूत्राशयोत्थिता ।
भिन्दन्तीवगुदोपस्थंसातूनीनामनामतः ॥६४॥

पक्वाशय और मूत्राशय से प्रगट वेदना सो नीचे जाकर प्राप्त हो और गुदा तथा उपस्थ अर्थात् स्त्री पुरुषों के गुप्त स्थान में भेद करें तो उसे तूनी रोग कहते हैं ॥ ६४ ॥

प्रतूनी के लक्षण

गुदोपस्थोत्थिताचैवप्रतिलोमंप्रधावति ।
वेगै पक्वाशयंयातिप्रतूनीचेहसोच्यते ॥६५॥

गुदा और उपस्थ से उठी पीड़ा उलटी ऊपर जाकर प्राप्त हो और तूनी के समान पीड़ा करे उसको प्रतूनी कहते हैं ॥६५॥

आध्मान रोग के लक्षण

साटोपमत्युग्ररुजमाध्मानमुदरंभृशम् ।

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

आध्मानमितिजानीयाद्घोरंव तनिरोधजम् ॥६६॥

गुड़गुड़ शब्दयुक्त व्यथा सहित उदर फूल जाय और कब्जी से भरकर चाम की थैली के तुल्य हो जाय तो इस घोर रोग को आध्मान कहते हैं, यह वातावरोध से होता है ॥ ६६ ॥

प्रत्याध्मान के लक्षण

विमुक्तपार्श्वहृदयंतदेवामाशयोत्थितम् ॥
प्रत्याध्मानंविजानीयात्कफव्याकुलितानिलम् ।६७।

और वही रोग आमाशय में उत्पन्न होत तो उसको प्रत्याध्मान कहते हैं । इसमें पाशु तथा हृदयमें तकलीफ नहीं होती है और वायु कफ से व्याकुलता होती है ॥ ६७ ॥

वाताष्ठीला के लक्षण

नाभेरधस्तात्संजात:संचारीयदिवाऽचल: ।
आष्ठीलावद्घनोग्रंथिरूर्ध्वमायतउन्नत: ॥ ६८ ॥
वाताष्ठीलांविजानीयाद्बहिर्मार्गविरोधिनीम् ।

नाभी के नीचे इधर उधर फिरने वालो अथवा अचल पत्थर तुल्य कठिन और ऊपर का भाग कुछ लम्बा होय और तिरछी कुछ ऊँची उभरी हुई वायु को रोकने वाली ऐसी जो गाँठ उसे वाताष्ठीला कहते हैं ॥ ६८ ॥

प्रत्यष्ठीला के लक्षण

एतामेवरुजोयुक्तांवातविण्मूत्ररोधिनीम् ॥६९॥
प्रत्यष्ठीलामितिवदेज्जठरेतिर्यगुत्थिताम् ॥

वाताष्ठीला जो गांठ सो विशेष वेदनायुक्त वात मूत्र मल के रोकने वाली और जो तिरछी हो उसे प्रत्यष्ठीला कहते हैं ॥६९॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

मूत्रावरोध के लक्षण

मारुतेविगुणेबस्तौमूत्रंसम्यक्प्रवर्त्तते ॥७०॥
विकाराविविधाश्चापिप्रतिलोमेभवंतिहि ॥

वायु मूत्राशय में अनुलोम गति से भ्रमण करे तो मूत्र अच्छी प्रकार उतरे और प्रतिलोम रीति से गमन करे तो अनेक तरह के पथरी मूत्र कृच्छ्रादि रोग उत्पन्न होते हैं ॥ ७० ॥

कम्पवायु के लक्षण

सर्वाङ्गकम्पःशिरसोवायुर्वेपथुसंज्ञकः ॥७१॥

सर्वाङ्ग तथा मस्तक को जो वायु कंपावै उसे कम्पवायु कहते हैं ॥ ७१ ॥

खल्ली के लक्षण

खल्लीतुपादजंघोरुकरमूलावमोटनी ॥

और जो वायु पाद, जंघा, उरु, कर, मल को कम्पायमान करे उसको खल्ली कहते हैं ॥

ऊर्ध्ववात के लक्षण

अधःप्रतिहतोवायुःश्लेष्मणामारुतेनच ॥७२॥
करोत्युद्गारबाहुल्यमूर्ध्ववातंप्रचक्षते ॥

कफ वात व्यथित नीचे की वायु डकार बहुत लावै उस वातको ऊर्ध्ववायु कहते हैं, परन्तु टोडरानन्द ने कुछ विलक्षण लिखाहै॥७२

यथा—

भुक्तेत्यभुक्तेसुप्तेवायस्योद्गारःप्रजायते ॥७३॥
सनतंघोपवांश्चातद्यूर्ध्ववातंतमादिशेत् ॥

भोजन के बाद वा पहिले अथवा शयन समय डकारों का वेग हो उसे ऊर्ध्ववात कहते हैं ॥७३॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

प्रलाप के लक्षण

स्वहेतुकुपिताद्वातादसंगद्धनिरर्थकम् ॥७४॥
वचनंयन्नरोब्रूतेसप्रलापःप्रकीर्त्तितः ॥

निज कारणों से दूषित वायु सो अर्थहीन वाणी बोले अर्थात् व्यर्थ बकवाद करे अथवा बड़बड़ शब्द करे उसको प्रलाप वायु कहते हैं ॥ ७४ ॥

रस ज्ञान के लक्षण

भुंजानस्य नरस्यान्नं मधुरप्रभृतीन्रसान् ॥७५॥
रसज्ञो यन्नजानातिरसाज्ञानंतदुच्यते ॥

जिस मनुष्य को स्वादिष्ट भोजन करने पर भी मधुर खट्टे रस का ज्ञान होय उसे रसाज्ञान रोग कहते हैं ॥ ७५ ॥

अनुक्त वातरोग संग्रहों का कथन करते हैं

स्थाननामानुरूपैश्चलिंगैःशेषान्विनिर्दिशेत् ॥७६॥
सर्वेंश्वेतेषुसंसर्गंपित्ताद्यैरुपलक्षयेत् ॥

स्थान और नाम के तुल्य लक्षणों से शेष वात व्याधि ज्ञान करनी । स्थानानुरूप कहिये यथा कुक्षि शूल नख भेद इत्यादिक । नामानुरूप कहिये यथा शूल के कथन से कील निखात् तुल्य वेदना जाननी । उसी तरह तोदभेदादिक करके भी पीड़ा अत्यन्त जाननी । और पित्त कफ रक्त इनके संसर्ग से द्विदोषज व्याधि जाननी ॥७६॥

साध्यासाध्य विचार

हनुस्तंभार्दिताक्षेपपक्षाघातापतानकाः ॥७७॥
कालेनमहतावातायत्नात्सिध्यंतिवानवा ॥
नवान्बलवतस्त्वेतान्साधयेन्निरुपद्रवात् ॥७८॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हनुस्तम्भ, अर्दित, आक्षेप, पक्षाघात, अपतानक ये वातव्याधि चिरकाल में बड़े यत्न एवं परिश्रम से साध्य होती है अथवा कभी साध्य नहीं होती है, परन्तु शक्तिशाली मनुष्य के ये वातव्याधि उत्पन्न हुई हो उपद्रव हीन हो तो चिकित्सा के योग्य है अन्यथा नहीं।। ७७-७८ ॥

वातव्याधि के उपद्रव

विसर्पदाहरुक्संगमूर्च्छारुच्यग्निमार्दवैः ॥
क्षीणमांसबलंवाताघ्नंतिपक्षवधादयः ॥७९॥

विसर्प रोग, दाह, शूल, मल मूत्र का रुकना, मूर्छा, अन्नद्वेष, मन्दाग्नि इन लक्षणों से युक्त और बलनाश, मनुष्यों के पक्षवधादि विकार प्राणघातक है ॥ ७९ ॥

असाध्य लक्षण

शूनंसुप्तत्वचंभग्नंकंपाध्माननिपीडितम् ॥
रुजार्तिमंतंचनरंवातव्याधिर्विनाशयेत् ॥८०॥

शोष वाला जिसकी त्वचा सो गई हो अर्थात् जिसके स्पर्श होने का ज्ञान न होय, जिसकी हड्डी टूट गई हो, कम्प और अफरा से व्यथित हो, शूल से भी पीड़ित हो तो ये वातव्याधि रोग प्राणहरता है ॥ ८० ॥

अब पाँच प्रकार की प्रकृतिस्थ वायु के लक्षण और कार्य कहते हैं

अव्याहतगतिर्यस्यस्थानस्थ.प्रकृतिस्थितः ।
वायुःस्यात्सोधिकंजीवेद्वीतरोगःसमाःशतम् ।८१।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

जिस मनुष्य की वायु अव्याहतगति और अपने आश्रय से रहने वाली और न वृद्ध न क्षीण हो वह पुरुष रोगहीन होकर १२० वर्ष संसार में जीवन को प्राप्त करता है ॥८१॥

इति श्री पण्डित चोखेलाल निर्मितायां कृष्णानन्दिनी भाषाटीकायां
माधवनिदाने वातव्याधि निदानम् समाप्तम्

अथ वातरक्तनिदानम्

प्रश्न—सुश्रुत में वातव्याधि अध्याय में वात रक्त का कथन किया है फिर माधवाचार्य ने अलग २ क्यों कहा ? समाधान—यह कहना यथार्थ है किन्तु क्रिया विशेष जानने के लिये माधव ने प्रथम कहा है और चरक ने भी वात व्याधि के पश्चात् वातरक्त का कथन किया है ।

लवणाम्लकटुक्षारस्निग्धोष्णाजीर्णभोजनैः ॥
क्लिन्नशुष्कांबुजानूपमांसपिण्याकमूलकैः ॥१॥
कुलित्थमाषनिष्पावशाकादिपललेक्षुभिः ॥
दध्यारनालसौवीरशुक्ततक्रसुरासवैः ॥ २ ॥
विरुद्धाध्यशनक्रोधदिवास्वप्नप्रजागरैः ॥
प्रायशःसुकुमाराणांमिथ्याहारविहारिणाम् ॥३॥
स्थूलानांसुखिनांचाथवातरक्तंप्रकुप्यति ॥

नमक, खट्टी वस्तु, कड़वी, खारी, स्निग्ध, उष्ण, अपक्व अन्न सेवन से, दुर्गन्धित और सूखे हुए जल निगामी वा जल के समीप रहने वाले पक्षियों वा जीवों के माँस से, मूली, कुलथी, उड़द, सेम

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

की फली, तिल, ईख, दधि, काँजी, सौवीर, मदिरा, सिरका आदि सत्तू, मठा दारु, आसव, बिरुद्ध भोजन, दिवाशयन, रात्रि जागरण इन हेतुओं से विशेषतः रूपवान मनुष्यों के और विरुद्ध भक्षण करने वाले जनों के और जो व्यक्ति स्थूल तन वाला हो और लटा हुआ हो ऐसे पुरुषों के वातरक्त का कोप होता है॥१—३॥

वातरक्त की सम्प्राप्ति

हस्त्यश्वोष्ट्रैर्गच्छतश्चाश्नतश्चविदाह्यन्नं सविदाहोशनस्य
॥४॥ कृत्स्नंरक्तंविदहत्याशुतच्चस्रस्तंदुष्टंपादयोश्चीयतेतु॥
तत्संपृक्तं वायुनादूषितेनतत्प्राबल्यादुच्यतेवातरक्तम् ॥५॥

गज, अश्व, उष्ट्र इनके ऊपर सवार होकर चलने से, दाहकारक अन्न भक्षण से दग्ध हुआ रक्त जनों के वृद्धि को प्राप्त होता है, उष्ण और किञ्चिदुष्ण अन्न सेवन से दुष्ट हुआ रक्त मनुष्यके शरीर में एकत्रित हो पदों में इकट्ठा होय और वह वात से दोषज होकर मिले, इस रोगमें वात बलवान होती है अतः इस रोग को वातरक्त कहते हैं ॥ ४–५ ॥

पूर्वरूप

स्वेदोऽत्यर्थंनवाकार्ष्ण्यंस्पर्शाज्ञत्वंक्षतेऽतिरुक् ॥
सन्धिशैथिल्यमालस्यं सदनंपिटिकोद्गमः ॥६॥
जानुजंघोरुकट्यंसहस्तपादांगसंधिषु ॥
निस्तोदःस्फुरणंभेदोगुरुत्वंसुप्तिरेवच ॥ ७ ॥
कंडूःसंधिषुरुग्भूत्वानश्यतिचासकृत् ॥
वैवर्ण्यंमंडलोत्पत्तिर्वातासृक्पूर्वलक्षणम् ॥८॥

पसीना बहुत निकले अथवा नहीं निकले, शरीर में कृष्णता

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

आ जाय, स्पर्श ज्ञान नष्ट हो जाय और कम चोट के लगने से दुख ज्यादा हो, सन्धि शिथिल हो जाय, आलकस आवे, उद्वेग हो, तन में छोटी २ फुन्सी उत्पन्न होंय, जानु,जांघ, उरु, कमर, कन्धा, कर, पाद, सन्धि और अवयवों में सूचिका के तुल्य व्यथा होवे, फड़कना, तोड़ने के समान व्यथा, गुरुता, बहरापन ये चिह्न होते हैं और सन्धियें खुजलावें और बारम्बार दर्द होकर नाश होवे, तन का वर्ण बदल जाय, रक्तके चकत्ते देह में हो जाँय ये लक्षण वातरक्त के पहिले होते हैं ॥ ६—८ ॥

वातरक्त में अन्य लक्षण होने से लक्षण कहते हैं

वाताधिकेऽधिकंतत्रशूलस्फुरणतोदनम् ।
शोथश्चरौक्ष्यंकृष्णत्वंश्यावतावृद्धिहान्यः ॥९॥
धमन्यंगुलिसंधीनांसंकोचोंऽगग्रहोऽतिरुक् ।
शीतद्वेषानुपशयौस्तंभवेपथुसुप्तयः ॥ १० ॥

अधिक वात होने से वातरक्त में दर्द, अङ्गों का स्फुरण, चोट के तुल्य वेदना ये लक्षण अधिक होते हैं। शोथ, रुक्षता, नीलापन अर्थात कालापन और वातरक्त के लक्षणों की प्रबलता होना और अल्पकाल में कम होना, धमनी और अंगुलियों की सन्धिमें सङ्कोच होना, तन का जकड़ा सा होना, वेदना बहुत होय, ठन्ड बुरी लगे, वायु सेवन से दुःख होना, स्तम्भ होय काँपना और शून्यता, यह लक्षण वाताधिक वातरक्त में होते हैं ॥९–१०॥

रक्ताधिक के लक्षण कहते हैं

रक्तेशोफोऽतिरुक्क्लेदस्ताम्रश्चिमचिमायते ।
स्निग्धरूक्षैःशमंनैतिकंडूक्लेदसमन्वितः ॥११॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

रक्ताधिक्य वातरक्त में शोथ वेदना बहुत हो और तांबे के रंग के तुल्य क्लेद बहे, उस शोथ में चिमचिम पीड़ा हो, चिकने और शुष्क पदार्थों से शान्ति नहीं होय, खुजलापन और जल निकलना ये लक्षण होते हैं ।। ११ ।।

पित्तज वातरक्त के लक्षण

पित्तेविदाहःसंमोहःस्वेदोमूर्छामदःसतृट् ।।
स्पर्शासहत्वंरुग्रागःशोफःपाकोभृशोष्णता ।।१२।।

बहुत दाह का होना, इन्द्रियों को मोह होना, स्वेद, मूर्च्छा, उन्मत्तता, तृषा, छूना बुरा लगे, वेदना, लाल वर्णयुक्त शोथ, छोटे छोटे पीतवर्ण के फोड़ा होवें, पीड़ाका बहुत होना ये लक्षण पैत्तिक वातरक्त में होते हैं ।।१२।।

कफज वातरक्त के लक्षण

कफेस्तैमित्यगुरुतासुप्तिस्निग्धत्वशीतताः ।।
कंडूर्मन्दः चरुग्द्वंद्वेसर्वलिङ्गं चसंकरात् ।। १३ ।।

स्तैमित्यता, गुरुता, शून्यता, स्निग्धता, ठण्डापन, खुजली और मन्द २ वेदना ये लक्षण कफज वातरक्त में होते हैं । दो दोषों से प्रगट वातरक्त में द्विदोषजोत्पन्न लक्षण और त्रिदोषज वातरक्तमें तीनों दोषों के लक्षण होते हैं । पदों में उत्पन्न हुआ वातरक्त करों में होता है उसे कथन करते हैं ।। १३ ।।

पादयोर्मूलमास्थायकदाचिद्धस्तयोरपि ।।
आखोर्विषमिवक्रुद्धंतद्देहमनुसर्पति ।। १४ ।।

पैर तले उत्पन्न हो वातरक्त करों में उत्पन्द होता है सो कहते हैं मूसक बिष सदृश सर्व शरीर में मन्द मन्द हो जाय, वह वामरक्त

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

चरक ने दो तरहका कहा है एक उत्तान, दूसरा गम्भीर, माँस और त्वचा मैं होने से उत्तान और गम्भीर अन्तर्गत होता है ॥१४॥

असाध्य लक्षण

आजानुस्फुटितंयच्चप्रभिन्नंप्रस्रुतंचयत् ।
उपद्रवेश्चयज्जुष्टंप्राणमांसक्षयादिभिः ॥१५॥
वातरक्तमसाध्यंस्याद्याप्यंसंवत्सरोत्थितम् ॥

जांघ के अधोभाग में पहुंचा हुआ वातरक्त असाध्य होता है जिसकी चमड़ी फट गई हो, चिर गई हो और जो बहने तुल्य हो और मांस क्षयादि उपद्रवों युक्त हो आदि शब्द से (अरुचि श्वास) इत्यादि जो कहेंगे उन लक्षणों युक्त वातरक्त असाध्य होता है। बातरक्त उत्पन्न भये एक साल बीत गई हो वह याप्य है और वर्ष से पहले का साध्य होता है परन्तु उसमें स्फुटादि लक्षण न होय तो साध्य है अन्यथा नहीं ॥१५

बातरक्त के उपद्रव

अस्वपनारोचकश्वासमांसकोथशिरोग्रहाः ॥१६॥
संमूर्च्छाऽमदरुक्तृष्णाज्वरमोहप्रवेकाः ॥
हिक्कापांगुल्यवीसर्पपाकतोदभ्रमक्लमाः ॥१७॥
अंगुलीबक्रतास्फोटदाहमर्मग्रहार्बुदाः ॥
एतैरुपद्रवैर्वर्ज्यंमोहेनैकेनवापियत् ॥१८॥

नींद का न आना, अन्न द्वेष श्वास, माँस का सड़ जाना, शिर जकड़ जाना, बेहोशी, वेदना का उत्पन्न होना, प्यास, बुखार, मोह, कम्प होना, हिक्का, पंगुता, विसर्प रोग पक जाना, नोचने के तुल्य वेदना होना, थकावट, अंगुली का टेढ़ा होना, फोड़ा, दाह,

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

मर्म स्थानों में वेदना, गांठ का होना, इन लक्षणों से युक्त वातरक्त वाला मनुष्य केवल मोह होने पर असाध्य होता है ॥१६॥–१८॥

साध्यासाध्य विचार

अकृत्स्नोपद्रवंयाप्यंसाध्यंस्यान्निरुपद्रवम् ।।
एकदोषानुगंसाध्यंनवंयाप्यंद्विदोषजम् ।।
त्रिदोषजमसाध्यंस्याद्यस्यचस्युरुपद्रवाः ॥१६॥

जिस वातरक्त में सर्व लक्षण मिलते हों वह याप्य है। और उपद्रवहीन होने पर साध्य होता है और एक दोषज भी साध्य है और त्रिदोषजनित याप्य और उपद्रवयुक्त होने से त्रिदोषज वातरक्त असाध्य होता है। यह श्लोक माधवाचार्य का नहीं है ॥१६॥

इति श्री पण्डित चोखेलाल निर्मितायां कृष्णानन्दिनी भाषाटीकायां
माधवनिदाने वातव्याधि निदानम् समाप्तम्

ऊरुस्तंभनिदानम्।

शीतोष्णद्रवसंशुष्कगुरुस्निग्धैर्निषेवितैः ।
जीर्णाजीर्णेतथाऽभ्यास स क्षोभस्वप्न जागरैः ।१।
सश्लेष्ममेदःपवनः साममत्यर्थसंचितम् ।
अभिभूयेतरंदोषमूरूचेत्प्रतिपद्यते । २ ।
सक्थ्यस्थीनिप्रपूर्यातः श्लेष्मणास्तिमितेनच ।
तदास्तभ्नातितेनोरूस्तब्धौशीतावचेतनौ ।३।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

परकीयाविवगुरूस्यातामतिभृशव्यथौ ॥
ध्यानाङ्गमर्दस्तैमित्यतंद्राच्छर्द्यरुचिज्वरैः ॥ ४ ॥
संयुतौपादसदनकृच्छ्रोद्धरणसुप्तिभिः ॥
तमूरुस्तंभमित्याहुराढ्यवातमथापरे ॥ ५ ॥

ठण्डा, उष्ण, द्रव सूखे, गुरु, स्निग्ध ऐसे भोजन से जीर्ण अजीर्ण उसी प्रकार व्यायाम करने से चित्त शोक से, दिवाशयन से, रात्रि में जागने से कफ मेद मिश्रित हो, आम तथा वात संचित पित्त को ढककर जंघाओं में आकर व्याप्त हो जाय तब जाँघों को अस्थियों को कफ से पूर्ण कर स्तम्भित कर देता है तब वे ठण्डी और शून्यता को प्राप्त हो जाती है तब ये प्रतीत होता है कि निज है या नहीं और गुरुता को प्राप्त हो जाती है अत्यन्त वेदना होती है. शोक, अवयवों के टूटने के तुल्य वेदना जड़ता, तन्द्रा, उल्टी अन्नद्वेष, बुखार, पाँवों में तकलीफ, बड़ी कठिनता से पैर उठे और शून्य पड़ जाय ये लक्षण उरुस्तम्भ के हैं । कतिपय आचार्यों ने इसका नाम आढ्य वात कहा है ॥ १—५ ॥

उरुस्तम्भ के पूर्वरूप

प्राग्रूपंतस्यनिद्राऽतिध्यानंस्तिमितताज्वरः ॥
लोमहर्षोऽरुचिश्छर्दिर्जंघोर्वोःसदनंतथा ॥ ६ ॥

निद्रा अधिक आवै, चिन्ता ज्यादा होवै, जड़ता, बुखार, रोमाँच होवै, अन्नद्वेष हो, उल्टी, जाँघों और उरुओं में वेदना होना, ये उरुस्तम्भ रोग होने के पहिले लक्षण होते हैं ॥ ६ ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऊरुस्तम्भ रोग के लक्षण

वातशंकिभिरज्ञानात्तस्यस्यात्स्नेहनात्पुनः ॥
पादयोःसदनंसुप्तिःकृच्छ्रादुद्धरणंतथा ॥ ७ ॥
जंघोरुग्लानिरत्यर्थंशश्वच्चादाहवेदना ।
पादंचव्यथतेऽत्यर्थंशीतस्पर्शंनवेत्तिच ॥ ८ ॥
संस्थानेपीडनेगत्यांचालनेचाप्यनीश्वरः ।
अन्यस्येवहिसंभग्नावूरूपादौचमन्यते ॥ ९ ॥

पैरों में तकलीफ होना और शून्य पड़ जाना, चलने में कमजोरी देखकर वातरोग का भ्रम होना । भ्रम होने की वजहसे तैलादि स्निग्ध चिकित्सा करने से रोग में वृद्धि होना, जांघ और उरुओं में अत्यन्त वेदना हो, किञ्चित दाह और पीड़ा निरन्तर रहे, पैरों में पीड़ा होना, शीत पदार्थ का ज्ञान नष्ट हो जाय, पैरों के हिलाने चलाने में अशक्ति और ऊरु ये फटे से ज्ञात हों वा अन्य पुरुष के हैं ये ज्ञात होवे तो ये लक्षण उरुस्तम्भ में होते हैं । व्याधि के स्वभाव से त्रिदोषजन्य उरुस्तम्भ रोग एक ही तरह का है, वातादि भेदों से बहुत प्रकार का नहीं है ॥ ६—९ ॥

उरुस्तम्भ रोग के असाध्य लक्षण

यदादाहार्त्तितोदार्तोवेपनःपुरुषोभवेत् ।
ऊरुस्तंभस्तदाहन्यात्साधयेदन्यथानवम् ॥ १० ॥

जिस समय मनुष्य फड़क, दर्द और तोद इनसे व्यथित होकर कम्पायमान हो उस समय यह रोग उस प्राणीका नाश कर देता है और ये लक्षण न हो नवीन रोग हो तो साध्य होता है ॥ १० ॥

❀ इति उरुस्तम्भनिदान ❀

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

आमवातनिदानम्

विरुद्धाहारचेष्टस्यमन्दाग्नेर्निश्चलस्यच। स्निग्धंभुक्तवतोह्यन्नंव्यायामंकुर्वतस्तथा ।१। वायुनाप्रेरितोह्यामः श्लेष्मस्थानंप्रधावति । तेनात्यर्थंविदग्धोऽसौधमनीः प्रतिपद्यते ।२। वातपित्तकफैर्भयोदूषितःसोन्नजोरसः । स्रोतांस्यभिस्पंदयतिनानावर्णोतिपिच्छिलः ।३। युगपत्कुपितावन्तस्त्रिकसंधिप्रवेशको । स्तब्धंचकुरुतोगात्रमामवातः सउच्यते ४।

मिथ्या आहार विहार करने से जिसके मन्दाग्नि हो अथवा जो व्यायाम नहीं करता हो ऐसे पुरुष का आम रसवायु से प्रेरित हो कफ की जगह (आमाशय, हृदय, मस्तक, कण्ठ और सन्धि) में चला जाय और उस स्थान की वायु से दुष्ट हो सिराओं में प्राप्त हो जाय पुनः। वात पित्त कफ से दुष्ट हो स्रोतों में चिपक जाने से वह अत्यन्त गाढ़ा हो जाय है और त्रिदोषों से दुष्ट हो जाने के निमित्त अनेक वर्ण का हो जाता है। वह जल्दी ही तन को कमजोर और हृदय में गुरुता कर देता है। यह अत्यन्त घोर होता है, अनेक रोगों का हेतु है। वात और अपक्व रस एक साथ दूषित हो त्रिकसन्धियों में प्राप्त होते हैं एवं जिस अवयव में प्राप्त होते हैं उसे सम्मिलित कर देते हैं। अतः इस रोग को आमवात कहते हैं ॥१-४॥

आमवात के सामान्य लक्षण

अङ्गमर्दोऽरुचिस्तृष्णाह्यालस्यंगौरवंज्वरः ।
आपकःशून्यतांगानामामवातःसउच्यते ।५।

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

शरीर में वेदना, अन्न में इच्छा न रहे, प्यास लगे, आलस्य आवे, शरीर भारी हो जाय, बुखार, अन्न हजम नहीं होय, देह शून्य हो जाय तो आमवात रोग जानना चाहिए ॥ ५ ॥

अति वृद्धि को प्राप्त हुए आमवात के लक्षण

सकष्टःसर्वरोगाणांयदाप्रकुपितोभवेत् । हस्तपादशिरो-
गुल्फत्रिकजानूरुसंधिषु ॥ ६ ॥ करोतिसरुजंशोथंयत्र-
दोषैःप्रपद्यते । सदेशोरुज्यतेऽत्यर्थंव्याविद्धइववृश्चिकैः॥७
जनयेत्सोऽग्निदौर्बल्यंप्रसेकारुचिगौरवम् । उत्साहहानिवै-
रस्यंदाहंचबहुमूत्रताम् ॥८॥ कुक्षौकठिनतांशूलं तथानि
द्राविहर्ययम तृट्छर्दिभ्रममूर्च्छाश्चहृद्ग्रहंविड्विबंधताम्६
जाड्यांत्रकूजमानाहंकष्टांश्चान्यानुपद्रवान् ॥१०॥

अत्यन्त वृद्धि को प्राप्त हुआ आमवात रोग कष्टकारकहै अर्थात् यह रोग सब रोगों से ज्यादा वेदनाकारक है । कर, पैर, शिर, जानु त्रिकस्थान, घोटू, जंघा इनकी जगह में वेदना सहित सूजन उत्पन्न करता है और जिस जिस स्थान पर आम जाता है उसी जगह पर बिच्छू के डङ्क सदृश व्यथा करता है । यह व्यक्ति मन्दाग्नि मुँह से जल का गिरना अन्न द्वेष, तन में भारीपन, उत्साह नष्ट, मुख स्वादहीन, फड़कन, मूत्र का अधिक उतरना, कोख में कड़ापन, दर्द दिवस में नींद आवे, रात्रि को जागरण करना, प्यास का लगना, उल्टी, भ्रम, मूर्छा, हृदय में दुख, मल का रुकना, जड़ता, आंतों का गुञ्जार करना, पेट का फूलना ये लक्षण करती है और विशेषकर इस व्याधि में कलायखंज के सब उपद्रव होते हैं ॥ ६-२२ ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

अन्य लक्षण कहते हैं

पित्तात्सदाहरागंचसशूलंपवनानुगम् ।
स्तैमित्यंगुरुकंडूचकफदुष्टंतमादिशेत् ॥ ११ ॥

पित्त से जो आमवात होता है उसमें दाह और अरुणवर्ण होता है, वायु के आमवात रोग में दर्द होता है और कफ से उत्पन्न इस रोग में आर्द्रता,गीलापन तथा गुरुता और खुजली चलती है ।११।

साध्यासाध्य लक्षण

एकदोषानुगःसाध्योद्विदोषोयाप्यउच्यते ।
सर्वदेहेचरःशोथःसकृच्छ्रःसान्निपातिकः ॥१२॥

एक दोष से प्रगट आमवात रोग साध्य होता है और दो दोष से उत्पन्न यह रोग याप्य तथा सर्व शरीर में विचरण करने वाले शोथ और तीनों दोषोंसे पैदा हुआ यह रोग कष्टसाध्य होता है ।१२।

॥ आमवात निदानं समाप्तम् ॥

शूलनिदानम्

दोषैःपृथक्समस्तामद्वन्द्वैःशूलोष्टधाभवेत् ।
सर्वेष्वेतेषुशूलेषुप्रायेणपवनःप्रभुः ॥ १ ॥

वायु का, पित्त का, कफ का और सन्निपातका, आम का और तीन भांति का द्वन्द्वज । इस तरह से शूल रोग आठ तरह का होता है । इनमें वादी से प्रगट शूलरोग बलवान होता है । ज्वर के तुल्य शूल रोग की पैदायश हारीत में कथन की गई है । जो इस तरह

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

कामदेवका नाश करने के लिये शंकर ने सकोप त्रिशूल फेंका उस त्रिशूल को अपने पास आता हुआ देखकर भय मान विष्णु भगवान के तन में प्रवेश कराया, तब विष्णु की हुंकार से यह त्रिशूल मूर्छित हो पृथ्वी में पतित हुआ। तब शूल नाम से विख्यात हुआ। तभी से यह शूल मनुष्यों को व्यथा देने लगा। इस तरह से इस शूलकी उत्पत्ति है। शंकर के त्रिशूल से पैदा अथवा शूल के समान पीड़ा करता है इसी से इसे शूल कहते हैं ॥१॥

वातिक शूल के लक्षण और सम्प्राप्ति

**व्यायामयानादतिमैथुनाच्चप्रजागराच्छीतजलातिपानात् ।
कलायमुद्गाढकिकोरदूषादत्यर्थरूक्षाध्यशनाभिघातात् २
कषायतिक्तादिविरूढजान्नविरुद्धवल्लूरकशुष्कशाकात् ॥
विट्शुक्रमूत्रानिलवेगरोधाच्छोकोपवासादतिहास्यभाषात् ३
वायुःप्रवृद्धोजनयेद्धिशूलंहृत्पार्श्वपृष्ठत्रिकबस्तिदेशे ॥ जीर्णे
प्रदोषेचघनागमेचशीतेचकोपंसमुपैतिगाढम् ॥४॥ मुहुर्मुहु-
श्चोपशमप्रकोपौविण्मूत्रसंस्तंभनतोदभेदैः ॥ सस्वेदनभ्यं-
जनमर्दनाद्यैःस्निग्धोष्णभोज्यैश्चशमंप्रयाति ॥५॥**

व्यायाम करने, अत्यन्त मार्ग गमन से, स्त्री प्रसङ्ग से और ज्यादा जागने से अति ठण्डा जल पीने से, गांगनी, मूँग अरहर, कोदों, अति रूखे अन्न से, विरुद्ध भोजन से, लकड़ी की चोट से, कसैली कटु, भीगा अन्न अंकुर वाला, विरुद्ध भक्ष, क्षीर, मीन आदि सूखा मांस वा शाक, कचरिया आदि इनके भक्षण से, विष्ठा पेशाब, वीर्य, अपान वायु इनके अवरोध से चिन्ता से, व्रत करने से, अति हास्य से, बहु भाषण से कुपित हुआ वायु सो वृद्धि को

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

पहुँच कर हृदय, पाशु, कमर और मूत्र स्थान में वेदना करे और वह वेदना भोजन के पचने के बाद प्रकोप समय में, वर्षा ऋतु में, शरद काल में दर्द हो तकलीफ दे और वेगर कोर होय, विष्ठा और मूत्र रुक जाय, व्यथा और भेद ये हों तो इसे वातसूल जानना चाहिए और स्वेदन तथा मर्दन और स्निग्ध तथा उष्ण पदार्थ से दर्द शान्त होता है ॥२–५॥

पैत्तिक सूल के कारण और लक्षण

क्षारातितीक्ष्णोष्णविदाहितैलनिष्पावपिण्याककुलत्थयूपै॥कट्वम्लसौवीरसुराविकारैःक्रोधानलायासरविप्रतापैः॥६॥ ग्राम्यातियोगादशनैविदग्धैःपित्तंप्रकुप्याशुकरोति शूलम्॥ तृण्मोहदाहार्तिकरंहिनाभ्यांसंस्वेदमूर्छाभ्रमशोषयुक्तम्॥७॥ मध्यंदिनेकुप्यतिचार्धरात्रेविदाहकालेजलदात्ययेच॥ शीतेचशीतैःसमुपैतिशान्तिंसुस्वादुशीतैरपिभोजनैश्च॥८॥

खारी वस्तु और तीक्ष्ण एवं उष्ण दाह कारक, बांस और करील आदि, तेल, शिम्बी खल, कुलथी, चूप, कटु, अम्ल, सौवीर (मद्य विशेष सुराविकार कांजी इत्यादि) कोप से, वह्नि के समीप रहने से, व्यायाम से, सूर्य की ताप में डोलने से, स्त्री संग अधिक करने से, दाह कारक अन्न सेवन से पित्त दुष्ट हो कर नाभि स्थान में पैदा करता है। वह दर्द प्यास, मोह, दाह, व्यथा इनको उत्पन्न करता है और स्वेद, मूर्छा, भ्रम, शोष इनको करता है, दुपहर के वक्त आधी रात में, अन्न के विदाह समय में, शरद काल में, दर्द अधिक होता है। शीत काल में शीतल पदार्थ से और मीठे अन्न से ये दर्द शान्त होता है॥६–८॥

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

श्लेष्म सूल के लक्षण और सम्प्राप्ति

आनूपवारिज किलाटपयोविकारैर्मांसेक्षुपिष्टकृशरातिल-
शुष्कलीभिः अ.यैर्बलासजनकैरपिहेतुभिश्चश्लेष्माप्रकोप
मुपगम्यकरातिशूलम्। ३। हृल्लासकासदनाऽरुचिसं-प्रसेकै
रामाशयेस्तिमितकोष्ठशिरोगुरुत्वैः॥ भुक्तेसदैवहिरुजं कुरु
तेऽतिमात्रंसूर्योदयेऽथशिशिरेकुसुमागमेच॥१०॥

जल के पास वास करने वाले पक्षियों के मांस से मछली आदि के मांस से दधि घी लोनी आदि दूध के विकार से गन्ने के रस से पिसे अन्न से खिचड़ी तिल पूड़ी कचौड़ी आदि कफ कारक पदार्थ भक्षण से कफ दूषित हो आमाशय में जा शूल को उत्पन्न करता है उसमें सूखी वमन कास ग्लानि अरुचि मुँह से लार का गिरना बद्धकोष्ठता, शिर में भारापन होना ये लक्षण होते हैं। भोजन के वक्त वेदना ज्यादा हो सूर्योदय के काल शिशिर ऋतु और बसंत काल में सूल अधिक वेदना देता है।९-१०।

आम शूल के लक्ष।

आटोपहृल्लासवमीगुरुत्वस्तैमित्यमानाहकफप्रसेकैः॥
कफस्यलिङ्गे-नसमानलिङ्गमामोद्भवंशूलमुदाहरन्ति।११॥

पेट कर गूँजना वमन का आना ओकारी आना देह में गुरुता स्तभित्या पेट का फूलना मुख से कफ का स्राव होना इन लक्षणों से तथा कफशूल के लक्षणों युक्त इस शूल को आम शूल कहते हैं॥११॥

द्वंद्वज शूल के लक्षण

बस्तौहृत्कंठपार्श्वेषुसशूलःकफवातिकः ॥
कुक्षौहृन्नाभिपार्श्वेषुसशूलःकफपैत्तिकः॥१२॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

दाहज्वरकरोघोरोविज्ञेयोवातपैत्तिकः ।।
एकदोषोत्थितःसाध्यः कृच्छ्रासाध्योद्विदोषजः ।१३
सर्वदोषोत्थितोघोरस्त्वसाध्योभूर्युपद्रवः ।।

मत्र स्थान हृदय गला और पाशु इनमें दर्द होय तो उसे बात श्लेष्मज जानना । कोखमें हृदय में नाभि में और पाशुओं में जो शूल होय तो उसे कफ पित्तज कहते हैं । दाह बुखार करने वाला जो घोर दर्द होय तो वह वात पित्त का होता है, एक दोषज शूल साध्य होता है दो दोषज कृच्छ् साध्य वा त्रिदोषज और भयंकर शूल रोग मय उपद्रों के असाध्य होता है ।। १२-१३ ।।

* ग्रन्थान्तर कथित शूल के स्थान *

“वातात्मकंबस्तिगतंवदंतिपित्तात्मकं चापिवदन्तिनाभ्याम् ।। हृत्पार्श्वकुक्षौकफ सन्निपातात् ।।१।।

वाताधिक शूल वास्ति में ज्यादा पीड़ा करता है और पित्तात्मक शूलरोग नाभि स्थान को पीड़ित करता है हृदय पाशु कुची इन स्थानों में कफात्मक शूल व्यथा करता है और त्रिदोषसे उत्पन्न शूल रोग सर्व शरीर को पीड़ित करता है ।।१।।

*शूल के उपद्रव *

वेदनाचतृषामूर्च्छाआनाहोगौरवारुची ।
कासश्वसौचहिक्काचशूलस्योपद्रवाः स्मृताः।२।

वेदना प्यास मूर्च्छा आना गुरुता अरुचि और खांसी हिचकी ये शूल के उपद्रव हैं ।।२।।

* परिणाम शूल का निदान *

स्ववैर्निदानैः प्रकुपितोवायुःसन्निहितस्तथा ।। कफपित्ते-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

समावृत्यशूलकारीभवेद्बली । १४ । भुक्तेजीर्यतियच्छूलं-तदेवपरिणामजम्॥तस्यलक्षणमप्येतत्समसेनाभिधीयते १५

निज रुक्ष हेतुओं से वायु दूषित हो, कफ पित्त के पास जाकर उसे ढककर प्रबल हो, दर्द को प्रगट करें, भोजन पचने के समय जो शूल हो तो उसे परिणाम शूल कहते हैं उसके लक्षण ये हैं ॥ १४—१५ ॥

वातजपरिणाम शूल के लक्षण

आध्मानाटोपविण्मूत्रनिबंधारतिवेपनैः ।
स्निग्धोष्णोपशमप्रायंवातिकंतद्वदेद्भिषक् ॥१६॥

उदर में अफरा होना तथा गुड़गुड़ाहट होना, मल तथा पेशाब का रुकना, चित्त में उद्वेग और काँपना, ये लक्षण वातिक परिणाम शूल में होते हैं और स्निग्ध उष्ण पदार्थ से शान्ति को प्राप्त होता है ॥ १६ ॥

पित्तज परिणाम शूल के लक्षण

तृष्णादाहारतिस्वेदंकट्वम्ललवणोत्तरम् ।
शूलंशीतशमप्रायंपैत्तिकंलक्षयेद्बुधः ॥१७॥

तृषा, दाह, मन का अस्थिर होना, स्वेद का आना ये लक्षण होते हैं और तीक्ष्ण अम्ल नमक के पदार्थ खाने से ये शूल बढ़ता है और शीतल पदार्थ से ये पैत्तिक परिणाम शूल शान्त होता है ।१७

श्लेष्मज परिणाम शूल के लक्षण

छर्दिहृल्लाससंमोहस्वल्परुग्दीर्घसंततिः ।
कटुतिक्तोपशांतौचतच्चज्ञेयंकफात्मकम् ॥१८॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

उल्टी, अफरा और संमोह ये लक्षण जिसमें अत्यन्त होंय, व्यथा अल्प होय, शूल बहुत काल तक रहे, कटु और तीक्ष्ण वस्तु से शान्त होय तो उसे श्लेष्मज परिणाम शूल कहते हैं ॥१८॥

द्विदोषज और त्रिदोषज शूल के लक्षण

संसृष्टलक्षणंयच्चद्विदोषंपरिकल्पयेत् ।
त्रिदोषजमसाध्यंतुक्षीणमांसबलानलम् ॥१९॥

जिसमें द्विदोषज लक्षण मिलते हों तो उसे द्विदोषज शूल तथा तीनों दोषों के लक्षण मिलने से त्रिदोषज शूल कहते हैं । माँसशक्ति और अग्नि क्षीण होने पर शूल रोग असाध्य होता है ॥१९॥

अन्न के दोष से उत्पन्न शूल के लक्षण

जीर्णेजीर्यत्यजीर्णेवायच्छूलमुपजायते ।
पथ्यापथ्यप्रयोगेणभोजनाभोजनेनच ॥
नशमंयातिनियमात्सोऽन्नद्रवउदाहृतः ॥२०॥

अन्न का पाचन हो गया अथवा पच रहा हो वा अजीर्णता को प्राप्त हो और सर्वदा जो शूल पैदा हो वह पथ्यापथ्य के योगसे अथवा भोजन करने से किंवा अभोजन से नियमयुक्त शान्त न होय उसको अन्नज शूल कहते हैं, परन्तु यह त्रिदोष विकृति से एक ही तरह का है इसलिये ये असाध्य नहीं है क्योंकि इसको चिकित्सा का कथन किया है ॥ २० ॥

इति श्री पं० चोखेलाल कृतायां कृष्णानंदिनी भाषाटीकायां माधवनिदाने
शूलपरिणाम शूलनिदानं समाप्तम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अथ उदावर्तनिदानम्

उदावर्त के कारण कहते हैं

वातविण्मूत्रजृम्भाश्रुक्षवोद्गारवमींद्रियाः ।
क्षुत्तृष्णोच्छ्वासनिद्राणांधृत्योदावर्त्तसंभवः ॥१॥

अपानवायु, मल, पेशाव, जँभाई, आँसू, छींक. डकार, कै, वीर्य, क्षुधा, प्यास, श्वास निद्रा इन तेरह वेगों के रोकने से उदावर्त रोग प्रगट होता है । तेरह के नियमके करने से यह हेतु है कि कोप, लोभ, मन इत्यादि वेग धारण से रोग प्रकट नहीं होता, कारण कि इनके रोकने से स्वस्थता मिलती है । सब उदावर्तों में वायु प्रधान है । उदावर्त की निरुक्ति इस तरह है—(उद्भूतेन वेग विधारणेन आवृत्तस्य वायोरावर्तनमुदावर्त्तः) ॥१॥

त्रयोदश उदावर्तों के लक्षण कहते हैं

वातमूत्रपुरीषाणांसंगोध्मानंक्लमोरुजा ।
जठरेवातजाश्चान्येरोगाःस्युर्वातनिग्रहात् ॥२॥

अपानवायु के रोकने से अधोवायु, मल, पेशाब ये रुक जाँय अफरा हो जाय, थकावट उदर में कब्जी से वेदना तथा वातज शूलादि होंय ॥ २ ॥

मल से उत्पन्न उदावर्त के लक्षण

आटोपशूलौपरिकर्त्तिकाचसङ्गःपुरीषस्यतथोर्ध्ववातः ।
पुरीषमास्यादथवानिरेतिपुरीषवेगेऽभिहतेनरस्य ॥ ३ ॥

मल के वेग को रोकने से उदर में गुड़गुड़ शब्द होय, द होय और गुदा में कतरने की सी वेदना होय, दस्त होय नहीं डका

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

आवे अथवा मल का मुख द्वारा निकलना ये लक्षण होते हैं ।।३।।

मूत्रावरोध से प्रगट उदावर्त के लक्षण

बस्तिमेहनयोःशूलंमूत्रकृच्छ्रंशिरोरुजा ।
विनामोवंक्षणानाहःस्याल्लिंगमूत्रनिग्रहे ।।४।।

पेशाब को रोकने से मूत्राशय और गुप्तेन्द्रिय में वेदना होय, पेशाब का सकष्ट उतारना शिर की वेदना से शरीर झुक जाय, अफरा होना ये लक्षण मूत्र के वेग रोकने से होते हैं ।। ४ ।।

जृम्भावरोध से प्रगट उदावर्त के लक्षण

मन्यागलस्तंभशिरोविकाराजृम्भोपरोधात्पवनात्मकाःस्युः।
तत्राक्षिनासावदनामयाश्चभवंतितीव्रा.सहकर्णरोगैः ।।५।।

आती हुई जँभाई के रोकने से मन्या (गले के पृष्ठभाग की नस) और गलेका जकड़ना, मस्तक में व्यथा, नेत्र, नाक, मुख और कानों में वायु से प्रगट रोग हों उसे जृम्भावरोध उदावर्त कहते हैं ।।५।।

अश्रुनिरोधज उदावर्त के लक्षण

आनन्दजंवाप्यथशोकजंवानेत्रोदकंप्राप्तममुंचतोहि ।
शिरोगुरुत्वंनयनामयाश्चभवंतितीव्राः सहपीनसेन ।।६।।

हर्ष से अथवा चिन्ता से उत्पन्न आँसुओं को जो पुरुष रोकता है उसके शिर में गुरुता, नेत्ररोग प्रतिश्याय ये लक्षण होते हैं ।।६।।

हक्कावरोधज उदावर्त के लक्षण

मन्यास्तंभशिरःशूलमर्दितार्धावभेदकौ ।
इन्द्रियाणांचदौर्बल्यंक्षवथोःस्याद्विधारणात् ७।

छींक के रोकने से प्रगट उदावर्त में मन्यास्तम्भ (गले की

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

पिछली नस का जकड़ जाना) मस्तक में वेदना आधा मुख वक्र गति को प्राप्त हो जाय अर्धाङ्ग वायु और सर्वेन्द्रिय दुर्बल हो जाती हैं ॥ ७ ॥

उद्गारावरोधज उदावर्त के लक्षण

कण्ठास्यपूर्णत्वमतीवतोदःकूजश्चवायोरथवाऽप्रवृत्तिः ।
उद्गारवेगेऽभिहतेभवंतिघोराविकाराःपवनप्रसूताः॥८॥

डकार को रोकने से कण्ठ और मुख भरा हुआ मालूम पड़ता है अत्यन्त नोचने के समान पीड़ा होती है असमझ युक्त भाषण हृदय और आमाशय में तीव्र वेदना होती है ॥ ८ ॥

छर्दिनिरोधज उदावर्त के लक्षण

कंडूकोठारुचिव्यङ्गशोफपाँड्वामतज्वराः ।
कुष्ठहृल्लासवीसर्पाश्छर्दिनिग्रहजागदाः ॥९॥

उल्टी का वेग रोकने से देह का खुजलाना तथा देह में चकत्ते हो जाते हैं, अन्न द्वेष, मुख पर झांई सी पड़े, शोथ, पाँडुता बुखार कुष्ठ, खाली वमन, विसर्प रोग ये लक्षण होते हैं ॥९॥

शुक्रज उदावर्त के लक्षण

मूत्राशयेवैगुदमुष्कयोश्चशोथोरुजामूत्रविनिग्रहश्च ।
शुक्राश्मरीतत्स्रवणंभवेच्चतेतेविकाराभिहतेचशुक्रे ॥१०॥

वीर्य का वेग रोकने से प्रगट उदावर्त में मूत्राशय, गुदा और अण्डकोश इनमें सूजन और पीड़ा होय, पेशाब बड़े वेग से उतरे, शुक्राश्मरी का होना शुक्र का सुख होना ये लक्षण होते हैं ॥१०॥

क्षुधा तृषावरोध उदावर्त

तन्द्रांगमर्दावरुचिःश्रमश्चक्षुधाभिघातात्कृशताचदृष्टेः॥

कंठास्यशोषःश्रवणावरोधस्तृषाभिघाताद्धृदयेऽव्यथाच ११

भूख के रोकने से तन्द्रा, अङ्गों में आलस्य, अरुचि, थकावट, दृष्टि का मन्द होना ये रोग होते हैं और चकार से कृशता, कमजोरी ये लक्षण होते हैं और प्यास के रोकने से कण्ठ, मुख का सूखना, कानों से कम सुनना और हृदय में वेदना होना, ये लक्षण होते हैं ॥ ११ ॥

निश्वास और निद्रावरोधज उदावर्त

श्रांतस्यनिःश्वासविनिग्रहेणहृद्रोगमोहावथवापिगुल्मः ।
जृंभांगमर्दाक्षिशिरोतिजाड्यंनिद्राभिघातादथवापितंद्रा

जो पुरुष थकित हो गया हो वह श्वास को रोकै तो उस मनुष्य के हृदय रोग, मोह और वायगोला इतने रोग होते हैं और आती हुई नींद को रोकने से जँभाई, अङ्गों का टूटना, नेत्र और शिर में भारीपन तथा तन्द्रा आदि रोग होते हैं। इस तरह वेग के रोकनेसे उत्पन्न रोगों का कथन कर रुक्षादि हेतुओं से कुपित हुई वायु के प्रगट होने वाले उदावर्त रोगों का कथन करते हैं ॥१२॥

रुक्षादि कुपितवातज उदावर्त

वायुःकोष्ठानुगोरूक्षकषायकटुतिक्तकैः ।
भोजनैःकुपितःसद्यउदावर्तंकरोतिच ॥ १३ ॥
वातमूत्रपुरीषास्टक्कफमेदोवहानि वै ।
स्रोतांस्युदावर्तयतिपुरीषंचातिवर्त्तयेत् ॥ १४ ॥
ततोहृद्बस्तिशूलार्त्तोहृल्लासारतिपीडितः ।
वातमूत्रपुरीषाणि कृच्छ्रेणलभतेनरः ॥ १५ ॥
श्वासकासप्रतिश्यायदाहमोहतृषाज्वरान् ।

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

वमिहिक्काशिरोरोगमनःश्रवणविभ्रमान् ॥१६॥
बहूनन्यांश्चलभतेविकारान्वातकोपजान् ॥१७॥

रुक्ष, कसैला, तीक्ष्ण और कटु, ऐसे भोजनसे कोष्ठ, वायु विष्ठा पेशाब अश्रुपात कफ और भेद इनके बहने वाली नाड़ियों के मार्ग बन्द करदे और मलको शुष्क करदे तब मनुष्य हृदय मूत्र स्थान में दर्द की वजह से बेकल हो, सूखी वमन अस्वस्थता इनसे व्यथित हो मलमूत्र, अधोवायु कष्ट से उतरे और श्वाँस खांसी, प्रतिश्याय, दाह, मोह, प्यास, बुखार, वमन, हिक्का, शिर रोग, मनोविभ्रम, मन्द सुनना तथा वातकोपसे औरभी अन्य विकार होतेहैं ॥१३-१७॥

आनाहरोग की सम्प्राप्ति और लक्षण

आमं शकृद्वानिचितं क्रमेण भूयोविबद्धं विगुणानिलेन।
प्रवर्त्तमानंनयथास्वमेनं विकारमानाहमुदाहरन्ति ॥१॥
तस्मिन्भवत्यामसमुद्भवेतुतृष्णाप्रतिश्यायशिरोविदाहाः।
आमशयेशूलमथोगुरुत्वंहृत्स्तम्भउद्गारविघातनेच ॥२॥
स्तंभःकटीपृष्ठपुरीषमूत्रेशूलेऽथमूर्छाशकृतश्चछर्दिः।
श्वासश्चपक्वाशयजेभवंतितथाऽलसोक्तानिचलक्षणानि॥३

जब आम (अपक्क रस) अथवा मल क्रम से एकत्रित हो दूषित वायु द्वारा गाढ़ा हो जाता है और उसका निकालना भलीभांति नहीं होय तो उस विकार को आनाह कहते हैं। आम से उत्पन्न आनाह रोग में प्यास, जुकाम, शिर में दाह आमाशय में पीड़ा, शरीर का भारी होना हृदय का जकड़ जाना दर्द मूर्छा डकार कमर पीठ मल पेशाब इनका रुकना दर्द मूर्छा और मलमिश्रित वमन श्वास ये लक्षण होते हैं। पक्वाशय में आनाह रोग होने से अलसोक्तआध्मान और वातावरोध आदि लक्षण होते हैं ॥१-३॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

असाध्य लक्षण

तृष्णार्दितं परिक्लिष्टं क्षीणं शूलैरभिद्रुतम् ।
शकृद्वमंतं मतिमानुदावर्तिनमुत्सृजेत् ॥ ४ ॥

तृषा से पीड़ित क्लेशयुक्त क्षीण, दर्द से व्यथित और मल की रद्द करने वाला ऐसे उदावर्तवाले रोगीकी वैद्य चिकित्सा न करें।४।

❁ इति उदावर्तनिदानम् समाप्तम् ❁

अथ गुल्म निदानम्

दुष्टावातादयोऽत्यर्थंमिथ्याहारविहारतः । कुर्वन्तिपञ्चधागुल्मंकोष्टांतर्ग्रंथिरूपिणम् ॥ १ ॥ तस्यपञ्चविधस्थानपार्श्वहृन्नाभिवस्तयः ॥

मिथ्या आहार तथा मिथ्या बिहार करने से अधिक दूषित हुए वातादि दोष पेट में ग्रन्थि रूप गांठ पांच तरह का गुल्मरोग प्रगट करे हैं। उस गुल्मरोग के पांच जगह हैं—दोनों पार्श्व हृदय नाभि और मूत्राशय ॥ १ ॥

गुल्म के सामान्य लक्षण

हृन्नाभ्योरन्तरेग्रन्थिःसंचारीयदिवाऽचलः ।
बृत्तश्चयोपचयवान्सगुल्मइतिकीर्तितः ॥ २ ॥

हृदय और नाभि तथा मूत्राशय इनमें गांठ सी हो जाती है, वह चलायमान तथा नहीं चलने वाली होती है, कभी घटती तथा बढ़ती हो उसे वायगोला कहते हैं। इस श्लोक में नाभि शब्द से बस्ती का ही ग्रहण किया है ॥ २ ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सम्प्राप्ति

सव्यस्तैर्जायनेदोषैःसमस्तैरपिचोच्छ्रितैः ।
पुरुषाणांतथास्त्रीणांज्ञेयोरक्तेनचापरः ॥ २ ॥

दूषित दोषों से अलग-अलग और सब दोष मिलकर ये चार तरह के गुल्म मनुष्यों के होते हैं और स्त्रियों के रज के दोष से एक ही प्रकार का गुल्म होता है परन्तु पहले जो लिखा है गुल्म पांच तरह का होता है सो यह निश्चय नहीं है क्योंकि रक्त गुल्म तो स्त्रियों के होता है, मनुष्यों के नहीं होता। धातुरूप रक्तज गुल्म जो है वह मर्द औरत दोनों के होता है यह 'क्षीरपाणि' का मत है। पाँच तरह के गुल्म रोग पर अनेक मतान्तर तथा शास्त्रार्थ हैं, जिन्हें अवलोकन की इच्छा हो वह मधुकोश आदि टीकामें देखलें ॥ ३ ॥

पूर्वरूप

उद्गारबाहुल्यपुरीषबंधतृप्त्यक्षमत्वांत्रनिकूजनानि ।
आटोपमाध्मानमपक्तिशक्तिरासन्नगुल्मस्यवदन्तिचिह्नम् ४

डकार बहुत आवे, मल का विष्टम्भ, अन्न में ग्लानि, बलनाश बोले, उदर में वेदना, और पेट फूल जाय तथा जकड़, जाय अग्नि मन्द हो जाय, ये लक्षण गुल्म होने के पहले होते हैं ॥ ४

गुल्म के सामान्य लक्षण

अरुचि कृच्छ्रविण्मूत्रंवातेनांत्रविकूजनम् ।
आनाहश्चोर्ध्ववातत्वंसर्वगुल्मेषुलक्षयेत् ॥ ५ ॥

अन्न बुरा लगे, मल और पेशाब का कष्ट से निकलना, कूञ्जी से पेट में शब्द हो तथा पेट फूल जाय, ऊर्ध्ववात होय, ये लक्षण सब गुल्मों में होते हैं ॥ ५ ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

वातिक गुल्म के कारण और लक्षण

रूक्षान्नपानंविषमातिमात्रं विचेष्टनंवेगविनिग्रहश्च ।
शोकोऽभिघातोऽतिमलक्षयश्चनिरन्नताचानिलगुल्महेतुः ६
यःस्थानसंस्थानरुजाविकल्पंविडातसंगंगलवक्त्रशोषम् ।
श्यावारुणत्वंशिशिरज्वरंचहृत्कुक्षिपार्श्वांसशिरोरुजश्च।७
करोतिजीर्णेऽभ्यधिकंचकोपंभुक्तेमृदुत्वंसमुपैतिपश्चात्।वा-
तात्सगुल्मोनच तत्ररूक्षंकषायतिक्तंकटुचोपशेते ॥८॥

रुक्ष अन्न (चना आदि) खाना, विषम भोजन (बहुत थोड़ा अथवा ज्यादा वा समय विरुद्ध) भूख से अधिक खाना, बलवान से लड़ने से, मल मूत्रादि वेगावरोध से, अत्यन्त शोक करने से, अभिघात विरेचन आदि से, मल का विरेचन द्वारा निगमन होने से, वात करने से वायु कुपित हो गुल्म पैदा करताहै, सो वह वातज गुल्म कभी नाभि, कभी मूत्राशय, कभी पसवाड़े में गमन करे तथा कभी लम्बा, गोल, मोटा, छोटा हो जाय तथा उसमें वेदना कभी ज्यादा कभी न्यून होय, सुई के चुभने के समान पीड़ा होय अथवा बहुत प्रकारकी वेदना होय, मल तथा अपानवायु शुद्ध नहीं निकले, कण्ठ और मुख सूख जाय, शरीर का वर्ण नीला वा लाल हो जावे शीत ज्वर, हृदय, कूख, पार्श्व मस्तक और कन्धा इनमें पीड़ा हो, भोजन पचने के पीछे रोग की वृद्धि हो, भोजन करने के वक्त कुछ शान्त हो, वह गुल्म वादी से उत्पन्न होता है, उसमें रुक्ष पदार्थ और कषैले तीक्ष्ण कटु रस हानिकारक हैं ॥६-८॥

पैत्तिक गुल्म के कारण और लक्षण

कट्वम्लतीक्ष्णोष्णविदाहिरूक्षक्रोधातिमद्यार्कहुताशसेवा।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

आमाभिघातारुधिरंचदुष्टंपैत्तस्यगुल्मस्यनिमित्तमुक्तम्॥९।
ज्वरःपिपासावदनांगरागःशूलंगहज्जीर्यतिभोजनेच।स्वेदो
विदाहोव्रणवच्चगुल्मःस्पर्शासहःपैत्तिकगुल्मरूपम् ॥१०॥

कड़वे खट्टे तीक्ष्ण गरम दाहकारक (वंश करील आदि) रूक्ष भोजन से कोप से अति मदिरा पान से सूर्य्य की ताप सेवन से अग्नि के पास रहने से विदग्ध अजीर्ण से दूषित हुआ रस उससे अभिघात लकड़ी आदि की चोट से रक्त का दूषित होना ये पित्तगुल्म के कारण हैं। बुखार प्यास मुख और शरीर लाल वर्ण का हो जाना भोजन पचने के समय पेट में तीव्र वेदना होना स्वेद का निकलना देह में जलन होना व्रण के समान स्पर्श नहीं सहा जाय ये लक्षण पैत्तिक गुल्म रोग में होते हैं ॥९-१०॥

कफ से उत्पन्न गुल्म रोग के लक्षण

शीतंगुरुस्निग्धमचेष्टनंचसम्पूरणंप्रस्वपनदिवाच ।
गुल्मस्यहेतुःकफसंभवस्यसर्वस्तुदुष्टोनिचयात्मकस्य ॥११॥
स्तैमित्यशीतज्वरगात्रसादहृल्लासकासारुचिगौरवाणि ।
शैत्यंरुगल्पाकठिनोन्नतत्वंगुल्मस्यरूपाणिकफात्मकस्य १२

शीतल गुरु स्निग्ध पदार्थ सेवन से व्यायाम न करने से भोजन अधिक करने से दिन में सोने से कुपित कफ गुल्म का कारण होता है और जो वायु आदि तीनों गुल्मों के कारण कहे हैं वे सब सन्निपात गुल्म के कारण जानने चाहिये। देह गीली रहना, शीत ज्वर आना शरीर की ग्लानि सूखी वमन काँस अन्न में इच्छा न होना गुरुता ठण्ड का लगना अल्प व्यथा होना गुल्म कड़ा तथा ऊँचा हो उसे कफज गुल्म कहते हैं ॥११-१२॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

द्वन्द्वज गुल्मरोग के लक्षण

निमित्तलिङ्गान्युपलभ्यगुल्मेसंसर्गजेदोषबलाबलंच । व्यामिश्रलिंगानपरांश्चगुल्मांस्त्रीनादिशेदौषधकल्पनार्थम्॥१३

गुल्म के निदान लक्षण और दोषों को बलवान समझकर दवा करने के लिये वातपित्त से, वातश्लेषसे तथा पित्त कफसे तीन तरह के द्वन्द्वज गुल्म और समझने चाहिये अर्थात् एक दोष बलवान होने पर चिकित्सा करनी उचितहै और दो दोष तथा तीनों दोष बलवान हों तो चिकित्सा करना यथार्थ नहीं है ॥ १३ ॥

सान्निपातिक गुल्म के लक्षण

महारुजंदाहपरीतमश्मबद्धनोन्नतंशीघ्रविदाहिदारुणम् । मनःशरीराग्निबलापहारिणं त्रिदोषजं गुल्ममसाध्यमादिशेत् ॥ १४ ॥

वेदना ज्यादा हो, दाह से रोगी पीड़ित हो, गुल्म पत्थर के तुल्य कठोर और ऊँचा हो, शीघ्र दाहकारक हो, मनमें व्याकुलता तथा शरीर में विवर्णता और कमजोरी मन्दाग्नि तथा शक्ति नष्ट हो गई हो उसे सान्निपातिक गुल्म कहते हैं, यह असाध्य है १४॥

रक्तगुल्म के लक्षण

नवप्रसूताऽहितभोजनायायाचामगर्भं विसृजेद्दतौवा । वायुर्हितस्याःपरिगृह्यरक्तंकरोतिगुल्मंसरुजंसदाहम्॥१५॥

पैत्तस्यलिंगं नसमानलिंगंविशेषणंचाप्यपरंनिबोध । यःस्पंदते पिंडितएवनांगैश्चिरात्ससशूलःसमगर्भलिंगः।१६।

सरौधिरःस्त्रीभवएवगुल्मोमासेव्यतीतेदशमेचिकित्स्यः ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

नवीन प्रसूता स्त्री के अपथ्य द्वारा अथवा कच्चा गर्भ क्षीण होने से अथवा ऋतुकाल के वक्त कुपथ्य करने से वायु दूषित होकर उस औरत के रक्त (जो ऋतुकाल में निकलता हो) उसको एकत्रित कर गुल्म कर देता है । वह गुल्म पीड़ा तथा दाह करने वाला होता है और पैत्तिक गुल्मके सम्पूर्ण लक्षण इसमें होते हैं और कुछ विशेष लक्षणों का कथन करता हूँ जो इसमें होते हैं । यह गुल्म चिरकाल में हिले, अवयव माने, कर, पद के साथ नहीं चलायमान हो, दृढ होता है, गर्भ के सर्व लक्षण इस गुल्म में मिलते हैं । दस माह व्यतीत होजानेपर इसकी चिकित्सा करनी चाहिये । कतिपय मनुष्य कहते हैं यह गर्भ है वा रक्तगुल्म है यह शङ्का समझकर माधवाचार्य ने दस माह बाद चिकित्सा करना लिखा है । हेतु इसका ये है कि नवम और दशम महीना प्रसव होने का होता है ॥१५–१६॥

प्रश्न–"यःस्पंदते पिंडित एव नांगैः" इत्यादिक विशेषणों से स्पष्ट ज्ञात होता है क्योंकि गर्भ तो निरन्तर हर एक अवयव के साथ वेदना रहित फड़कता है और रक्तगुल्म के चिह्न गर्भचिन्हों से विरुद्ध हैं, पुनः दस माह बाद चिकित्सा करना क्यों लिखा है?

समाधान—इसका कारण यह है कि इस गुल्मरोग में दस माह के बाद चिकित्सा करना सुखसाध्य होता है कुछ प्रसव के नियम से नहीं कहा है । क्योंकि प्रसव ग्यारह बारह माह के बाद भी होता है, सो चरकजी ने लिखा भी है यथा—'तं स्त्री प्रसूते सुचिरेणगर्भं स्पष्टो यदा वर्षगणैरपि स्यात्' जैसे जीर्ण ज्वर आने पर दुग्ध पीना, विरेचन लेना लाभप्रद है, इसीसे ग्रन्थान्तरों में लिखा है 'रक्तगुल्मे पुराणत्वं सुखसाध्यस्य लक्षणम्' इस रक्तगुल्म को दस माह बीतने पर प्राचीन होना कहा है और जैज्झट ने कहा है कि दस मास से पहले मर्दनादि क्रिया करने से गर्भाशयमें नुकसान पहुंचता है कारण

कि रक्त इस जगह पर जमा होता है और ग्यारहे मास में रक्तका गोला अत्युत्तम जम जाता है, अतः ग्यारहवें मास में लोहादि से सर्व तन को मृदु करके भेदन करे तो गर्भाशय अच्छी प्रकार से रहता है, चिरकाल होने पर गुल्म असाध्य होता है सो कहते हैं ।

गुल्म के असाध्य लक्षण

सञ्चितःक्रमशोगुल्मोमहावास्तुपरिग्रहः ।। कृतमूलः शिरान्द्धोयदाकूर्मइवोन्नतः ॥१७॥ दौर्बल्यारुचिहृल्लासकासच्छर्द्यरतिज्वरैः ॥ तृष्णातंद्राप्रतिश्यायैर्युज्यतेनससिध्यति ॥ १८ ॥

जब गुल्म बहुत पुराना हो जाता है तब क्रमशः वृद्धि को प्राप्त सब उदर में फैल जाताहै और धातुओं पर भी अपनी शक्ति पहुंचा देता है । मूल धातुगत होने से नाड़ियों का जाल लिपट जाता है और कच्छप की पीठ के समान गुल्म ऊँचा हो जाता है, कमजोरी अन्न बुरा सा लगे, वमन, खाँसी, काम करने में अरुचि, बुखार, प्यास तंद्रा और प्रतिश्याय ये उपद्रव होते हैं तब यह रोग असाध्य हो जाता ॥१७–१८॥

गृहीत्वासज्वरंश्वासमश्छर्द्यनीसारपीडितम् ॥ हृन्नाभिहस्तपादेषु शोथः क्षिपतिगुल्मिनाम् ॥१९॥ श्वासः शूलं पिपासान्नविद्वेषोग्रन्थिमूढता ।जायतेदुर्बलत्वंचगुल्मिनां मरणायवै ॥ २० ॥

उल्टी और दस्त से व्यथित गुल्म रोगी के हृदय, नाभि, कर, पदों में सूजन हो जाय और बुखार तथा श्वास जिसके हो वह मृत्यु को प्राप्त होता है । श्वास, दर्द, अन्न द्वेष और गुल्म की ग्रन्थि का

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अचानक नष्ट हो जाना और कमजोरी ये लक्षण रोगीके प्राणनाशक हैं । * प्रश्न *–अन्तविद्रधि और गुल्म इनमें क्या भेद है, इनके स्थान और स्वरूप एकसे हैं फिर भेद क्यों है ? * उत्तर * आपका कथन यथार्थ है । अन्तर्विद्रधि पचता है और गुल्म पचता नहीं है इसका हेतु यहहै कि गुल्म तो निराश्रयहैसो सुश्रुत ने कहा है ।१९-२०

न निर्बंधोस्तिगुल्मस्यविद्रधिःसनिबंधनः ।
गुल्मस्तिष्ठतिदोषेस्वविद्रधिर्मांसशोणिते ॥
विद्रधिःपच्यतेतस्माद्गुल्मश्चापिनपच्यते ॥२१॥

गुल्म का निर्बन्ध नहीं है और विद्रधि का निर्बन्ध है । गुल्म निज दोष में वास करता है और विद्रधि मांस तथा रक्तगत होता है गुल्म मुट्ठी के समान दीर्घ है और विद्रधि की उपमा बड़ीहै ॥२१॥

* इति गुल्मनिदानम् समाप्तम् *

अथ हृद्रोगनिदानम्

अत्युष्णगुर्वम्लकषायतिक्तैःश्रमाभिघाताध्यशनप्रसंगै ।
संचिन्तनैर्वेगविधारणैश्चहृदामयःपंचविधःप्रदिष्टः ॥१॥

अत्यन्त उष्ण, अति गुरू, अति अम्ल, अति कषैली वस्तु भक्षण से, अति कड़वे पदार्थ से, अति व्यायाम से, चोट लगने से, विरुद्ध भोजन से, राज्य भय से चिन्तित होने से मल मूत्रादि वेगों के रोकने से वातादि दोष कुपित हो वातादि ३ सन्निपात और कृमि से उत्पन्न पांच प्रकार का हृद्रोग पैदा करते हैं ॥१॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सन्निपात और सामान्य लक्षण

दूषयित्वारसंदोषाविगुणाहृदयंगताः ।
हृदिबाधांप्रकुर्वन्तिहृद्रोगतंप्रचक्षते ॥ २ ॥

दूषित हुए वातादि दोष हृदयस्थ रस को बिगाड़ अनेक तरह की वेदना कर देते हैं इसी से इस रोग को हृदरोग कहते हैं ॥२॥

वातज हृदरोग के लक्षण

आयम्यतेमारुतजेहृदयंतुद्यतेतथा ।
निर्मथ्यतेदीर्यतेचस्फोट्यतेऽपिच ॥ ३ ॥

वात से उत्पन्न हृद्रोग में हृदय खींचने की सी सूचिका से चुभाने की सी, फोड़ने की सा, दो टुकड़े होने के समान पीड़ा और मथने के समान वेदना कुठारवत काटने के समान वेदना वातज हृद्रोग में होती है ॥ ३ ॥

पैत्तिक हृदयरोग के लक्षण

तृष्णोष्णदाहमोहाःस्युःपैत्तिकेहृदयक्लमः ।
धूमायनंचमूर्च्छाचस्वेदःशोषोमुखस्यच ॥ ४ ॥

पित्तज हृदयरोग में तृषा, अल्प दाह, मोह और हृदय में ग्लानि एवं धूम्र का निगलना सा प्रतीत होना, बेहोशी, स्वेद का आना और मुख का शुष्क होना ये लक्षण होते हैं ॥ ४ ॥

श्लेष्मजन्य हृदयरोग के लक्षण

गौरवंकफसंस्रावोऽरुचिःस्तम्भोऽग्निमार्दवम् ।
माधुर्यमपिचास्यस्यबलासोवर्ततेहृदि ॥ ५ ॥

हृदय कफ से व्याप्त होने पर गुरुता, कफ का पतन होना अन्न द्वेष, हृदय जकड़ जाना, मन्दाग्नि मुख में मीठापन ये लक्षण कफ के हृद्रोग में होते हैं ॥ ५ ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

स्वास्थ्य एवं चिकित्सा

यह निर्विवाद सत्य है कि आज की बढ़ती हुई बीमारियों और दुर्बल शरीरों का कारण स्वास्थ्य विषयक ज्ञान की कमी है। इसलिये ये पुस्तकें प्रत्येक गृहस्थ में रहना आवश्यक हैं।

सरल स्वास्थ्य और योगासन

इसमें योग के आसनों द्वारा स्वास्थ्य बनाने की सब विधियां विस्तापूर्वक समझाई गई हैं। अभ्यास के लिपे आसनों के सैकड़ों चित्र भी दिये हैं। मू० २)

घर में वैद्य

इस पुस्तक के घर में रहने से बात-बात को डाक्टर वैद्यों के यहां नहीं दौड़ना पड़ेगा। नित्यप्रति के पारिवारिक रोगों में इसके छोटे २ नुस्खे जो पैसे दो पैसे में तैयार होते हैं। चमत्कार का काम करते हैं। मूल्य १)

अष्टाङ्ग हृदय [बाग्भट्ट] भा० टी० मूल्य २०)

घर का वैद्य

[कविराज दाऊदयाल गुप्ता] यह पुस्तक पुरुष रोग, स्त्री रोग बाल रोग, उदर रोग तथा बुखार, खाँसी, जुकाम, दन्तरोग, अर्श, बवासीर इन सातों भागों में पूरी हुई है छोटे बड़े रोगों का सरल इलाज विस्तार पूर्वक दिया है। सातों भाग ७)

शारङ्गधर संहिता भा० टी०

यह ऋषि प्रणीत ग्रन्थ आयुर्वेद का अति प्रसिद्ध एवं प्राचीन ग्रन्थ है सजिल्द मूल्य १०)

नूतन अमृतसागर भाषा

इसमें प्रत्येक रोग की उत्पत्ति, लक्षण व चिकित्सा विस्तार

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

पूर्वक समझाये गये हैं इसके द्वारा बिना गुरू के वैद्य हो सकते हैं। सजिल्द मू० ८)

वृहद् पशु चिकित्सा

इसमें प्रत्येक पशु जैसे हाथी, घोड़ा, गधा, ऊँट, गाय बैल, भैंस, बकरी, कुत्ता आदि के सब रोगों के कारण लक्षण और चिकित्सा दिये हैं। सजिल्द मूल्य ४)

वृहद् बूटी प्रचार

हिन्दी भाषा में जड़ी बूटियों के विषय में यही एक पुस्तक है। इसमें जड़ी बूटियों की उत्पत्ति, आकृति, पहिचान, फलाफल, बीज, छाल आदि का अलग २ वर्णन है। एक सौ से ऊपर चित्रों की सजिल्द पुस्तक का मू० २॥)

जर्राही प्रकाश [चारों भाग]

सेकड़ों रोग फोड़ा, फुन्सी, दाद, खाज, कटा, मोच घाव आदि जो डाक्टरी चीर फाड़ से अच्छे नहीं होते, आज भी जानकार जर्राह इसकी सहायता से बात की बात में ठीक कर देते हैं। सजिल्द ३॥)

नाड़ी ज्ञान तरङ्गिणी

संस्कृत व हिन्दी टीका। केवल नाड़ी देखकर वात, पित्त, कफ के विकार रोगों की पहिचान तथा चिकित्सा विधि सरलतापूर्वक लिखी गई है। सजिल्द मू० १॥)

रसराज महोदधि (पाँचों भाग)

इसमें सब प्रकार के रसों का पूरा २ वर्णन रोगों के उपायों सहित दिया है। मूल्य १०)

मिलने का पता—पुस्तक मन्दिर, मथुरा [उत्तर प्रदेश]

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

बृहद कम्पाउण्डरी शिक्षा

[डाक्टर दीक्षित] ऐलोपैथिक, आयुर्वेदिक एवं दवाइयों की पहिचान, तैयार करने की शास्त्रोक्त विधि, जच्चा बच्चा [Nursing] प्राथमिक चिकित्सा [First Aid] तथा अन्य कम्पाउण्डरी का पूरा ज्ञान कराने वाली उपयोगी व सर्वश्रेष्ठ पुस्तक सजिल्द २॥)

मैटीरिया मैडिका [ऐलो०]

इसमें डाक्टरी दवाओं की उत्पत्ति निर्माण-विधि, पहिचान, मिश्रण, गुणावगुण, चिकित्सा प्रयोग आदि सब विस्तार से दिये हैं पहला संस्करण छपते ही बिक गया। शीघ्रता करें नहीं तो दूसरे से भी निराश होना पड़ेगा। मू० ४)

मैटीरिया मैडिका [होम्यो०]

इस पुस्तक में चिकित्सा की आधुनिक एवं सर्वश्रेष्ठ प्रणाली होम्योपेथी का ज्ञान बड़ी सरलता से समझाया गया है। कौड़ी मोल की औषधियों द्वारा धन व यश दोनों का लाभ कमावें। यही एक पुस्तक आपको होम्योपैथी का सफल डाक्टर बना देगी। सजिल्द मूल्य ५)

स्वयं चिकित्सा (ऐलो०)	३)	मिट्टी सभी रोगों की	
इंजैक्शन चिकित्सा	५)	रामबाण दवा है	)५६
डाक्टरी चिकित्सा (ऐलो०)	५)	नेत्र रोग चिकित्सा	)५६
ऐनाटमी फीजियालौजी	५)	हमें क्या खाना चाहिये	)५०
सर्जरी चीर फाड़	५)	नींबू के सौ उपयोग	)३०
भाव कौतूहल	२,५०	दन्दान साजी	२)
पथ्यापथ्य भा० टी०	२)	नीम के सौ उपयोग	)४०
स्वास्थ्य रक्षा	८)	नाडी परीक्षा	)५०
रसराज सुन्दर भा० टी०	१२)	शालिहोत्र [अश्व चिकित्सा]	२)
मैडीकल गाइड	४)	स्त्री चिकित्सा	)५०
इलाजुल गुर्बा	५)	लेडी डाक्टर	३)

मिलने का पता—पुस्तक मन्दिर, मथुरा [उत्तर प्रदेश]

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

मुहूर्त चिन्तामणि

इसमें मुहूर्त और ज्योतिष विषयक सम्पूर्ण और सब प्रकार का सूक्ष्म गणित लिखा है। कीमत ३)

बृहद् सामुद्रिक शास्त्र

[लेखक भृगुराज शर्मा]

जन साधारण के लाभ के लिये यह पुस्तक बड़े कष्ट और परिश्रम के पश्चात् प्राप्त की गई है। इसमें संसार के प्रत्येक स्त्री-पुरुषों के भूत, भविष्य और वर्तमान का हाल (भाग्य) उनके हाथ-पैर व मस्तक की रेखाओं द्वारा बताया गया है। समझाने के लिये रेखाओं के सैकड़ों चित्र भी दिये हैं। ज्योतिषियों के लिये अत्यन्त आवश्यक है। हर गृहस्थ को भी अपने यहाँ रखना चाहिये। इतनी अमूल्य सजिल्द पुस्तक का मूल्य ४)

त्रिकालज्ञ ज्योतिष

यह पुस्तक बहुत ही प्रसिद्ध है। इसमें ज्योतिष शास्त्र के समस्त अङ्गों को बड़ी सरल भाषा में उदाहरण देकर समझाया गया है। लगभग ६०० पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य ६) छोटा २)

ज्योतिष सर्व संग्रह	१॥)	अखण्ड भाग्योदय दर्पण	३)
भृगु प्रश्नावली कुन्जी सहित	१॥)	राशिमाला	≡)
रेखा विज्ञान	॥)	जातकालंकार	१)
लग्न चंद्रिका	२)	भविष्ययफल	॥)
लघु पाराशरी	।=)	होड़ाचक्र	-)
शीघ्रबोध भा० टी०	१॥)	शाखोच्चार	।)
रमल नवरत्न	२॥)	स्वप्न विचार	≡)
उड्डीसतन्त्र	१।)	शकुन विचार	।)
दत्तात्रेय तन्त्र	१)	शरीर सर्वाङ्ग लक्षण	१॥)
विश्व के भाग्यवानों की कुण्डलियां	४)	ज्ञान चन्द्रोदय प्रश्नावली	≡)

मिलने का पता—पुस्तक मन्दिर, मथुरा [उत्तर प्रदेश]

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

त्रिदोषज हृद्रोग के लक्षण

विद्यात्त्रिदोषंत्वपिसर्वलिंगम् ।।

जिसमें सब चिन्ह मिलते हों उसे त्रिदोषज हृदयरोग जानना चाहिए । इस हृदयरोग में कुछ अपथ्य सेवन द्वारा ग्रन्थि पैदा हो जाती है और उस ग्रन्थि में कीड़े पैदा हो जाते हैं ।

कृमिज हृद्रोग के लक्षण

तीव्रार्तितोदंक्रिमिजंसकण्डूम् ।। उत्क्लेदःष्ठीवनंतोदः शूलंहृल्लासकस्तमः ।। अरुचिःश्तावनेत्रत्वंशोषश्चकृमिजेभवेत् ।।६।।

तीव्र वेदनायुक्त तथा नोचने के समान पीड़ायुक्त एवं खुजली से व्यथित हृद्रोग को कृमिजन्य जानना चाहिये । उद्वेग, ओकारी आने के सदृश ज्ञात हो, ष्ठीवन सूचिका के चुभाने के सदृश वेदना और दर्द हल्लास, अँधेरा आना, अन्न बुरा लगे, नेत्र कृष्णवर्ण के हो जाँय और मुख सूख जाय ये लक्षण कृमिजन्य हृद्रोग में होते हैं ।।६।।

हृद्रोग के उपद्रव

क्लमः सादोभ्रमः शोषोज्ञेयास्तेषामुपद्रवाः ।।
कृमिजेकृमिजातीनांश्लैष्मिकाणाँचयेमताः।।७।।

तृषा स्थानमें अत्यन्त ग्लानि, भ्रम, शोष ये सब उन हृद्रोगों के उपद्रव जानने और कफजन्य कृमिरोग के जो उपद्रव पीछे कथन कर आये हैं वे ही कृमिज हृद्रोग में होते है ।।७।।

❋ इति हृद्रोगनिदानम् ❋

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अथ मूत्रकृच्छ्रनिदानम्

—::—

व्यायामतीक्ष्णौषधरूक्षमद्यप्रसंगनित्यद्रुतपृष्ठयानात् ॥
आनूपमत्स्याध्यशनादजीर्णात्स्युर्मूत्रकृच्छ्राणिनृणामिहाष्टौ

ब्यायाम करने से, तीखी दवा सूंघने से, रूक्ष पदार्थ सेवन से रोजाना शराब पीने से, हर समय घोड़े पर चढ़ने से, जल के पास वास करने वाले पक्षियों के माँस भक्षण से, मछली आदि भक्षण से, भोजन के ऊपर तुरन्त भोजन करने से, कच्चे पदार्थ सेवन से, मनुष्यों के आठ प्रकार का मूत्र कृच्छ्र रोग होता है। अलग अलग दोषों से ३, सन्निपात से १, चोट लगने से १, मल अवरोध से १, वीर्य्य रोकने से १, पथरी से १, ये सब मिलकर आठ हुए ॥१॥

अथ सम्प्राप्ति

पृथंमलाः स्वैःकुपितानिदानैःऽसर्वेंथवाकोपमुपेत्यबस्तौ ।
मूत्रस्यमार्गंपरिपीडयंतियदातदाधूत्रयतीहकृच्छ्रात् ॥२॥

निज निज कारणों से दूसित हुए वायु आदि दोष मूत्राशय में कुपित हो मूत्र स्थान को व्यथित करें तब पुरुष अति कष्ट से पेशाब करता है ॥ २ ॥

पित्तज और वातज मूत्रकृच्छ्र के लक्षण

पीतंसरक्तंसरुजंसदाहंकृच्छ्रंमुहुर्मूत्रयतीहपित्तात् ॥
तीब्रार्तिग्वंक्षणबस्तिमेढ्रे स्वल्पंमुहुर्मूत्रयतीहवातात् ॥३

पित्तज मूत्रकृच्छ्र से पीत वर्ण वाला और किंचित् रक्तवर्णयुक्त व्यथाकारक वन्हि तुल्य बारम्बार मूत्र वेदना के साथ उतरताहै। वायु से उत्पन्न मूत्रकृच्छ्र में जंघा और उरु इनकी सन्धियों में बस्ति और

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

गुप्तेन्द्रिय इनमें वेदना होती है और पेशाब बारम्बार थोड़ा थोड़ा उतरता है ॥३॥

श्लेष्मजन्य मूत्रकृच्छ्र के लक्षण ॥ ३ ॥

बस्तेःसलिङ्गस्यगुरुत्वशोथौमूत्रंसपिच्छंकफमूत्रकृच्छ्रे ॥

कफ से प्रकट मूत्रकृच्छ्र में लिंग और बस्ति में गुरुता तथा शोथ हो जाता है और पेशाब स्निग्ध उतरता है ॥

त्रिदोषज मूत्रकृच्छ्र के लक्षण

सर्वाणिरूपाणितुसन्निपाताद्भवन्तितत्कृच्छ्रतमंतुकृच्छ्रम।४

सान्निपातिक मूत्रकृच्छ्र में सब लक्षण होते हैं अतः यह कष्ट साध्य होता है ॥४॥

शल्यज मूत्रकृच्छ्र के लक्षण

मूत्रवाहिषुशल्येनजतेष्वभिहतेषुच ॥
मूत्रकृच्छ्रं तदाघाताज्जायतेभृशदारुणम् ॥
वातकृच्छ्रेणतुल्यानितस्यलिङ्गानिलक्षयेत् ॥५॥

मूत्र के बहने वाले रास्ते तीर आदि से रुक जाँय अथवा व्यथित हों तो उस चोट से घोर मूत्रकृच्छ्र होता है, इसके लक्षण बातिक मूत्रकृच्छ्र के सदृश होते हैं ॥ ५ ॥

मल से प्रकट मूत्रकृच्छ्र के लक्षण

शकृतस्तुप्रतीघाताद्वायुर्विगुणतांगतः ॥
आध्मानंवातशूलंचमूत्रसङ्गकरोतिच ॥ ६ ॥

मल के रुक जाने से वायु तिरछा होकर अफरा करे, वातिक दर्द की अधिकता और पेशाब का नाशकरे तब मूत्रकृच्छ्र होता है।६।

अश्मरीजन्य मूत्रकृच्छ्र के लक्षण

अश्मरीहेतुतत्पूर्वंमूत्रकृच्छ्रमुदाहरेत् ॥ ७ ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

पथरी के योग से उत्पन्न मूत्रकृच्छ्र को अश्मरीजन्य मूत्रकृच्छ्र कहते हैं ॥७॥

वीर्य्य से प्रकट मूत्रकृच्छ्र के लक्षण

शुक्रे दोषैरुपहतेमूत्रमार्गे विधाविते ॥
सशुक्रं मूत्रयेत्कृच्छ्राद्बस्तिमेहनशूलवान ॥८॥

वायु आदिक दोषों के बिगड़ने से जब वीर्य दूषित हो जाता है तब वह वीर्य मूत्र मार्ग से निकलने लगता है तब रोगी मनुष्य का पेशाब वीर्य के साथ अति कष्ट से निकलता है वस्ति और लिङ्ग में विशेष वेदना होती है ॥ ८ ॥

अश्मरी और शर्करा इनके साम्य और अवान्तर भेद

अश्मरीशर्करा चैव तुल्यसम्भवलक्षणे ॥ विशेषणं शर्करायाः शृणु कीर्त्तयतो मम ॥९॥ पच्यमानाऽश्मरी पित्ताच्छोष्यमाणाचवायुना ॥ विमुक्तकफसन्धानात्क्षरंती शर्करामता ॥ १० ॥ हृत्पीडावेपथुः शूलं कुक्षावग्निश्च दुर्बलः ॥ तथाभवति मूर्च्छा च मूत्रकृच्छ्रं च दारुणम् ११

अश्मरी, पथरी और शर्करा इन रोगों के पैदायश और लक्षण समान होते हैं, इनमें जो अल्प अन्तर है उसका कथन करता हूं। पित्त से पक कर और वायु से सूख कर और कफ के सम्बन्ध से मुक्त हुई मूत्र मार्ग से वीर्य के तुल्य निकलने लगे उसे शर्करा कहते हैं। उसमें ये उपद्रव होते हैं—हृदय में वेदना, कम्प, कोख में दर्द, अग्नि में मन्दता, मूर्छा और घोर मूत्रकृच्छ्र होता है ॥९-११॥

॥ इति मूत्रकृच्छ्रनिदानं समाप्त ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अथ मूत्राघातनिदानम्

जायन्ते कुपितैर्दोषैर्मूत्राघातास्त्रयोदश ॥
प्रायो मूत्रविघाताद्यैर्वातकुण्डलिकादयः ॥ १ ॥

मूत्र का वेग रोकने से, मल और वीर्य के अवरोध से रुक्ष भोजनादि से, कुपित हुए वातादि दोषों से वातकुण्डलिका आदि तेरह प्रकार के मूत्रघात होते हैं ॥ १ ॥

वातकुण्डलिका के लक्षण

रौक्ष्याद्वेगविधाताद्वावायुर्बस्तौसवेदनः ॥
मूत्रमाविश्य चरित विगुणःकुण्डलीकृतः ॥ २ ॥
मूत्रमल्पाल्पमथवा सरुजं संप्र वर्तते ॥
वातकुण्डलिकांतांतुव्याधिं विद्यात्सुदारुणम् ॥ ३ ॥

रुक्ष अन्न सेबन से मल मूत्रादि वेगों के रोकने से दुष्ट हुई वायु वस्तिगत हो बेदना करे और मूत्र में सम्मिलित हों मूत्र के वेग को उलटा कर वहां आप कुण्डलिका के आकार हों मूत्राशय में विचरण करे तब पुरुष उस बात से व्यथित हो मूत्र को बारम्बार थोड़ा२ वेदनायुक्त त्याग करे, इस घोर व्याधि को बातकुण्डलिका रोग कहते हैं ॥२—३॥

अष्ठीला के लक्षण

आध्मापयन्बस्तिगुदं रुद्धावायुश्चलोन्नताम् ॥
कुर्यातीव्रार्तिमष्ठीलांमूत्रमार्गावरोधिमम ॥ ४ ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

मूत्राशय और गुदा में दुष्ट हुआ वायु इन स्थानोंमें भर जाता है और उनके मार्ग रोक कर मलमूत्र का विष्टम्भ कर देता है, वायु के प्रकोप से पत्थर की पिण्डी के सदृश अष्टीला बन जाती हैं उसमें बड़ी तकलीफ होती है और मल मूत्र का मार्ग रुक जाता है उस अष्टीला कहते हैं ॥ ४ ॥

वातवस्ति के लक्षण

वेगंविधारयेद्यस्तुमूत्रस्याकुशलोनरः ॥ निरुणद्धिमुखं तस्त बस्तेर्बस्तिगतोऽनिलं ॥ ५ ॥ मूत्रङ्गोभवेत्तेन बस्तिकुक्षिनिपीडित ॥ वातबस्तिःसविज्ञोयोव्याधिः कृच्छ्रसाधनः ॥ ६ ॥

जो मूढ़ ब्यक्ति मूत्र वेग को रोकता है उसके मूत्र स्थान की वायु कुपित हो मूत्राशय मार्ग को रोक देती है जिससे मूत्र आने से बन्द हो जाता है तब वस्ति और कोख में व्यथा होती है इसे बात वस्ति कहते हैं। यह व्याधि कष्ठिसाध्य है ५—६॥

मूत्रातीत के लक्षण

चिरंधारयतोमूत्रंत्वरयानप्रवर्तते ॥
मेहमानस्यमन्दंवामत्रातीतःसउच्ते ॥७॥

जो व्यक्ति मूत्र त्यागते समय मूत्र वेग को रोक कर मूत्र को धीरे२ छोड़ता है वेग से त्याग नहीं करता है, उसके मूत्रातीत नाम विकार हो जाता है वेग को रोकने की बजह से उसका पेशाव धीरे २ आने लगता है ॥ ७ ॥

मूत्रजठर लक्षण

मूत्रस्यवेगेऽभिहतेतदुदावर्त्तहेतुकः ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अपानःकुपितोवायुरुदरंपूरयेत्भृशम् ॥ ८ ॥
नाभेरधस्तादाध्मानंजनयेत्तीव्रवेदनाम् ॥
तन्मूत्रठरं विद्यादधोबस्तिनिरोधजम् ॥ ९ ॥

मूत्र वेग के अवरोध से दूषित हुआ अधोवायु उदरस्थ प्राप्त हो जाता है, यही वायु उदावर्त का कारण है जिससे टूंडो के नीचे पेट में अफरा हो जाता है और बहुत वेदना होती है मूत्राशयके अधो मार्ग में पेशाब का विष्टम्भ हो जाताहै, इसे मूत्रजठर कहते हैं ॥८-९

मूत्रोत्संग के लक्षण

बस्तौवाप्यथवानालेमणौदायस्यदेहिनः ॥
मूत्रंप्रवृत्तं सज्जे सरक्तंवाप्रवाहतः ॥ १० ॥
स्रवेच्छनैरल्पमसरुजंवाथनीरुजम् ॥
विगुणानिलजोव्याधिःसमूत्रोत्संगसंज्ञितः ॥११॥

पेशाब करते समय वायु के विकार से लिंग के अगाड़ी मूत्र का अवरोध हो जाता है और वेदना तथा रक्त के साथ अथवा वेदना बिना ही थोड़ा थोड़ा शनैः २ निर्गमन होता है, इसे मूत्रोत्संग कहते हैं ॥१०—११॥

मूत्रक्षय के लक्षण

रूक्षस्य क्लांतदेहस्यबस्तिस्थौ पित्तमारुतौ ॥
मूत्रक्षयं सरुग्दाहं जनयेतांतदायह्वम् ॥ ११ ॥

रूक्ष देह वाले और थके हुए मनुष्य के मूत्रस्थान में प्राप्त पित्त और वायु कुपित होकर पेशाब का क्षय करदे तब पोड़ा और दाह होवे उस रोग को मूत्रक्षय कहते हैं ॥ १२ ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

मूत्रग्रंथि के लक्षण

अन्तर्बस्तिमुखेवृतः स्थिरोऽल्पःसहसाभवेत् ॥
अश्मरीतुल्यरुग्ग्रन्थिमू ग्रन्थिः सउच्यते ॥१३॥

मूत्रेन्द्रिय के मुख में गोल लघु ग्रन्थि हो जाय और उसमें पथरी के तुल्य वेदना हो तो मूत्रग्रन्थि कहते ॥ १३ ॥

मूत्रशुक्र के लक्षण

मूत्रितस्यस्त्रियंयातोवायुनाशुक्रमुद्धतम् ॥ स्थानाच्च्युतं
मूत्रयतःप्राक्पश्चाद्वाप्रवर्तते ॥ १४ ॥ भस्मोदकप्रतीकाशं
मूत्रशुक्रं तदुच्यते ॥

पेशाब के वेग को रोक कर जो पुरुष स्त्री प्रसंग करता है उसकी वायु शुक्र को उड़ाय स्थान से च्युत करदे तब मूतने के पहले अथवा मूतने के पीछे वीर्य का पतन हों और उसका रंग राख के समान पानी मिला सा होय उसको मूत्रशुक्र कहते हैं ॥१४॥

उष्ण वात का लक्षण

व्यायामाध्वातपैः पित्तंबस्तिंप्राप्यानिलायुतम्॥१५॥
बस्तिं मेढ्रं गुदंचैव प्रदहंस्स्त्रावयेदधः ॥ मूत्रं हारिद्रमथवा
सरक्तंमेव च ॥ १६ ॥ कृच्छ्रात्पुनः पूनर्जन्योरुष्ण
वातवदन्तितम् ॥

दण्ड कसरत आदि व्यायाम और अति मार्ग गमन से ताप से, भ्रमण करने से दूषित हुआ पित्त सो वस्ति में मिलकर वायु से मिश्रत हो मूत्रेन्द्रिय और अण्डकोस तथा गुदा में दाह करे और हरिद्रा के सदृश एवं किंचित रक्त के समान लाल वारम्वार मूत्र का स्राव हो उसे उष्ण वात कहते हैं ॥१५-१६॥

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

मूत्रसाद के लक्षण

पित्तंकफो वा द्वौवापिसंहन्येतेऽनिलेनचेत् ॥ १७ ॥
कृच्छ्रान्मूत्रंतदा पीतंरक्तंश्वेतंघनंसृजेत् ॥ सदाहं रोचना
शंखचूर्णवर्णं भवेत्तुतत् ॥ १८ ॥शुष्कंसमस्तवर्णं वा
मूत्रसादंवदंतितम् ॥

मूत्रेन्द्रिय में वायु के कुपित होने से पित्त अथवा कफ अथवा पित्त और कफ दोनों गाढ वर्ण के हो जाते हैं तब पेशाब बड़े कष्ट से उतरता है । यदि पैत्तिक दोष हो तो पेशाब पीला, लाल और दाहयुक्त होता है और कफ का दोष होय तो पेशाब श्वेतवर्ण कुछ गाढ़ा और शंख के चूर्णवत होता है । त्रिदोष के प्रकोप से सर्व वर्ण वाला पेशाब उतरता है, इस रोग को मूत्रसाद कहते हैं ।१७-१८॥

विड्विघात के लक्षण

रूक्षदुर्बलयोर्वातेनोदावर्त्तंशकृद्यदा ॥१९॥ मूत्रस्रो-
तोऽनुपद्येतविड्संसृष्टं तदानरः ॥ विड्गंधं मूत्रयेत्कृच्छ्रा-
द्विड्विघातं विनिर्दिशेत् ॥ २० ॥

रुचि और कमजोर मनुष्य का मल वायु से प्रेरित हुआ ऊपर चढ़ जाता है और मूत्र के स्रोत में पहुँच जाता है, तो उस पुरुष के पेशाब में मल की वास आती है, मूत्र में मल निकलता है और कष्ट के साथ पेशाब निकलता है इस रोग को बिडघात कहते हैं १९२०

वस्तिकुण्डल के लक्षण

द्रुताध्वलंघनायासैरभिघातात्प्रपीडनात् ॥
स्वस्थानाद्वस्तिरुद्धृत्तः स्थूलस्तिष्ठतिगर्भवत ॥२१॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

शूलस्पन्दनदाहार्तो बिन्दुं बिन्दुं स्रवत्यपि ॥
पीडितस्तु सृजेद्धारां सस्तभोद्वेष्टनार्तिमान् ॥ २२ ॥
बस्तिकुंडलमाहुस्तं घोरं शस्त्रविषोपमम् ॥
पवनप्रबलं प्रायो दुर्निवारमबुद्धिभिः ॥ २३ ॥

शीघ्र चलने से, लंघन करने से, व्यायाम से, लकड़ी आदि की चोट लगने से, वेदना से मूत्रेन्द्रिय निज स्थान का त्याग कर ऊपर जा स्थूल भाव को प्राप्त हो गर्भवत कठोर हो जाय तब उसमें दर्द कम्पन और भड़कन होती है। पेशाब की एक २ बूंद निकले, मूत्रेन्द्रिय अति पीड़ित होय तो ज्यादा मूत्र निकले। मूत्रेन्द्रिय का सूज जाना, ऊपर में वेदना होना इस रोग को वस्तिकुण्डल कहते हैं। यह रोग शस्त्रवत मनुष्य को शीघ्र मारने वाला है अथवा विष तुल्य शीघ्र प्राणहर्ता है। वायु इस रोग में बलवान होती हैं, मूर्ख वैद्यों से इसकी चिकित्सा कठिन है ॥२१—२३॥

वस्तिकुण्डल के साध्यासाध्य विचार

तस्मिन्पित्तान्वितेदाहःशूलंमूत्रविवर्णता ॥
श्लेष्मणागौरवंशोथः स्निग्धंमूत्रंघनंसितम् ॥२४॥
श्लेष्मरुद्धबिलोबस्तिः पित्तोदीर्णोनसिध्यति ॥
अविभ्रांतबिलःसाध्योनचयःकुणलीकृतः ॥ २५ ॥
स्यादस्तौकुणलीभूतेतृणमोहःश्वासएवच ॥ २६ ॥

पित्ताधिक बस्तिकुण्डल रोग में दाह होती है, पेशाब का वर्ण बुरा मालूम होता है और कफाधिक वस्तिकुण्डल रोग में जड़ता, शोथ, पेशाब का स्निग्ध होना, गाढ़ा वर्ण व सफेद होना होता है। कफ से जिसका मुख बन्द हो जाय और पित्तसे व्याप्त हुई मूत्रेन्द्रिय

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

(वस्ति) साध्य नही होती है और जिस वस्तिका मुख खुला होय तथा कुण्डलाकार होय वह भी असाध्य होती है, वस्ति कुण्डलाकार होने से तृषा मूर्छा और श्वास ये उपद्रव होते हैं ॥२४-२६॥

❀ इति मूत्राघातनिदान ❀

अथ अश्मरीरोगनिदानम्

वातपित्तकफैस्तिस्रश्चतुर्थीशुक्रजाऽपरा ॥
प्रायःश्लेष्माश्रयाःसर्वाअश्मर्यःस्युर्यमोपमाः ॥१॥

वायु से, पित्त से कफ से, और वीर्य के विकार से ४ प्रकार की अश्मरी होती है। ये बहुधा कफ के प्रकोप से होती है विधियुक्त चिकित्सा न होने से प्राणघातक होती है ॥ १ ॥

अश्मरी की सम्प्राप्ति

विशोषयेद्वस्तिगतंसशुक्रंमूत्रंसपित्तंपवनःकफंवा ॥
यदायदाश्मर्युपजायतेचक्रमेणपित्तेष्विवरोचनागोः ॥२

मूत्रेन्द्रियस्थित पेशाब और वीर्य को अथवा पित्तयुक्त कफ को जब वायु सुखा देती है तब पथरी रोग पैदा होता है। जैसे गऊ के पित्त से गोरोचन पैदा होता है उसी प्रकार बस्ति में वीर्य्य से पथरी होती है ॥ २ ॥

पूर्वरूप

नैकदोषाश्रयाःसर्वाअश्मर्याःपूर्वलक्षणम् ॥
बस्त्याध्मानंतदासन्नदेशेषुपरितोऽतिरुक् ॥३॥
मूत्रेबस्तसगन्धत्वंमूत्रकृच्छ्रंज्वरो रुचि ॥

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सब प्रकार का पथरी रोग एकदोष से पैदा नहीं है अर्थात् अनेक दोषों के आश्रित है । मूत्रेन्द्रि का फूल जाना, इन्द्रिय के इधर उधर वेदना होना, पेशाब में बकरे के पेशाब के समान गन्ध आना, मूत्रकृच्छ, बुखार, अन्न द्वेष ये पथरी रोग के पहिले लक्षण होते हैं जब रोग पैदा होता है ॥३॥

पथरी रोग के सामान्य लक्षण

सामान्यलिंगंरुङ्नाभिसेवनीबस्तिमूर्धसु ॥४॥
विशीर्णधारंमूत्रस्यात्तयामार्गेनिरोधने ॥
तद्व्यपायात्सुखंमेहेदच्छंगोमेदकोपमम् ॥५॥
तत्संक्षोभात्क्षतेसास्रमायासाच्चातिरुग्भवेत् ॥

नाभि, अण्डकोश के निकट सीमन का भाग और मूत्रेन्द्रियका अगला हिस्सा इनमें दर्द होय और पथरी के संसर्ग से पेशाब का मार्ग रुक जाने से पेशाब की धारा कटी निकले, पथरी पेशाब मार्ग से अलग हो जाय तब पेशाब सुख पूर्वक निकले और निर्मल मणि के तुल्य हो, पथरी के कारण मूत्रेन्द्रिय में व्रण होने से पेशाब में रक्त निकले और पेशाब करते समय बड़ा दुःख और विशेष पीड़ा होय ये पथरी रोग के सामान्य लक्षण हैं ॥४—५॥

वातिक पथरी के लक्षण

तत्रवाताद्भृशंचार्तोदन्तान्खादतिवेपते ॥
मथ्नातिमेहनंनाभिंपीडयत्यनिशंक्वणन् ॥६॥
सानिलंमुंचतिशकृन्मुहुर्मेहतिबिन्दुशः ॥
श्यावारूक्षाश्मरीचास्यस्याच्चिताकण्टकैरिव ॥७॥

वातजन्य पथरी रोग में मनुष्य को अत्यन्त वेदना होती है । दाँतों को चबाना, काँपना, गुप्तेन्द्रिय को रगड़ना नाभि का मर्दन

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

करना और दिन रात रुदन करना और मूत्र के वक्त वेदना होने की वजह से अधोवायु का निकलना, पेशाब का बारम्बार स्राव होना और पथरी का वर्ण पीला, नीला, रूक्ष, कांटेयुक्त होना, से लक्षण वातिक पथरी रोग में होते हैं ॥ ६—७ ॥

पैत्तिक पथरी रोग के लक्षण

पित्तेनदह्यतेबस्तिःपच्यमाइवोष्मवान् ॥
भल्लातकास्थिसंस्थानारक्तापीतासिताश्मरी ॥८॥

पित्तज पथरी वाल मनुष्य की मूत्रेन्द्रिय में दाह होती है और क्षार से जिस तरह दाह होती है और उसी तरह दाह होती है मूत्रेन्द्रिय के ऊपर स्पर्श करने से उष्णता ज्ञात होती है और पथरी का रंग भिलाए की गुठली के समान लाल, पीला, काला होता है ॥ ८ ॥

श्लेष्मजन्य पथरी रोग के लक्षण

बस्तिर्निस्तुद्यतइवश्लेष्मणाशीलगोगुरुः ॥
अश्मरीमहतीश्लक्ष्णामधुवर्णाथवासिता ॥ ९ ॥

कफ की पथरी वाले मनुष्य की गुप्तेन्द्रिय में नोचने के समान वेदना होती है और स्पर्श से शीतल मालूम होती है और पथरी दीर्घ मुर्गी के अण्डे के समान, सफेद मदिरा के वर्णयुक्त किंचित पीली सी होती है यह कफनजन्य पथरी विषेशकर बालकों के होती है उसका कथन करते हैं ॥ ९ ॥

एताभवंतिबालानातेषामेवचभूयसा ।
आश्रयोपचयाल्पत्वाद्ग्रहणाहरणे सुखाः ॥ १० ॥

पूर्वोक्त त्रिदोषज पथरी बिशेषतः बालकों के होती है हेतु उसका ये है कि बालकों का गुरु मीठा शीतल और स्निग्ध आहार है और मूत्रेन्द्रीय बालकों की लघु तथा पुष्टतः अल्प होती है अतः वैद्य

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

डाक्टरों को उसके चीरने तथा फाड़ने में कठिनता ज्ञात नहीं होती सो सुश्रुत में कहा है ॥ १० ॥

शुक्राश्मरी के लक्षण

शुक्राश्मरीतुमहताँजायतेशुक्रधारणत ॥
स्थानाच्च्युतमभुक्तंहिमुष्कयोरन्तरेऽनिलः ॥११॥
शोषयत्युपसंहृत्यशुक्रं तच्छुष्कमश्मरी ॥
बस्तिरुक्कृच्छ्रमूत्रत्वंमुष्कश्वयथुकारिणी ॥१२॥
तस्यामुत्पन्नमात्रायांशुक्रमेतिविलीयते ॥
पीडितेत्ववकाशेस्मिन्नश्मर्येवचशर्करा ॥१३॥

शुक्राश्मरी रोग वीर्य के रोकने से बड़े ही पुरुषों के होता है। मैथुन करने के समय वीर्य अपने स्थान से चलायमान हो जात है तब उस वक्त मैथुन करने से वीर्य निकलता नहीं है अतः वीर्य के भीतर रुक जाने से वायु उस वीर्य को उड़ाकर सुखा देता है, उसको शुक्राश्मरी कहते हैं। इससे अण्डकोश सूज जाते हैं, वस्ति में वेदना और मूत्रकृच्छ्रता होती है। शुक्राश्मरी के पूर्व रूप में लिंग, अन्ड-कोश, पेड़ू इनमें वेदना होती है. वीर्य के नष्ट होने से पथरी के समान शर्करा उत्पन्न होती ॥ ११—१३५

पथरी और शर्करा के उपद्रव

अणुशोवायुनाभिन्नासातस्मिन्ननुलोमगे ॥
निरेतिसहमूणप्रतिलोमेविबध्यते ॥ १४ ॥
मूत्रस्रोतःप्रवृत्तासासक्ताकुर्यादुपद्रवान् ॥
दौर्बल्यंसदनंकार्श्यंकुक्षिशूलमथारुचिम् ॥
पांडुत्वमुष्णवातंचतृषणांहृत्पीडनंवमिम् ॥१५॥

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

वस्ति में वायु अनुलोम गति से पहुंचकर शर्करा के छोटे २ खण्ड कर मूत्र के साथ बाहर निकलें और प्रतिलोम वायु होय तो मूत्रका मार्ग रुक जाय, यदि मूत्र स्थान में वायु स्थित हो तो मूत्रके वहने वाले छिद्रों को रोक दे फिर कमजोरी, ग्यानि, कृशता, कुक्ष में दर्द, अन्न में द्वेष, पांडु रोग उष्ण, वायु, तृषा, हृदय में वेदना उल्टी इतने उपद्रवों को करती है ॥ १४—१५ ॥

असाध्य लक्षण

प्रशूननाभिवृषणंबद्धमूत्रंरुजान्वितम् ॥
अश्मरीक्षपयत्याशुशर्करासिकतान्विता ॥१६॥

जिस मनुष्य की टूढ़ा और वृषण में शोथ पैदा हो जाय पेशाव उतरे नहीं, वेदना होय, उस मनुष्य का सिकतायुक्त पथरी नाश कर देती है ॥ १६ ॥

❀ इति अश्मरीनिदानम् ❀

माधवनिदान का उत्तर भाग

——०::०——

अथ प्रमेहनिदानम्

आस्यासुखंस्वप्नसुखंदधीनिग्राम्योदकानूपरसाःपयांसि ॥
नवान्नपानंगुडवैकृतंचप्रमेहहेतुःकफकृच्चसर्वम् ॥ १ ॥

निरन्तर बैठे रहने से अत्यन्त सोने से अथवा स्वप्न सुख याने स्वप्न में स्त्री विषय आदि करने से, दधि खाने से, ग्राम के जीव भेड़ बकरिया आदि, जलके निवासी जीव मछली कच्छप आदि, जल के निकट रहने वाले जीव जैसे हिरन, चकवा आदि ऐसे जीव जन्तुओं के मांस, दूध आदि के खाने से, नया अन्न और नवीन जल तथा

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

गुड़ आदि पदार्थों के खाने से और जितने भी कफ कारक पदार्थ हैं उनके खाने से मनुष्यों को प्रमेह रोग होता है ॥१॥

कफ पित्त वातादि प्रमेहों की सम्प्राप्ति

मेदश्चमांसंचशरीरजंचक्लेदंकफोबस्तिगतःप्रदूष्य ॥
करोतिमेहान्समुदीर्णमुष्णैस्तानेवपित्तंपरिदूष्यचापि ॥२।
क्षीणेषुदोषेष्ववकृष्यधातून्संदूष्यमेहान्कुरुतेऽनिलश्च ॥
साध्याः कफोत्थादशपित्तजाः षड्याप्यानसाध्याःपवनाच्चतुष्कः ॥३॥ समक्रियत्वाद्विषमक्रियत्वान्महात्ययत्वाच्चयथाक्रमन्ते ॥

मूत्र स्थान में कफ पहुँच कर मेदा मांस और तन के क्लेदको दूषित कर प्रमेह को पैदा करता है उसी तरह गर्म वस्तु के खाने से पित्त कुपित होकर पूर्व कथित मेद माँस को दुष्ट कर प्रमेह को पैदा करता है और वायु यह दोष नष्ट होने से धातु वसा मज्जादिक को आकर्षित कर मूत्रेन्द्रिय के मुख पर लाकर प्रमेह को पैदा करे कफ से उत्पन्न दस प्रमेह साध्य हैं और पैत्तिक छैः प्रमेह कष्टसाध्य हैं और वातिक चार प्रमेह मज्जादि धातु के आकर्षण करने से अत्यन्त वेदनाकारक है अतः यह असाध्य हैं ॥ २-३ ॥

प्रमेह का दोषदूष्य संग्रह

कफःसपित्तपवनश्चदोषमेदोस्रशुक्रांबुवसालसीकाः ॥
मज्जारसौजःपिशितंचदूष्याःप्रमेहिणांविंशतिरेवमेहा ।४

कफ पित्त कब्जी ये दोष और मेदा रक्त वीर्य जल माँस चर्बी माँसधोवन मज्जा रस और गाँस ये दूसित जानने इन दोष और दूष्य दोनों से बीस तरह के प्रमेह होते हैं ॥४॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

पूर्व रूप

दन्तादीनांमलाढ्यत्वं प्राग्रूपंपाणिपादयो ।।५।।
दाहश्चिक्कणतादेहेतृट्श्वाश्चोपजायते ।।

दाँतों में आदि शव्द से जीभ तालु आदि का ग्रहण है इनमें अत्यन्त मैल रहे हाथ और पैरों में दाह होवे अङ्ग में चिपकनापन होय प्यास लगे बाल आपस में चिपट जावे नाखून बढ़े तब समझना चाहिये कि प्रमेह होने वाला है ।।५।।

सामान्य लक्षण

सामान्यंलक्षणतेषांप्रभूताविलमूत्रता ।।६।।

अत्यन्त गाढ़ा और ज्यादा पेशाब उतरे तो प्रमेह के सामान्य लक्षण हैं ।।६।।

प्रमेह के कारण

दोषदूष्याविशेषेपितत्संयोगविशेषत ।।
मूत्रवर्णादिभेदेनदोमेहेषुकल्प्यते ।। ७ ।।

दोष और दूष्य की अधिकता तथा न्यूनता से तथा संयोग भेद से मल के रंग आदि में जो अन्तर होता है उससे प्रमेह के भेद का ज्ञान करना चाहिये । जैसे सफेद काला पीला नीला लाल और सफेद लाल मिला हुआ इत्यादिक अनेक भेद होते हैं । उसी प्रकार दोष और दूष्य की बाहुल्यता अल्पता का और संयोग भेद से प्रमेह के भेद जानने चाहिये ।७।।

कफज १० प्रमेह के लक्षण

स्वच्छंबहुसितंशीतं निर्गंधमुदकोपमम् ।।मेहत्युदकमेहे-
नकिंचिदाविलपिच्छिलम ।।८।। इक्षोरसमिवात्यर्थमधुरंचे

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

चुमेहतः ॥ सांद्रीभवेत्पर्युषितंसान्द्रमेहेनमेहति ॥ ९ ॥
सुरामेहीसुरातुल्यमुपर्यच्छमधोघनम् ॥ संहृष्टरोमापिष्टेन
पिष्टवद्बहुलंसितम् ॥ १० ॥ शुक्राभंशुक्रमिश्रं वाशुक्रमेही
प्रमेहति ॥ मूत्राणून्सिकतामेहीसिकतारूपिणोमलान् ११
शीतमेहीसुबहुशोमधुरंभृशशीतलम् ॥ शनैःशनैःशनै-
र्मेहीमन्दंमन्दंप्रमेहति ॥ १२ ॥ लालातंतुयुतंमूत्रंलाला
मेहेनपिच्छिलम ॥

(१) स्वच्छ बहुत सफेद, ठण्डा, गन्धहीन जलके तुल्य कुछ गाढ़ा और चिकना मूत्र उदक प्रमेह में आता है।

(२) इक्षु प्रमेहमें-ईखके रस तुल्य विशेष पीला पेशाब होता है!

(३) सान्द्रप्रमेहमें-मूत्र रात्रिमें पात्रस्थित होनेसे गाढ़ाहोजाताहै।

(४) सुराप्रमेहमें-मदिरा के समान ऊपर निर्मल नीचे गाढ़ा मूत्र होता है।

(५) पिष्टप्रमेहमें-पिसे चावलों के जलके तुल्य सफेद और पीला मूत्र उतरता है तथा पेशाब करते वक्त रोमाञ्च होय उसे पिष्टप्रमेह कहते हैं।

(६) शुक्रप्रमेहमें—शुक्र के तुल्य पेशाब आता है तथा वीर्य मिला हुआ पेशाब होता है।

(७) सिकताप्रमेहमें-मूत्र के सङ्ग बालू के तुल्य कठोर और कफ के छोटे-छोटे कण गिरते हैं।

(८) शीतप्रमेहमें- मधुर और शीतल पेशाव बारम्बार रहता है

(९) शनैर्मेहमें—मूत्र धीरे धीरे उतरता है।

(१०) लालप्रमेहमें-पेशाब लार के समान तार वाला तथा स्निग्ध उतरता है ॥८—१२॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

पैत्तिक ६ प्रमेहों के लक्षण

गंधवर्णरसस्पर्शैःक्षारेणक्षारतोयवत् ॥ १३ ॥
नीलमेहेननीलाभंकालमेहीमषीनिभम् ॥
हारिद्रमेहीकटुकंहरिद्रासन्निभंदहत् ॥ १४ ॥
विस्रमांजिष्ठमेहेनमंजिष्ठासलिलोपमम् ॥
विस्रमुष्णांसलवणांरक्ताभंरक्तमेहतः ॥ १५ ॥

(११) क्षार प्रमेह में-खारी जल के तुल्य गन्धवर्ण स्पर्श रस सदृश मूत्र निकलता है ।

(१२) नीलप्रमेहमें-नीले वर्ण का पपैया के पङ्ख सदृश पेशाब निकलता है ।

(१३) कालप्रमेहमें-स्याहीके समान काला पेशाब निकलता है ।

(१४) हारिद्र प्रमेहमे-तीक्ष्ण हल्दी के समान पेशाब उतरता है और दाह होती है ।

(१५) मांजिष्ठ प्रमेहमें–आम दुर्गन्ध और मजीठके तुल्य पेशाब उतरता है ।

(१६) रक्तप्रमेहमें-रक्त के समान दुर्गन्धित गरम और खारी मूत्र उतरता है ॥१३—१५ ॥

वातिक ४ प्रमेहों के लक्षण

वसामेहीवसाश्रंवसाभंमूत्रयेन्मुहुः ॥ मज्जाभंमज्ज-
मिश्रंवा मज्जमेहीमुहुर्मुहुः ॥१६॥ कषायमधुरंरूक्षंक्षौ
द्रमेहंवदेद्बुधः ॥ हस्तीमत्तइवाजस्रंमूत्रंवेगविवर्जितम् ॥
सालसीकंविबद्धंचहस्तिमेहीप्रमेहति ॥ १७ ॥

(१७) बसा प्रमेहमें–चर्वी के सदृश मूत्र होता है ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

(१८) मज्जाप्रमेहमें-मज्जासे मिला हुआ अथवा मज्जा के तुल्य मूत्र होता है।

(१९) क्षौद्रप्रमेहमें-कसेला, मीठा और स्निग्ध मूत्र निकलता है।

(२०) हस्तिप्रमेही मनुष्य मदोन्मत्त गज के तुल्य सहसा वेग-रहित तारके सहित देर-देर में पेशाब करता है ॥१६—१७॥

कफके प्रमेहके उपद्रवों का कथन करते हैं

अविपाकोऽरुश्छर्दिर्ज्वरःकासःसपीनसः ॥
उपाद्रवाःप्रजायन्तेमेहानांकफजन्मनाम् ॥ १८ ॥

अन्न अच्छी तरह से हजम नही होता है और अन्न की इच्छा न रहे, उल्टी सी आवे, बुखार, खांसी, प्रतिश्याय ये कफज प्रमेह के उपद्रव हैं ॥१८॥

पैत्तिक प्रमेह के लक्षण

बस्तिमेहनयोः शूलंमुष्कावदरणंज्वरः ॥
दाहस्तृष्णाम्लिकामूर्च्छाविड्भेदःपित्तजन्मनाम् ॥१९

मूत्रेन्द्रिय में वेदना होना, अण्डकोश का पक कर फटना, बुखार का होना, तृषा का लगना, खट्टी डकारों का आना, मूर्छा और पतला दस्त होना ये पैत्तिक प्रमेह में उपद्रव होते हैं ॥१९॥

वातज प्रमेह के उपद्रव

वातजानामुदावर्तंकंठहृद्ग्रहलोलतः ॥
शूलमुन्निद्रताशोषःकासःश्वासश्चजायते ॥ २०॥

उदावर्त हो जाना, कण्ठ का रुक जाना, सब वस्तुओंकी इच्छा भक्षण करने की होय, दर्द, नींद जाती रहे, शोष,सूखी, खांसी,श्वास ये उपद्रव वायु के प्रमेह रोग में होते हैं ॥२०॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

प्रमेह के असाध्य लक्षण

यथोक्तोपद्रवाविष्टमतिप्रस्रुतमेवच ॥
पिडिकापीडितंगाढःप्रमेहोहन्तिमानवम् ॥२१॥

ऊपर जो अविपाक आदि लक्षण कहे हैं वे सम्पूर्ण होंय, जो मूत्र अत्यन्त करें शराविका आदि पिडिका होजाय ऐसे लक्षणोंयुक्त प्रमेहरोगी नाश को प्राप्त होता है ॥२१॥

जातःप्रमेहीमधुमेहिनोयानसाध्यरोगःसहिबीजदोषात् ॥
येचापिकेचित्कुलजाविकाराभवन्तितांश्चप्रदन्त्यसाध्यान् ॥ २२ ॥

जिस पुरुष के प्रमेह होता है उसके जो सन्तति पैदा होती है उस सन्तान के भी प्रमेह होता है। वीर्य के दोषसे पैदा प्रमेह रोग असाध्य होता है। कुष्ट आदिक रोग भी पिता पितामह आदिके क्रम से कुछ परम्परागत होने से असाध्य होते हैं ॥२२॥

सर्व प्रमेह की उपेक्षा करने से मधुमेह होजाता है

सर्वएवप्रमेहास्तुकालेनाप्रतिकारिणः ॥
माधुमेहत्वायांतितदाऽसाध्याभवंतिहि ॥२३॥
मधुमेहमधुसमंजायतेसकिलद्विधा ॥
क्रुद्धेधातुक्षयाद्वायौदोषावृतपथेऽथवा ॥ २४॥

सर्व प्रमेह चिकित्सा के विना मधुमेह संज्ञाको प्राप्त होता है सो वह मधुमेह दो प्रकार का होता है—एक तो धातु क्षय होनेसे वायु दुष्ट होकर होता है और दूसरा पित्त आदि दोषों से वायु का मार्ग रुकने से होता है ।२३—२४

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

आवरण के लक्षण

आवृतोदोषलिंगानिसोऽनिमित्तंप्रदशयन् ।।
क्षणात्क्षीणःक्षणात् पूर्णोभजतेकृच्छ्रसाध्यताम् ।।२५।।

आच्छादित वायु से उत्पन्न मधुमेह जिस पित्तादि दोष से आवृत हो उसके लक्षण अचानक दीखें, क्षण में नाश होजाय पलमें पूर्ण होजाय, ऐसे लक्षणोंयुक्त मधुमेह कष्टसाध्य होता हैं ।।२५।।

मधुरंयच्चमेहेषुप्रायोमध्विवमेहति ।।
सर्वेऽपिमधुमेहाख्यांमाधुर्याच्चतनोरतः ।।२६।।

सब प्रमेहों में प्रायः पेशाब शहतके तुल्य मीठा होता है और प्रमेह रोगी मनुष्य का शरीर भी मधुर होता है, अतः सब तरह के प्रमेहों को मधुमेह कहते हैं ।।२६।।

❀ इति प्रमेहनिदानं समाप्तम् ❀

प्रमेहपिडिकानिदानम्

शराविकाकच्छपिकाजालनीविनताऽलजी ।।
मसूरिकासर्षपिकापुत्रिणीसविदारिका ।।१।।
विद्रधिश्चेतिपिडिकाःप्रमेहोपेक्षयादश ।।
संधिमर्मसुजायन्तेमांसलेषुचधामसु ।। २ ।।

प्रमेह की उपेक्षा करने से दस तरह की पिडिकाएं होती हैं—शराविका,कच्छपिका, जालिनी, विनता, अलजी, मसूरिका, सर्षपिका पुत्रिणी, विदारिका. और विद्रधि ।।१—२।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

सम्पूर्ण पिडिकाओं के लक्षण

अंतोन्नतातुतद्रूपानिम्नमध्याशराविका ।। सदाहाकूर्मसंस्थाश्चाज्ञेयाकच्छपिकाबुधैः ।। ३ ।। जालनीतीव्रदाहातुमांसजालसमावृता ।। अवगाढरुजात्क्लेदापृष्ठेवाप्युदरेऽपिवा ।।४।। महतीपिडिकानीलासाबुधैर्विनतास्मृता ।। रक्तासितास्फोटवतीदारुणात्वलजी भवेत ।। ५ ।। मसूरदलसंस्थानाविज्ञेयातुमसूरिका ।। गौरसर्षपसंस्थाना तत्प्रमाणाचसर्षपी ।।६।। महत्यल्पचितापिपुत्रिणी ।। विदारीकंदवद्वृत्ताकठिनाचविदारिका ।। ७ ।। विद्रधेर्लक्षणैर्युक्ताज्ञेयाविद्रधिकातुसा ।।

१. शराविका—जो पिडका शराव के तुल्य अन्तमें ऊँची और मध्य में नीची होती है, उसे शराविका कहते है । २. कच्छपिका—ये पिडका कच्छपकी पीठ के समान किंचित् दाहयुक्त होती है । ३. जालनी—जिसमें अत्यन्त जलनहो और मांस वृद्धि को प्राप्त होजाय उसे जालनी कहते हैं । ४. विनता—पीठ और पेटमें पैदा होने वाली नीले रंग की पिडका को विनता कहते हैं । ५. अलजी—जो पिडका लाल काली छोटे-छोटे फोड़ों से युक्त होय उसे अलजी पिडका कहते है । मसूरिका—मसूर के दाने के तुल्य जो पिडका होती है, उसे मसूरिका कहते है । ७. सर्षपिका—सफेद सरसोंके तुल्य जो पिडका होती है उसे सर्षपिका कहते हैं । ८. पुत्रिणी—जो छोटी २ फुंसियों से युक्त एक बड़ी फुन्सी होय उसे पुत्रिणी पिडका कहते है । ९. विदारिका—जो पिडका विदारी कन्द के तुल्य गोल और कठिन होती है उसे विदारिका कहते हैं । १०. विद्रधिका—विद्रधिका पिडका में विद्रधि के लक्षण होते हैं ॥३—७॥

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

पिडका किस प्रकार पैदा होते हैं

येयन्मयाःस्मृतामेहास्तेषामेतास्तुतन्मयाः।। ॥ ८ ॥
विनाप्रमेहमप्येताजायन्तेदुष्टमेदसः ॥
तावच्चैतानलक्ष्यन्तेयावद्वास्तुपरिग्रहः ॥ ९ ॥

जो प्रमेह जिन दोषों के विकार पैदा होता है उसकी पिडका भी उनहीं दोषों के विकार से होती, ये पिडका प्रमेह के विना दूषित हो नेसे पैदा होती है, जब तक पिडका अपना पूर्ण रूपसे घेरा नहीं बना लेती तब तक उसके लक्षण उत्पन्न नहीं होते ॥८—९॥

असाध्य पिटिकाओं के लक्षण

गुदेहृदिशिरस्यंसेपृष्ठेमर्मसुचोत्थिताः ॥
सोपद्रवादुर्बलाग्नेःपिडिकाःपरिवर्जयेत् ॥ १० ॥

गुदा स्थान में पैदा हुई और हृदय में, मस्तक में, कन्धामें, पीठ में और मर्म स्थान में पैदा हुई पिडका और उपद्रवयुक्त होनेसे तथा दुर्बलाग्नि मनुष्य की पिडका असाध्य होती है। चरक ऋषि ने पिडका के उपद्रव इस प्रकार कहे। "तृट कास मास सङ्कोच मोह हिकामदज्वराः । विसर्पमर्मसंरोधाः पिटिकानामुपद्रवाः," ❋शङ्का❋- क्योंजी स्त्रियों के प्रमेह क्यों नहीं होता ! ❋समाधान❋-इसका कारण अन्य ग्रन्थों के मतसे इस प्रकार है—रजःप्रसेकान्नारीणांमासिमासि विशुध्यति । कृत्स्नंशरीरदोषाश्चनप्रमेहंत्यतःस्त्रियां ॥ अर्थ-स्त्रियाँमहीने महीने के बाद रजस्वला होती हैं अतः इनके सम्पूर्ण शरीर में तथा सब दोषों में शुद्धि होती है। इसलिये स्त्रियों के प्रमेह नहीं होता और किसी भी ग्रन्थ में स्त्रियों के प्रमेह होना नहीं लिखा है। यह अत्यन्त बलवान कारण है ॥१०॥

❋ पिडकानिदानं समाप्तम् ❋

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

मेदोनिदानम्

कारण और सम्प्राप्ति

अव्यायामदिवास्वप्नश्लेष्मलाहारसेविनः ॥
मधुरोऽन्नरसःप्रायःस्नेहान्मेदोयिवर्द्धते ॥ १ ॥
मेदसावृत्तमार्गत्वात्पुष्यंत्यन्येनधातवः ॥
मेदस्तुचीयतेयस्मादशक्तःसर्वकर्मसु ॥ २ ॥

परिश्रम के न करने से, दिन में सोने की वजह से और जो पदार्थ कफ को पैदा करने वाले हैं उनके भक्षण करने से, अन्न, रस (आम रस के तुल्य) मीठा हो जाता है और चिकनापन होनेके कारण वह आम मेदको बढ़ाता है, वृद्धि को प्राप्त हुए मेद के कारण शरीर के सम्पूर्ण स्रोत रुक जाते हैं तब रक्त, मांस आदि धातु पुष्ट नहीं होतो मेद विशेष वृद्धि को प्राप्त हो जाता है तब मनुष्य वीर्यरक्त धातुओं के पुष्ट न होने के कारण सब कार्य करने को असमर्थ हा जाता है ॥१—२॥

मेदस्वी पुरुष के लक्षण कहते हैं

क्षुद्रश्वासतृषामोहस्वप्नक्रथनसादनैः ॥ युक्तःक्षुत्स्वेददौर्गन्ध्यैरल्पप्राणोल्पमैथुनः ॥३॥ मेदस्तुसर्वभूतानामुदरेष्वस्थिषुस्थितम् ॥ अतएवोदरेवृद्धिः प्रायोमेदस्विनो भवेत् ॥ ४ ॥

तब क्षुद्र श्वास, तृषा, मूर्छा, नींद, अचानक श्वास का रुक जाना, अंग में ग्लानि होना, क्षुधा, स्वेद और दुर्गन्धियुक्त होना, शक्तिका नाश हो जाना और स्त्री प्रसंग करने की इच्छा न होना

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

इत्यादिक लक्षणों से युक्त मनुष्य मेदरोगी होता है मेद सब मनुष्यों के पेट में रहता है, इसी लिए मेदस्वी पुरुष का उदर बढ़ता है ॥३—४॥

मेदस्वी की अवस्था

मेदसावृतमार्गत्वाद्वायुःकोष्ठेविशेषतः ॥
चरन्संधुक्षयत्यग्निमाहारंशोषयत्यपि ॥ ५ ॥
तस्मात्सशीघ्रंजरयत्याहारंचापिकांक्षति ॥
विकराश्चश्नुतेघोरान्कांश्चित्कालव्यतिक्रमात् ॥६॥
एतावुपद्रवकरौविशेषादग्निमारुतौ ॥
एतौहिदहतःस्थूलंवनंदावानलोयथा ॥ ७ ॥

मेद के द्वारा वायु के मार्ग रुक जाने की वजह से वायु कोठे में घूमा करता है और अग्नि को प्रज्वलित करके भोजन को शीघ्र ही शोषण करता है तब भोजन जल्दी पच जाता है और फिर भोजन करने की इच्छा पैदा होती है । जब भोजन करने में विलम्ब होजाता है तब घोर वातज रोगों की उत्पत्ति होती है, यह अग्नि और वायु शरीरस्थ होने से बड़ा कठिन उपद्रव करते हैं। जिस प्रकार अग्नि बनको जला देती है उसी प्रकार अग्नि और वायु ये दोनों मिलकर स्थूल आकार वाले मनुष्य को जलाते हैं ॥५—७।

मेद के असाध्य चिन्ह

मेदस्यतीवसंवृद्धे सहसैवानिलादयः ॥
विकारान्दारुणान्कृत्वानाशयंत्याशुजीवितम् ॥८॥

मेद विशेष बढ़ जाने से वायु आदि दोष अचानक घोर मेह पिडिका बुखार, भगन्दर, विद्रधि, वात रोगादि पैदा करते हैं तब मनुष्य शीघ्रही मृत्यु को प्राप्त हो जाता है ॥८॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अति स्थूल के लक्षण

मेदोमांसातिवृद्धत्वाच्चलस्फिगुदरस्तनः ॥
अयथोपचयोत्साहोनरोऽतिस्थूलउच्यते ॥ ६ ॥

मेद और माँस ये अत्यन्त वढ़ जाँने से शरीर इतना मोटा हो जाता है कि कटि स्नान का नीचा हिस्सा और ऊपर तथा स्तन स्थूल होने की वजह से हिलने लगते हैं, उत्साह नाश हो जाता है और मेद रोग वाला मनुष्य अत्यन्त मोटा हो जाता है ॥ ६ ॥

इति माधवकर प्रणीत माधवनिदानस्थ मेदरोगनिदानं समाप्त

कार्श्यनिदानम्

प्रसङ्गवशात् क्षीणता रोग का निदान ग्रन्थान्तर से लिखते हैं।

वातोरूक्षान्नपानानिलंघनप्रमिताशनम् ॥
क्रियातियोगः शोकश्चवेगनिद्राविनग्रहः ॥ १ ॥
नित्यंरोगारतिर्नित्यंव्यायामोभोजनाल्पता ॥
भीतिर्धनादिचिंताचकार्यकारणमीरितम् ॥ २ ॥
क्रोधोतिमैथुनंचैवशुक्रव्याधिस्तथैवच ॥
कार्श्यस्यहेतवःप्रोक्ताःसमस्तैपितांत्रिकैः ॥ ३ ॥

दूषित वायु रुक्ष अन्न [चना कांगुनी आदि] रुक्षपान, उष्ण किया हुआ जल आदि. लङ्घन, अल्प भोजन, वमन तथा दस्तों का उत्पन्न होना, दुःख, बान्ध वियोगादि पेशाव और मल का वेग रोकना, निद्रा को रोकना, अधिक स्वास्थ्यहीन रहना. सर्वदा अरति रहना, व्यायाम, दण्ड, कसरत, मार्ग गमन आदि श्रम, अति भय-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

भीत होना, द्रव्यादिक की चिन्ता, शोच अत्यन्त स्त्री प्रसंग आदिक वीर्य रोगादिक सब क्षीणता होने के हेतु हैं ॥१—३॥

क्षीण मनुष्य के लक्षण

शुष्कस्फिगुदरग्रीवाधमनीजालसन्ततिः ॥
अस्थिशोषोतिकृशतः स्थूलपर्वनरोमतः ॥ ४ ॥

जिस मनुष्य के कूले उदर, गर्दन और धमनी (नाड़ियों का जाल) ये सम्पूर्ण सूख जाय और अस्थि में भी सूखापन आजाय और जोड़ स्थूल न होंय वह पुरुष लटा हुआ होता है ॥४॥

[अत्यन्त थके हुए मनुष्य की वर्जनीय वस्तु]

व्यायाममतिसौहित्यंक्षुत्पिपासामहौषधम् ॥
नकृशःसहतेतद्वदतिशीतोष्णमैथुनम् ॥ ५ ॥

व्यायाम (दण्ड कसरत आदि) का करना अति तृप्ति होनेतक भोजन करना क्षुधा और प्यास, उत्कट औषधि, अति शीतलता, अत्यन्त गर्मी और अत्यन्त मैथुन, इनके लिये कमजोर मनुष्य सहन नहीं कर सकते हैं, अतः यह वस्तु कृश मनुष्यको वर्जनीय हैं ॥५॥

अत्यन्त थके हुए मनुष्य के जो रोग होते हैं उनका कथन करते हैं।

मोहःकासःक्षयःश्वासगुल्मार्शास्युदराणिच ॥
भृशंकृशंप्रधावंतिरोगाश्चग्रहणीमुखा ॥ ६ ॥

जो व्यक्ति बुखार आदि रोग से थकजाय अथवा वात रुक्षान्न पान आदि से कृश हो जाय, वह मनुष्य कुपथ्य सेवन करे, विदाही और अभिष्यन्दी वस्तुओं का सेवन करे तब प्लीहा और खट्टी वस्तु खाय तब खाँसी होती है और अत्यन्त स्त्री प्रसंग करने से क्षयीरोग

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

होता है और व्यायाम करके ठण्डे भोजन और जल पीने से श्वास रोग होता है और जो रूखा अन्न पान करे, कटु खट्टा खाय, शीतल गुरु स्निग्ध पदार्थ का सेवन करे तो गुल्म रोग होता है और अर्श-कारक वस्तु का सेवन करने से बवासीर रोग पैदा होता है ॥६॥

शङ्का कोई कोई कृशभी बलवान होता है इसका क्या कारण है !

आधानसमयेयस्यशुक्रभागोधिकोभवेत् ॥
मेदोभागस्तुहीनःस्यात्सकृशोऽपिमहाबलः ॥७॥

गर्भ स्थापित होने के समय वीर्य का भाग अधिक होय और मेद का भाग न्यून होय तो मेदाधिक्य होने से कृशता और वीर्याधिक होने से शक्ति होती है और इसका वीर्य अधिक होना ही मुख्य कारण है । कतिपय मनुष्य स्थूल होने पर शक्तिहीन होते हैं उनका कारण कहते ॥७॥

मेदसोंशोधिकोयस्यशुक्रभागोल्पकोभवेत् ॥
सस्निग्धोपिसुपुष्टोपिबलहीनोविलोक्यते ॥८॥

गर्भ रहते वक्त मेद का अधिक होना और वीर्य का कम होना स्थूल मनुष्य के कमजोरी होने का कारण है ॥८॥

* दृष्टान्त *

यथापिपीलिकास्वल्पायथाचवरटीबलात् ॥
स्वतश्चतुगुर्णंभारंनीत्वागच्छतिसम्मुखम् ॥ ९ ॥

जैसे चींटी अति कृश होने पर भक्ष्य वस्तु दाल, चावल आदि गुरु वस्तुओं को खींचकर बिल में ले जाती है और पीली मछली झींगुर आदि आपसे चौगुने बोझ में होने पर स्वबिल मध्य में ले जाती है उसी प्रकार बलवान मनुष्य जानना ॥९॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

स्वभावात्कृशकायोयःस्वभावाल्पपावकः ॥
स्वभावादबलोयश्चनस्यनास्तिचिकित्सतम् ॥१०॥

असाध्य कार्श्य के लक्षण कहते हैं।

जिन मनुष्य का प्राकृतिक ही कृश शरीर होय और जिसकी स्वभाव से ही मन्दाग्नि होय और जो स्वभावतः बलहीन है उसकी चिकित्सा नहीं हो सकती ॥ १०

॥ इति कार्श्य निदानं समाप्तम् ॥

उदररोगनिदानम्

❀ अग्नि का दूषित होना हीं उदर रोग का मुख्य हेतु है ❀

रोगाःसर्वेऽपिमन्देऽग्नौसुतरामुदराणिच ॥
अजीर्णान्मलिनैश्चान्नैर्जायन्तेमलसंचयात् ॥ १ ॥

अग्नि मन्द होने से प्राणी के सम्पूर्ण रोग होते हैं परन्तु उदर रोग तो विशेष करके ही होता है। कारण कि अग्निमांद्य यह त्रिदोषज है और अजीर्ण से, मल न अन्न भक्षण से और मल दोष पुरीषादिक इनके एकत्र होने से उदर रोग होता है ॥ १ ॥

उदर रोग की सम्प्राप्ति

रुद्ध्वास्वेदांबुवाहीनिदोषाःस्रोतांसिसंचिताः ॥
प्राणाग्न्यपानान्संदूष्यजनयंत्युदरंनृणाम् ॥ २ ॥

वातादिक दोष दूषित होकर स्वेद तथा उदकवाहिनी नाड़ियोंके मार्ग को रोक कर अत्यन्त वृद्धिगत हो, प्राणवायु अग्नि और अपानवायु इनको बिगाड़ कर मनुष्यों के शरीर में उदर रोग पैदा करते हैं। उदर रोग का पूर्व रूप सुश्रुत में इस प्रकार कथन किया

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

है-"तत्वपूर्वरूपबलवर्णकांत्रीवलीविनशोजठरेतुराज्यः । जीर्णापरिज्ञोंनविदाहवत्योवस्तौरुजःपादगतश्चशोथः ॥'' ॥२॥

उदर के सामान्य लक्षण

आध्मानंगमनेऽशक्तिदौर्बल्ययदुर्बलाग्निता ॥
शोथःसदनमंगानांसंगोवातपुरीषयोः ॥ ३ ॥
दाहस्तंद्राचर्वेषु जठरेषुभवंतिहि ॥

पेट का फूलना, डोलने की सामर्थ्य न होय, कमजोरी होजाय, अग्नि मन्दी हो जाय, सूजन, शरीर में ग्लानि, वायु तथा मल का रुकना, दाह, तन्द्रा, ये लक्षण सम्पूर्ण उदर रोग में होते हैं ॥३॥

उदर रोग की संख्या

पृथग्दोषैः समस्तैश्चप्लीहबद्धक्षतोदकैः ॥ ४ ॥
संभवंत्युदराण्यष्टौतेषांलिंगंपृथक्छृणु ॥

अलग दोषों से अर्थात् वात पित्त कफ से ३, सन्निपात से १, प्लीहा से प्लीहोदर १, बद्धोदर १, क्षतोदर १, सब मिलाकर के ८ हुए, अब इनके अलग २ लक्षण कहते है ॥ ४ ॥

वातज उदर रोग के लक्षण

तत्रवातोदरेशोथःपाणिपन्नाभिकुक्षिषु ॥ ५ ॥
कुक्षिपार्श्वोदरकटीपृष्ठरुक्पर्वभेदनम् ॥
शुष्ककासोंऽगमर्दोऽधोगुरुतामलसंग्रहः ॥ ६ ॥
श्यावारुणत्वगादित्वमकस्माद्वृद्धिह्रासवत् ॥
सतोदभेदमुदरंतनुकृष्णशिराततम् ॥ ७ ॥
आध्मातदृतिवच्छब्दमाहतंप्रकरोतिच ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

वायुश्चात्रसरुक्शब्दोविचरेत्सर्वतोगतिः ॥ ८ ॥

वातज उदर रोग में हाथ पैर तथा नाभि और कूख इन स्थानो में सूजन हो जाती है, सन्धियों टूटना तथा कूक, पशु और कमर उदर इनमें पीड़ा होना, सूखी खांसी का आना, गात्रों में भड़कन होना, कमर से नीचे के भाग में गुरुता, मल का इकट्ठा होना, चर्म नख और नेत्रों का लाल होजाना, उदर अचानक दीर्घ व अचानक ही छोटा हो जाय, सुई के चुभने की सी पीड़ा होना, पेट की सर्वत्र काली काली नसों का दीखना, चुटकी मारने से पेट में शब्द होना इत्यादिक लक्षण बात के उदर रोग में होते हैं ॥५—८॥

पैत्तिक उदर रोग के लक्षण

पित्तोदरेज्वरोमूर्च्छादाहस्तृट्कटुकास्यता॥भ्रमोतिसारः
पीतत्वंत्वगादावुदरहरित् ॥९॥ पीतताम्रशिरानद्धंस-
स्वेदंसोष्मदह्यते ॥ धूमायतेमृदुस्पर्शंक्षिप्रपाकप्रदूयते॥१०

पैत्तिक उदर रोग में बुखार, मूर्छा, दाह, प्यास, मुख का कटु होना, भ्रम, दस्त, नख नेत्रादिक में पीलापन, उदर हरे वर्ण का हो जाय, पीली ताम्र के तुल्य नाड़ियों से उदर व्याप्त होजाय, स्वेद का निकलना, गर्मी से सर्व देह में दाह का होना, आँतों से धूम्र का निर्गमन दीखना, कर के छूने से नरम प्रतीत होय, जल्दी पान होय जलोदरत्व की प्राप्त होय और उसमें अत्यन्त वेदना होय इसे पित्तल उदर रोग समझना चाहिये ॥९—१०॥

कफोदर के लक्षण

श्लेष्मोदरंऽगसदनंस्वापःश्वयथुगौरवम् । ।निद्रोत्क्ले-
शोऽरुचिःश्वासःकासशुक्लत्वगादिता ॥ ११ ॥ उदरं-
स्तिमितंस्निग्धंशुक्लराजीततंमहत् ॥ चिराभिवृद्धिकठिन

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

शीतस्पर्शंगुरुस्थिरम् ॥ १२ ॥

कफ से उत्पन्न उदर रोग में हाथ तथा पैर आदि अवयवों में शून्यता होती है और जकड़ जाते हैं सूजन और अंग भारी हो जाते हैं, निद्रा बहुत अधिक आती है, वमन आना सा प्रतीत होता है, अन्न द्वेष, श्वास, कास का होना । त्वचा, नाखून, नेत्रादिक सफेद होते हैं, उदर निश्चल, स्निग्ध सफेद नसों से व्याप्त हों, इसकी वृद्धि चिरकाल में होय, उर कठिन मालूम होय, ठण्ड भारी स्थिर होय, उसे कफोदर कहते हैं ॥ ११—१३ ॥

सन्निपातोदर के लक्षण

स्त्रियोऽन्नपानंनखरोममूत्रविडार्तवैर्युक्तमसाधुवृताः ॥
यस्मप्रयच्छंत्यरयोगरांश्चदुष्टांबुदुषीविषसेवनाद्वा ॥ १३ ॥
तेनाशुरक्तं कुपिताश्चदोषाःकुर्यःसुघोरंजठरंत्रिलिंगम् ॥
तच्छीतवातेभृशदुर्दिनेवाविशेषतःकुप्यतिदह्यतेच ॥१४॥
सचातुरोमूर्च्छतिहिप्रसक्तंपांडुःकृशःशुष्यतितृष्णयाच ॥
दूष्योदरंकीर्तितमेतदेव--

निन्दनीय आचरण करने वाली स्त्री जिस मनुष्य का नाखून बाल मल पेशाब रज रक्त को मिलाकर अन्न देय, अथवा जिसका वैरी जहर देवे अथवा जहर मिला मछली, जल तिनका पत्ता आदि से औटाया हुआ जल और दूषा जहर के सेवन से रक्त और वातादिक दोष शीघ्र कुपित होकर अत्यन्त घोर त्रिदोषज उदर रोग उत्पन्न करते हैं । यह शीत कालमें अथवा शीतल पवन चले उस समय या वर्षा के झड़ होने के समय मे विशेष कुपित होता है, इसमें दाह होती है, रोग मूर्छागत हो जाता है, शरीर का पीला वर्ण हो जाता है कृशता हो जाती है, तृषा के कारण मुख सूख जाता है इसे

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

दूष्योदर भी कहते हैं, अतः दोषों को भी दूष्य कहते हैं। दोषों के होने के कारण ये रोग दूष्योदर कहा जाता है ॥ १३—१४ ॥

प्लीहोदर के लक्षण

प्लीहोदरंकीर्तयतोनिबोध ॥ १५ ॥ विदाह्यभिष्यंदिरतस्यजंतोःप्रदुष्टमत्यर्थमसृक्कफश्च ॥ प्लीपाभिवृद्धिकुरुत प्रवृद्धौप्लीहोत्थमेतज्जठरंवदन्ति ॥ १३ ॥ तद्वामपार्श्वे परिवृद्धिमेतिविशेषतःसीदतिचतुरोऽत्र ॥ मन्दज्वराग्निः कफपित्तलिंगैरुपद्रुतःक्षीणबलोऽतिपांडुः ॥ १७ ॥

अब प्लीहोदर के लक्षण कहते हैं, विदाही और अभिस्यन्दी दध्यादि पदार्थों के अत्यन्त सेवनसे पुरुष का कफ और रक्त अत्यन्त दुष्ट हो प्लीहा की वृद्धि कर देते हैं तब उदर बढ़ जाताहै उसे प्लीहोदर कहते हैं। प्लीहोदर में उदर बांई तरफ बढ़ता है और रोगी बहुत पीड़ित रहता है। मन्द बुखार बढ़ता है, मन्दाग्नि हो जाती है तथा कफ पित्तोदर के लक्षण मिलते है, बल क्षीण हो जाता है और शरीर का वर्ण पीला हो जाता है ॥१५—१७॥

तकृद्दाल्युदर के लक्षण

सव्यान्यपार्श्वेयकृतिप्रदुष्टे ज्ञेयंयकृद्दाल्युदरंतदेव ॥१८॥

दाहिनी तरफ जो यकृत कहिये कलेजा है दुष्ट होकर प्लीहोदर के तुल्य उदर बढ़ जाता है, उसे यकृद्दाल्युदर कहते हैं। दोषों से यकृत का भेद होता है इसी लिये यकृदालि उदर कहते हैं ॥१८॥

दोषों के सम्बन्ध

उदावर्त्तरुजानाहैर्मोहतृड्दहनज्वरैः ॥
गौरवारुचिकाठिन्यैर्विद्यात्तत्र मलान्क्रमात् ॥१९॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

उदावर्त, शूल, अफरा इनसे वायु, मोह तृषा ज्वर इनसे पित्त और गुरुता अन्न द्वेष कठिनता इनसे कफ. ऐसे क्रमपूर्वक दोषों का सम्बन्ध जानना ॥१९॥

यस्याँत्रमन्नैरुपलेपिभिर्वाबालाश्मभिर्वापिहितंयथावत् ॥
संचीयतेतस्यमलःसदोषःशनैःशनैसंकरवच्चनाड्याम् ।२०
निरुध्यतेतस्यगदेपुरीषँनिरेतिकृच्छ्रादतिचाल्पमल्पम् ॥
हन्नाभिमध्येपरिवृद्धिमेतितस्योदरंबद्धगुदंवन्ति ॥२१॥

भारी और स्निग्ध पदार्थ (शाक आदि) बहुत ज्यादा खाने से अथवा वाल या पत्थर के कण अन्न के संग खाने से जिसकी आंतमें बद्धता हो जाती है, उस पुरुष का दोष सहित मल शनैः२ अंतड़ीली नड़ी में होकर जैसे झाड़ू से झाड़ा हुआ तृण फूल आदि क्रमसे बढ़ै उसी प्रकार बढ़ै और मल बड़े कष्ट के साथ गुदा से थोड़ा थोड़ा निकले, जब मल का निकलना बन्द हो जाय तब मल दोषों से गुदा से ऊपर आवे तब उदर बढ़े है अर्थात हृदय और नाभि के बीच अन्न पाकस्थान की वृद्धि होती है इसी से इसको बद्ध गुदोदर कहते हैं अथवा गुदा के ऊपर आंतों को बद्ध होने से बद्ध गूदा कहते हैं, यह मत चन्द्र का है ॥२०—२१॥

क्षतोदर के लक्षण

शल्यंतथान्नोपहितंदंत्रँभुक्तंभिनत्यागतमन्यथावा ॥
तस्मात्स्रुतोऽन्त्रात्सलिलप्रकाशः स्रावः स्रवेद्वै गुदतस्तु
भूय. ॥ २२ ॥ नाभेरधश्चोदरमेतिवृद्धिंनिरतुद्यते
दाल्यतिचातिमात्रम् ॥ एतत्परिस्राव्यदरंप्रदिष्ट-

काँटा धूल आदि अन्न के साथ मिलकर उदर में चला जाय

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अर्थात पक्काशय में तिरछा चला जाय तब तो आँत छिल जाती हैं और सीधा चला जाय तो कुछ हानि नहीं होती है अथवा जँभाई आदि अशन करने से वा रोकने से आंत फट जाय सो 'चरक, में लिखा भी है, उस फटे आँतों से गलित पानी के समान स्राव पुनः गुदा की जगह होकर निकले, नाभि के नीचे के स्थान में बड़े नोंचने को तथा चीरने की सी वेदना हो। इस क्षतोदर को ग्रन्थान्तर में परिस्राव उदर कहते हैं और इसी को छिद्रोदर कहते है, यह जयदास का मत है ॥ २२ ॥

जलोदर के लक्षण

दकोदरंकीर्तयतोनिबोध ॥२३॥ यःस्नेहपीतोप्यनु
वासितोवावांतोविरिक्तोऽप्यथवानिरूढः॥पिबेज्जलंशी
तलताशतस्यस्रोतांसिदूष्यन्तिहितद्वहानि ॥२४॥
स्नेहोपलिप्तेष्वथवापितेषुदकोदरंतूर्ववभ्युपैति॥स्निग्धं
महत्तत्परिवृद्धनाभिसमाततंपूर्णमिवांबुनाच ॥२५॥
यथादृतिःक्षुभ्यतिकंपतेचशब्दायतेचापिदकोदरंतत् ॥

अब जलोदर की उत्पत्ति कहते है। जिस पुरुष ने स्नेह पान करा हों अथवा अनुवासन बस्ति करी हों, उल्टी की हो अथवा दस्त करे हों अथवा निरुहबस्ति करी हो ऐसा पुरुष शीतल जल पीवे तब उसकी जल बहने वाली नसों के मार्ग तद्क्षण पुष्ट होजाते हैं वे उदक बहने वाले स्रोत चिकने होने से अन्न रस को बाहर निकालकर उदर रोग करते हैं उस जलोदर में चिकनापन दीखे बड़ा नाभि के पास ऊँचा पानी से भरी हुई नस के समान हो जाता है और जैसे मशक हिलने पर पानी के चलने का शब्द होता है वैसे ही पेट की दशा होती है ॥२३–२५।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

नोट—जलोदर में शुरू से ही जल अधिक होता है, अन्य उदर रोगों में कम होता हैं ।

साध्यासाध्य विचार

जन्मनैवोदरंसर्वप्रायः कृच्छ्रतमविदुः ॥ २६ ॥
बलिनस्तदजातांबुयत्नसाध्यंनवोत्थितम् ॥

सब प्रकार के उदर रोग प्रायः जन्म से ही अत्यन्त कष्टसाध्य होते हैं, बलवान मनुष्य के नया उत्पन्न हुआ हो और उसमें पानी पैदा नहीं हुआ हो, ऐसा बड़े यत्न से साध्य होता है ॥२६ ।

पानी पैदा नहीं हुआ हो ऐसे उदर रोग के लक्षण चरक में कहे हैं

अशोथमरुणाभायंसशब्दंनातिभारिकम् ॥ २७ ॥
सदागुडगुडायंतंशिराजालगवाक्षितम् ॥
नाभिंविष्टभ्यपायौतुवेगंकृत्वाप्रणश्यति ॥ २८ ॥
हृद्वंक्षणकटीनाभिगुदंप्रत्येकशूलिनः ॥
कर्कशंसृजतोपानंनातिमन्देचपावके ॥ २९॥
लोलस्याचिरमेवास्येमूत्रेऽल्पेसंहितेविशि ॥
अजामोदकमित्येतैर्युक्तं विज्ञायलक्षणैः ॥ ३० ॥

जातोदक के लक्षण भी चरकमें इस प्रकार कहे हैं सो लिखते हैं ।

यथा—

पयःपूर्णदृतिरिवक्षोभेशब्दकरं ॥ अप्रव्यक्तशिरं शूनं नितान्तमुदरं महत् ॥ ३१ ॥ आलस्यमास्यवैरस्यं मूत्रबहुशकृत्स्रुतम् ॥ जातोदकस्यलिंगंस्यान्मन्दोऽग्निः पांडुतापिच्चः ॥ ३२ ॥

इति

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

पश्चाद्बद्धगुदंतूर्ध्वं सर्वं जातोदकंतथा ॥
प्रायोभवत्यभावायच्छिद्रांत्रंचोदरं नृणाम ॥ ३३ ॥

बद्धगुदोदर १५ दिनके पीछे असाध्य हो जाता है, उसी प्रकार सब तरह के पानी पैदा होने से नाशकारक होते हैं, और छिद्रांत्रोदर यह प्रायः नाशक होता है। कदाचित शल्य अथवा शास्त्र-चिकित्सा जैसी होनी चाहिये ऐसी होने से पानी प्रगटभया उदर रोग छिद्रांत्र अथवा बद्धगुद साध्य होता है। यह इस पदसे सूचना की ॥३३॥

असाध्य लक्षण

शूनाक्षकुटिलोपस्थमुपक्लिन्नतनुत्वचम ॥
बलशोणितमांसाग्निपरिक्षीणंचवर्जयेत ॥२४॥
पार्श्वभङ्गान्नविद्वेषशोथातीसारपीडितम ॥
विरिक्तंचाप्युदरिणंपूर्यमाणंविवर्जयेत ॥ ३५ ॥

जिसके नेत्र सूज गये हों, लिंग टेढ़ा होगया हो, पेट की त्वचा पोली तथा नरम होगई हो, बल, रक्त, मांस और अग्नि, ये क्षीण होगये हों ऐसा रोगी त्याज्य है। पाशुओं में पीड़ा, अन्न में अरुचि, सूजन, दस्त, इनसे व्यथित और दस्त कराने से जिसका उदर फिर पानी से भर जाय ऐसा उदररोगी वैद्यों से त्याज्य होताहै ॥३४-३५॥

इति श्री पं० चोखेलाल कृतायां कृष्णानन्दिनी भाषाटीकायां
माधवनिदाने उदर रोगनिदानं समाप्तः॥

अथ शोथरोगनिदानम्

—:-:—

शोथ रोग की सम्प्राप्ति

रक्तपित्तकफान्वायुदुष्टोदुष्टान्बहिःशिरा. ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

नीत्वारुद्धगतिस्तैर्हि कुर्यात्त्वङ्मांससंश्रयम् ॥
सो सेधं संहतं शोथं तमाहुर्निचयादतः ॥१॥

वायु दूषित हो, निज कारण से बिगड़े हुए रक्तपित्त कफ को बाहर की नसों में प्राप्त हो तब उनकी गति बन्द करे, अब वह वायु चमड़ा और मांस इनके आश्रय से सूजन पैदा करे, वह सूजन ऊँची और कड़ी होय, इसको रक्तसहित त्रिदोषों का आश्रय है अर्थात् सन्निपातात्मक कहते हैं "त्वङ्मांससंश्रयम् इस पदसे व्रण शोथ जो शोथ का भेद है सो स्पष्ट दिखाया क्योंकि व्रण का सम्भव आठ वस्तुओं में होने से होता है सो कहा भी है 'त्वङ्माँसशिरास्नाय्वस्थिसन्धिकोष्ठमर्माणि इति अष्टौ व्रणवर्त्मानि भवंति इति ॥१॥

सर्वहेतुविशेषेस्तुरूपभेदान्नवात्मकम् ॥
दोषैःपृथग्द्वयैःसर्वैरभिघातद्विषदपि ॥२॥

वह शोथ कारण और कार्य भेद से ९ तरह के होते हैं यथा पृथक् २ दोषों से ३, द्वन्द्वज३, सन्निपातज १ अभिघातज १ और विष से १ ऐसे सब मिलकर ९ तरह की सूजन होती है ॥२॥

शोथ रोग का निदान

शुद्ध्यामयाभुक्तकृशाबलानांक्षाराम्लतीक्ष्णोष्णगुरूपसेवा।
दध्याममृच्छाकविरोधितुष्टगरोपसृष्टान्ननिषेवणंच।।३।।अ
शास्यचेष्टावपुषोह्यशुद्धिर्मर्माभिघातोविषमाप्रसूतः।मिथ्यो
पचारःप्रतिकर्मणांचनिजस्यहेतुःश्वयथोःप्रदिष्ट ।.४।।

उल्टी, दस्त आदि शोधन कार्य से, बुखार आदि रोग से, भोजन करने से कमजोर और थके हुए पुरुषों को खट्टे क्षार आदि तीक्ष्ण, गर्म, भारी पदार्थ भक्षण से, दधि खाने से, कच्चे भोजन से,

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

मृत्तिका खाने से, निषिद्ध,विरुद्ध क्षीर मछली आदि संयोगज विषसे, दूषित अन्न से, बवासीर, व्यायाम के न करने से शोधन तुल्य दोषों के न शोधने से, मर्म स्थानों में चोट के लगने से और अपरिपक्व गर्भपात से वमनादि पञ्चकर्मों के मिथ्या योग से मनुष्यों के शरीरमें शोथ रोग पैदा होता है ॥ ३—४ ॥

शोथ रोग का पूर्वरूप

तत्पूर्वरूपं द्ववथुःशिरायामोऽगगौरवम् ॥ ५ ॥

सन्ताप, नाड़ियों में तनने की सी वेदना, देह में गुरुता ये लक्षण सूजन होने वाले मनुष्य के होते हैं ॥ ५ ॥

शोथ के सामान्य लक्षण

सगौरवंस्यादनवस्थित्वंसोत्सेधमूष्माचशिरातनुत्वम् ॥
सलोमहर्षश्चविवर्णताचसामान्यलिंगंश्वयथोःप्रदिष्टम् ६ ॥

शरीर में गुरुता, चित्त में प्रसन्नता होना, ऊँची सूजन और दाह, नस पतली हो जाय,रोमाञ्च और शरीर का वर्ण बदल जाय, ये सूजन के सामान्य लक्षण हैं ॥ ६ ॥

वातिक शोथ के लक्षण

चलस्तनुत्वक्परुषोऽरुणोऽसितः ससुप्तिहर्षार्तियुतोऽनिमित्ततः ॥ प्रशाम्यतिप्रोन्नमतिप्रपीडितोदिवाबलीस्याच्छ्वयथुःसमीरणात् ॥ ७ ॥

वायु से जो शोथ होता है वह चंचल होताहै अर्थात् एक स्थान से दूसरे स्थान पर चला जाता है, त्वचा पतली हो जाती है एवं कठिन लाल काली तथा शून्य पड़ जाती है, तरह २ की पीड़ा और रोमांच तथा वेदना होती है, कभी २ बिना औषधि के ही शान्ति हो जाती है ॥ ७ ॥

पित्तज से उत्पन्न शोथ के लक्षण

मृदुःसगंधोऽसित्तपीतरागवान्भ्रमज्वरस्वेदतृषामदान्वितः।।
यउष्यतेस्पर्शरुगक्षिरागकृत्सपित्तशोथोभृशदाहपाकवान् ८

पित्त की सूजन नरम कुछ दुर्गंधियुक्त काली, पीली और लाल होती है, उसमें भ्रम ज्वर, स्वेद प्यास और उन्मत्तता ये लक्षण होते हैं। दाह होती है, कर स्पर्श से वेदना होती है, नेत्र लाल हो जाते हैं, दाह और पाक विशेष होता है ।।८।।

कफ से उत्पन्न शोथ के लक्षण

गुरुःस्थिरःपांडुररोचकान्वितःप्रसेकनिद्रावमिह्निमांद्यकृत।।
सकृच्छ्रजन्मप्रशमोनिपीडितोनचोन्नमेद्रात्रिबलीकफात्मक

कफ की सूजन भारी स्थिर और पीली होती है. इसके योग से अरुचि, लार का पतन, नींद और वमन, मन्दाग्नि ये लक्षण होते हैं तथा इस सूजन की पैदाइश और नाश बहुत काल में होता है, यह दबाने से ऊपर नहीं उठे, रात्रिमें इसकी प्रबलता होय ।।९।।

सान्निपातिक शोथ के लक्षण

निदानाकृतिसंसर्गाच्छ्वयथुःस्याद्द्विदोषजः ।।
सर्वाकृतिःसन्निपाताच्छोथोव्यामिश्रलक्षण ।।१०।।

दो दोषों के लक्षण से और कारणों से द्वंद्वज शोथ और तीनों दोषों के कारण और लक्षणों से त्रिदोषज शोथ जानना ।। १० ।।

अभिघातज शोथ के लक्षण

अभिघातेनशस्त्रादिच्छेदभेदक्षतादिभिः ।।
हिमानिलोदध्यनिलैर्भल्लातकपिकच्छुजैः ।।११।।
रस,शूकैश्चसंस्पर्शाच्छ्वयथुःस्याद्विसर्पवान् ।।

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

भृशोष्मालोहिताभासःप्रायशःपित्तलक्षणः ॥१२॥

शस्त्र आदि से चोट लगना, घाव होने से जो शोथ होता है, ठण्डी हवा से अथवा समुद्र की वायु से भिलाये के तेल लग जाने से और कौंच की फली के स्पर्श से जो सूजन सो सर्वत्र फैल जाय विशेष दाह होय, उसका वर्ण लाल हो जाय, विशेषतः इसमें पित्त के लक्षण होते हैं ॥११—१२॥

विषज शोथके लक्षण

विषजःसविषप्राणिपरिसर्पणमूत्रणात् ॥
दंष्ट्रादंतनखाघातादविषप्राणिनामपि ॥१३॥
विण्मूत्रशुक्रोपहतमलवद्वस्त्रसंकरात् ।
विषवृक्षानिलस्पर्शाद्गरयोगावचूर्णनात् ॥१४॥
मृदुश्चलोबलबीचशीघ्रोदाहरूजाकरः ॥

विष वाले प्राणियों के अंग पर चलने से अथवा उनके पेशाब करने से अथवा निर्विष जीवों के दाँत, दाढ़ या नख आदि के लगने से अथवा विषले जीव जन्तुओं का मल, पेशाव आदि जिस कपड़े में लगा हो उस कपड़े के पहिनने से, विषैले वृक्ष की हवा लगने से, और कृत्रिम विष शरीर में लगने से विषज शोथ होता है। यथा शोथ कोमल एक स्थान से दूसरे स्थान तक फैलने वाला, नीचे को जाने वाला, शीघ्र पैदा हाने वाला तथा दाह और पीड़ा करनेवाला होता है ॥१३—१४॥

* जिस २ स्थान पर दोष शोथ पैदा करता है उसे कहते हैं *

दोषाःश्वयथुमूर्ध्वं हिकुर्वंत्यामाशयस्थिताः॥१५॥
पक्वाशयस्थामध्येतुवर्चःस्थानगतास्त्वधः ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

कृत्स्नदेहमनुप्राप्ताःकुर्युःसर्वसरंतथा ॥१६॥

आमाशय में स्थिति दोष शरीर के ऊर्ध्व भाग में पक्वाशय में स्थित दोष शरीर के मध्य भाग में शोथ पैदा करते हैं। सम्पूर्ण शरीरमें दोष स्थिति होने से सब शरीरमें सूजन करते हैं ॥१५-१६॥

सूजन के कृच्छादि के भेद

योमध्यदेशेश्वयथुःसकष्टःसर्वगश्चयः॥
अर्धांऽगेऽरिष्टभूतःस्याद्यश्चोर्ध्वं परिसर्पति ॥१७।

जो सूजन मध्य देश में तथा सब देश में हो सो कष्टसाध्य है और सूजन नीचे के भाग में पैदा हो ऊपर को चढ़े वह असाध्य होता है ॥ १७ ॥

अध्साय लक्षण

श्वासःपिपासाछर्दिश्चदौर्बल्यंज्वरएवच ॥
यस्यचान्नेरुचिर्नास्तिशोथिनंपरिवर्जयेत् ॥१८॥

श्वास, प्यास, वमन, कमजोरी, बुखार ये लक्षण होंय और जिसकी अन्नमें अरुचि होय, ऐसा शोथ रोगी चिकित्सा के योग्य नहीं होता है ॥ १८ ॥

अनन्योपद्रवकृतःशोथःपादसमुत्थितः ॥
पुरुषंहंतिनारींतुमुखजोगुह्यद्वयम् ॥१९॥
नवोऽनुपद्रवःशोथः साध्योऽसाध्यःपुरेरितः ॥

अन्य रोगों के उपद्रवसे उत्पन्न न हुई हो ऐसी सूजन पूर्व पैरों में पैदा हो फिर मुख आदि ऊपर के स्थानमें प्राप्त हो (उसको उल्टी सूजन कहते हैं) वह मनुष्य का नाश कर देती है और जो प्रथम मुखपर होकर पीछे पैरों में उतरे वह सूजन स्त्रियों का नाश करने

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

वाली है और जो प्रथम गुदा में पैदा होकर सब देह में व्याप्त हो वह स्त्री पुरुष दोनों की नाशक है। नवीन और उपद्रव रहित सूजन साध्य होती है और "अधोंगेरिष्टभूतं" इत्यादि श्लोक कथित असाध्य है ॥१६॥

शोथ के उपद्रव

छर्दिस्तृष्णारुचिःश्वासोज्वरोऽतीसारएवच ॥
सप्तकोयंसदौर्बल्यःशोथोपद्रवसंग्रहः ॥२०॥

वमन, प्यास, अन्न द्वेष, श्वास, बुखार, दस्त, दुर्बलता, ये सात सूजन के उपद्रव हैं सो चरक में लिखे हैं ॥ २० ॥

॥ इति शोथरोगनिदानं समाप्तम् ॥

अंडवृद्धिनिदानम्

वृद्धिरोग के निदान

क्रुद्धोऽनूर्ध्वगतिर्वायुः शोथशूलकरश्चरन् ॥
मुष्कौवंक्षणतःप्राप्यफलकोशाभिवाहिनीः ॥
प्रपीड्यधमनीर्वृद्धिंकरोतिफलकोषयोः ॥१॥

दूषित हुआ अधोमार्गगामी तथा दर्द और शोथ करने वाला वायु अण्डकोश में प्राप्त होकर संचार करता हुआ वंक्षण (जाँघ और लिंग की सन्धि) में और वँक्षण से अंडकोश वाहिनी धमनियों में जाकर उनको बिगाड़ करके अण्डकोश में वृद्धि करता है ॥१॥

दोषास्रमेदोमूत्रांत्रैःसवृद्धिःसप्तधागदः ॥
मूत्रांत्रजावप्यनिलाद्धेतुभेदस्तुकेवलम् ॥२॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

वह वृद्धिरोग तीनों दोषों से ३, रक्त से १, मेद से मूत्र और आँतों से सात प्रकार का है। मूत्रज और अन्त्रजवृद्धि ये दोनों वात से होती हैं। किन्तु इन दोनों का निदान और औषधि क्रम में भेद होने से अलग ग्रहण किया है सो लिखा है–"मूत्राँत्रजावप्यइति ॥२

वातज आदि भेद से वृद्धिके लक्षण, वातिक वृद्धि के लक्षण

वातपूर्णदृतिस्पर्शोरूक्षोवाताद्हेतुरुक् ॥
कृष्णस्फोटावृतःपित्तवृद्धिलिंगैश्चपित्तजः ॥३॥
कफवन्मेदसोवृद्धिर्मृदुस्तालफलोपमः ॥

वायु से जो अण्डकोश बढ़ता है उसमें अण्डकोश का छूना वायु से भरी हुई मशक के सदृश होता है रुक्ष होता है और बिना कारण ही वेदना होती है। काले फोड़ाओं से युक्त तथा जिसमें पित्तवृद्धि के लक्षण मिलते हों उस अन्डवृद्धिको पैत्तिक तथा रक्तज कहते हैं। मेद से जो अण्डवृद्धि होती है वह कफ की वृद्धि के सदृश नरम एवं ताल फल के तुल्य होती है और गोल तथा पीत वर्ण वाली होती है ॥३॥

पैत्तिज अण्डवृद्धि के लक्षण

पक्वोदुम्बरसङ्काशःपित्ताद्दाहोष्मपाकवान् ॥ ४ ॥

पित्तज अन्डवृद्धि परिपक्व गूलर के तुल्य होती है, दाह और गर्मी और पकने वाली होती है ॥४॥

श्लेष्मज अन्डवृद्धि के लक्षण

कफाच्छीतोगुरुःस्निग्धःकंडूमान्कठिनोल्परुक् ॥

कफ से अण्डवृद्धि ठण्डी, गुरु, स्निग्ध तथा खुजलीतुल्य कड़ी तथा अल्प पीड़क होती है ॥

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

मूत्रज वृद्धिके लक्षण

मूत्रधारणशीलस्यमूत्रजसचगच्छति ।।
अंभोभिपूर्णदृतिवत्क्षोभंयातिसरुङ्मृदः ।।
मूत्रकृच्छ्रमधःस्याच्चचालयन्फलकोषयोः ।।६।।

मूत्र के अवरोध का जिसको अभ्यास हो, उसको निम्नलिखित रोग होता है, वह मनुष्य जब गमन करे तब जलसे भरी हुई पखाल के तुल्य डबक डबक शब्द करे तथा हिले और उसमें अल्प वेदना होय करके स्पर्श से नरम मालूम होय उसमें मूत्रकृच्छ्र की सी वेदना होती है फल और कोश इतस्ततः विचरने वाले होते हैं ।।५-६।।

अन्त्रवृद्धि के निदान

वातकोपिभिराहारैःशीततोयावगाहनैः ।। धारणरण-
भारगाध्वविषमांगप्रवर्त्तनैः ।। ७ ।। क्षोभणैःक्षुभितोऽन्यै-
श्चक्षुद्रांत्रावयवंयदा ।। पवनोविगुणीकृत्यस्वनिवेशाद-
धोनयेत् ।। कुर्याद्वंक्षणसंधिस्थोग्रंथ्याभंश्वयथुंतदा ।।८।।

वायुकारक पदार्थ भक्षण करने से, ठण्डे जल में घुसकर स्नान करने से, मल-मूत्रादि वेग रोकने से तथा मल-मूत्रकी इच्छा न होने पर भी बलात्कार उनके निकालने का प्रयत्न करने से, ज्यादा बोझ उठाने से, अत्यन्त मार्ग गमन से, शरीर की विषम चेष्टा उलटा, तिरछा करने से, शक्तिमान मनुष्यके साथ द्वेष करनेसे, कठिन धनुष के ईंचने तथा अन्य वायु को दूषित करने वाले हेतुओं से दूषित वायु छोटी २ आँतों के स्थान को बिगाड़ करके अर्थात् उनका सङ्कोचकर निज निवास स्थान से उसको नीचे ले जाय तब वंक्षण सन्धि में स्थित होकर उस जगह में गांठके तुल्य शोथ पैदा करता है ।।७-८।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

इस रोग की चिकित्सा न करने का फल—

उपेक्षामाणस्नचष्मुकबृद्धिमाध्मानरुक्स्तंभवतींमवायुः ॥
प्रपीडितोंऽतस्वनवान्प्रयतिप्रध्मापयन्नेतिपुनश्चमुक्तः ।९।

जिस अण्डवृद्धि रोग में अफरा, वेदना, जड़ता होय, उसकी अपेक्षा करने से अर्थात् चिकित्सा न करने से और अण्डकोशों के दबाने से वायु कोंकों शब्द करे तथा दाबने से वायु ऊपर चली जाय और छोड़ने से नीचे ही आ जाय और अन्डकोष फूल जाते है ॥९॥

क्षुद्रांत्रावयवाञ्छ्लेष्मामुष्कयोर्वानसंचयात् ॥१०॥

वातवृद्धिके लक्षणोंके समान अन्त्रवृद्धि असाध्य होती है ॥१०॥

वर्ध्म रोग निदान

अंत्रबृद्धिरसाध्योऽयंवातबृद्धिममाकुतिः ॥
अत्यभिष्यंदिगुर्वामसेवनान्निचयंगतः ॥ ११ ॥
करोतिग्रन्थिवच्छोफंदोषोवंक्षणसन्धिषु ॥
ज्वरशूलांगदाहांत्यंतंवर्ध्ममितिनिर्दिशेत् ॥ १२॥
यस्यपूर्वफिरंगाख्योरोगोभूत्वाप्रशाम्यति ॥
तस्यजंतोर्वर्ध्मरोगामित्युक्तः सुश्रुताभिः ॥ १३ ॥
तथोष्णवातजुष्टस्यमेढ्रबलयुतस्यच ॥
तस्यपुंसोवर्ध्मरोगंप्रवदन्तिभिषग्वराः ॥ १४ ॥

अभिष्यन्दी पदार्थ भक्षण से, भारी अन्न के भक्षण से, कच्चे अन्न के खाने से वृद्धि को प्राप्त हुआ दोष दूषित होकर वस्तिस्थान के समीप जिसकों नल कहते हैं उसमें सूजन को पैदा करे, सूजन के पैदा होनेपर बुखार आजाय और वेदना होय, सर्वांगमें भड़कनहोय,

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

जिस मनुष्य के पहिले सुजाक का रोग उत्पन्न होकर शान्त होगया हो उसके यह बद का रोग पैदा होता है अथवा गर्मी वाले मनुष्य के लिङ्ग में व्रण उसके यह बद रोग होता है ॥ ११—१४ ॥

❀ इति अंडवृद्धिनिदानं समाप्तम् ❀

गलगण्डनिदानम्

—*—

निबद्धःश्वयथुर्यस्यमुष्कवल्लम्बतेगले ॥
महान्वायदिवान्ह्रस्वोगलगंडतमादिशेत् ॥१॥

जिसके गले में अन्डकोश के तुल्य दृढ़ सूजन लटके उस रोगको गलगण्ड कहते हैं ॥ १ ॥

गलगण्ड की सम्प्राप्ति

वातःकफश्चापिगलेप्रदुष्टौमन्यांसमाश्रित्यतथैवमेदः ॥
कुर्वन्तिगंडंक्रमशःस्वलिंगैःसमन्वितंतंगलगंडमाहुः॥२।

गले में वायु, पित्त, कफ बिगड़कर मान्यानाड़ी में मिलकर गंड पैदा करते हैं। यह गंड रोग वात, कफ मेद, इन हेतुओं से तीन तरह का होता है, यह रोग निज स्वभाव से पैत्तिक नहीं होता है। जैसे चातुर्थिक ज्वर अपने प्रभाव से जङ्घा में कफ का और शिर में वायु का प्रथम आता है इसमें पित्तका नहीं होता, उसी प्रकार इस रोग में समझना चाहिये ॥२॥

वातज गलगंड के लक्षण

तोदान्वितःकृष्णशिरावनद्धःश्यावोऽरुणोवापवनात्मकस्तु ॥ पारुष्ययुक्तश्चिरवृद्धिपाकोयदृच्छयापाकमियात्क-

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

दाचित् ॥ ३ ॥ वैरस्यमास्यस्यचतस्यजन्तोर्भवेत्तथातालुगलप्रशोषः ॥

बात से उत्पन्न गल गंड रोग में काली नसे दिखाई देती हैं और सुई के चुभानेसे जैसी वेदना होती है उसी प्रकार की पीड़ा होती है उसका वर्ण कृष्ण और रक्त होता है तथा कठोर होता है चिरकाल में वृद्धि को प्राप्त होती है तथा पकता नहीं है कभी अचानक पक भी जाता है। और रोगी मनुष्य के मुख में विरसता और तालु व गले में खुश्की रहती है।

कफके गलगंड के लक्षण।

स्थिरः सवर्णो गुरुरुग्रकंडूः शीतोमहांश्चापिकफात्मकस्तु ॥ ४ ॥ चिराभिवृद्धिभजतेचिराद्वाप्रपच्यतेमन्दरुजः कदाचित् ॥ माधुर्यमास्यस्यचतस्यजंतोर्भवेत्तथातालुगलप्रलेपः ॥ ५ ॥

कफसे उत्पन्न गल गंड स्थिर तथा शरीर के समान वर्ण वाला एवं भारी तथा खुजली से युक्त शीतल और बड़ा होता है। और बहुत काल में बढ़ने तथा पकने वाला होता है वेदना ज्यादा होती है मुख मीठा तथा गला और तालू कफ से लिप्त मालूम होता है।

मेदज गल गंड के लक्षण।

स्निग्धोगुरुः पांडुरनिष्टगंधोमेदोभव. स्वल्परुजोऽतिकंडूः प्रलंबतेऽलांबुबदल्पमूलोदेहानुरूपक्षयवृद्धियुक्त ॥६॥ स्निग्धास्यतातस्यभवेच्चजंतोर्गलेऽनुशब्दंकुरुतेचनित्यम्

मेदज गल गंड। स्निग्ध भारी तथा पीत वर्ण वाला दुर्गन्ध युक्त मन्द वेदना कारक और अत्यन्त खुजाने वाला

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

तोमा के फूल सद्रश लम्बा होता है और उसकी जड़ छोटी होती है और शरीर के अनुरूप बढ़ता और क्षीण होता है रोगी के मुंह पर स्निग्धता और गले में सर्वथा शब्द होता रहता है।

असाध्य लक्षण

कृच्छ्राच्छ्वसन्तं मृदुसर्वगात्रंसंबत्सरातीतमरोचकार्तम्॥७॥
क्षीणंचवैद्योगलगण्डयुक्तं भिन्नस्वरं चापि विवर्जयेत्तु ॥ ८ ॥

रोगी मनुष्य सकष्ट श्वास लेता हो नरम देह हो गल गंड होने पर एक वर्ष बीत गया हो भोजन में अरुचि हो शरीर क्षीण होगया हो आवाज बैठगई हो तो ऐसे गलगंड रोग से पीड़ित मनुष्यको वैद्यों के लिए चिकित्सा करना उचित नहीं हैं

॥इति गलगंड निदानम् ॥

—०—

गंडमालानिदानम्।

—०—

कर्कन्धुकोलामलकप्रमाणैः कक्षासमन्यागलवंक्षणेषु ॥
मेदः कफाभ्यांचिरमंदपाकैः स्याद्गंडमालाबहुभिस्तु गंडै ॥ १ ॥

मेद और कफ से उत्पन्न हुआ कूख कन्धा ग्रीवा के पिछाड़ी मन्या नाडी में कंठ में और वक्षण आदि स्थानों में छोटी छोटी बेर के सदृश बड़े बेर के तुल्य, आँबले के समान अनेक तरह की गंड पैदा हो और वेगंड धीरे धीरे चिरकाल में पकें ऐसे लक्षणों युक्त व्यधि को गलगंड कहते हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अपची के लक्षण

तेग्रंथयःकेचिदवाप्तपाकाःस्रवन्तिनश्यंतिभवन्तिचान्ये
कालानुबंधंचिरमादधातिसैवापचोतिप्रवदंतिकेचित् २

जब गंड माला अपची रूप को प्राप्त होती है अपची के लक्षण इस प्रकार हैं पूर्व कथित गंड माला की ग्रन्थि पके नहीं अथवा पाक होने पर श्रवे कोई ग्रन्थि नष्ट हो जाय दूसरी नई पैदा होय वेदना अत्यन्त वहुत दिन तक रहे उस को अपची कहते हैं।

साध्यासाध्यविचार

साध्याःस्मृतापीनसपर्श्वशूलकासज्वरच्छ-
र्दियुतानसाध्या ॥ इत्यपचीनिदानम् ॥

पूर्व कथित अपचि साध्य हैं और प्रतिश्याय पाशुओं में दर्द खाँसी बुखार उल्टी ये लक्षण होय तो वह अपचीअसाध्य है।

इत्यपची निदानम्

—०—

ग्रँथिनिदानम् ।

वाताद्योमासमसृक्प्रदुष्टाःसंदूष्यमेदश्चतथाशिराश्च
वृत्तोन्नतंविग्रथितंतुशोथंकुर्वत्यतोग्रंथिरितिप्रदिष्ठः १

विशेष दूषित हुये वातादि दोष माँस रक्त और मेदा और नाडियोंको पुष्ट कर गोल ऊची गाठ के तुल्य अथवा कठिन शोथ को पैदा कर उसे ग्रन्थि रोग कहते है।

॥ वातिक ग्रन्थि के लक्षण ॥

आयम्यतेवृश्चतितुद्यतेचप्रत्यायतेमथ्यतिभिद्यतेच ॥
कृष्णोगुर्बरुस्तिरिवाततश्चभिन्नःश्रवेच्चानिलजोऽसृ
मच्छम् ॥२॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

वादी से उत्पन्न हुई ग्रान्थि तनीहुई के सामने कठिन प्रतीत हो छीलने के तुल्य और सुई चुभानेसे उत्पन्न हुई वेदना के तुल्य गिरने की तुल्य मालूम हो मथनेके समान वेदना हो फोड़नेके सदृश पीडित कृष्ण वर्ण युक्त नरम वस्ति के तुल्य आकार वाली और फटने से रक्त बहे ऐसे लक्षणोंयुक्त ग्रान्थिको वातज ग्रान्थि कहते हैं ।

पैत्तिक ग्रान्थि के लक्षण

दंदह्यतेधूमयतिचूष्यतेचपापच्यतेप्रज्वलतीवचापि ॥
रक्तःसपीतोऽप्यथवापिपित्ताद्भिन्नस्श्रवेद्दुष्टमतीवचाश्रम् ॥३॥

पैत्तिक ग्रान्थि अग्नि से सन्तप्त हुए के समान दाह करे और आतों से धूम्र का निकलना सा ज्ञात होय । सिंगी लगाना सा प्रतीत हो खार लगाने की सी शंका होय अगिन के तुल्य भुरसी मालूम होय और ग्राँथि का वर्ण लाल अथवा कुछ पीत वर्ण युक्त होय । और फूटने से दूषित सा स्राव होय उसे पैत्तिक ग्रान्थि कहते हैं ।

श्लेस्मज ग्रांथि के लक्षण

शीतोविवर्णोऽल्परुजोतिकंडू पाषाणवत्सन्नहनोपपन्नः ॥ चिराभिवृद्धिस्तुकफप्रकोपाद्भिन्नःश्रवेच्छुक्लघनंचपूयम् ॥४॥

कफसे प्रगट ग्रन्थी ठन्डी प्रकृति तुल्य वर्ण अल्प पीडक और खुजली ज्यादा चलें गिरि खण्ड तुल्य दीर्घ और कठिन और बहुत समय वृद्धि को प्राप्त होने वाली फूट जाय तब सुफेद गाढ़ी राधि बहती है ।

शरीरबृद्धिक्षयबृद्धिहानिस्निग्धोमहान्कंडुयुतोरुजश्च मेद कृतोगच्छतिचात्रभिन्नोपिण्याकसर्पिःप्रतिमँतुमेदः ॥५॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

मेदसे उत्पन्न ग्रन्थि के लक्षण ।

मेदसे उत्पन्न ग्रन्थि शरीर को वृद्धिगत होने से बढ़ने वाली तथा शरीर के क्षीण होने से क्षीण होने वाली स्निग्ध बड़ी खुजली युक्त वेदनाहीन होती है । और जब फूटे तब उसमें घी के तुल्य तिल कल्क के समान मेदा निकलती है ।

शिरासे उत्पन्न ग्रन्थि के लक्षण

व्यायामजातैरवलस्यतैस्तैराक्षिप्यवायुस्तुशिराप्रतानम् सकुच्यसंपीडचविशोष्यचापिग्रंथिंकरोत्युन्नतमाशुवृत्तम् ॥ ६ ॥

निर्वल मनुष्य के विशेष व्यायाम द्वारा वायु पुष्ट हो शिराके जाल को संकुचित कर एक जगह स्थितकर सुखाकर ऊँचा ग्रन्थि को उत्पन्न करती है ।

। साध्या साध्य लक्षण ।

ग्रंथिःशिराजःसचकृच्छ्रसाध्योभवेद्यदिस्यात्सरुजश्चलश्च ॥ अरुक्सएवाप्यचलोमहांश्चमर्मोत्थितश्चापिविवर्जनीयः ॥ ७ ॥

नस की ग्रन्थि कृच्छ्र साध्य है यदि पूर्वोक्त शिरा ग्रन्थि वेदना युक्त एवं चंचल होय तो साध्य है और वेदनाहीन तथा निश्चल दीर्घ तथा मर्म स्थान में उत्पन्न होने वाली असाध्य होती है उसकी वैद्य चिकित्सा न करे ।

❀ इति ग्रन्थि निदान समाप्तम् ❀

अथार्बुदनिदानम्

—*—

संप्राप्ति ।

गात्रप्रदेशेक्कचिदेवदोषाःसमूर्च्छितामांसमसृक्प्रदूष्य ॥

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

वृत्तंस्थिरंमंदरुजंमहान्तमनल्पमूलंचिरबृद्धिपाकम् ।।१।।
कुर्वंतिमांसोच्छ्रयमत्यगाधंतदर्बुदंशास्त्रविदोवदन्ति ।।

गात्र के किसी भी प्रदेश में दूषित हुये दोष मांस और रक्त को बिगाड़कर गोल स्थिरमंद वेदना युक्त (ग्रन्थिरोग से महान आकार वाली होती है) बड़ी जड़ वाली चिरकाल में बृद्धिगत होने वाली तथा पकने वाली मांस की ग्रान्थि पैदा हो उसे चिकित्सक अर्बुद कहते हैं ।

वातेनपित्तेनकफेनचापिरक्तेनमांसेनचमेदसाच ।। २ ।।
तज्जायतेतस्यचलक्षणानिग्रंथेःसमानानिसदाभवंति ।

वह अर्बुद व्याधि वात, कफ, पित्त, रक्त, मांस, और मेद, इन मेदों से ६ तरह की होती है उसके लक्षण सर्वदा ग्रन्थि के तुल्य होते हैं ।

रक्तज अर्बुदके लक्षण

दोषःप्रदुष्टोरुधिरंशिरासुसंकुच्यसंपीड्यततोऽस्यपाकम् ।। ३ ।।
सास्रावमुन्नह्यतिमांसपिंडंमांसांकुरैराचितमाशुबृद्धम् ।।
करोत्यजस्रंरुधिरप्रबृद्धिमसाध्यतेतद्रुधिरात्मकंतु ।।४।।
रक्तक्षयोपद्रवपीडितत्वात्पांडुर्भवेत्सोर्बुदपीडितस्तु ।।

दूषित हुये वातादि दोष नसों में स्थित रक्त को पीड़ितकर मांस के गोला को पैदा करें । वह कुछ पकने वाला तथा कुछ स्रावयुक्त हो, और मांस के अंकुरों से व्याप्त और जल्दी बढ़ने वाला हो, रुधिर निकले ऐसे लक्षणों युक्त अर्बुद असाध्य होता है । रक्तार्बुद से व्यथित रोगी रक्तक्षय के उपद्रवों से करके व्यथित

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

होने से उसका वर्ण पीला हो जाय ये रक्तार्बुद के लक्षण हैं ।

मासार्बुद सम्प्राप्ति

मुष्टिप्रहारादिभिरर्दितेऽगेमांसंप्रदुष्टं जनयेद्धिशोथम ।५।
अवेदनंस्निग्धमनन्यवर्णमपाकमश्मोपममप्रचाल्यम ॥
प्रदुष्टमांसस्यनरस्यगाढमेतद्भवेन्मांसपरायणस्य ॥ ६ ॥
मांसार्बुदंत्वेतदसाध्यमुक्तं —

मुक्का आदि के लगने से शरीर में वेदना होय उस वेदना से दूषित हुआ माँस सूजन पैदा करै, वह सूजन पीड़ा हीन हो, और वह स्निग्ध तथा शरीर के तुल्य वर्ण वाली पके नहीं पत्थर के तुल्य कठिन न हिलने वाली होती है । जिस मनुष्य का मांस दुष्ट हो जाय । अथवा जो मांस को खाया करें उसके यह अर्बुद रोग होता है यह असाध्य है ।

“साध्या साध्य विचार”

साध्येष्वपीमानितुवर्जयेच्च ॥ संप्रस्रुतमर्मणि
यच्चजातंस्रोतःसुवायच्चभवेदचाल्यम् ॥ ७ ॥

जिस अर्बुद में स्राव होता हो, मर्मस्थान में पैदा हुआ हो नाक आदि श्रोतों में हो अथवा स्थिर हो वह चाहे साध्य भी हो किन्तु उसको औषधि नहीं करनी चाहिये वह असाध्य होता है ।

“अध्य अर्बुद के लक्षण”

यज्जायतेऽन्यत्खलुपूर्वजातेज्ञेयंतदध्यर्बुदमर्बुदज्ञैः ॥

जिस स्थान पर पूर्व अर्बुद उत्पन्न हुआ हो उसी स्थान पर द्वितीय अर्बुद उत्पन्न हो जाय उसे अध्यर्बुद कहते हैं ।

“द्विर अर्बुद लक्षण”

यद्द्वंदजातंयुगपत्क्रमाद्वाद्विरर्बुदंतच्चभवेदसाध्यम ॥८॥

एक ही समयमें दो अर्बुद अथवा एक के पीछे दूसरा अर्बुद क्रमसे

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

पैदा होय उसे द्विरर्बुद कहते हैं ।

"अर्बुद न पकने का कारण"

नपाकमायांतिकफाधिकाद्वामेदोबहुत्वाच्चविशेषतस्तु ।
दोषस्थिरत्वाद्ग्रथनाच्चतेषोसर्वार्बुदान्येवनिसर्गतस्तु ९

अधिक कफ होने से अथवा मेद के विशेष वृद्धि गत होने से तथा दोषों के स्थिर होने से अथवा दोषों के ग्रन्थि रूप होने से सर्व प्रकार की अर्बुद स्वभावतः पकती नहीं है ।

इत्यर्बुदनिदानम्समाप्तम् ।

श्लीपदनिदानम् ।

संप्राप्ति ।

यःसज्वरोवंक्षणजोभृशार्तिः शोथोनृणांपादगतःक्रमेण ।
तच्छ्लीपदंस्यात्करकर्णनेत्रशिश्नोष्ठनासास्वपिकेचि
दाहुः ॥ १ ॥

जो शोथ पहिले वंक्षण में उत्पन्न होकर शनैः शनैः पैरों में उत्पन्न होय बुखार का भी कोप हो तो उस रोग को श्लीपद कहते हैं । यह रोग कर, कान, चक्षु, शिश्न, होठ नासिका, इनमें होता है कतिपय आचार्य कहते हैं ।

वातिक श्लीपद के लक्षण ।

बातजंकृष्णरूक्षंचस्फुटितंतीव्रवेदनम् ।
अनिमित्तरुजंतस्यबहुशोज्वरएवच ॥२॥

वात से उत्पन्न श्लीपद—कृष्ण वर्ण, रूक्ष, फटी सी और विशेष पीड़ा कारक बिना निमित्त ही दूखें और उसमें बुखार होता है ।

पैत्तिक श्लीपद के लक्षण

पित्तजंपीतसंकाशदाहज्वरयुतंमृदु ॥

पित्तज श्लीपद पीत वर्ण की एवं दाह और ज्वरयुक्त होती है तथा नरम होती हैं ।

कफसे उत्पन्न श्लीपद के लक्षण

श्लैष्मिकंस्निग्धवर्णंचश्वेतंपांडुगुरुस्थिरम् ॥ ३ ॥

कफसे पैदा श्लीपद सफेद वर्ण की स्निग्ध पीली गुरु और कठिन होती है ।

"असाध्य लक्षण"

वाल्मीकमिवसंजातंकंटकैरुपचीयते ॥
अब्दात्मकंमहत्तच्चवर्जनीयंविशेषतः ॥ ४ ॥

सर्प की वाँमी के सदृश बड़ी हुई जिसके ऊपर कांटे होय एक साल व्यतीत हो गया हो बड़े आकार की होय वह चिकित्सा के योग्य नहीं है ।

श्लीपद रोग में कफ प्रधान होने का कारण कहते हैं ।

त्रीण्यप्येतानिजानीयाच्छ्लीपदानिकफोच्छ्रयात् ॥
गुरुत्वंचमहत्त्वंचयस्मानन्नास्तिबिनाकफात् ॥ ५ ॥

इन पूर्वोक्त तीनों श्लीपदों में कफ की अधिकता है इसका कारण यह है कि गुरु और महत्व ये दोनों कफ के बिना नहीं होते ।

श्लीपद किस स्थान में उत्पन्न होय है उसे कहते हैं ।

पुराणोदकभूयिष्ठाःसर्वर्तुषुचशीतलाः ॥
येदेशास्तेषुजायन्तेश्लीपदानिविशेषतः ॥६॥

वर्षा ऋतु में जल के अधिक वर्षने से नीचे पृथ्वी में जल भरने के कारण वह सूखता नहीं है इसी से पुराने जल के संचय होने से सब ऋतुयों में सर्दी की अधिकता होती है उन अनूप देश पूर्व आदि उनमें यह श्लीपद रोग पैदा होता है। जंगल देशों में गर्मी अधिक होती है इस लिए उसमें जल का पुराणत्व नहीं होता और अनूप देश में गर्मी ज्यादा पड़ने से भी उष्णकाल में भी शीतलता अत्यन्त होती है हस्त, कर्ण, आदि में श्लीपद रोग की शंका होने से दोषी के प्रकोप द्वारा बुखार आदि से श्लीपद को जानना चाहिये ।

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

यच्छ्लेष्मलाहारविहारजातंपुसःप्रकृत्याचकफात्मक
स्य ॥ सास्रावमत्युन्नतसर्वं लिंगंसकंडुरंश्लेष्मयुतंविव
र्ज्यम् ॥ ७ ॥

जो श्लीपद कफ कारक आहार विहार से उत्पन्न हुआ हो तथा कफ प्रकृति वाले मनुष्य के कफ से उत्पन्न हुआ हो तथा श्राव युक्त होय तथा जिस दोष से उत्पन्न उसी दोष के विशेष लक्षण से उत्पन्न हो खुजली विशेष हो कफ युक्त होने से श्लीपद असाध्य होता है।

॥ इति श्लीपद निदानं समाप्तम् ॥

विद्रधिनिदानम्

त्वग्रक्तमाँसमेदांसिदूष्यास्थिसमाश्रिताः दोषाःशो
थंशनै-र्घोरंजनयंत्युच्छ्रिताभृशम् ॥ १ ॥ महाशूलरुजा
वंतंवृत्तंवाप्यथऽऽयतम् ॥ सविद्रधिरितिख्यातोविज्ञेयः
इविधश्चसः ॥ २ ॥

पृथग्दोषैःसमस्तैश्चक्षतेनाप्यसृजातथा ॥
षण्णामपिहितेषांतुलक्षणंसंप्रवक्षते ॥३॥

अति बृद्धिगत एवं हड्डी का आश्रय कर रहने वाले वाले वायु आदि दोष त्वचा रक्त माँस, और मेद इनको दूसित कर धीरे धीरे घोर सूजन पैदा करें उसकी जड़ हड्डी पर्य्यंत चली जाय उत्पन्न समय में विशेष वेदना कारक गोल और लम्बा जो शोथ पैदा हो उसको विद्रधि कहते हैं अलग २ दोषों से सन्निपात से १ घाव से मिलकर छः प्रकार की विद्रधि होय है उसके लक्षण रक्त से १ कहते हैं।

॥ वातज विदधि के लक्षण ॥

कृष्णोऽरुणोवाविषमो भृशमत्यर्थवेदनः ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

चित्रोत्थानप्रपाकश्चविद्रधिर्वातसंभवः ॥४॥

जो विद्रधि काली लाल कभी छोटी कभी मोटी हो विशेष वेदना कारक और उस का प्रादुर्भाव तथा पकना अनेक प्रकार का होय उसे वातज कहते हैं ।

पक्वोदुंबरसंकाशःश्यावोवाज्वरदाहवान् ॥
क्षिप्रोत्थानप्रपाकश्चविद्रधिःपित्तसंभवः ॥५॥

पैत्तिक बिद्रधि पके हुये गूलर के तुल्य होती है । और उसका वर्ण काला होता है बुखार भड़कन युक्त शीघ्र उठकर पकने वाली होती है ।

कफ की विद्रधि के लक्षण ।

शरावसदृशःपांडुःशीतःस्निग्धोऽल्पवेदनः ॥
चिरोत्थानप्रपाकश्चविद्रधिःकफसंभवः ॥६॥

कफ से उत्पन्न विद्रधि मिट्टी के सकोरा के समान बड़ी होती है और उसका रंग पीला होता है चिकनी और शीतल थोड़ी वेदना करने वाली होती है और चिरकाल में उत्पन्न हो सकती है ।

परिपाक के पश्चात् उनका श्राव

तनुपीतसिताश्चैषासास्रावाःक्रमशःस्मृताः ॥

पकने पर वातेज विद्रधि में द्रव श्राव होता है और पैतिक बिद्रधि पीला और कफ से उत्पन्न विद्रधि में सफेद राध निकलती है ।

त्रिदोषज विद्रधि के लक्षण ।

नानावर्णरुजास्रावोघटालोविषमोमहान् ॥७॥
विषमंपच्यतेचापिविद्रधिः सान्निपातिकः ॥

सान्निपातिक विद्रधि में विविध प्रकार की वेदना यथा तोद, दाह खुजली, पीड़ा तथा वहु प्रकार का स्राव यथा 'द्रव पीला सफेद स्राव होता है । घाटाल यानी नीचे मोटी और ऊपर नोकदार विषय आकार वाली होती है । और विषम पाक अनियमित काल में पकने वाली होती है ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

आगन्तुक विद्रधि की सम्प्रप्ति ।

तैस्तैर्भावैरभिहतेक्षतेवाऽपथ्यकारिणः ॥८॥
क्षतोष्मावायुविसृतसरक्तं पित्तमीरयेत ॥
ज्वरस्तृष्णाचदाश्चजायन्तेतस्यदेहिनः ॥ ९ ॥
आगंतुविद्रधिर्ह्येषः पित्तविद्रधिलक्षणः ॥

काष्ट, पत्थर आदि की चोट लगने से अथवा तलवार, तीर बरछी इत्यादि शस्त्रों के लगने पर घाव होने से मिथ्या आहार करने से वायु दूषित हो घाव की उष्मा को सब जगह विस्तृत कर रक्त तुल्य पित्त को कुपित करती है। तब उस मनुष्य के बुखार प्याह और दाहादिक होते हैं यह आद्वन्तुज विद्रधि पैत्तिक विद्रधि के लक्षणों युक्त होती है ।

रक्तज विद्रधि के लक्षण ।

कृष्णस्फोटावृतःश्यावस्तीव्रदाहरुजाकरः ॥
पित्तविद्रधिलिंगस्तुरक्तविद्रधिरुच्यते ॥ १० ॥

जिस विद्रधि में काले फोड़ा हों से दाह वेदना और बुखार रहे तथा पैत्तिक विद्रधि के लक्षण मिलते हों उसे रक्तज विद्रधि कहते हैं ।

अन्तर्विद्रधि के लक्षण ।

पृथक्सभूयवादोषाःकुपितागुल्मरूपिणाम् ॥
वल्मीकवत्समुन्नद्धमंतःकुर्वंतिविद्रधिम् ॥ ११ ॥

दूषित हुये पृथक् पृथक् अथवा मिश्रित वातादि दोष शरीर में गोला के और बांबीके तुल्य बड़ी विद्रधि उत्पन्न करते हैं ।

विद्रधि के लक्षण ।

गुदेबस्तिमुखेनाभ्यांकुक्षौवंक्षणयोस्तथा ॥
बृक्कयोःप्लीह्नियकृतिहृदयेक्लोम्निचाप्यथ ॥ १२ ॥
एषामुक्तानिर्लिंगानिबाह्यविद्रधिलक्षणैः ॥
गुदेवातनिरोधस्तुबस्तौकृच्छ्राल्पमूत्रता ॥ १३ ॥

नाभ्यांहिक्कातथाऽऽटोपःकुक्षौमारुतकोपनम् ॥
कटिपृष्ठग्रहस्तीव्रोवंक्षणोत्थेचविद्रधौ ॥ १४ ॥
वृक्कयोःपार्श्वसंकोचःप्लीह्न्युच्छ्वासावरोधनम् ॥
सर्वांगप्रग्रहस्तीव्रोहृदिकंपश्चजायते ॥ १५ ॥
श्वासोयकृतिहिक्काचक्लोम्निपेपीयतेपयः ॥

गुदामें, बस्तिमें, मुख नाभि कूख जाघों की सन्धि, वृक्क, प्लीहा, कलेजा हृदय, प्यासस्थान आदि में विद्रधि होती है ।

गुदास्थित विद्रधि में अधोवायु का अवरोध होता है ।
मूत्राशय में विद्रधि होने से पेशाब कष्ट सहित उतरता है ।
नाभिस्थित विद्रधि में हिक्का और वेदना तुल्य क्षोभ होता है ।
कूख में विद्रधि होने से वायु कुपित होती है ।
वंक्षण में कटि और पीठ जकड़ जाती है ।
कूख में होने से पाशुओं में संकोच होता है ।
प्लीहा में होने से श्वांस रुक जाती है ।
हृदय में होने से सर्वाङ्गों का जकड़ना और कम्प होता है ।
कलेजे में होने से श्वास और हिचकी होती है ।
क्लोम में होने से बारम्बार जल पीने की इच्छा होती है ।

॥ स्राव का निकलना ॥

नाभेरुपरिजाःपक्वायात्यूर्ध्वमितरेत्वधः ॥ १६ ॥
अधःस्रुतेषुजीवेत्तुस्रुतेषूर्ध्वंनजीवति ॥

नाभि के ऊपर जो विद्रधि होती है उसके पकने से जो स्राव यानी राध निकलती है यह मुख द्वारा निकलती है । और नाभि स्थानसे नीचे विद्रधि पक कर जो स्राव होता है वह गुदा द्वारा होता है । और नाभि के लगभग होने वाली विद्रधिओं का स्राव मुख और गुदा द्वारा होता है जिस विद्रधि का स्राव नीचे मार्ग द्वारा होता है वह रोगी जीवित रहता है और जिनका स्राव मुख द्वारा होता है । वह मृत्यु को प्राप्त होता हैं ।

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ विद्रधि का साध्यासाध्याविचार ॥

हृन्नाभिवस्तिवर्ज्यायेतेषुभिन्नेषुबाह्यय: ॥ १७ ॥
जीवेत्कदाचित्पुरुषोनेतरेषुकथंचन ॥
साध्याविद्रधय:पंचविवर्ज्य:सन्निपातिक: ॥
आमपक्वविदग्धत्वंतेषांशोथवदादिशेत् ॥ १८ ॥

हृदय, नाभि, और वस्ति इन स्थानों को छोड़कर उत्पन्न होने वाली विद्रधि अर्थात् प्लीह क्लोम इत्यादि इनके बाहर फूटने से मनुष्य बच सकता है ३ अन्यत्र फूटने से मृत्यु को प्राप्त हो जाता है ।

पहली पांच प्रकार को बिद्रधि साध्य है सान्निपातिक विद्रधि असाध्य हैं । इन विद्रधियों की आम पक्व विदग्ध ये तीन अवस्था शोथ रोग के तुल्य जाननी चाहिये ।

असाध्य लक्षण ।

आध्मानंवद्धनिष्यंदंछर्दिहिक्कातृषान्वितम् ॥
रुजाश्वाससमायुक्त विद्रधिर्नाशयेन्नरम् ॥१९॥

अफरायुक्त मूत्र के रुकने से हिचकी, बमन, तृषा, इनसे व्यथित दर्द श्वासादि उपद्रवों युक्त विद्रधि वाला मनुष्य मृत्यु को प्राप्त हो जाता है ।

इति विद्रधि निदानम् ।

अथव्रणनिदानम्

एकदेशोत्थित:शोथोब्रणानांपूर्वलक्षणम् ॥
षडिविध:स्यात्पृथक्सर्वरक्तागंतुनिमित्तज: ॥१॥
शोथा:षडेतेविज्ञेया:प्रागुक्तै:शोथलक्षणै: ॥
विशेष:कथ्यतेतेषांपक्वापक्वविनिश्चये ॥ २ ॥

एक स्थान पर सूजन पैदा हो तो उस जगहब्रण होगा । यह सम-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

झना चाहिये। वह बृण रोग अलग अलग दोशोंसे ३ सन्निपात से १ रक्त से १ और आगन्तुज से १ इन कारणों से छः प्रकार का होता है। इन पूर्वोक्त छैऊ ब्रणों में से जो प्रथम सूजन पैदा होय उसके लक्षण शोथ रोग के तुल्य जानने चाहिये इन ब्रणों में पक्व और अपक्व के विषय में जो प्रधानता हैं उसे कहते है ।

ब्रण रोग का पकना ।

विषमंपचयेद्वातात्पित्तोत्थश्चाचिरांच्चिरम् ।।
कफजःपित्तवच्छोथोरक्तागंतुसमुद्भवः ।।३।।

वादी से ब्रण का पाक विषम होता है कहीं पकता है और कहीं नही पकता है। कहीं पित्त के प्रभाव से बहुत जल्दी पकता है और कफ का बृण चिर काल में पकता है रक्त का और आगन्तुक ब्रण का पाकशी शीघ्र ही होता है ।

॥ अपक्व ब्रण के लक्षण ॥

मंदोष्मताऽल्पशोथत्वंकाठिन्यंत्वक्सवर्णता ।।
मंदवेनताचैवशोथानामामलक्षणम् ।।४।।

सूजन करके स्पर्श से नर्म प्रतीत हो अल्प सूजन होय ब्रणकी और उसमें कठिन होय तथा शरीर के वर्ण तुल्य सूजन का वर्ण होय और उसमें अल्प बेदना होय ये अपक्व ब्रण के लक्षण हैं ।

ब्रण पकने के पूर्वरूप

दह्यतेदहनेनेवक्षारेणेवचपच्यते ।।
पिपीलिकागणेनेवदश्यतेछिद्यतेतथा ।।५।।
भिद्यतेचैवशस्त्रेणदंडेनेवचताड्यते ।।
पीड्यतेपाणिनेवांतःसूचीभिरिवतुद्यते ।। ६ ।।
शोषश्चोषोविवर्णःस्यादंगुल्येवावपीड्यते ।।
आसनेशयनेस्थानेशांतिंवृश्चिकविद्धवत् ।।७।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

नगच्छेदाततःशोथोभवेदाध्मातबस्तिवत् ॥
ज्वरस्तृष्णाऽरुचिश्चैवपच्यमानस्यलक्षणम् ॥८॥

जिस काल व्रण पकता है उस वक्त ये लक्षण होते हैं। व्रण का स्थान वन्हि से भरा हुआ मालूम हो खार के लगाने के तुल्य तकलीफ होय चींटी के काटने के समान वेदना होय और दो टुकड़े करने के समान एवं शस्त्र से विदीर्ग करने के तुल्य—लगुड आदि के समान मारने से जैसी पीड़ा होती है उसके तुल्य पीड़ा कारक तथा हाथ से दावने के तुल्य। एवं भीतरी सूचिका के तुल्य पीडा होय और अत्यन्त दाह कारक अग्नि से तपाने के तुल्य वेदना होय, और व्रण का वर्ण बदक जाय उंगली के स्पर्श से अत्यन्त वेदना मालुम होय बैठने में सोने में और खड़े रहने में विच्छू के काटने के समान पीडा होय वह पीडा कभी भी शान्ति को प्राप्त नहीं होय और वह सूजन फूली हुई वस्ति के समान ज्वर तृषा और अरुचि से युक्त होती है।

॥ पके हुये व्रण के लक्षण ॥

वेदनोपशमःशोथोलोहितोऽल्पोनचोन्नतः ॥
प्रादुर्भावोवलीनांचतोदः कंडूर्मुहुर्मुहुः ॥९॥
उपद्रवाणांप्रशमोनिम्नतास्फुटनंत्वचाम् ॥
बस्ताविवांबुसंचारःस्याच्छोथेंऽगुलिपीडिते ॥१०॥
पूयस्यपीडयत्येकमंतेचपीडिते ।
भक्ताकांक्षाभवेच्चैवशोथानांपक्वलक्षणम् ॥ ११ ॥

व्रण के पाक होने से वेदना नष्ट हो जाती है। उसकी सूजन ताम्र वर्ण के समान होती हैं, और अल्प एवं छोटी होती है उसमें सरवट पड़ जाती हैं। सूचिका के चुभाने के तुल्य वेदना होती है, बारम्बार खुजली चलती है। पैत्तिक विकार दाह आदि शान्त हो जाते हैं। खुजाने से त्वचा में गड्ढा हो जाता है और फट जाती है, सूजन करके दावने से जिस प्रकार वास्ति का पानी इतस्ततः चलायमान होता है उसी प्रकार राध इधर उधर होती है और अन्न भक्षण की इच्छा होती है।

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

एक दोष से प्रकट सूजन में परिपाक के समय त्रिदोषकर सम्बन्ध कहते हैं ।

नर्त्तेऽनिलाद्रुग्नविनानपित्तंपाकःकफंवापिविनानपूयः ।।
तस्माद्धिसर्वेंपरिपाककालेपचन्तिशोथास्त्रिभिरेवदोषैः ।।

व्रण में वादी के बिना वेदना नहीं होती है और पित्त के बिना दाह एवं कफ के बिना राज नहीं होती है, पकने के समय तीनों दोषो के मिश्रित होने से सर्व प्रकार का व्रण पकता है ।

राध के न निकालने में दोष

कक्षंसमासाद्ययथैववह्निर्वाय्वीरितः संदहतिप्रसह्य ।।
तथैवपूयोप्यविनिःसृतोहिमांसंशिराःस्नायुचखादतीह ।।

फूंस के ढेर में प्रज्वलित अग्नि वायु की सहायता पाकर जिस तरह पूर्वोक्त ढेर को जलाकर भस्म कर देती है उसी प्रकार राध केन निकलने से वह राध मांस शिरा, और, स्नायु इनसबको खाजाती है

आमंविदह्यमानंचसम्यक्पक्वंचलक्षणैः ।।
जानीयात्सभवेद्वैद्यःशेषास्तस्करवृत्तयः ।।१४।।

पके हुये और कच्चे आम के जो लक्षण जानता है उसे वैद्य कहते है और सब चोर बृत्ति वाले होते हैं ।

अपक्व का चीरना और पक्व की उपेक्षा करने में दोष ।

यश्छिनत्त्याममज्ञानाद्यश्चपक्वमुपेक्षते ।।
श्वपचाविवमंतव्यौतावनिश्चितकारिणौ ।।१५।।

जो अज्ञान से कच्चे व्रण को पका जानकर फोड़ता है और पके फोड़े को कच्चा समझ कर विदीर्ण नहीं करता है वह अज्ञानी वैद्य चाण्डाल के समान होता है ।

इति व्रण शोथ निदानम् ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अथब्रणनिदानम्

द्विधाब्रणःपरिज्ञेयःशारीरागन्तुभेदतः ॥
दोषैराद्यस्तयोरन्यःशस्त्रादिक्षतसंभवः ॥ १ ॥

ब्रण दो प्रकार का होता है एक शरीर दूसरा आगन्तुक शरीर ब्रण शारीरिक दोषों से और आगन्तुक ब्रण शस्त्र आदि के प्रहार से उत्पन्न घाव से होता है।

वातज ब्रण के लक्षण ।

स्तब्धःकठिनसंस्पर्शोमन्दस्रावोमहारुजः ॥
तुद्यतेस्फुरतिश्यावोब्रणोमारुतसंभवः ॥ २ ॥

वादी से उत्पन्न ब्रण में स्तब्धता होती है और हाथ के छूने से कठोर प्रतीत होता है । और उस ब्रण में थोड़ा स्राव होता है । ज्यादा वेदना होती है । सुई के चुभने के सदृश तकलीफ मालूम होती है और उस ब्रण का बर्ण काला होता है ।

पैत्तिक ब्रण के लक्षण ।

तृष्णामोहज्वरक्लेददाहदुष्ट्यवदारणैः ॥
ब्रणंपित्तकृतविद्याग्दंधैःस्रावैश्चपूतिकैः ॥ २ ॥

पैत्तिक ब्रण में प्यास, मोह, बुखार, क्लेद, दाह और दुष्ट ब्रण एवं दुर्गन्धि आती है और स्राव होता है।

श्लैष्मिक ब्रण के लक्षण ।

बहुपिच्छोगुरुःस्निग्धास्तिमितोमन्दवेदनः ॥
पांडुवर्णोऽल्पसंक्लेदीचिरपाकीकफोद्भवः ॥ ४ ॥

कफ से उत्पन्न ब्रण में अत्यन्त गाढ़ापन, गुरुता चिकनापन और निश्चल मन्द वेदना युक्त पीत वर्ण अल्प स्राव और चिरकाल में पकने वाला ये लक्षण होते हैं ।

रक्तज द्वंद्वज ब्रण के लक्षण ।

रक्तोरक्तस्रुतीरक्ताद्वित्रिजःस्यात्तदन्वयैः ॥ ५ ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

जो ब्रण रक्त से पैदा होता है वह लाल वर्ण एवं रक्त स्राव करने वाला होता है । एक दोष और रक्त के सम्बन्ध से जो ब्रण होता है वह द्वन्द्वज और दो दोष और रुधिर के मिलने से सन्निपात का ब्रण होता है ।

सुखसाध्य ब्रण के लक्षण

त्वङ्‌ मांसजःसुखेदेशेतरुणस्यानुपद्रुतः ॥
धीमतोऽभिनवःकालेसुखंसाध्यःसुखब्रणः ॥६॥

जो ब्रण त्वक् और मांस एवं मर्मरहित स्थान में उपद्रव ही नहीं और जो युवा तथा ज्ञानी उनके हेमन्त शिशिर ऋतु में होय उसे सुखसाध्य ब्रण कहते हैं ।

कृच्छ्र साध्य और असाध्य के लक्षण ।

गुणैरन्यतमैर्हीनस्ततःकृच्छ्रोब्रणःस्मृतः ॥
सर्वैर्विहीनोविज्ञेयःसोऽसाध्योनिरुपक्रमः ॥७॥

पूर्व कथित लक्षणों में से अल्प लक्षण वाला ब्रण कृच्छ्साध्य होता है और गुणरहित असाध्य होता है । उसकी चिकित्सा यथार्थ नहीं है ।

दुष्ट ब्रण के लक्षण ।

पूतिःपूयातिदुष्टासृक्स्राव्युत्संगीचिरस्थितिः ॥
दुष्टब्रणोऽतिगंधादिःशुद्धलिंगविपर्ययः ॥८॥

जिस ब्रण में दुर्गन्धयुक्त राध और सड़ा हुआ रक्त निकले जो ऊपर से ऊँचा और भीतर से पीत वर्ण वाला हो चिरकाल रहने वाला उसे दुष्ट ब्रण कहते हैं ।

शुद्ध ब्रण के लक्षण

जिव्हातलाभोऽतिमृदुःश्लक्ष्णःस्निग्धोऽल्पवेदनः ॥
सुव्यवस्थोनिरास्रावःशुद्धोब्रणइतिस्मृतः ॥९॥

जो बण जिव्हा के अधो भाग के समान अत्यन्त नरम होय, सफेद चिकना अल्प वेदना युक्त अच्छे प्रकार स्राव रहित हो उसे शुद्ध ब्रण कहते हैं ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

भरने वाले व्रण के लक्षण ।

कपोतवर्णप्रतिमायस्यांताक्लेदवर्जिताः ॥
स्थिराश्चपिडिकावतोरोहतीतितमादिशेत् ॥ १० ॥

जिसका घाव कबूतर के वर्ण तुल्य होय और जिसमें क्लेद न हो और घाव निश्चल हो जिसमें दाने से दीखे उसे स्थिर भरने वाला जानना चाहिये ।

भरे हुये व्रण लक्षण ।

रूढवर्त्मानग्रंथिमशूनमरुजंव्रणम् ॥
त्वक्सवर्णसमतलंसम्यग्रूढंतमादिशेत् ॥ ११ ॥

जिसका मार्ग पूरित हो गया हो गाँठ बंधी होय सूजन और वेदना होय त्वचा के तुल्य वर्ण हो घाव का गड्ढा भरकर बराबर हो गया हो उसे उत्तम भरा हुआ व्रण जानना चाहिये ।

व्याधि विशेष से कृच्छ्र साध्य व्रण के लक्षण ।

कुष्ठिनांविषजुष्टानांशोषिणांमधुमेहिनाम् ॥
व्रणःकृच्छ्रेणसिध्यंतियेषांचापिव्रणेव्रणाः ॥ १२ ॥

कोढ़ी मनुष्य, विषवाला मनुष्य और क्षयी रोग वाला, मधु वाला, मधु मेही इन मनुष्यों का व्रण कष्ट साध्य होता है और जिसके पहिले व्रण में व्रण पैदा हो उसे भी कष्ट साध्य कहते हैं ।

साध्या साध्य लक्षण ।

वसामेदोऽथमज्जानांमस्तुलुंगंचयःस्रवेत् ॥
आगन्तुजोव्रणःसिध्येन्नसिध्येद्दोषसंभवः ॥ १३ ॥

जिस व्रण में चर्वी मेद, मज्जा और वस्ति स्नेह ये वहैं और वह व्रण आगन्तुज होय तो साध्य होता है और दोषों से उत्पन्न हो तो असाध्य है ।

असाध्य व्रण के लक्षण ।

मद्यागुर्वाज्यसुमनःपद्मचन्दनचम्पकैः

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सुगंधादिव्यगंधाश्चमुमूर्षूणांव्रृण.स्मृता ॥१४॥

मदिरा अगर घी, कमल, चन्दन, और चम्पा के पुष्प तुल्य अथवा चारि जात आदि फूल की सी गन्ध आवें वह असाध्य होता है।

असाध्य लक्षण।

येचमर्मस्वसंभूताभवंत्यत्यर्थवेदनाः ॥ दह्यन्तेचान्तर
त्यर्थबहिःशीताश्चयेव्रृणाः ॥१५॥ दह्यन्तेबहिरत्यथ-
भवंत्यंतश्चशीतलाः ॥ प्राणमांसक्षयश्वासकासारो-
चकपीडिता. ॥ १६॥ प्रवृद्धपूयरुधिराव्रृणायेषांचमर्म-
सु ॥ क्रियाभिःसम्यगारब्धानसिध्यन्तिचयेव्रृणाः १७
वर्जयेद्देवतान्ववैद्यःसंरक्षन्नात्मनोयशः ॥

जो ब्रण मर्म स्थान में पैदा हुये हों और विशेष पीड़ा कारक हों और जिस ब्रण के भीतर दाह हो और वाहर शीतलता हो अथवा बाहर दाह और भीतर शीतलता हो ऐसे वा जिन ब्रणों में बल मांस का क्षय हों श्वास काँस और अन्नद्वेष से विशेष व्यथित हों ऐसे और मर्म स्थानोत्पन्न ब्रणों में राध और रक्त अत्यन्त बहे अथवा जिन ब्रणों को सुयोग्य चिकित्सा करने पर सफलता न हों। ऐसे लक्षण युक्त ब्रण असाध्य होते हैं।

ब्रण रोग में अपथ्य

व्रृणेश्वयथुरायासात्सचरागश्चजागरात् ॥
तौचरुक्चदिवास्वापात्ताश्चमृत्युश्चमैथुनात् ॥१८॥

परिश्रम से ब्रण में शोथ होता है और जागरण से लालामी होती है और दिवा शयन से सूजन पर रक्तता आँकर वेदना होती है और विषय रक्तता उत्पन्न होती है पीडा कारक होकर ब्रण शोथ मृत्यु कारक होता है।

इति शरीर ब्रण निदानम् समाप्तम्।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अथव्रणनिदानम्

नानाधारामुखैःशस्त्रैर्नानास्थाननिपातितैः ॥
भवंतिनानाकृतयोव्रणास्तांस्तान्निबोधमे ॥१॥

विविध प्रकार की धार वाले तथा आनन वाले शस्त्र अनेक स्थानों पर लगने से बहुत तरह की आकृति के व्रण होते हैं उनको कथन करते हैं ।

संख्या सम्प्रप्ति ।

छिन्नंभिन्नंतथाविद्धं क्षतंपिच्चितमेवच ॥
घृष्टमाहुस्तथाषठंतेषावक्षामिलक्षणम् ॥२॥

छिन्न, भिन्न, विद्ध, पिच्चित और छटमा घृष्ट, इन भेद से आगन्तु व्रण ६ प्रकार के होते है ।

छिन्न के लक्षण ।

तिर्यक्छिन्नऋजुर्वापियोव्रणस्त्वायतोभवेत् ॥
गात्रस्यपातनंतद्धिच्छिन्नमित्यभिधीयते ॥३॥

जो व्रण तिरछा, सीधा अथवा दीर्घ हो उसे छिन्न व्रण कहते हैं ।

भिन्न के लक्षण ।

शुक्तिदतेषुखङ्गाविषाणैराशयोहतः ॥
यत्किंचित्स्रवतेतद्धिभिन्नलक्षणमुच्यते ।४।

वर्छी, भाला शर, खडग् के अग्रभाग दन्त सीग इनसे कोष्ठ को वेधित करने से अल्पशम का निर्गमन हो उसे भिन्न व्रण कहते हैं ।

कोष्ठ के लक्षण ।

स्थानान्यमांग्निपक्वानांमूत्रस्यरुधिरस्यच ॥
हृदुडंकःफुप्फुसश्चकोष्ठइत्यभिधीयते ॥५॥

आमाशय, अग्नवाशय, पक्वाशय, मूत्राशय, रक्ताशय, यकृत, प्लीहा हृदय, मलाशय और फुप्फुस इन जगहों को कोष्ठ कहते हैं ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

विशेष लक्षण ।

तस्मन्पिरक्तपूर्णेज्वरोदाहश्चजायते ॥
मूत्रमार्गगुदास्येभ्योरक्तंघ्राणाच्चगच्छति ॥६॥
मूर्च्छाश्वासतृषाऽऽध्मानमभक्तच्छन्दएवच ॥
विण्मूत्रवातसंगश्चस्वेदास्रावोऽक्षिरक्ता ॥७॥
लोहगंधित्वमास्यस्यगात्रदौर्गंध्यमेवच ॥
हृच्छूलंपार्श्वयोश्चापिविशेषंचात्रमेशृणु ॥८॥

वह कोष्ट भिन्न होकर रक्त से पूरित होजावे तब बुखार और दाह होते हैं। मूत्र मार्ग गुदा मुख, और नाक इनमें रक्त निकलने मूर्छा, श्वास प्याह, अफरा अन्नद्वेष, मलमूत्र अधोवायु इनका अवरोध श्वेत स्राव अत्यन्त निकलना नेत्रों में लालामी मुख में लोह वत दुर्गंध का आना अङ्गों में वास आवें हृदय और पसवाड़ों में शूल ये लक्षण होते हैं इनमें और विशेष लक्षणों को मुझसे सुन ।

आमाशय स्थित रक्त के लक्षण ।

आमाशयस्थेरुधिरंछर्दयत्यपि ॥
आध्मानमतिमात्रंचशूलंचभृशदारुणम् ॥९॥

आमाशय में रक्त का एकत्रित होने से रक्त की वमन उदर का अत्यन्त फूलना और अत्यन्त घोर दर्द होता है ।

पक्वाशयस्थ के लक्षण ।

पक्वाशयगतेचापिरुजागौरवमेवच ॥
अधःकायेविशेषेणशीतताचभवेदिह ॥१०॥

पक्वाशय में रक्त एकत्रित होनें से दर्द, देह में गुरुता और कटि स्थान सो लेकर नीचे के भाग में सीतलता होती है ॥

विद्ध व्रण के लक्षण ।

सूक्ष्मास्यशल्याभिहतंयदंगंत्वाशयंविना ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

उत्तुंडितंनिर्गतंवातद्विद्धमितिनिर्दिशेत् ।। ११ ।।

सूक्ष्म अग्रभाग वाले सूचिका आदि शस्त्र से, आशय तीन जो अंग हैं । उनमें वेध होने से शस्त्र उसी में रह जाय अथवा निकल जाय उसमें उत्पन्न ब्रण को विद्ध ब्रण कहते हैं ।

क्षत के लक्षग ।

नातिच्छिन्नंनातिभिन्नमुभयोर्लक्षणान्वितम् ।।
विषमंब्रणमंगेषुतत्क्षतंत्वभिनिर्दिशेत् ।।१२।।

जिसमें अँग अतिच्छिन्न एवं अत्यन्त भिन्न न हुआ हो और दोनों के लक्षण मिलते हों तथा ब्रण तिरछा और बाका होय उसे क्षत ब्रण कहते हैं ।

पिच्चित के लक्षण

प्रहारपीडनाभ्यांतुयदंगंपृथुतांगतम् ।।
सास्थितत्पिच्चितंविद्यान्मज्जारक्तपरिप्लुतम ।।

जो अङ्ग अस्थि सहित मुद्गर आदि की चोट से पिस जाय और मज्जा तथा रक्त से युक्त हो घाव न हुआ हो उसे पिच्चित ब्रण कहते हैं ।

घृष्ट ब्रण के लक्षण ।

घर्षणादभिघाताद्वायदंगंविगतत्वचम् ।।
ऊषास्रावान्वितंतद्धिघृष्टमित्यभिनिर्दिशेत् ।।१४।।

कठोर वस्त्र आदि के घिसने से प्रहार के लगने से जिस अवयव में ऊपर की त्वचा छिल जाय तथा अग्नि के सदृश रक्त निकले उसे घृष्ट ब्रण कहते हैं ।

शसल्य ब्रण के लक्षण ।

श्यावंसशोथंपिटिकान्वितंचमुहुर्मुहुःशोणितवाहिनंच
मृदून्नतंबुद्बुदतुल्यमांसंब्रणंसशल्यंसरुजंवदंति ।।१५।।

जो ब्रण नीले वर्ण की शोथ युक्त, मरोड़ा से युक्त हो वारम्बार रक्त का निर्गमन हो और नरम होकर बबूले के ऊपर मांस उठा हुआ

हो उसे सशल्य व्रण कहते हैं ।

कोष्ठ भेद लक्षण ।

त्वचोऽतीत्यशिरादीनिर्भित्त्वावापरिहृत्यवा ॥
स्वोष्ठेप्रीतिष्ठितंशल्यंकुर्यादुक्तानुपद्रवान् ॥१६॥

त्वचा की सन्धि, शिरा, माँस, नाड़ी हड्डी इनक सन्धियों को वेधित कर शिरा आदि को त्याग कर जो शल्य कोष्ट में रहता है वह उक्त उपद्रवों को करता है ।

असाध्य कोष्ठ भेद ।

तत्रांतर्लोहितंपांडुशीतपादकराननम् ॥
शीतोच्छ्वासंरक्तनेत्रमानद्धं परिवर्जयेत् ॥१७॥

जिसका रक्त आंतों में एकत्रित हो अर्थात बाहर नहीं निकले और जो पीत वर्ण हो हाथ पैर ठन्डे पड़ गए हों और ठन्डी श्वास आती हो, नेत्र लाल पड़ गये हों और अफरा से पीड़ित हो तो ऐसा रोगी त्याज्य है ।

मांस शिरा स्नायु अस्चि सन्धि आदि में
प्रहार के लगने से उत्पन्न लक्षण कहते हैं ।

भ्रमःप्रलापःपतनंप्रमोहोविचेष्टनंग्लानिरथोष्णताच ॥
स्रस्तांगतामूर्च्छनमूर्ध्ववातस्तीव्रारुजोवातकृताश्चता
स्ताः ॥ १८ ॥ मांसोदकाभंरुधिरंचगच्छेत्वेंद्रियार्थो
परमस्तथैव ॥ दशार्द्ध संख्येष्वथविद्धतेषुसामान्यतो
मर्मसुलिंगमुक्तम् ॥

भ्रम, व्यर्थ, भाषी पतित होना इन्द्रिय और मन को मोह कर विचित्र चेष्टाएँ करना, ग्लानि गर्मी अवयवों में शिथिलता, मूर्छा, श्वास का ऊर्ध्व गति को प्राप्त होना तातजन्य तीव्र वेदना मांस के धोवन समान रक्त का बहना, सर्वेन्द्रियों का विकलता को प्राप्त होना ये लक्षण माँसाद्रि मर्मादि मर्म स्थानों चोट के लगने से होते हैं ।

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

मर्म रहित शिराविद्ध के लक्षण :

सुरेन्द्रगोपप्रतिमंप्रभूतंरक्तं स्रवेत्तत्क्षतजश्चवायुः ।।
करोतिरोगान्विधान्यथोक्तान्छरासुविद्धास्वथवाक्षतासु ।। २० ।।

शिरा विध जाय अथवा नाडी में घाव हो जाय तब उसमें से वीर वहुटी कीट के तुल्य रक्त तथा पुष्कल वर्ण वाला रुधिर निकले है और रक्त के क्षय होने से वायु दूषित हो विविध प्रकार के आक्षेपाद रोग पैदा करता है ।

स्नायु विद्ध के लक्षण ।

कौब्ज्यंशरीरावयवावसादःक्रियास्वशक्तिस्तुमुलारुजश्च ।।
चिराद्व्रणोरोहतियस्यचापितंस्नायुर्विद्धं पुरुषंव्यवस्येत् ।। २१ ।।

कुवड़ा पन, तन में हर्ष क्षय, कार्य करने में अनुत्साह, विशेष वेदना कारक चिरकाल में व्रण भरें तो उसे स्नायु विद्ध जानना चाहिये ।

सन्द्धि बिद्ध के लक्षण ।

शोथाभिवृद्धिस्तुमुलारुजश्चबलक्षयःपर्वं सुभेदशोथौ ।।
क्षतेषुसंधिष्वचलाचलेषुस्यात्सर्वं कर्मोपरमश्चलिंगम् २२

चल अथवा अचल सन्धि को बेधित होने से सूजन की बृद्धि होती है । वेदना विशेष होती है सामर्थ्य का नाश सन्धि में भद के तुल्य तकलीफ होती है । सूजन होती है किल्चित कार्य करने पर तो उसमें उपराम होय ।

अस्ति विद्ध के लक्षण ।

घोरारुजोयस्यनिशादिनेषुसर्वां स्ववस्थासुचनैतिशांतिम्
भिषग्विपश्चिद्विदितार्थसूत्रस्तमस्थिविद्ध पुरुषंव्यवस्येत्

जिस मनुष्य के शरीर में रातदिन भयंकर पीडा होय स्वप्न सुषुप्ति जाग्रति आदि तीनों अवस्था में शान्ति होय नहीं उसे अस्थि विद्ध समझना चाहिये ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

यथास्वमेतानिविभावयेत्तु लिंगानिमर्मस्वभिताडितेषु ॥ पांडुर्विवर्णःस्पृशितंनवेत्तियोमांसनमर्मस्वभिताडितःस्यात् ॥ २४ ॥

मर्म स्थान में चोट लगने से पूर्वकथित लक्षण होते हैं जो मनुष्य मांस मर्म स्थान में वेधित होता है उसका वर्ण पीला देह विवर्ण और स्पर्श का ज्ञान नहीं होता है।

सर्व व्रणों के उपद्रव।

विसर्पःपक्षघातश्चशिरास्तम्भोपतानकः॥ मोहोन्मादव्रणरुजोज्वरस्तृष्णाहनुग्रहः ॥ २५ ॥ कासश्छर्दिरतीसारोहिक्का श्वासःसवेपथुः॥ षोडशोपद्रवाःप्रोक्ता व्रणानांव्रणचिन्तकैः ॥२६॥

विसर्प, पथाघात, शिरास्तम्भ अपतानक, मोह, उन्माद, बुखार, वेदना, प्यास, हनुग्रह, कांस, उल्टी, दस्त, हिक्का, श्वास और कंप ये १६ उपद्रव व्रण के जानकारों ने कहे हैं।

इति आगन्तुक व्रण निदानम् समाप्तम्।

अथभग्ननिदानम्प्रारम्भते।

भग्नंसमासाद्द्विविधंहुताशकांडेचसंधौचहितत्रसंधौ॥ उत्पिष्टविश्लिष्टविवर्त्तितंचतिर्यक्चविक्षिप्तधश्चषट्च १

हे अग्दिवेश भग्न रोग दो प्रकार के होने ,हैं काण्डभग्न और सन्धि भग्न इनमें सन्धिभग्न छै प्रकार का है, उतपिष्टं विश्लिष्ट, विवर्तित, तिर्यक् विक्षिप्त और अधःक्षिप्त भग्न टूटने को कहते हैं।

सन्धिभग्न सामान्य लक्षण।

प्रसारणाकुंचनवर्तनोग्रारुक्स्पर्शविद्वेषणमेतदुक्तम्।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सामान्यतःसन्धिगतस्यलिगंउत्पिष्टसन्धेःश्वयथुसः–
मन्तात् ।। विशेषतोरात्रिभवारुजाचविश्लिष्टजेतोच–
रुजाचनित्यम ।। २ ।।

फैलाने के वक्त सकोरने के समय नीचा करने से भयकंर वेदना हो ओर स्पर्श सहन नहीं हो ये लक्षण सन्धिभग्न के हैं। उत्पिष्ट में सन्धि के सर्वत्र सूजन होती है और रात्रि में घोर वेदना होती है सन्धि की अस्थियों का परस्पर घर्षण हो उसे उत्पिष्ट कहते हैं। विश्यिष्ट सन्धियों में शोथ ओर रात्रि को वेदना हो हर वक्त घोर वेदना हो और उत्पिष्ट की अपेक्षा ये लक्षण विश्लिष्ट में ज्यादा होते हैं अर्थात् सन्धि ठंडी पड़ जाती है और अस्थि के प्रथक होने से गड्ढा हो जाता है।

विवर्तितेपार्श्वरुजश्चतीव्राः ।।

विवर्जित सन्धि में दोनों ओर की हड्डी सन्धि से पलट जाती है तब अत्यन्त वेदना होती है सन्धि की अस्थि दोनों ओर घूमती है।

तिर्यग्गतेतीव्ररुजोभवन्ति ।।

तिर्यक–अस्थि के तिर्यक् होने से विशेष वेदना होती है और एक हड्डी सन्धि स्थान से पृथक हो जाती है।

क्षिप्तेऽतिशूलंविशमत्वस्थ्नोः ।।

विक्षिप्त–जोड़ की हड्डी एक ऊपर को हट जाय तब घोर वेदना होती है और हाड़ों में न्यूनाधिक पीडा होती है इसमें दोनों हाड परस्पर से पृथक् हो जाते हैं।

क्षिप्तेत्वधोरुग्विघटश्चसंधेः ।। ३ ।।

अधःक्षिप्त–सन्धि की अस्थि एक नीचे हट जाय तब वेदना विशेष होती है विरुद्ध चेष्टा हो सन्धि के हाड परस्पर अलग हो कुछ नीचे को चले जाते हैं।

अवकाण्डभग्न को कहते हैं।

कांडेत्वतःकर्कटकाश्वकर्णविचूर्णितंपिच्चतमस्थिछलिका।
कांडेषुभग्नंह्यतिपातितंचमज्जागतंचस्फुटितंचवक्रम्४

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

छिन्नंद्विधाद्वादशधापिकांडे-

काण्डभग्न १२ बारह तरह का होता है १ कर्कटक २ अश्वकर्ण ३ विचूर्णित ४ पिच्चित ५ अस्तिछल्लिका ६ काण्डभग्न ७ अतिवाहित ८ मज्जागत ९ स्फुटित १० वक्र औ दो प्रकार काधिन्न इस तरह भग्न बाहर तरह का है इनका वर्णन ।

१ कर्कटक–कर्कट की तरह हाड दोनों ओर दवकर मध्य में ऊचाहोता है ।

२ अश्वकर्ण–अश्व के कान की तरह हाड़ हो जाता है ।

३–विचूर्णित–चूर्णीभूत हो जाय शब्द व स्पर्श से परीक्षा होय उसे विचूर्णित कहते हैं ।

४–पिच्चित–पिचासा हो गया हो उसे पिच्चित ।

५–अस्थि छल्लिका–हाड का कोई हिस्सा छिलका के समान उखड़ जाय उसे कहते हैं ।

६—काण्डभग्न–हड्डी का कांड टूट जाय ।

७—अतिपात—सव हाड टूटे से प्रतीत होते हैं ।

८—मज्जागत अस्ति के अवयव मंज्जागत हो मज्जा को बाहर निकाले ।

९—स्फुटित—हड्डी के ज्यादा टुकड़े हो उसे कहते है ।

१०—वक्र—हड्डी टेढ़ी हो जाय उसकी भी गणना भग्न में होती है ।

११—छिन्न—२ वारीक—बारीक बहुत से हो जांय और एक तरफ से टूट कर दूसरी तरफ निकले उसे छिन्न कहते हैं ।

कांड भग्न के सामान्य लक्षण ।

स्रस्तांगताशोथरुजातिवृद्धिः ।। संपीड्यमानेभवती
हशब्दःस्पर्शासहंस्पंदनतोशूला: ।।५।। सर्वास्वत्रस्था
सुनशर्मलाभोभग्नस्यकांडेखलुचिह्नमेतत् ।।६।।

अवयवों में शिथिलता, सूजन, विशेष वेदना, जिस जगह की हड्डी टूट जाय उस जगह पीड़ा के साथ शब्द हो स्पर्श सहा नहीं जाय, हड्डी फड़के सुई छेदने की सी पीडा होय, और दर्द हो, आराम नहीं पड़ नलक, कपाल, वलय, तरुण रुचक पाँच काँड के चिन्ह है काण्ड भग्न के १२ से अलावा और भेदों का कथन करते हैं ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

भग्नतुकांडेबहुधाप्रयातिममासतानामभिरेतुल्यम् ।।

काण्डों में विविध प्रकार के भग्न होते हैं जो जिस जगह जैसा भग्न हो उसी प्रकार नाम करना चाहिए ।

कष्ट साध्य लक्षण ।

अल्पानिशोनात्मवतोजन्तोर्वातात्मकस्यच ।।
उपद्रवैर्वाजुष्टस्यभग्नकृच्छ्रेणसिध्यति ।।७।।

अल्प भक्षी जिसकी इन्द्रिय वश में नहीं हो वात प्रकृति वाले और बुखार आदि उपद्रव से युक्त पुरुष की हड्डी टूटनें से कष्ट साध्य होता है ।

असाध्य लक्षण ।

भिन्नकपालंकट्यांतुसंधिमुक्तंतथाच्युतम् ।।
जघनंप्रतिपिष्टंचवर्जयेत्तुविचक्षणः ।।८।।

कटि स्थान की कपाल हड्डी टूट गई हो अथवा जोड़ के समीप की हड्डी टूट गई हो अथवा स्थान हीन हो गई हो और जांघ की हड्डी टूट गई हो ऐसा रोगी त्याज्य है ।

असंश्लिष्टकपालंचललाटेचूर्णितंचयत् ।।
भग्नस्तनान्तरेपृष्ठेशंखेमूर्ध्निचवर्जयेत् ।।९।।

ललाट की हड्डी के खण्ड खण्ड हो परस्पर पृथक् हो जाय जोड़ने में न आ सकें अथवा स्तन के मध्य की पीठ को कनपटी की मस्तक की हड्डी टूटने पर वैद्य की चिकित्सा नहीं करनी चाहिए ।

सम्यक्संधितमप्यस्थिदुर्निक्षेपनिबंधात् ।।
संक्षोभाद्वापियद्गच्छेद्विक्रियांतच्चवर्जयेत् ।।११।।

हड्डी के सुप्रकार से जुड़ने पर उसकी हिफाजत न करने से अच्छी तरह न बांधने से धक्का के लगने से पुनर्वार हड्डी के भग्न हो जाय वह रोगी त्याज्य हैं ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

तरुणास्थीनिनम्यन्तेभिद्यन्तेनलकानिच ।।
कपालानिविभज्यंतेस्फुटंतिरुचकानिच ।।१।।

अस्थि विशेष करके भग्न विशेष का कथन करते हैं ।

तरुण हड्डी नव जाती है या वक्र हो जाती है । नलक अस्थि चिर जाती कपाल की अस्थि फूटकर खील खील हो जाती है । और देन्तादिक हड्डी गिर पड़ती है ।

इति भग्न निदानम् समाप्तम् ।

—:०:—

नाडीब्रणनिदानम् ।

—:०:—

यःशोथमाममतिपक्वमुपेक्षतेऽज्ञोयोवाब्रणंप्रचुरपूयमसाधुवृत्तः ।। अभ्यन्तरंप्रविशतिप्रविदार्यतस्यस्थानानिपूर्वविहितानिततःसपूयः ।।१।। तस्यातिमात्रगमनाद्गतिरिष्यतेतुनाडीवयद्वहतितेनमतातुनाडी ।।

जो मूढ व्यक्ति पके हुए ब्रण को कच्चा जानकर उपेक्षा करें और विशेष र ध पड़े हुए फोड़े की उपेक्षा करें तब वह राध बृद्धि गत हो त्वचा मांसादिक स्थान में प्राप्त हो उसे भेदन कर ज्यादा भीतरी पहुंच कर एक मार्ग कर नाड़ी के सदृश वहे उसे नाड़ी ब्रण कहते हैं ।

संख्या रूप सम्प्राति

दोषैस्त्रिभिर्भवतिसापृथगेकशश्चसंमूर्च्छितैरपिचशल्यनिमित्ततोऽन्या ।। २ ।।

अलग अलग दोषों से ३ सन्निपात से १ और शल्येसे १ इन भेद से नाडी ब्रण पांच प्रकार का होता है ।

वातज और पित्तज के लक्षण

तत्रानिलात्परुषसूक्ष्ममुखीसूशला

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

फेनानुविद्धमधिकंस्रवतिक्षपासु ॥
पित्तात्तृषाड्ज्वरकरीपरिदाहयुक्ता
पीतंस्रवत्यधिकमुष्णमहःसुचापि ॥३॥

वायु से नाड़ी ब्रण का मुख रुखा तथा लघु होता है उसमें दर्द हो फेनयुक्त स्राव होता है और रात्रि में ज्यादा स्राव होता है। और पैत्तिक नाड़ी ब्रण में प्याह बुखार दाह हती है पीले रंग की उष्ण दिन में अधिक स्रवने वाली राध वहती है।

श्लेष्मज नाड़ी ब्रण के लक्षण

श्वेताकफाद्बहुघनार्जुनपिच्छिलास्रा ।
स्तब्धासकंडुररुजारजनीप्रबृद्धा ॥

कफ से उत्पन्न नाड़ी ब्रण में सफेद गाढ़ी स्निग्ध खुजली से युक्त रात्रि में स्रवने वाली राध बहती है।

सान्नि पातक नाड़ी ब्रण के लक्षण

दाहज्वरश्वसनमूर्छनवक्रशोषायस्यांभवन्तिविहितानि
चलक्षणानि ॥ ४ ॥ तामादिशेत्पवनपित्तकफप्रकोपा
द्धोममुक्षयकरीमिवकालरात्रिम् ॥

जिस नाडी ब्रण में दाह, बुखार, प्याह, मूर्छा, मुख का शुष्क हो जाना और पूर्वोक्त लक्षण हों उसे सान्निपातिक समझना यह घोर काल रात्रि के सदृश प्राण नाशिनी जानना।

शल्यज नाडी

नष्टंकथंचिदनुनार्गंमुदीरितेषुस्थानेषुशल्यमचिरेणग
तिंकरोति ॥ ५ ॥ साफेनिलंमथितमुष्णमसृग्विमिश्र
स्रावंकरोतिसहसासरुजंचनित्यम् ॥

किसी तरह से कांटा आदि पूर्वोक्त स्थान में टूट जाय तो नाडी ब्रण उत्पन्न हो जाता है और उसमें झाग मिला रक्त युक्त मथे के तुल्य गर्म राध नित्य पीडा युक्त स्रवता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

साध्या साध्य लक्षण

नाडीत्रिदोषप्रभवानसिध्येच्छेषाश्चतःसँखलुयत्नसाध्याः

त्रिदोष जनित नाडी व्रण असाध्य होती है बाकी के चार नाडी व्रण यत्न से साध्य होते हैं ।

इति नाडी व्रण निदानम्

—:०:—

अथभगंदरनिदानम्

—:०:—

गुदस्यद्वंगुलेक्षेत्रेपार्श्वतःपिटिकार्तिकृत् ।।
भिन्नोभगन्दरोज्ञेयःसचपंचविधोमतः ।।१।।

गुदा के पास दो अंगुल ऊँची पीछे एक फुन्सी हो उसमें विशेष वेदना होय वह फूट जाय उसे भगन्दर कहते हैं । यह पांच प्रकार का होता है ।

पूर्वरूप

कटीकपालनिस्तोददाहकंडूरुजादयः ।।
भवन्तिपूर्वरूपाणिभविष्यतिभगंदरे ।।२।।

कमर और कपालास्थि में सुई चुभाने की सी वेदना हो दाह और खुजली चलें पीडा हो ये लक्षण भगन्दर होने वाले के होते हैं ।

शतपोतक के लक्षग

कषायरूक्षैस्त्वतिकोपितोऽनिलस्त्वपानदेशेपिडिकांकरोतियाम् ।। उपेक्षणात्पाकमुपैतिदारुणंरुजाचभिन्नारुणफेनवाहिनी ।।३।। तत्रागमोमूत्रपूरीषरेतसांव्रणैरनेकैः शतपोनकंवदेत् ।।

कसैले और रुक्ष पदार्थों के भक्षण से वायु अति कुपित हो गुदा के पास जो फुन्सी पैदा करती है उसकी भूल करने से फुन्सी पक कर फूट

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

जाती है तब वेदना होती है और झाग सिली राध निकलती हैं अनेक छिद्र हो पर उनमें से मल मूत्र और वीर्य का निर्गमन होता है चलनी के समान छेद होने से इसको शत पोनक कहते हैं ।

उष्ट्र शिरोधर के लक्षण

प्रकोपणैःपित्तमतिप्रकोपितकरोतिरक्तांपिठिकंगुदाश्रि
ताम् ॥ तदाऽऽशुपाकाहिमपूतिवाहिनींभगंदरंतूष्ट्रशिरो
धरंवदेत् ॥ ४ ॥

पित्त जनक पदार्थो के भक्षण से दूषित पित्त गुदा स्थान में रक्त वर्ण की फुंसी पैदा करता है । वही फुन्सी शीघ्र पक जाती है उसमें से राध निकलती है ऊष्ट्र की ग्रीवा के समान फुन्सी होने से इसे उष्ट्र शिरोधर कहते हैं ।

परिस्रावी भगन्दर के लक्षण कहते हैं

कंडूयनोघनस्रावीकठिनोमंदवेदनः
श्वेतावभासःकफजःपरिस्रावीभगंदरः ॥ ५ ॥

कफ से उत्पन्न भगन्दर में खुजली चलती है और कठिन फुन्सी तथा गाढ़ वर्ण की राध बहती है अल्प वेदना कारक तथा सफेद वर्ण की होता है । यह कफ से होती है ।

शंबू का वर्त के लक्षण

बहुवर्णरुजास्रावाःपिडिकागोस्तनोपमाः ॥
शंबूकावर्तवन्नाडीशंबूकावर्त्तकोमतः ॥ ६ ॥

विविध प्रकार के स्राव युक्त पीले वर्ण की गौ के थन के तुल्य अनेक फुन्सी हों उन फुन्सियों का व्रण शख के आटे के समान गोल हो उसे शंबू का वर्त कहते हैं ।

उन्मार्गि भगंदर के लक्षण

क्षतागदतिःपायुगतांविवर्धतेह्युपेक्षणात्स्युः क्रमयोविदा-

यंते ॥ प्रकुर्वंतेमार्गमनेकधामुखैव्रणैस्तदुन्मार्गिभगं
दरंवदेत् ॥ ७ ॥

गुदा में कंटक आदि के लगने से जो घाव हो जाय उसकी करने से कृमि पड़ जाय वह कृमि उस घाव को विदीर्ण करें तब वह कृमियों से विदीर्ण हुआ ब्रण गुदा तक पहुंच जाय तब कृमि उसमें बहुत मुख कर लेती है इसीसे इस रोग की उन्मार्गि भगन्दर कहते हैं ।

साध्या साध्य विचार

घोराःसाधयितुंदुःखाःसर्वएवभगंदरा ॥
तेष्वसाध्यस्त्रिदोषोत्थःक्षतजश्चविशेषतः ॥ ८ ॥

सब भगंदर दुःसाध्य है सन्निपात का असाध्य होता है और क्षतज भगन्दर असाध्य होता है ।

असाध्य भगन्दर के लक्षण

वातमूत्रपुरीषाणिक्रिमयःशुक्रमेवच ॥
भगंदरात्प्रस्रवन्तिनाशयन्तिततमातुरम् ॥ ९ ॥

जिस भगन्दर में अपान वायु मूत्र विष्ठ कृमि और वीर्य निकले वह रोगी नाश को प्राप्त होता है ।

इति भगन्दर निदानम् समाप्तम ।

अथउपदंशनिदानम्

—:o:—

हस्ताभिघातान्नखदन्तघातादधावनादत्यतिसेवनाद्वा ॥
योनिप्रदोषाच्चभवंतिशिश्नेपंचोपदंशाविविधोपचारैः १

हाथ के घात से नाखून दाँत के लगने से अच्छी प्रकार न धोने से विशेष स्त्री प्रसंग करने से अथवा दूषित योनि के संयोग से अथवा

खारी और उष्ण जल के धोने से ब्रह्मचारिणी स्त्री के साथ गमन करने से लिंग में गर्मी का रोग होता है वह पांच प्रकार का है ।

वातज पैत्तिक व रक्तोप दंश के लक्षण

सतोदभेदैःस्फुरणोःसकृष्णैःस्फोटैर्व्यवस्येत्पवनोपदंशम्
पीतैर्बहुल्केदयुतैःसदाहैःपित्तेनरक्तात्पिशितावभासैः २

गुप्तेन्द्रिय के ऊपर काले फोड़ा हो और उनमें पोड़ने नोचने के तुल्य वेदना हो तोड़ने की सी तकलीफ हो और स्फुरण हो तो ये वातिकोपदंश के लक्षण हैं पैत्तिकोदंश में पीत वर्ण के फोड़ा होते हैं उनमें पानी निकलता है और रुधिर के उपदंश में मांस के तुल्य लाल वर्ण के फोड़े उठते हैं ।

कफ और सन्निपातिक उपदंश के लक्षण

सकंडुरैः शोथयुतैमहर्द्भिः शुल्केर्धनै कफेन ॥
नानाबिधस्रावरुजोपपन्नमसाध्यमाहुस्त्रिमलोपदंशम्

कफ के उपदंश में सफेद मोटे खुजली युक्त फोड़े उठते हैं सूजन युक्त गाढ़ी राध वहती है । और सन्निपात के उपदंश में अनेक तरह का स्राव होता है वेदना विशेष होती है यह असाध्य होता है ।

असाध्य उपदंश के लक्षण

विशीर्णंमांसंकृमिभिःप्रजग्धंमुष्कावशेषंपरिवर्जयेत्तु ॥
संजातमात्रेणकरोमूढः क्रियांनरोयोविषयेप्रसक्तः ॥
कालेनशोथक्रिमिदाहपाकैर्विशोर्णशिश्नोम्रियतेसतेन ॥

जिस उपदश में गुप्तेन्द्रिय का मांस गलजाय कृमि पड़कर लिंग को खावे अन्डकोश मात्र ही बाकी रह जाय वह असाध्य होता है और उपदंश के उत्पन्न होते ही जो अज्ञानी मनुष्य विषया सक्त हो कर उस की क्रिया नहीं करता है उसका लिंग थोड़े दिनों में सूजकर कृमि युक्त हो जाता है दाह और पाक से व्यथित हो लिंग गल जाता है तब मनुष्य मृत्यु को प्राप्त होता है ।

लिङ्ग वर्ति के लक्षण

अंकुरैरिवसंघातैरुपर्यु परिसंस्थितैः ॥ क्रमेणजायतेवर्त्तिस्ताम्रचूडशिखोपमा ॥५॥ कोशस्याभ्यन्तरेसंधौस
र्वं संधिगतापिवा ॥ लिंगवर्त्तिरितिख्याताल्लिंगार्शइति
चापरे ॥६॥ कुलित्थाकृतयःकेचित्केचित्पद्मदलोपमाः
॥ मेढ्रसंधौनृणांकेचित्केचित्सर्वाश्रयाःस्मृताः ॥ ७ ॥
रुजादाहार्त्तिबहुलास्तृष्णातोदसमन्विताः ॥ स्त्रीणांपुं
सांचजायंतेह्युपदंशाःसुदारुणाः ॥ ८ ॥

मुर्गी की चुटिया के सदृश लिङ्ग के ऊपर माँसांकुर एक के ऊपर एक कोष भीतर की मणि अथवा सर्व सन्धियों में पैदा होय तो इसे लिंग वर्ति कहते हैं । और कतिपय इसे लिंगार्श कहते हैं यह सान्निपातिक है इस में मांस के अंकुर कूलथी के तुल्य कोई पद्म दल के समान होते हैं और किसी के अंडकोश की सन्धि में किसी के सम्पूर्ण आसयों में होते हैं वेदना और दाह ज्यादा होती है प्याह नौचने के समान व्यथा होती है स्त्री और मनुष्यों के यह रोग भयंकर वेदना कारक हैं ।

इत्युपदंश निदानम् ।

फिरँगनिदानम् ।

फिरंगसंज्ञकेदेशेबाहुल्येनैषयद्भवेत् ॥
तस्मात्फिरंगइत्युक्तोव्याधिर्व्याधिविशारदैः ॥१॥

अंग्रेजों के देश में विशेषतः इस रोग के होने से चिकित्सक इसे फिरंग कहते हैं ।

विप्रकृष्ठ निदानम् ,

गंधरोगःफिरंगोयंजायतेदेहिनांध्रुवम ॥

फिरंगिणातिसंसर्गात्फिरंगिण्याःप्रसंगतः ।।
भवेत्तंलक्षयेत्तेषांलक्षणैर्भिषजांवर ।।२।।

यह फिरंग व्याधि है यह मेमव अँग्रेजों के साथ सहवास करने से होता सो उसका कथन करते हैं ।

रूप ।

फिरंगस्त्रिविधोज्ञेयोबाह्यश्चाभ्यान्तरस्तथा ।।
बहिरन्तर्भवश्चापितेषांलिंगानिचब्रुवे ।।३।।

फिरंग रोग तीन प्रकार का होता है १ बाहर का २ भीतर का ३ और तीसरा बाहर भीतर दोनों जगह होता है । उनके लक्षण कथन करता हूँ ।

तत्रबाह्यःफिरंगःस्याद्विस्फोटसदृशाल्यपरुक् ।।
स्फुटितोव्रणवद्वेद्यःसुखसाध्योपिसस्मृतः ।।४।।

बाहर का फिरंग रोग फोड़ा के तुल्य अल्प वेदना कारक और तत् बत् ही फूटता है यह सुख साध्य है ।

संधिष्वाभ्यन्तरःसस्यादुभयोर्लक्षणैतुः ।।
कष्टदोऽतिचिरस्थयीकष्टसाध्यतमश्चः ।।५।।

और सन्धि गत फिरंग रोग अथवा बाहर भीतर के लक्षणों से युक्त हो वह अति कष्ट कारक चिरकाल तक रहने वाला कष्ट साध्य होता है ।

फिरंग के उपद्रव ।

कार्श्यंवलक्षयोनासाभंगोवन्हेश्चमंदता ।।
अस्थिशोषोऽस्थिवक्रत्वंफिरंगोपद्रवाअमी ।।६।।

देह दुर्बल हो जाती है शक्ति भी कम पड़ जाती है । मन्दाग्नि तथा अस्थि सूख जाती है तथा हड्डी वक्र हो जाती है ये फिरंग के उपद्रव हैं ।

साध्या साध्य तथा कष्ट साध्य लक्षण ।

वहिर्भवोभवेत्साध्योनूतनोनिरुपद्रवः ।।
आभ्यन्तरस्तुकष्टेनसाध्यःस्यादयमामयः ।।७।।

बहिरंतर्भवोजीर्णःक्षोणस्योपद्रवैर्युतः ॥
बोध्योऽथाधिसाध्योयमित्यूचुर्मुनयःपुरा ॥८॥

जो बाहर का फिरंग होय नवीन और उपद्रव हीन हो वह साध्य होता है और भीतर का कष्ट साध्य है बाहर भीतर दोनों स्थानों का प्राचीन उपद्रव युक्त हो वह असाध्य होता है इसे बात बातका भेद जानना यह सूजाक नाम से मशहूर है ।

इति फिरङ्ग रोग समाप्तम् ।

अथशूकदोषनिदानम् ।

अक्रमाच्छेफसोवृद्धिंयोऽभिवाञ्छतिमूढधीः ॥
व्याधयस्तस्यजायन्तेदशचाष्टौचशूकजाः ॥१॥

जो मूढ मनुष्य शास्त्रोक्त विधि के बिना लिंग को स्थूल करना चाहता है । वह विष कृमि का लेप करें अथवा जल योग आदि का उपचार करें उसके १८ तरह के शूकज रोग पैदा होते हैं ।

सर्षपिका के लक्षण ।

गौरसर्षपसंस्थानाशूकदुर्भग्नहेतुका ॥
पिडिकाश्लेष्मवाताभ्यांज्ञेयासर्षपिकाचसा ॥२॥

दुष्ट जल जीव का कुरीति से लेप करने से कफ और वायु दुष्ट हो सफेद सरसों के तुल्य फुन्सी पैदा करें उसे सर्षपिका कहते हैं ।

अष्ठीला और ग्रंथित के लक्षण ।

कठिनाविषमैर्भुग्नैर्वायुनाष्ठीलिकाभवेत् ॥
शूकैर्यत्पूरितंशश्वद्ग्रथितंनामतत्कफात् ॥३॥

दुष्टलेपादिक से वायु कुपित हो कठिक विषम और वक्र पिडिका पै उसे उष्ठीला कहते हैं और निरन्तर शूक्त लेप से गुप्तेन्द्रिय के ऊपर गांठ उत्पन्न इसे ग्रंथित कहते हैं ।

फिरंगिणातिसंसर्गात्फिरंगिण्याःप्रसंगतः ॥
भवेत्तं लक्षयेत्तेषांलक्षणैर्भिषजांवर ॥२॥

यह फिरंग व्याधि है यह मेमव अँग्रेजों के साथ सहवास करने से होता सो उसका कथन करते हैं।

रूप।

फिरंगस्त्रिविधोज्ञेयोबाह्यआभ्यान्तरस्तथा ॥
बहिरन्तर्भवश्चापितेषांलिंगानिचब्रुवे ॥३॥

फिरंग रोग तीन प्रकार का होता है १ बाहर का २ भीतर का ३ और तीसरा बाहर भीतर दोनों जगह होता है। उनके लक्षण कथन करता हूँ।

तत्रबाह्यःफिरंगःस्याद्विस्फोटसदृशाल्परुक् ॥
स्फुटितोव्रणवद्वेद्यःसुखसाध्योपिसस्मृतः ॥४॥

बाहर का फिरंग रोग फोड़ा के तुल्य अल्प वेदना कारक और तत् बत् ही फूटता है यह सुख साध्य है।

संधिष्वाभ्यन्तरःसस्यादुभयोर्लक्षणैतुः ॥
कष्टदोऽतिचिरस्थयीकष्टसाध्यतमश्चः ॥५॥

और सन्धि गत फिरंग रोग अथवा बाहर भीतर के लक्षणों से युक्त हो वह अति कष्ट कारक चिरकाल तक रहने वाला कष्ट साध्य होता है।

फिरंग के उपद्रव।

कार्श्यंवलक्षयोनासाभंगोवन्हेश्चमंदता ॥
अस्थिशोषोऽस्थिवक्रत्वंफिरंगोपद्रवाअमी ॥६॥

देह दुर्बल हो जाती है शक्ति भी कम पड़ जाती है। मन्दाग्नि तथा अस्थि सूख जाती है तथा हड्डी वक्र हो जाती है ये फिरंग के उपद्रव हैं।

साध्या साध्य तथा कष्ट साध्य लक्षण।

वहिर्भवोभवेत्साध्योनूतनोनिरुपद्रवः ॥
आभ्यन्तरस्तुकष्टेनसाध्यःस्यादयमामयः ॥७॥

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

बहिरंतर्भवोजीर्णःक्षोणस्योपद्रवैर्युतः ॥
बोध्योऽथाधिसाध्योयमित्यूचुर्मुनयःपुरा ॥८॥

जो वाहर का फिरंग होय नवीन और उपद्रव हीन हो वह साध्य होता है और भीतर का कष्ट साध्य है वाहर भीतर दोनों स्थानों का प्राचीन उपद्रव युक्त हो वह असाध्य होता है इसे बात बातका भेद जानना यह सूजाक नाम से मशहूर है।

इति फिरङ्ग रोग समाप्तम्।

* * *

अथशूकदोषनिदानम्।

* * *

अक्रमाच्छेफसोवृद्धिंयोऽभिवाञ्छतिमूढधीः ॥
व्याधयस्तस्यजायन्तेदशचाष्टौचशूकजा ॥१॥

जो मूढ मनुष्य शास्त्रोक्त विधि के बिना लिंग को स्थूल करना चाहता है। वह विष कृमि का लेप करें अथवा जल योग आदि का उपचार करें उसके १८ तरह के शूकज रोग पैदा होते हैं।

सर्षपिका के लक्षण।

गौरसर्षपसंस्त्यानाशूकदुर्भग्नहेतुका ॥
पिडिकाश्लेष्मवाताभ्यांज्ञेयासर्षपिकाचसा ॥२॥

दुष्ट जल जीव का कुरीति से लेप करने से कफ और वायु दुष्ट हो सफेद सरसों के तुल्य फुन्सी पैदा करें उसे सर्षपिका कहते हैं।

अष्ठीला और ग्रंथित के लक्षण।

कठिनाविषमैर्भुग्नैर्वायुनाष्ठीलिकोभवेत् ॥
शूकैर्यत्पूरितंशश्वग्द्रथितंनामत्कफात् ॥३॥

दुष्टलेपादिक से वायु कुपित हो कठिक विषम और वक्र पिडिका [illegible]पै उसे उष्ठीला कहते हैं और निरन्तर शूक्त लेप से गुप्तेन्द्रिय के ऊपर गांठ उत्पन्न इसे ग्रंथित कहते हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

कुम्भिका और अलजी के लक्षण ।

कुंभिकारक्तपित्तोत्थाजांबवास्थिनिभाऽशुभा ॥
तुल्यजांत्वलजीविद्याद्यथाप्रोक्तांविचक्षणैः ॥४॥

रक्त पित्त से जामुन की गुठली के तुल्य काले वर्ण की फुन्सी हो उसे कुम्भिका कहते हैं और अलजी के तुल्य काली और लाल पूर्वोक्ति प्रमेह पिडिका में कथित लक्षणों के समान फुन्सी हो उसे अलजी कहते हैं ।

मृदित और संमूढ के लक्षण ।

मृदितंपीडितंयत्तु संरब्धवातकोपतः ॥
पाणिभ्यांभृशसंमूढापिडिकाभवेत् ॥१५॥

शूक वेदना होने पर लिंग को हाथ से मसलने से अथवा दबाने से जो शोथ हो उसे मृदित कहते हैं और लेपादिक के बाद खुजली होने पर लिंग को खुजाने से एक बिना मुख वाली फुंसी पैदा हो उस संमूढ पिडिका कहते हैं ।

अवमंथ के लक्षण ।

दीर्घाश्हृवयश्चपिडिकादीर्यन्तेमध्यतस्तुयाः ॥
सोऽवमंथःकफासृग्भ्यांवेदनारोमहर्षकृत् ॥६॥

कफ रक्त से बड़ी लम्बायमान मध्य भाग में फूटी हुई पीडा कारक जिसनें रोमांच हो जाय ऐसी पीडिका अवमंथ कहते हैं ।

पुष्करिका के लक्षण ।

पित्तशोणितसंभूतापिडिकाचिता ॥
पद्मकर्णिकसंस्थानाज्ञेयापुष्करिकाचसा ॥७॥

पित्त रस से उत्पन्न पिडिका के चारों और छोटी २ फुंसी हों कमल का केसरि के तुल्य उनका आकार हो उसे पुष्करिका कहते हैं ।

स्पर्श हानि के लक्षण और उत्तमा के लक्षण कहते हैं ।

स्पर्शहानिंतुजनयेच्छोणितंशूकदूषितम् ॥
मुग्दमाषोग्दमारक्तारक्तपित्तोद्भवाश्चयाः ॥८॥

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

शूक के लेपादिक से रक्तज दूषित हो त्वचा का स्पर्श ज्ञान नष्ट करता है और शूक वारम्बार लेप करने से रक्त पित्त दूषित हो मूंग उर्द के सदृश लाल रंग की पिडिका हो उसे उत्तमा कहते हैं यह अजीर्ण की बजह से होती है ।

शतपोनक के लक्षण ।

ब्याधिरेषोत्तमानामशूकाजीर्णनिमित्तजः ॥
छिद्रैरणुमुखैर्लिंगंचितंयस्यसमंततः ॥ ९ ॥

जिस की गुप्तेन्द्रिय में बहुत से छेद हो जाय तो बाय शोणित इस व्याधि को शतपोनक कहते हैं ।

त्वक्याक के लक्षण ।

वातशोणितज्ञोऽव्याधिर्विज्ञेयःशतपोनकः ॥
वातपित्तकृतोयस्तुत्वक्पाकोज्वरदाहवान् ॥ १० ॥

वात पित्त से गुप्तेन्द्रिय की त्वचा पक जाती है और उसमें बुखार व दाह होती हैं ।

शोणितार्बुद के लक्षण ।

कृष्णैःस्फोटैःसरक्ताभिःपिडिकाभिर्निपीडितम् ॥
यस्यवास्तुरुजाचोग्र ज्ञेयतच्छोणितार्बुदम् ॥११॥

जिसकी गुप्तेद्रिय के ऊपर काले लाल फोड़ा पैदा हो जाय तथा उन में वेदना हो उसको शोणितार्बुद कहते हैं ।

मासार्बुद के लक्षण ! व माँस पाक के लक्षण ।

मांसदोषेणजानीयादर्बुदंमांससंभवम् ॥
शीर्यन्तेयस्यमांसानियस्यसर्वाश्चवेदना. ॥१२॥

माँस दूषित होने से मांसार्बुद पैदा होता हैं और जिसकी गुप्तेन्द्रिय का माँस गल जाय और विविध प्रकार की वेदना हो त्रिदोष से उत्पन्न इस व्याधि को माँस पाक कहते हैं।

विद्यात्तंमांसपाकंतुसर्वदोषकृतंभिषक् ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

विद्रधिंसन्निपातेनयथोक्तमभिनिर्दिशेत् ॥

जो लक्षण विद्रधि निदान में सन्निपातिक विद्रधि के कहे हैं वही लक्षण शूक विद्रधि में होते हैं।

तिल कालक के लक्षण।

कृष्णानिचित्राणथवाशूकानिसविषाणितु ॥
पातितानिपचत्याशुमूढ्ं निरवशेषतः ॥१४॥
कालानिभूत्वामांसानिशीर्यंतेयस्यदेहिनः ॥
सन्निपातसमुत्थांस्तुतान्विद्यात्तिलकालकान् ॥१५॥

काले अथवा चित्र विचित्र वर्ण के विष शूकों के लेपादिक से उसी क्षण लिंग पक जाता है। तथा सम्पूर्ण मांस तिल के समान काला होकर गल जाता है इस त्रिदोष से उत्पन्न व्याधि को तिलकालक कहते हैं।

असाध्य शूक दोष के लक्षण।

तत्रमांसाबुर्दयच्चमासपाकश्चयःस्मृतः
विद्रधिश्चनसिध्यंतियेचस्युस्तिलकालकाः ॥१६॥

शूक दोषों में मांसाबु [illegible] विद्रधि और तिल कालक ये चार शूक असाध्य है।

इति शूक दो निदाम्।

—०—

अथकुष्ठनिदानम्।

—०—

विरोधीन्नपानानिद्रवस्निग्धगुरूणिच ॥ भजतामा-
गतांच्छर्दिवेगांश्चान्यान्प्रतिघ्नताम् ॥ १ ॥ व्यायाम
मतिसंतापमतिभुक्त्वानिषेविणाम् ॥ शीतोष्णलंघना
हारान्क्रमंमुक्त्वानिषेविणाम् ॥ २ ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

विरुद्ध अन्न खाने से पतले चिकने भारी पदार्थ भक्षण से आई हुई वमन के वेग को रोकने से और अन्य मल मूत्रादि वेगावरोध से, अत्यन्त भोजन कर व्यायाम और अधिक धूप सेवन से शीत, गर्मी, लंघन और आहार इनके क्रम को छोड़कर विरुद्ध सेवन से।

धर्मश्रमभयार्त्तानांद्रुतंशीतांबुसेनिवाम् ॥ अजीर्णाध्यशनानांचपञ्चकर्मापिचारिणाम् ॥३॥ नवान्नदधिमत्स्यादिलवणाम्लनिषेविणाम ॥ माषमूलकपिष्टान्नतिलक्षीरगुडाशिनाम् ॥ ४ ॥ व्यवायंचाप्यजीर्णेऽन्नेनिद्रांचभजतांदिवा ॥ विप्रान्गुरून्धर्षयतांपापंकर्मचकुर्वताम ॥५॥ वातादयस्त्रयोदुष्टास्त्वग्रक्तंमाँसमंबुच ॥ दूषयंतिसकुष्ठानांसप्तकोद्रव्यसंग्रह ॥६॥

स्वेद, श्रम, भय, इनसे व्यथित हो ठण्डा जल पीने से, अजीर्ण में भक्षण से तथा भोजन के ऊपर भोजन करने से वमन, विरेचन, निरुहण, अनुवासन, नस्यकर्म इन पचकर्म के करने के वक्त कुपथ्य सेवन से, नवीनअन्न दधि मछली खारी खट्टा खाने से और उर्द, मूली, मिष्ठान, लड्डू आदि तिल, दूध, गुड़ इनके खाने से अन्न के पाचन बिना स्त्री प्रसंग करने से तथा दिवाशयन से औप ब्राह्मण गुरु इनका अपमान करने से, पापकर्म के आचरण से, मनुष्यों के वातादिक दोष चमड़ा रक्त मांस और जल इन को दुष्ट कर कुष्ठ रोग पैदा करते हैं। कुष्ठ के वातादिक तीनों दोष और त्वचादि सप्त पदार्थ हेतु हं। इनसे ही १८ अठारह कुष्ठ पैदा होते हैं।

कुष्ठ के सप्त भेद।

अतःकुष्ठानिजायंतेसप्तचैकादशैवच ॥
कुष्ठानिसप्तधादोषैःपृथग्द्वंद्वैःसमागतैः ॥७॥

अलग अलग दोषों से ३ द्वन्द्वज ३ और सान्निपातिक १ सम्पूर्ण मिल कर ाहसत ठष्कुोते हैं सम्पूर्ण कुष्ठ त्रिदोष होने पर भी दोषाधिक होने से उसी की प्रधानता जाननी।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

कुष्ठ के पूर्वरूप

सर्वेष्वपित्रिदोषेषुऽप्रदेशोऽधकोमतः ॥ अतिश्लक्ष्णखरस्पर्शस्वेदास्वेदविवर्णता ॥ ८ ॥ दाहःकंडूस्त्वचिस्वपस्तोदःकोष्ठोन्नतिःक्लमः ॥ व्रणनामधिकंशूलंशीघ्रोत्पत्तिश्चिरस्थितिः ॥९॥ रूढानामपिरूक्षत्वंनिमित्तेऽल्पेपिकोपनम् ॥ रोमहर्षोऽसृजःकाष्ण्यंकुष्ठलक्षणमग्रजम् ॥ १० ॥

जिस जगह कुष्ठ उत्पन्न होता है उस जगह हाथों से चिकना खुरदरा प्रतीत होता है । और उस जगह पसीना आता हैं नहीं भी आता है तथा उस जगह रंग बदल जाता है दाह तथा खुजली चलती है त्वचा का स्पर्श ज्ञान नहीं रहता है, नोंचने की सी वेदना होती है । विषैली मक्खिका के काटनें के तुल्य चकते पड़ते हैं बिना परिश्रम थकावट मालूम होती है । व्रण में अधिक वेदना होती है और व्रण की उत्पत्ति शीघ्र होकर चिरकाल तक स्थिति रहती है । व्रण के भरते समय रूक्षताहोती है और अल्प बिना कारण ही कोप का रक्त होता है, रोमाँच्च हो जाता हैं और रक्त काला पड़ जाता है ये कुष्ठ के पूर्वरूप हैं ।

सातपहाकुष्ठों के लक्षण ।

कृष्णारुणकयालाभंयद्रूक्षंपरुषंतनु ॥
कपालतोदलहुलंतत्कष्ठंविषमंस्मृततम् ॥ ११ ॥

काला तथा लाल एवं खोपड़ी के तुल्य रूक्ष कठिन चमड़ा वाला तथा नोंचने की सी वेदना युक्त चिकित्सा करने कठिन कुष्ठ को कापाल कुष्ठ कहते हैं ।

औदुम्बर कुष्ठ के लक्षण कहते हैं ।

रुग्दाहरागकंडूभिःपरीत्तंलोमपिंजरम् ॥
उदुंबरफलाभासंकुष्ठमौदुंबरंवदेत् ॥ १२ ॥

औदुम्वर कुष्ठ में दर्द, दाह तथा रक्तता एवं खुजली चलती है और

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

केश कपिल रंग के हो जाते हैं और गूलर के फल फूल सदृश चकत्ते हो जाते है ।

मंडल कुष्ठ के लक्षण कहते ।

श्वेतरक्तं स्थिरंस्त्यानंस्निग्धमुत्सन्नमंडलम् ॥
कृच्छ्रमन्येनसंयुक्तं कुष्ठं मंडलमुच्यते ॥१३॥

मंडल कुष्ठ स्वेत वर्ण का होता है और लाल कठोर गीला और मंडला कार दूसरे से मिला हुआ कष्ट साध्य होता है ।

ऋक्ष जिव्ह कुष्ठ के लक्षण कहते हैं ।

कर्कशंरक्तपर्यंतमन्तःश्यावंसवेदनम ॥
यदृक्षजिह्वासंस्थानमृक्षजिह्वंतदुच्यते ॥१४॥

यह कुष्ठ कठिन मध्य में काला अन्त में लाल वर्ण का वेदना कारक एवं रीछ की जिव्हा वत होत है

पुंडरीक कुष्ट के लक्षण ।

सश्वेतंरक्तपर्यंतंपुंडरीकदलोपमम् ॥
सोत्सेधंचसरागंचपुंडरीकंप्रचक्षते ॥ १५ ॥

यह कुष्ठ कमल पत्र के तुल्य स्वेद वर्ण का होता हैं और अन्त भाग में लालामी होती है, कुछ ऊंचा उठा हुआ मध्य में लाल लक्षण युक्त कुष्ठ को पुंठरीक कुष्ठ कहते हैं ।

सिध्म कुष्ठ के लक्षण ।

श्वेतंताम्रंचतनुयद्रजोघृष्टंविमुंचति ॥
प्रायेणोरसितत्सिध्ममलाबुकुसुमोपमम् ॥ १६ ॥

सफेद, लाल, पतला, खुजाने से जिसमे भुसी उड़े विशेषतः छाती में होने वाला घीया के पुस्प तुल्य आंकार वाले कुष्ठ को सिध्म कुष्ठ कहते हैं ।

कांकण कुष्ठ के लक्षण ।

यत्काकणंतिकावर्णंसपाकंतीव्रवेदनम् ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

त्रिदोषलिंगंतत्कुष्टंकाकणंनैवसिध्यति ॥ १७ ॥

चिरमिठी के तुल्य लाल और मध्य में काला और निकट में लाल अथवा मध्य में लाल अन्त में काला हो और किञ्चत्मात्र पका तीव्र पीडा कारक तीनों दोषों के लक्षणों से युक्त कुष्ठ को कारण कुष्ठ कहते हैं यह अच्छा नहीं होता हैं ।

ग्यारह क्षुद्र कुष्ठों के लक्षण ।

अस्वेदनंमहावास्तुयन्मत्स्यशकलोपमम् ॥
तदेककुष्ठंचर्माख्यबहलहस्तिचर्मवत् ॥ १८ ॥

स्वेद हीन स्थूल जगह पर होनें वाला मीन की त्वचा तुल्य गोलाकार हो और जिसका चर्म गज के चर्म सदृश मोटा और कठिन हो उसे चर्म कुष्ठ कहते हैं ।

किटिभ कुष्ठ के लक्षण और वैपादिक कुष्ठ के लक्षण ।

श्यावंकिणखरस्पर्शपरुषंकिटिभंस्मृतम् ॥

नीले रंग का घाव को चट के तुल्य कठिन स्पर्श विदित हो और रक्ष हो उसे किटिभ कुष्ठ कहते हैं और करकी हथेली पैर के तरुआ जिस में फट जाय और घोर वेदना होय उसे वैपादिक कुष्ठ के हेत है ।

वैपादिकंपाणिपादस्फोटनंतीव्रवेदनम् ॥ १९ ॥

टिप्पणी—वैपादिक को बिना ही नहीं कहते हैं क्योंकि बिबाई पैर में ही होती है और विपादिका में हाथ पैरों में फुंसी होती हैं काले वर्ण की और वह फुंसी स्रावित होती है तथा खुजली से व्याप्त होती हैं अतः पाददारी भिन्न और विपादिका भिन्न इसमें अन्तर होता है ।

अलस कुष्ठ के वदद्रु मंडल कुष्ठ के लक्षण

कंडूमद्भिःसरागैश्चगंडैरलसकंचितम् ॥
सकंडूरागपिटिकंदद्रु मंडलमुन्दतम् ॥ २० ॥

अलस कुष्ठ में अत्यन्त वेदना होती है पित्ती के तुल्य अनेक लाल वर्ण की फुंसी पैदा होती हैं और खुजली से व्याप्त लाल वर्ण के धोड़ा होय और ऊंचे उठे हुये मंडल के आकार तुल्य गोल हो उसे दद्रु

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

मंडल कुष्ठ कहते हैं ।

चर्म दल कुष्ठ के लक्षण ।

रक्तं सशूलंकंडूमत्स्फोटंयद्दलयत्यपि ॥
तच्चर्मदलमाख्यातमस्पर्शसहमुच्यते ॥२१॥

लाल वर्ण का दर्द पीडित खुजली जिसमें होय और फुन्सी होकर फूट जाय स्पर्श सहा नहीं जाय और त्वचा फट जाय उसे चर्म दल कुष्ठ कहते हैं ।

पामा कुष्ठ और कच्छु कुष्ठ के लक्षण ।

सूक्ष्माबह्वचःपिडकाःस्राववत्यःपामेत्युक्ताःकंडुमत्यः
सदाहा ॥ सैवस्फोटैस्तीव्रदाहैरुपेताज्ञेयापाण्योःक-
च्छुरुग्रास्फिचोश्च ॥२२॥

छोटी छोटी बहुत सी फुन्सी होकर खुजादें और उनमें स्राव तथा दाह होय उसको पामाकुष्ठ कहते हैं और बड़े बड़े फोड़े जिस पामा मे होय है तीव्र दाह और हाथों में होने वाले कुष्ठ को कच्छु कहते ।

विस्फोट कुष्ट व शतारु कुष्ट के लक्षण ।

स्फोटाःश्यावारुणाभासाविस्फोटाःस्युस्तनुत्वचः ॥
रक्तंश्यावंसदाहार्तिशतारुस्याद्बहुव्रणम ॥२३॥

जिस कुष्ठ में काले व लाल वर्ण के फोड़े हो और चर्म पतला होय उसे विस्फोटक कहते हैं । और जिस कुष्ठ में लाल काले जलन और शूल युक्त अनेक फुन्सी हों उसे शतारु कुष्ठ कहते हैं ।

विचर्चिका के लक्षण ।

सकंडूःपिडिकाश्यावाबहुस्रावाविचर्चिका ॥

जिसमें काले वर्ण की फुन्सी खुजली युक्त सीत तुल्य हों तथा अधिक स्राव होता हो उसे विचर्चिका कहते हैं ।

चर्म कुष्ठ से विचर्चिका कुष्ठ तक १२ कुष्ठ हैं और पाछे के ११ क्षुद्र कुष्ट हैं । यहां कतिपय मनुष्य भ्रम करें तो कथन करते हैं । विचर्चिका पामों में उत्पन्न हो फूट कर विपादिका होती है यह तो भोज का मत है ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

वायु आदि कुष्ठों के लक्षण ।

खरंश्यावारुणरूक्षंवातात्कुष्ठंसवेदनम् ॥ २४ ॥
पित्तात्प्रकुपितंदाहरागस्रावान्वितंस्मृतम् ॥

वात की प्रधानता से खरदरा काले वर्ण का अथवा रक्त वर्ण रूक्ष और वेतना कारक कुष्ठ होता है ।

पैत्तिक कुष्ठ के लक्षण ।

कफात्क्लेदिघनंस्निग्धसकंडूशैत्यगोरवम् ॥२५॥
द्विलिंगंद्वंद्वजंकुष्ठंत्रिलिंगंसान्निपातिकम् ॥

पित्तज कुष्ठमें लाल दाह तथा स्राव युक्त होता हैं और कफ का कुष्ठ क्लेद युक्त सघन स्निग्ध गुरु तथा खुजली युक्त होता है । द्वन्द्वज में दो दोषों के लक्षण मिलते हैं और जिसमें तीनों दोषों के लक्षण मिलते हों उसे त्रिदोषज कुष्ठ कहते हैं ।

रसादि सात धातुओं में प्राप्त कुष्ठों के लक्षण ।

त्वक्स्थेवैवर्ण्यमंगेषुकुष्ठेरौक्ष्यंचजायते ॥ २६ ॥
त्वक्स्वापोरोमहर्षश्चस्वेदस्यातिप्रवर्तनम् ॥

जब कुष्ट रस धातु में प्राप्त होता है तब शरीर का रंग बदल जाता है और रूक्षता, शून्यता, तथा रोमाञ्च होता है और पसीना ज्यादा आता हैं ।

रक्तस्थित कुष्ठ के लक्षण ।

कंडूर्विपूयकश्चैवकुष्ठेशोणितसंश्रये ॥ २७ ॥

कुष्ठ का रक्त गत होने से राध का निकलना तथा खुजली चलती है ।

मांसस्थित कुष्ठ के लक्षण ।

बाहुल्यंवक्त्रशोषश्चकार्कश्यंपिडिकोद्गमः ॥
तोदःस्फोटस्थिरत्वंचकुष्ठेमांससनाश्रिते ॥२८॥

कुष्ठ मसस्थित होने से मुख सूखना तथा तथा तन में कर्कशता शरीर में सुई चुभने के तुल्य पीडा तथा चिरकाल तक रहने वाली फुन्सी और स्फोट होता है ।

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

मेदा में प्राप्त कुष्ट के लक्षण ।

कौण्यंगतिक्षयोऽगानांसंभेदःक्षतसर्पणम् ॥
मेदःस्थानगतेलिंगंप्रागुक्तानितथैवच ॥२९॥

मेदोगत कुष्ठ में हाथ गिर पड़ते हैं, चलने में सामर्थ्य नष्ट हो जाती है। होटों में वेदना तथा घाव बढ़ जाता है और (रस रक्त माँस गत) कुष्ठ के लक्षण होते हैं।

हड्डि और मज्जा में प्राप्त कुष्ठ के लक्षण ।

नासाभंगोऽक्षिरागश्चक्षतेषुकृमिसंभवः ॥
स्वरोपघातश्चभवेदस्थिमज्जासमाश्रिते ॥३०॥

अस्थि और मज्जागत कुष्ठ में नासिका का पतन एवं नेत्रों का लाल होना व्रण में कृमियों का पड़ना तथा स्वरभेद होना इत्यादिक लक्षण होते हैं।

वीर्यार्तवगत कुष्ठ के लक्षण ।

दंपत्योकुष्ठबाहुल्याद्दुष्टशोणितशूक्रयोः ॥
यदपत्यतयोर्जातंज्ञेयतदपिकुष्ठितम् ॥३१॥

जिन स्त्री मनुष्यों का रज व वीर्य कुष्ठ से दूषित होता है उसे दूषित रज और वीर्य से उत्पन्न हुई सन्तान कोष्ठ युक्त होती है।

कुष्ठ में साध्या साध्य विचार ।

साध्यंत्वग्रक्तमांसस्थंवातश्लेष्माधिकंचयत् ॥
मेदसिद्धंद्वजंयाप्यंवर्ज्यंमज्जास्थिसंश्रितम् ॥३२॥
कृमितृल्लासमन्दाग्निसंयुक्तंतत्त्रिदोषजम् ॥
प्रभिन्नप्रस्तुतांगंचरक्तनेत्रंहतस्वरम् ॥३३॥
पंचकर्मगुणातीतंकुष्ठहंतीकुष्ठितम् ॥

रस, रक्त, मांस इन धातुओं में गत कुष्ठ और वायु तथा कफाधिक्य, कुष्ठ साध्य होने हैं। और मेदोगत कुष्ठ तथा दो दोषों से उत्पन्न कुष्ठ उपाय

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

करने पर साध्य होता है । मज्जा, अस्थि तथा वीर्यगत कुष्ठ असाध्य होते हैं ।

और कीड़े जिसमें पड़ जाय, उल्टी मन्दाग्नि जिसमें हो त्रिदोष से उत्पन्न कुष्ठ असाध्य है । और फूट कर स्राव जिसमें होय तथा रक्त चक्षु हो जाय और स्वरभेद तथा वमन विरेचनादि पंच कर्म क्रिया सफल न होय वह मनुष्य मृत्यु को प्राप्त होता है ।

कुष्ठ में चिकित्सा के लिए प्रधानदोष के लक्षण ।

वातेनकुष्ठंकापालंपित्तेनौदुंबरकफात् ॥३४॥
मंडलाख्यंविचर्चीचऋष्याख्यंवातपित्तजम् ॥
चर्मैककुष्टंकिटिभंसिध्मालसविपादिकाः ॥३५॥
वातश्लेष्मोद्भवाःश्लेष्मपित्ताद्दद्रुशतारुषी ॥
पुंडरीकंसविस्फोटंपामाचर्मदलतथा ॥३६॥
सर्वैःस्यात्काकणंपूर्वंत्रिकंदद्रूःसमाकणा ॥
पुंडरीकर्क्षजिह्वेमचमहाकुष्ठानिसप्ततु ॥२७॥

वायु से कापाल कुष्ठ पित्त से औदुम्बर कफ से मण्डल और विचर्चिका, का वात पित्त मे ऋक्ष और जिव्ह, वात श्लेष्म से चर्मकुष्ठ किडिन, सिध्म अलस और विपादिका होते हैं ।

और श्लेस्म पित्त से दद्रु शतारु, पुन्डरीक बिस्फोटक पामा चर्म दल और सन्निपात से काकण कुष्ठ होता है । कापाल, उदुम्बर मन्डल, दद्रु काकण, पुण्डरीक और ऋक्षजिव्ह ये सप्त महा कुष्ठों में से हैं ।

किलास का निदान ।

कुष्ठैकसंभवंश्वित्रंकिलासंचारुणंभवेत् ॥
निर्दिष्टमपरिसावित्रिधातूद्भवसंश्रयम् ॥३८॥

जिन कारणों से कुष्ठ की उत्पत्ति होती है उन्हीं कारणों थे सफेद कुष्ठ और लाल कुष्ट होते हैं । इनमें स्राव नहीं होता है तथा ये तीन धातुओं के आश्रित है । अर्थात् वात पित्त कफ और रक्त मांस तथा मेदा इनके

आश्रित रहते हैं ।

वातादिक भेद से लक्षण कहते हैं ।

वाताद्रूक्षारुणंपित्तात्ताम्रंकमलपत्रवत् ॥ सदाहंरोमविध्वंसिकफाच्छ्वेतंघनंगुरु ॥ ३९ ॥ संकण्डूरंक्रमाद्रक्तमांसमेदस्सुचादिशेत् ॥ वर्णेनैवेदृगुभयंकृच्छ्रंतच्चोत्तरोत्तरम् ॥४०॥

वायु से रूखा और लाल होता है पित्त से रक्त कमल पत्र के तुल्य लाल दाह युक्त होता है और उसमें बाल पतित हो जाते हैं । कफ से स्वेत वर्ण का गाढा और गुरु तथा खुजली से व्याप्त होता है । इसी तरह से रक्ताश्रित लाल मांसाश्रित ताम्र वर्ण का और मेदाश्रित सफेद होता है ।

सफेद कुष्ट के साध्या साध्य लक्षण ।

अशुक्लरोमाबहुलमसंश्लिष्टमथोनवम् ॥
अनग्निदग्धजंसाध्यंश्वित्रंवर्ज्यमतोऽन्यथा ॥४१॥

जिस स्वेद कुष्ट के बाल ऊपर के स्वेद वर्ण के न हुए हों और पतले हो परस्पर मिले न हो तथा जो स्वेत कुष्ट नवीन पैदा हुआ हो । और वन्हि दग्धन हो इससे विरुद्ध लक्षण युक्त कुष्ट असाध्य होता है ।

असाध्य लक्षण ।

गुह्यपाणितलौष्ठेषुजातमप्यचिरंतनम् ॥
वर्जनीयंविशेषेणकिलासंसिद्धिमिच्छता ॥४२॥

गुदा की जगह में, कर तथा पैरों में, तालु में ओष्ट में उत्पन्न हुआ किलास कुष्ट थोड़े दिन का होने पर भी यश की चाहना वाला वैद्य त्याग करदे ।

सांसर्गिक रोग ।

प्रसँगाद्गात्रसंस्पर्शान्निश्वासात्सहभोजनात् ॥ सहशय्यासनाच्चापिवस्त्रमाल्यानुलेपनात् ॥४३॥ कुष्ठंज्वरश्च-

शोषश्चनेत्राभिष्यन्दएवच ॥ औपसर्गिकरोगाश्चसंक्रा
मन्तिनरान्नरम् ॥४४॥

विषय भोग के प्रसंग से, अथवा तनके छूने से, श्वास के लगने से एक पात्र में निकट बैठकर भक्षण करने से, एक खाट पर सोने से, और एक ही जगह परस्पर भिड़कर बैठने से, सन्निकट रहने से, पहिने हुए कपड़े के पहिनने से, पहिनी हुई माला के धारण करने से, लगने से बचे हुए चन्दन के लेप से कुष्ठ बुखार क्षयरोग, चक्षुरोग और शीतलादिक रोग तथा भूतोपसर्गिक रोग एक मनुष्य से उड़कर अन्य मनुष्य के हो जाते हैं ये उड़ा रोग होते हैं इनसे अलग रहना चाहिए ।

म्रियतेयदिकुष्ठेनपुनर्जातस्यतद्भवेत् ॥
नातोनिंद्यतरोरोगोयथाकुष्टंप्रकीर्तितम् ॥४५॥

कुष्ठ रोगी मनुष्य के मृत्यु प्राप्त होने पर मी यह कुष्ठ दूसरे जन्म में भी होता है अतः इसके बराबर कोई रोग निन्दित नहीं है ।

इतिश्रीमाधवनिदानेकृष्णानन्दिनीभाषाटीकायां
कुष्ठरोग निदान समाप्तम् ।

—०—

अथशीतपित्तनिदानम् ।

—०—

सम्प्राप्ति ।

शीतमारुतसंस्पर्शात्प्रदुष्टौकफमारुतौ ॥
पित्तेनसहसंभूयबहिरंतर्विसर्पतः ॥१॥

ठंडी वायु के लगने से कफ वात दूषित हो पित्त से मिल भीतर शोणितादि कों में तथा अन्य बाहर त्वचा में प्राप्त हो शीत पित्तको उत्पन्न करते हैं ।

पूर्वरूप ।

पिपासारुचिहृल्लासदेहसादांगगौरवम् ॥
रक्तलोचनतातेषांपूर्वरूपस्यलक्षणम् ॥२॥

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

प्याह, अन्नद्वेष, मुख से पानी का पतन होना शरीर में भड़कन, तथा अवयवों में गुरुता, और नेत्रों का लाल होना ये लक्षण शीत पित्त होने के पहिले होते हैं ।

उदर्द के लक्षण ।

वरटीदष्टसंस्थानःशोथ संजायतेबहिः ॥
सकंडूस्तोदबहुलश्छर्दिज्वरविदाहवान् ॥ ३ ॥
उदर्दमितितंविद्याच्छीतपित्तमथापरे ॥
वाताधिकंशीतपित्तमुदर्दस्तुकफाधिकः ॥ ४ ॥

ततैया के काटने के तुल्य चमड़ा के ऊपर चकत्ता हों और खुजली से व्याप्त सूचिका चुभने से उत्पन्न व्यथा की तरह तकलीफ हों, और उल्टी सन्ताप, तथा दाह जिस रोग में हों उसे उदर्द कहते हैं कतिपय इसे शीत पित्त तथा पित्तो: उछलता कहते हैं । यदि इस रोग में खुजली हो तो श्लेष्मज सन्ताप दाह हो ती पित्तज जानना चाहिये । शीतपित्त में वायु प्रधान तथा उदर्द में कफ प्रधान होता है ।

उदर्द के अन्य लक्षण ।

सोत्संगैश्चसरागैश्चकंडूमद्भिश्चमंडलैः ॥
शैशिरःकफजोव्याधिरुदर्दःपरिकीर्त्तितः ॥ ५ ॥

सीत से कफ कुपित हो शरीर के ऊपर रक्त वर्ण के चकत्ते उत्पन्न करें और उनमें खुजली चलें मंडल के तुल्य आकार सहित गोल मध्य में पिचके हुये तथा आस पास ऊँचो उठे हुये हो उसे उदर्द कहते हैं ।

कोड के लक्षण ।

असम्यग्वमनोदीर्णपित्तश्लेष्मान्ननिग्रहैः ॥
मंडलानिसकंडूनिरागवंतिबहूनिच ॥
उत्कोठःसानुबंधश्चकोठइत्यभिधीयते ॥ ६ ॥

वमन करने वाली औषधियों को सेवन करने से अच्छी प्रकार वमन न हो अथवा कफ पित्त के दूषित होते से, और आई हुई वमन के वेग

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

को रोकने से। शरीर में लाल वर्ण के अनेक चकत्ते पैदा होते हैं। और उनमें खुजली चलती है ये उत्कोठ के लक्षण हैं और येही उपद्रवों सहित पूर्वोवत चकत्ते अल्प काल में पैदा होकर नष्ट हो जाय उसे कोठ कहते हैं।

इति कृष्णा नन्दिनी भाषाटीकायाँ माधव निदाने
शीत पित्तोदर्द कोठ निदानम् समाप्तम्

अथअम्लपित्तनिदानम् ।

—:o:—

अम्ल पित्त का निदान।

विरुद्धदुष्टाम्लविदाहिपित्तप्रकोपिपानान्नभुजोविदग्धम् ।।
पित्तंस्वहेतूपचितंपुरायत्तदम्लपित्तंप्रवदंतिसंतः ।। १ ।।

विरुद्ध (मीन दुग्ध आदि) और दूषित अन्न–अम्ल दाह कर्ता, तथा पित्त दूषित अन्न के खाने पीने से वर्षादिक ऋतु में अपने कारणों से संचित हुआ पित्त अम्ल पित्त को पैदा करता है।

अम्ल पित्त के लक्षण कहते हैं।

अविपाकक्लमोत्क्लेशतिक्ताम्लोद्गारगौरवैः ।।
हृत्कंठदाहारुचिभिश्चाम्लपित्तंवदेद्भिषक् ।। २ ।।

भोजन का पाक अच्छी तरह नहीं होय व्यायाम किये थकावट मालूम होय, उल्टी, कटु तथा खट्टी डकारें आवें। देह में गुरुता, हृदय और कंठ में दाह हो अन्न में अरुचि हो। इन लक्षणों से वैद्य अम्ल पित्त रोग को निश्चय करते हैं सो वह उर्ध्वंगत तथा अधोगात होने से दो तरह का है।

अधोमार्ग गामी अम्ल पित्त के लक्षण।

तृड्दाहमूर्च्छाभ्रममोहकारिप्रयात्यधोवाविविधप्रकारम् ।।
हृल्लासकाठानलसादकर्णस्वेदांगपीतत्वकरंकदाचित् ।३।

अधोगत अम्ल पित्त के होने से प्यास, दाह, मोह, बेहोशी, भ्रम सूखी

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

रद्द, मन्दाग्नि, कर्ण में स्वेद शरीर में पीलापन इत्यादिक लक्षण होते हैं और गुदा मार्ग काला लाल दुर्गन्धि युक्त अनेक प्रकार का पित्त गिरता है।

ऊर्ध्वगत अम्ल पित्त के लक्षण।

वातंहरित्पीतकनीलकृष्णमारक्तरक्तोभवतीवचाम्लम् ॥
मांसोदकाभंत्वतिपिच्छिलाच्छश्लेष्मानुयातंविदिधंरसे-
न ॥४॥ भुक्तेविदग्धेत्वथवाप्यभुक्तेकरोतितिक्ताम्लव
मिंकदाचित् ॥ उग्दारमेवं वंधमेवकंठेहृत्कुक्षिदाहंशि
रसोरुजंच ॥ ५ ॥

ऊर्ध्वगामी अम्ल पित्त में हरित, पीत, नीला कृष्ण वर्ण का और ताम्र वर्ण समान लाल, खट्टा, मांस के धोवन समान अति गाढ़ा निर्मल, कफ मिला हुआ, खारी कसेला आदि अनेक वर्ण का पित्त गिरता है।

खाया हुआ अन्न पान विदग्ध दशा को प्राप्त होकर अथवा भोजन से पूर्व ही कटु और खट्टी डकारें आती हैं मस्तक में वेदना तथा कंठ हृदय कूख में दाह होती है।

कफ पित्तज अम्ल पित्त के लक्षण।

करचरणदाहमौष्ण्यंमहतीमरुचिंरचकफपित्तम् ॥
जनयतिकण्डूमण्डलपिडिकाशतनिचितगात्ररोगचयम्

कफ पित्तज अमल पित्त में हाथ पैरों में दाह अवयवों गर्मी में अन्न द्वेष, बुखार, खुजली, रक्त के दूषित होने से शरीर में अनेक फुंसी तथा चकत्ते और पुर्वोक्त अविपाकादि लक्षण होते हैं।

अमल पित्त के साध्या साध्य लक्षण

रोगोऽयमम्लपित्ताख्योयत्नात्संसाध्यतेनवः ॥
चिरोत्थितोभवेद्याप्यःकृच्छ्रसाध्य·सकस्यचित् ॥ ७ ॥

नवीन उत्पन्न हुआ अम्ल पित्त उपाय करने से साध्य होता हैं ज्यादा दिन का होने से असाध्य होता है और किसी के यह रोग अपथ्य सेवन

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

द्वारा कष्ट साध्य होता है।

वात और कफ संसर्ग होने से अम्ल पित्त के लक्षण।

सानिलंसानिलकफंसकफंतच्चलक्षयेत् ॥
दोषलिंगेनमतिमान्भिषङ्मोहकरंहितम् ॥ ८ ॥

वायु युक्त अम्ल पित्त वाय श्लेष्म युक्त अम्ल पित्त और कफ युक्त अम्ल पित्त इस तरह से तीन प्रकार के अम्ल पित्तों की परीक्षा वैद्य दोषों के लक्षणों से करें। इसका हेतु यह हैं कि उर्ध्वगत अम्ल पित्त में छर्दि तथा अधोगत अम्ल पित्त में अतिसार होता है अतः वैद्यों को भ्रम होता है इसलिये इस रोग की परी सूक्ष्म रीति से करनी चाहिये उनके पृथक् पृथक् लक्षणों का कथन करते हैं।

वातजन्य अम्ल पित्त के लक्षण।

कंपप्रलापमूर्च्छाचिमिचिगात्रावसादशूलानि ॥
तमसादर्शनविभ्रमविमोहहर्षाश्चवातयुते ॥ ९ ॥

वात युक्त अम्ल पित्त में कंप वकवाद, मूर्छा अवयवों में झनझनाहट अंग-म्लानि, उदर का दूखन नैत्रों के सामने अन्धकार का आना भ्रान्ति तथा इन्द्रियों की मोह, और रोमाञ्च होना इत्यादिक लक्षण हीते हैं।

कफ जन्य अम्ल पित्त के लक्षण।

कफनिष्ठीवनगौरवजडताऽरुचिशीतसादवमिलेपाः।
दहनबलसादकंडूर्निद्राचिह्नंकफानुगते ॥ १० ॥
उभयमिदमेवचिह्नंमारुतकफसंभवेत्यम्ले ॥

कफ युक्त अम्ल पित्त में कफ का थूकना गुरुता तथा देह का जकड़ना अन्नद्वेष, ठंड का लगना तथा शरीर में टूटन की सी वेदना, वमन तथा मुँह कफ से लिप्त होता है और अग्नि की मन्दता शक्ति का नष्ट हौना, खुजली तथा निद्रा, ये लक्षण होते हैं। और वात कफ युक्त अम्ल पित्त में पूर्वोक्त कहे हुये वात कफ युक्त अम्ल पित्त के लक्षण होते हैं।

कफ पित्त युवत अम्ल पित्त के लक्षण।

भ्रमोमूर्छाऽरुचिश्छर्दिरालस्यंचशिरोरुज ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

प्रसेकोमुखमाधुर्यश्लेष्मपित्तास्यलक्षणम् ॥११॥

कफ पित्त युक्त अम्ल पित्ता में, भ्रम मूर्च्छा अन्न में अरुचि, वमन, आलस्य, शिर, पीडा, मुख से पानी का गिरना और मुख में मीठापन होना ये लक्षण होते हैं।

इति अम्ल पित्त निदानम्।

❀

अथविसर्पनिदानम्

❀

विसर्प निदान

लवणाम्लकटूष्णादिसंसेवादोषकोपतः ॥
विसर्पःसप्तधाज्ञेयःसर्वतःपरिसर्पणात् ॥१॥
रक्तंलसीकात्वङ्मांसंदूष्यंदोषास्त्रयोमलाः ॥
विसर्पाणांसमुत्पत्तौविज्ञोयाःसप्तधातवः ॥२॥

खारी अम्ल, कटु उष्ण आदि पदार्थों के भक्षण से वायु आदि दोष दूषित हो सात प्रकार का विसर्प रोग पैदा करते हैं। इसको सब जगह फैल जाने से विसर्प कहा है सो चरक में लिखा है (त्रिविन्ध सर्पति यतो विसर्प स्तेन सस्मृतः। परि सर्पोथ का नाम्ना सर्वतः परि सर्पणात्।) वायु आदि तीनों दोष, रक्त मांस को जब दुष्ट कर देतें हैं तव पूर्वोक्त सात प्रकार के विसर्प रोग पैदा होते हैं, ये सब धातु विसर्प के पैदा होने के कारण हैं।

वातिक विसर्प के लक्षण।

तत्रवातात्परीसर्पोवातज्वरसमाकृति ॥
शोफस्फुरणनिस्तोदभेदपामार्हिर्षवान् ॥३॥

वातिक विसर्प रोग में वात ज्वर के तुल्य लक्षण होते हैं तथा शरीर में सूजन, नोंचने की सी वेदना तोड़ने की सी, पीड़ा, शूल, रोमान्च, फरकना, थकावट होती है।

पैत्तिक विसर्प के लक्षण तथा कफ विसर्प के लक्षण कहते हैं।

पित्ताद्द्रुतगतिःपित्तज्वरलिंगोऽतिलोहितः ॥
कफात्कंडूयुतःस्निग्धःकफःज्वरसमानरुक् ॥४॥

पैत्तिक विसर्प में पित्त ज्वर के तुल्य लक्षण होते हैं और शरीर अत्यन्त लाल होता है और शीघ्र गति से यह रोग बहुत जल्दी फैल जाता है। कफ के विसर्प में कफ ज्वर के तुल्य वेदना होती है और अत्यन्त खुजली चलती है और स्निग्धता होती है।

सान्निपातिक विसर्प के लक्षण।

सन्निपातसमुत्थश्चसर्वरूपसमन्वितः ॥५॥

त्रिदोषज विसर्प में तीनों दोषों के लक्षण होते हैं।

अग्नि विसर्प के लक्षण।

वातपित्ताज्ज्वरच्छर्दिमूर्च्छातीसारतृड्भ्रमैः ६ अस्थिभेदाग्निसदनतमकारोचकैर्युतः ॥ करोतिसर्वमंगंचदीप्तांगारावकीर्णवत ॥७॥ यंयंदेशंविसर्पश्चविसर्पतिभवेच्चसः ॥ शांतांगारासितोनीलोरक्तोवाशुचीयते ॥८॥ अग्निदग्धइवस्फोटैःशीघ्रगत्वाद्द्रुतंचसः ॥ मर्मानुसारीवीसर्पःस्याद्वातोऽतिबलस्ततः ॥ ९ ॥ व्यथेतांगंहरेत्संज्ञांनिद्रांचश्वासमीरयेत् ॥ हिक्कांचसततवस्थामीदृशींलभतेनरः ॥१०॥ क्वचिच्छर्मारतिग्रस्तोभूमिशय्यासनादिषु ॥ चेष्टमानस्ततःक्लिष्टोमनोदेहसमुद्भवाम् ॥११॥ दुबोधामश्रुतेतिद्रांसोऽग्निवीसर्पउच्यते ॥

वात पित्त से उत्पन्न विसर्प में बुखार, उल्टी मूर्छा, दस्त, प्याह, भ्रम सान्धियों में टूटने की सी व्यथा और मन्दाग्नि, अन्धकार का आना अन्न में अरुचि, ये लक्षण होते हैं सर्व शरीर अंगार के तुल्य प्रतीत

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

होता है। जिस जिस स्थान पर यह रोग फैलता है उसी स्थान पर वन्हि हीन अंगार के तुल्य काला, नीला, लाल, होकर शीघ्र सूजन युक्त होता है और आँच के जले तुल्य फफोला होते हैं। और जब यह विसर्प उदर तथा हृदय में प्राप्त हो जाता है तब सर्वाङ्गों में व्यथा होती है शक्ति और निद्रा का नाश हो जाता है। श्वास और हिचकी आने लगती है। वह रोगी भूमि या आसन तथा शय्या आदि पर कभी भी शान्ति को प्राप्त नहीं होता है। किसी भी अँग के हिलने से वेदना मालूम पड़ती है और मन तथा शरीर दोनों ही में मोह हो जाता है। जिससे गम्भीर निद्रा आती है जाग्रत करने पर भी निद्रा भंग नहीं होती है। अर्थात् मृत्यु रूपी निन्द्रा को प्राप्त होता है इस रोग बिसर्ष कहते हैं।

गन्थि विसर्प के लक्षण।

कफेनरुद्धःपवनोभित्त्वातंबहुधाकफम् ॥१२॥
रक्तंचवृद्धरक्तस्यत्वक्शिरास्नायुमांसगम् ॥
दूषयित्वाचदीर्घांणुवृत्तस्थूलखरात्मनाम् ॥१३॥
ग्रंथीनांकुरुते मालांरक्तानांतीव्ररुग्ज्वराम् ॥
श्वासकासितसारस्यशोषहिक्कावमिभ्रमै ॥१४॥
मोहवैवरायमूर्च्छांगभंगाग्निसदनैर्युताम् ॥
इत्यंग्रंथिवीसर्पःकफमारुतकोपजः ॥१५॥

निज कारण से दूषित हुआ कफ वायु की गति का अवरोध कर बृद्धिगत रुधिर को तथा कफ को भेद कर त्वचा नस नाड़ी और मास इन में स्थित हो इनको दूषित कर लम्बी, लघु गोल स्थूल, खरदरी, रक्त, ग्रंथि की माला उत्पन्न करता है। और उन ग्रंथियों में अधिक वेदना होती है।

बुखार, श्वास, खांसी, दस्त, मुख में पापड़ी का परना। हिक्का, उलटी भ्रम, मोह द्युति का बदलना मूर्छा, अवयवों का टूटना, मन्दाग्नि, ये लक्षण ग्रंथि विसर्प रोग में होते हैं, यह कफ वायु के कोप से होता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

कर्दम बिसर्प के लक्षण ।

कफपित्ताज्ज्वरःस्तभोनिद्रातंद्राशिरोरुजा ।।
अंगावसादविक्षेपौप्रलेपारोचकभ्रमाः ।।
मूर्च्छाग्निहानिर्भेदोऽस्थ्नांपिपासेन्द्रियगौरवम् ।१६।
आमोपवेशनंलेपःस्रोतसांसचसर्पति
प्रायेणामाशयंगृह्णन्नैकदेशनंचातिरुक् ।।
रिडिकैरिवकीर्णोतिपीतलोहितपांडुरैः ।।१७।।
स्निग्धोऽसितोमेचकाभोमभिनःशोफवान्गुरुः ।।
गंभीरपाकःप्राज्योष्मास्पष्टःक्लिन्नोऽवदीर्यते ।।१८।।
पंकवच्छीर्णमांसश्चस्पष्टस्नायुशिरागणः
शवगंधीचवीसर्पकर्दमाख्यमुशंतियम् ।।१९।।

कफ और पित्तके कोपसे जो विसर्प होता है उसमें बुखार अवयवों का जकड़ना, नींद, तन्द्रा, शिर में दर्द, शरीर में ग्लानि । हाथ पैरों इतस्ततो फेंकना, व्यर्थ भाषण, अन्नद्वेष, भ्रम, मूर्छा, मन्दाग्नि, हड़ फूटन, प्याह इन्द्रियों का जकड़ जाना । आम का पतन होना, मुखादि छिद्रों में कफ का लिप्त होना । इत्यादि लक्षण होते हैं । तथा यह आमाशय में पैदा होकर पीछे सब शरीर में फैल जाता है उसमें अल्प वेदना होती है । और उसमें सर्वत्र पीली ताम्र वर्ण की तथा सफेद रँग की फुन्सी होती है । तथा वह बिसर्प स्निग्ध, स्याही के तुल्य काली मलीन शोथ युक्त गुरु, गंभीर पाक अर्थात् भीतर से पकी हो और भयंकर दाह हो और दाबने से गीली हो जाती है तथा फट जाती हैं और कचि के तुल्य उसका मांस हो जाता है । नसें और स्नायु दीखती हैं और मुर्दे की सी बास आती है इत्यादि लक्षण होते हैं ।

क्षतज विसर्प के लक्षण ।

बाह्यहेतोःक्षतात्क्रुद्ध सरक्तंपित्तमीरयन् ।।

विसर्पं मारुतःकुर्यात्कुलित्थसदृशैश्चितम् ॥ २० ॥
स्फोटैःशोथज्वररुजादाहाढ्यं श्यावशोणितम् ।२१।

वाह्य हेतुओं से क्षतज विसर्प होता है । शरीर में जब कही घाव होता है तब वायु दूषित हो पित्त और रक्त को प्रेंरित कर विसर्प उत्पन्न कर देती है। उसमें कुल्थी के तुल्य काले वर्ण के फोड़ा होते हैं । शोथ बुखार वेदना और दाह होती है । और शोणित काला निकलता है इस विसर्प को पित्ताज विसर्प के अन्तर्गत जानने से संख्या में विरुद्ध नहीं पड़ता है । अन्यथा संख्या बढ़ जाती है यह भोज का घेय है ।

विसर्प के उपद्रव ।

ज्वरातिसारवमथुस्त्वङ्मांसदरणंक्लमः ॥
अरोचकाविपाकौचविसर्पाणामुपद्रवः ॥ २२ ॥

बुखार, दस्त, उल्टी, त्वचा, मांस का गलना बिना परिश्रम ही थकावट होना श्रम, अरुचि, अन्त का पवरिपाक न होना ये विसर्प के उपद्रव हैं ।

साध्या साध्य विसर्प के लक्षण ।

सिध्यन्तिवातकफपित्तकृताविसर्पाःसर्वात्मकःकफकृत-
श्चनसिद्धिमेति ॥ पित्तात्मकोऽजनवपुश्चभवेदसाध्यः
कृच्छ्राश्चमर्मसुभवंतिहिसर्वएव ॥ २३ ॥

वात, पित्त कफ से उत्पन्न विसर्प साध्य होता है । त्रिदोषज और क्षतज विसर्प असाध्य होते हैं । पैत्तिक विसर्प में यदि तन काला हो जाय तो असाध्य है और मर्म स्थानों में प्रगठ विसर्प कष्ट साध्य होते हैं ।

इति पं० चोखेलाल कृत कृष्णा नन्दिनी भाषाटीकायां
माधवनिदानस्थ विसर्पं निदानम् ।

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

विस्फोटनिदानम् ।

---o---

कटम्लतीक्ष्णोष्णविदाहिरूक्षक्षारैरजीर्णाध्यशनातपैश्च ॥ तथर्त्तु दोषेणबिपर्ययेणकुप्यंतिदोषाःपवनादयस्तु ॥१॥ त्वचमाश्रि यतेरक्तमांसास्थीनिप्रदूष्यच ॥
घोरान्कुर्वन्तिविस्फोटान्सर्वाञ्ज्वरपुर सरान् ॥२॥

कटु खट्टे, तीखे उष्ण दाह करने वाले रूक्ष और खारी पदार्थों के भक्षण से, अजीर्ण भोजन के उचित रीति से पाचन न होनें से पुनर्वार भोजन करने से, सूर्यं की घाम का सेवन करने से ऋतु विपरीत होने से, वायु आदि दोष कुपित होकर त्वचा स्थित हो रक्त मांस हड्डी इन को दुष्ट कर घोर विस्फोट, (फोड़े) उत्पन्न करते हैं इनके पैदा होने के पहिले बुखार आता है ।

विस्फोटक का स्वरूप वर्णन करते हैं ।

अग्निदग्धनिभाःस्फोटाःसज्वरारक्तपित्तजाः ॥
क्वचित्सर्वत्रवादेहेविस्फोटाइतितेस्मृताः ॥३॥

रक्त पित्त से उत्पन्न हुये बुखार के सहित शरीर में किसी जगह अथवा सब शरीर में वन्हि से दग्ध हुये के तुल्य फोड़ा हो उसे विस्फोटक कहते हैं भोज के मत से इस से वायु का अनुवन्ध होता हैं ।

वातज विस्फोटक के लक्षण ।

शिरोरुक्छूलभूयिष्ठंज्वरतृट्पर्वभेदनम् ॥
सुकृष्णवर्णताचेतिवातविस्फोटलक्षणम् ॥४॥

वातिक विस्फोटक में मस्तक में वेदना दर्द शरीर में व्यथा, बुखार प्याह, सन्धियों में व्यथा होती है तथा फोड़े काले वर्ग के होते हैं ।

पित्तज विस्फोट के लक्षण ।

ज्वरदाहरुजास्रावपाकतृष्णाभिरन्वितम् ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

पीतलोहितवर्णंचपित्तविस्फोटलक्षणम् ।। ५ ।।

पैत्तिक विस्फोट में बुखार, दाह, पीड़ा, स्राव तथा फोड़े पकते हैं प्याह शरीर पीला या लाल होता है ।

कफज विस्फोट के लक्षण ।

छर्द्यरोचकजाड्यानिकंडूकाठिन्यपांडुताः ।।
अवेदनश्चिरात्पाकीसविस्फोटःकफात्मकः ।।६।।

श्लैष्मिक विस्फोट में उलटी अन्नद्वेष, और तन में जड़ता तथा फोड़े खुजली युक्त कठोर व पीले वेदना हीनहोते हैं और फोड़े चिरकाल में पकने वाले होते हैं ।

विस्फोट के लक्षण ।

कंडूर्दाहोज्वरश्छर्दिरेतैस्तुकफपैत्तिक ।।
वातपित्तकृतोयस्तुकुरुतेतीव्रवेदनाम् ।।७।।
कंडूस्तैमित्यगुरुभिर्जानीयात्कफवातिकम् ।।

कफ पित्त जन्य विस्फोट में खुजली, दाह, दुखार, तथा वमन होती है और जो तीव्र वेदना से युक्त हो वह वात पित्तज तथा खुजली, आद्रता गुरुता इन लक्षणों से युक्त वह कफ पित्तज विस्फोट होता है ।

त्रिदोषज विस्फोट के लक्षण ।

मध्येनिम्नोन्नतोतेचकठिनोल्पप्रपाकवान् ।।८।।
दाहरागतृषामोहच्छर्दिमूर्च्छारुजाज्वराः ।।
प्रलापोकंपथुस्तंद्रासो साध्यत्रिदोषजः ।९।

जो विस्फोट मध्य भाग में नीचा और चारों ओर से उँचा होय । कठोर तथा कुछ पका हुआ होय, तथा जिसमें दाह अवयव लाल, प्याह, मोह, बमन, मूर्छा, वेदना, बुखार, प्रलाप, कैप, तन्द्रा इन लक्षणों से युक्त हो वह त्रिदोषज विस्फोट असाघ्य होता है ।

रक्त के विस्फोट के लक्षण ।

रक्तारक्तसमुत्थानागुंजाफलनिभास्तथा ।। ०दि

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

स्तुरक्तेनपैत्तिकेनचहेतुना ।। नतेसिद्धिंसमायांतिसिद्धैर्योगशतैरपि ।। १० ।।

रक्त से उत्पन्न विस्फोट ताम्र वर्ण समान एवं गुंजा के तुल्य लाल होता हैं यह रक्त तथा पित्त के दूषित होने से होता है यह रोकड़ों अनुभवों दवाओं के प्रयोग से साध्य नहीं होता है ।

विस्फोट के साध्या साध्य लक्षण ।

एकदोषोत्थित साध्यःकृच्छ्रसाध्योद्विदोषतः ।।
सर्वरूपान्वितोघोरस्त्वसाध्योभूर्युपद्रवः ।। ११ ।।

एक दोष से उत्पन्न हुआ विस्फोट साध्य होता है और दो दोषों से उत्पन्न कष्ट साध्य, और अनेक उपद्रवों से युक्त त्रिदोष का विस्फोट भयङ्कर तथा असाध्य होता है ।

विस्फोट के उपदव ।

हिक्काश्वासो रुचिस्तृष्णाङ्गसादोहृदिव्यथा ।।
विसर्पज्वरहृल्लासाविस्फोटानामुपद्रवाः ।।

हिक्का, श्वास, अरुचि, प्याह, शरीर में ग्लानि हृदय में वेदना विसर्प रोग, बुखार उल्टी ये उपद्रव विस्फोट के जानने चाहिये ।

इति माधव कर प्रणीते माधवनिदाने
विस्फोट निदानम् समाप्तम् ।

मसूरिकानिदानम् ।

-:—:-

मसूरिका के कारण और सम्प्राप्ति

कट्वम्ललबणक्षारबिरुद्धाध्यशनाशनैः ।। दुष्टनिष्पावशाकाद्यैःप्रदुष्टपवनोदकैः ।।१।। क्रुद्धग्रहेक्षणाद्वापि देहेदोषाःसमुद्धताः ।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

जनयंतिशरीरेऽस्मिन्दुष्टरक्तेनसंगताः ॥२॥
मसूराकृतिसंस्थानाःपिडिकाःस्युर्मसूरिकाः ॥

कटु, अम्ल, नमकीन खारी पदार्थ भक्षण से विरुद्ध भोजन से भोजन के बिना फिर भोजन करने से, दूषित अन्न उर्द, सेम आदि तथा दुष्ट साग खाने से। दूषित वायु सेवन तथा दुष्ट जलपान से. देश में क्रूर ग्रहों को दृष्टि पड़ने से, वायु आदि दोष दूषित हो दूषित रक्त में प्राप्त हो शरीर में मसूर के तुल्य आकार वाली अनेक फुन्सी पैदा करते हैं उसे माता कहते हैं।

कटु खट्टे पदार्थ से रक्त भी दूषित होता है।

पूर्वरूप

तासांपूर्वं ज्वरःकंडूर्गात्रभंगोऽरुचिर्भ्रमः ॥३॥
त्वचिशोफःसवैवर्ण्योनेत्ररोगस्तथैवच ॥

शीतला के निकलने के पहिले बुखार आता है तनमें खुजली चलती है शरीर में टूटने की सी वेदना होती है। अन्न खाने को इच्छा नहीं होती है। भ्रम तथा शरीर की त्वचा सूज जाती है शरीर विवर्ण तथा रक्त चक्षु हो जाते हैं।

वाष्तिक मसूरिका के लक्षण

स्फोटाःकृष्णारुणारूक्षास्तीव्रवेदनयान्विताः ॥४।
कठिनाश्चिरपाकाश्चभवंत्यनिलसंभवा ॥
संध्यस्थिपर्वणांभेदःकासःकंपोऽरतिक्लमः ॥५॥
शोषस्तात्वोष्ठजिह्वानांतृष्णाचारुचिसंयुता ॥

वायु की मसूरि का मरोरी काली लाल तथा रूखी होती है। उनमें तीव्र वेदना होती है कठोर तथा देर में पकती हैं जोड़, अस्थि तथा पावों पावों में फोड़ने की सी व्यथा होती है। कास देह में कम्प, बेचेनी और अरुचि तथा बिना परिश्रम ही थकावट मालूम होती है।

पैत्तिक मसूरिका के लक्षण

रक्ताःपीतासिताःस्फोटाःसदाहास्तीव्रवेदना ॥६॥

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

भवंत्यचिरपाकाश्चपित्तकोसमुद्भवाः ।।
विड्भेदश्चांगमर्दश्चदाहस्तृणाऽरुचिस्तथा ।।७।।
मुखपाकोऽक्षिपाकश्चज्वरस्तीक्ष्णःसुदारुणः ।।

पैत्तिक मसूरीका लाल पीला तथा सफेद होती है पीडा तथा दाह होती है यह शीघ्र पकने वाली होती है इसमें मल पतला हो जाता है और शरीर में टूटने की सी व्यथा होती है बुखार, दाह, अन्नहेष प्याह मुखपाक तथा नेत्र लाल हो जाते हैं ये पैत्तिक मसूरिका के लक्षण है ।

रक्तज के लक्षण

रक्तजायांभवंत्येतेविकाराःपित्तलक्षणाः ।।८।।

रक्त की मसूरिका में पित्तज मसूरिका सम्पूर्ण लक्षण होते हैं ।

श्लैष्मिक मसूरिका के लक्षण

कफप्रसेकःस्तैमित्यंशिरोरुग्गात्रगौरवम् ।।
हृल्लासःसारुचिर्निद्रातंद्रालसमसमन्विता ।।९।।
श्वेतास्निग्धाभृशंस्थूलाःकण्ड्वरामंदवेदनाः ।।
मसूरिकाःकफोत्थाश्चचिरपाकाःप्रकीर्त्तिता ।।१०।।

कफ की मसूरिका में कफ का निकलना शरीर में गीलापन, तथा भारीपन, शिर में वेदना तथा वमन सी आती है और अन्नद्वेष निद्रा तन्द्रा, आलस्य आदि होति है । मरोरी चिकनी अति स्थूल तथा वेदना युक्त खुजली से व्याप्त तथा चिरकाल में पकने वाली होती हैं ।

सन्निपातकी मसूरिका के लक्षण

नीलाश्चिपटविस्तीर्णमध्येनिम्नामहारुजः ।।
चिरपाकाःपूतिस्रावाःप्रभूताःसर्वदोषजाः ।।११।।
कंठरोधोऽरुचिस्तंद्राप्रलापारतिसंयुताः ।
दुश्चिकित्स्याःसमुद्दिष्टाःपिडिकाश्चर्मसंज्ञिताः ।।१२।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सन्निपातकी मसूरिका की मरोरी नीली, लम्बी मध्य भाग में बैठी हुई होती हैं। और उनमें घोर होती है तथा चिरकाल में पकती है दुर्गन्धि युक्त स्राव होता है सब दोषों के बहुत से फोड़े होते हैं। और जिस फोड़ा के होने से कंठ का अवरोध हो जाय अन्नद्वेष, तन्द्रा व्यर्थ भाषण, वेचेनी इत्यादि उपद्रव हो वह चिकित्सा हीन जर्म पिडिका असाध्य होती है।

रोमान्तिक के लक्षण।

रोमकूपोन्नतिसमारागिण्यःकफपित्तजाः ॥
कासोरोचकसंयुक्तारोमांत्योज्वरपूर्विकाः ॥१३॥

कफ पित्त के दोष से वालों के छिद्र समान सूक्ष्म लाल रङ्ग की पिडिका होय और खासी अन्नद्वेष तथा बुखार जिसमें हो उसे रोमान्तिका कहते हैं।

रसस्थित मसूरिका के लक्षण।

तोयबुब्दुदसंकाशास्त्वग्गताश्चमसूरिकाः ॥
स्वल्पदोषाःप्रजायंतेभिन्नास्तोयंस्रवंतिच ॥१४॥

रसस्थित मसूरिका जल के बवूले के तुल्य होती है और फूटने पर पानी निकलता है। अल्प दोष होने से यह साध्य होती है।

रक्त स्थित मसूरिका के लक्षण।

रक्तस्थालोहिताकारा.शीघ्रपाकास्तुनुत्वच ॥
साध्यानात्यर्थदुष्टास्तुभिन्नारक्तंस्रवंतिच ॥१५॥

रक्तगत मसूरिका ताम्र वर्ण तुल्य शीघ्र पकने वाली होती है और उसके ऊपर की खाल पतली होती है। इसके फटने से रक्त का स्राव होता है रक्त के दूषित होने से असाध्य होती है।

मांसस्थ मसूरिका के लक्षण।

मांसस्था.कठिनास्निग्धाश्चिरपाकास्तनुत्वचः ॥
गात्रशूलोऽरित.कंडूमूर्च्छादाहतृषान्विताः ॥१६॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

मांस स्थित मसूरिका कठोर और स्निग्ध होती हैं। और पतली त्वचा युक्त बहुत दिन में पकने वाली होती है। बेचैंनी तथा शरीर में दर्द होता है खुजली से यक्त मूर्छा दाह और प्याह आदि लक्षणों से युक्त होती है।

मेदोगत मसूरिका के लक्षण।

मेदोजामंडलाकारामृद्वःकिंचिदुन्नता ॥
घोरज्वरपरीताश्चस्थूलाःकृष्णाःसवेदना ॥
संमाहारतिसंतापाःकश्चिदाभ्योविनितस्तरेत्॥१७।

मेद धातु गत मसूरिका मण्डल युक्त होती है कोमल किन्चित ऊँची स्थूल तथा स्याम वर्ण की होती है। इसके होने से घोर बुखार बेदना तथा इन्द्रिय और मन मूर्छागत हो जाते हैं चित्त स्थिर नहीं रहता है जलन होती है यह असाध्य होने से कतिपय जनो की घातक है।

अस्थि मज्जा धातु गत मसूरिका के लक्षण।

अस्थिगात्रसमारूढाश्चिपिटाःकिंचिदुन्तनाः ॥ मज्जो
त्थोभृशसंमोहवेदनारतिसंयुता ॥ १८॥ छिंदंतिमर्म-
धामानिप्राणानाशुहरंतिता ॥ भ्रमरेणेवविद्धानिभवं
त्यस्थीनिसर्वतः ॥१९॥

हड्डी और मज्जा धातु गत मसूरिका शरीर की त्वचा के तुल्य रुक्ष, चिपटी किन्चित ऊँची उठी हुई होती है अतीव मूर्छा वेदना और असावधानता रहती है यह मर्म स्थानों को भेद प्राण नष्ट कर देती है इससे सर्वांग की हड्डियों में भ्रमर के काटने के तुल्य वेदना होती है।

शुक्रधातुगत मसूरिका के लक्षण

पक्वाभाःपिंडकाःस्निग्धाःश्लक्ष्णाश्चात्यर्थंवेदना ॥
स्तैमित्यारतिसंमोहदाहोन्मादसमन्विता ॥२०॥
शुक्रजायांमसूर्य्यांतुलक्षणानिभवंतिच ॥

निर्दिष्टंकेवलंचिन्हंदृश्यतेनतुजीवितम् ।।२१।।
दोषमिश्रास्तुसप्तैतद्रष्टव्यादोषलक्षणैः ।।
त्वग्गतारक्तजाश्चैवपित्तजाश्लेष्मजास्तथा ।२२।

शुक्रधातुगत मसूरिका पके के तुल्य स्निग्ध तथा पृथक् पृथक् होती हैं इसमें तीव्र वेदना होती हैं देह में आद्रता अस्वस्थता मोह दाह उन्माद आदि लक्षण होते हैं। इसमें रोगी मनुष्य मृत्यु को प्राप्त हो जाता है यह असाध्य हैं केवल लक्षण ही हैं इसकी कोई चिकित्सा नहीं है इन पूर्वोक्त सप्तधातुगत मसूरिकाओं में वायु आदि तीनों दोषों के भी लक्षण होते हैं। अतः दोषों के लक्षण अवश्य ही देखने चाहिये कारण कि दोषों के बिना धातुएं दुष्ट नहीं हुआ करती हैं।

मसूरिका के साध्यासाध्य लक्षण

पित्तश्लेष्मकृताश्चैवसुखसाध्यामसूरिकाः ।।
एताविनापिक्रिययाप्रशाम्यंतिशरीरिणाम् ।२३।

रस स्थित मसूरिका और रक्तज पैत्तिक श्लैष्मिका कफ पित्त जाये साध्य है कारण कि औषधि के बिना ही ये शान्ति को प्राप्त हो जाती है।

वातजावापित्तोत्थावातश्लेष्मकृताश्चयाः ।।
कृच्छ्रसाध्यामतास्तास्तुयत्नादेताउपाचरेत् ।२४।
असाध्याःसन्निपातोत्थास्तासांवक्ष्यालक्षणम ।।
प्रवालसदृशाःकाश्चिज्जंबूफलोपमाः ।।२५।।
लोहजालसमाःकाश्चिदतसीफलसन्निभा ।।
आसांबहुविधावर्णाजायन्तेदोषभेदत ।।२६।।

वातिका वातपैत्तिका, वातश्लेष्मज, मसूरिका कष्टसाध्य होती है इनकी यत्न पूर्वक चिकित्सा करनी चाहिये। और सान्निपातिक मसूरिका असाध्य होती है। इसके लक्षण कहते हैं। कोई मूंगा के तुल्य रक्त वर्ण की कोई जामुन के तुल्य कोई लोह के

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

तुल्य कृष्ण वर्ण की होती है। तथा अलसी के बीज सदृश कोई कोई होती है इसके दोषों से विविध प्रकार के वर्ण होते हैं।

महा असाध्य मसूरिका के लक्षण।

कासोहिक्काथमोहश्चज्वरस्तीव्रःसुदारुणः ॥
प्रलापारितमूर्च्छाचतृष्णादाहोऽतिघूर्णंता ॥२७॥
मुखेनप्रस्रवेद्रक्तंतथाघ्राणेनचक्षुषा ॥
कंठेघुर्घुरकंकृत्वाश्वसित्यत्यर्थदारुणम् ॥२८॥
मसूरिकाभिभूतोयोभृशंघ्राणेननिःश्वसेत् ॥
सभृशंत्यजतिप्राणांस्तृष्णार्तोवायुदूषितः ॥२९॥

कास, हिक्का, मोह, दारुण बुखार, व्यर्थ भाषण असन्तोष प्याह, दाह चक्षु वक्र तिरछे होते हैं तथा मुख नाक, और चक्षु इनमें से रक्त निकलता है घोर श्वास के लेने से गले में घुर घुर शब्द होय और मसूरिका ब्यथित रोगी नाक के द्वारा श्वास ले और वायु से अत्यन्त तृषित हो वह शीघ्रात् शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त होता है।

उपद्रव।

मसूरिकांतेशोथःस्यात्कूर्पंमणिबंधके ॥
तथांसफलकेचापिदुश्चिकित्स्यःसुदारुणः ॥३०॥

शीतला के अन्त में रोगी मनुष्य के पहुँचे तथा कंधे में शोथ होय तो घोर कष्ट साध्य होता है।

इति कृष्णा नन्दिनी टीकायां मसरिका निदानम्।

—०—

क्षुद्ररोगनिदानम्।

—०—

अज गल्लिका के लक्षण।

स्निग्धाःसवर्णांग्रथितानीरुजोमुद्गसन्निभाः ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

कफबातोत्थिताज्ञेयावालानामजगल्लिका ॥१॥

शिशु के कफवायु से स्निग्ध त्वचा के तुल्य वर्ण वाली ग्रन्थि के समान वेदना हीन मूंग के तुल्य जो फुन्सी पैदा होती है उसे अज गल्लिका कहते हैं ।

यवप्रख्या के लक्षण कहते हैं ।

यवाकारासुकठिनाग्रथितामाससंश्रिता ॥
पिडिकाश्लेष्मवाताभ्यांयवप्रख्येतिचोच्यते ॥२॥

वात श्लेष्म से उत्पन्न जौ के तुल्य कठोर ग्रन्थि के तुल्य माँस संश्रित (मिली हुई) जो मरोरी होय उसको यव प्रख्या कहते हैं ।

अंधा लजी के लक्षण ।

घनामवक्त्रांपिडिकामुन्नतांपरिमंडलाम् ॥
अन्धालजीमल्पपूयांतांविद्यात्कफवातजाम् ॥३॥

वात कफ से उत्पन्न कठोर, मुख हीन ऊँची चारों ओर से मंडला कार व अल्प राध वाली पिडिका को अंधा लजी कहते हैं ।

विबृता के लक्षण ।

विबृतास्यांमहादापक्वोदुंबरसन्निभाम् ॥
परिमंलाँपित्तकृतांविबृतांनामतांविदुः ॥४॥

पित्त से फटे मुख वाली घोर दाह जिसमें होय रोगी पके हुये गुलर के सदृश मंडलाकार पिडिका को विबृता कहते हैं ।

कच्छपिका पिड़िका के लक्षण ।

ग्रथिता पंचवाषड्वादारुणाःकच्छपोन्नताः ॥
कफाविलाभ्यांपिडिकाज्ञेयाकच्छपिकाबुधैः ॥५॥

कफ और बात के कोप से उत्पन्न हुई पिडिका कच्छप के तुल्य आकार वाली काठोर ५ या ६ पांच या छैः निकलती हैं ।

वल्मीक के लक्षण ।

ग्रीवांसकक्षाकरपाददेशेसंधौगलेवात्रिभिरेवदोषैः ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ग्रंथिःसवल्मीकवदक्रियाणांजातःक्रमेणैवगतःप्रवृद्धिम६
मुखैरनेकैःस्रु तितोदवद्भिर्विसर्पवत्सर्पतिचोन्नताग्रैः ॥
वल्मीकमाहुर्भिषजोविकारंनिष्प्रत्यनीकंचिरजंविशेषात्७

मिथ्या आहार विहार करने वाले पुरुषों के ग्रीवा कंधे, बगल, हाथ, या पैर संधि, कंठ इन स्थानों में सर्प को वांमी के तुल्य शिखराकार ग्रिन्थ पैदा होती है। प्रयत्न न करने बृद्धि को प्राप्त होती हैं अनेक मुख होकर स्राव होता है। नोंचने की सी वेदना होती है। तथा उसका मुँह ऊँचा होकर विसर्प के तुल्य फैल जाती है। इस असाध्य पिडिका को वल्मीक कहते हैं वह प्राचीन होने पर विशेष असाध्ज होती है।

इन्द्र बृद्धा के लक्षण।

पद्मकर्णिकवन्मध्येपिडिकाभिःसमाचिताम् ॥
इंद्रबृद्धांतुतांविद्याद्वापित्तोत्थितांभिषक् ॥८॥

वात शित्त के प्रकोप से पिडिका के सर्वत्र कमल कर्णिका के तुल्य छोटी छोटी फुंसी निकले उसे इन्द्रा वृद्ध कहते हैं।

-गर्दभिका के लक्षण।

मंडलंबृत्तमुत्सन्नसंरक्तंपिडिकाचितम ॥
रुजाकरींगर्दसभिकंतांँविद्याद्वातपित्तजाम् ॥९॥

वात पित्त के दोष से उत्पन्न पिडिका गोल उँचीं अनेक रक्त वर्ण की फुंसियों से व्याप्त मंडलाकार तीव्र वेदना युक्त होती है उसे गर्दभिका कहते है।

पाषाण गर्दभ के लक्षण।

वातश्लेष्मसमुद्भुतःश्वयथुर्हनुसंधिजः ॥
स्थिरोमंदरुजःस्निग्धोज्ञेयःपाषाणगर्दभः ॥१०॥

वात कफ के दोष से प्रगट सन्धि में कठोर अल्प वेदना कारक स्निग्ध पिडिक को पाषाण गर्दभ कहते हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

पनसिका के लक्षण ।

कर्णस्याभ्यंतरेजातांपिडिकामुग्रवेदनाम् ॥
स्थिरांपनसिकांतांतुविद्याद्वातकफोत्थिताम्१ ॥१ ॥

कान के मध्य वात कफ से प्रगट तीव्र वेदना करने वाली स्थिर पिडिका को पनसिका कहते हैं ।

जालगर्दभ के लक्षण ।

विसर्पवत्सर्पतियःशोथस्तनुरपाकवान् ॥
दाहज्वरकरःपित्तात्सज्ञेयोजालगर्दभः ॥१२॥

पित्त के वोप से विसर्प के तुल्य इतस्ततो फैलने वाली द्रव, तथा किञ्जित पकने वाली दाह और वुखार युक्त पिडिका को जालगर्दभ कहते है । कतिपय आचार्य इसे पकी हुई नहीं बनाते हैं ।

इरिवेल्लिका के लक्षण ।

पिडिकामुत्तमांगस्थाँबृत्तामग्ररुजाज्वराम् ॥
सर्वात्मिकाँसर्वलिंगांजानीयादिरिवेल्लकाम् ॥ १३ ॥

तीनों दोषों से उत्पन्न पिडिका सिर में गोल तीव्र वेदना और बुखार पैदा करते वाली होती है । और उसमें त्रिदोष के लक्षण मिलते है इसे इरिवेल्लका कहते हैं ।

कक्षा के लक्षण ।

बाहुकक्षांसपार्श्वेषुकृष्णस्फोटांसवेदनाम् ॥
पित्तकोपसमुद्भूतांकक्षामित्यभिनिर्दिशेत् ॥१४ ॥

पित्त के विकार से पसवाड़े कंधा और भुजा की जड़ इनमें काली कुन्सियों से व्याप्त विडिका वेदना युक्त होती है उसे कक्षा करबलाई कहते हैं ।

गधानाम्नी के लक्षण ।

एकामेतादृशींदृष्ट्वापिडिकाँस्फोटसन्निभाम् ॥
त्वग्गतांपित्तकोपेनगंधनाम्नींप्रचक्षते ॥१५॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

पित्त के विकार से फोड़े के तुल्य वड़ी त्वचा के भीतर जो पिडिका निकलती है उसे गंधानाम्नी कहते है

अग्निरोहिणी के लक्षण ।

कक्षाभागेषुयेस्फोटाजायंतेमांसदारुणाः ।। अंतर्दाह ज्वरकरादीप्तपावकसन्निभा ।।१६।। सप्ताहाद्वादशाहाद्वापक्षाहंतिमानवम् ।। ताभग्निरोहिणींविद्यादसाध्यासान्निपातिम् ।।१७।।

कांख में या उसके लगभग मांस को विदीर्ण करने वाले जो फीड़ा पैंदा होते हैं । उनमें अन्तर्दाह तथा बुखार होता है और वह प्रज्वलित अग्नि के तुल्य रक्त वर्ण के होते हैं इन फोढ़ों में वाताधिक होने से सप्त तथा पित्ताधिक होने से १० दस और कफाधिक होने से वारह दिन की अवधि में मनुष्य मृत्यु को प्राप्त होता है यह अग्निरोहिणी पिडिका हा कठित त्रिदोषज होनें से असाध्य है ।

चिप्य और अनुशयी के लक्षण ।

नखमांसमधिष्ठायवातःपित्तांचदेहिनाम् ।।
कुर्वा तेदाहपाकौचतंव्याधिंचिप्यमादिशेत् ।।१८।।
तदेवाल्पतरै दोषैःकुनखंपरुषंवदेत ।।
गंभीरामल्पसरंभाँसवर्णामुपरिस्थिताम् ।।
पादस्यानुशयींत तुविद्यादंतःप्रपाकिनीम् ।।१६।।

वात और पित कुपित हों नाखूनों के मांस में स्थित होते है तव दाह तथा पाक को पैदा करते हैं । इसी से इस रोग को चिप्य तथा अल्प दोषों से कुनरख कहते हैं और पादपो कीत्वचा के वर्ण तुल्य कुछ सूजन युक्त भी भीतर से पकी हुई जो पिडिका होती है उसे अनुशयी कहते हैं ।

विदारिका के लक्षण ।

विदारीकन्दवद्वृत्ताकक्षावंक्षणसंधिषु ।।

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

विदारिकाभवेद्रक्तासर्वजासर्वलक्षण ।।२०।।

तीनों दोषों से प्रगट विदारी कन्द के सदृश गोल कांख में अथवा वंक्षण की सन्धियों में ताम्र वर्ण तुल्य पैदा होने वाली ग्रन्थि को विदारका कहते हैं ।

शर्करा ग्रन्थि के लक्षण ।

प्राप्यमांसशिराःस्नायुश्लोष्मामेदस्तथानिलः । ग्रंथिं
करोत्सौभिन्नोमधुसर्पिर्वंसानिभम् ।। २१ ।। सवत्या
स्रावमनिलस्तत्रवृद्धिंगतःपुनः ।। मांसंविशोष्यग्रंथि
तांशर्करा जनयेत्ततः ।।२२।।
दुर्गंधिक्लिन्नमत्यर्थनानावर्णाततःशिराः ।
स्रवंतिरक्तंसहसातद्विद्याच्जर्कराबुंदम् ।।२३।।

कफ, मेद, वायु, कुपित होकर मांस, शिरा, स्नायु इनमें स्थित हो गांठ के तुल्य पिडिका उत्पन्न कर देते हैं । जब वह फटती है तब वह मधु घी चर्बी के समान पीब बहता है जिससे वायु फिर दूषित होकर मांस को शुष्क कर ग्रन्थि को शर्करा कहते हैं । फिर शर्करा होने के बाद नसों से दुर्गंधित अनेक तरह का रुधिर पेदा करता देता है उसे शर्करार्बुद कहते हैं ।

पाददारी के लक्षण

परिक्रमणशीलस्यवायुरत्यर्थरूक्षयोः ।
पादयोःकुरुतेदारींसरुजांतलसंश्रिताम् ।।२४।।

विशेष वमन शील मनुष्य के पैरों को जब वायु शुष्क कर देती हैं तब पैर की त्वचा फट जाती है उसे पाददारी या विवाई कहते हैं विपादिका कुष्ठ फटता नहीं है फूटता हैं इतना ही भेद है ।

कदर के लक्षण ।

शर्करोन्मथितेपादेक्षतेवाकंटकादिभिः ।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

ग्रंथिःकौलवदुत्सन्नोजायतेकदरंतुतत् ॥२५॥

पादों में कंकर पत्थर या कंटक के जाने से वेर तुल्य जो गाँठ उत्पन्न होती है उसे कदर कहते हैं। यह कदर रोग हाथों में भी उत्पन्न होता है।

अलस के लक्षण ।

क्लिन्नांगुल्यंतरौपादौकंडूदाहरुजान्वितौ ॥
दुष्टकर्दमसंस्पर्शादलसंतंविभावयेत्॥२६॥

दूषित कीच में घूभने से अंगुलियों के गीलापन से अंगुलियों के मध्य सफेद दाग हो जाते हैं उनमें खुजली युक्त दाह तथा वेदना होती है कफ और रक्त से उत्पन्न इस व्याधि को आलस अर्थात् (खारुआ) कहते हैं।

इन्द्र लूप्त के लक्षण

रोमकूपानुगंपित्तंवातेनसहमूर्च्छितम् ॥ प्रच्यावयति-
रोमाणिततःश्लेष्मासशोणितः ॥ २७ ॥ रुणद्धि-
रोमकूपांस्तुतोऽन्येषामसंभवः ॥ तदिंद्रलुप्तखा-
लित्यंप्राहुश्चाचेतिचापरे ॥२८।

पित्त तथा वायु दूषित होकर वालों के छिद्रों में स्थित होते हैं तव मस्तकादि अन्य स्थान के वाले पतित हो जातें हैं। पुनः कफ और रक्त के दोष से रोम मार्ग रुक जाते हैं। इसलिद उस स्थान पर फिर वाल पैदां नही होते हैं इस रोग को इन्प्रलुप्त कपते हैं। यह रोघ स्त्रियों के नहीं होता है कारण यह है कि स्त्रियों का शोणित महीने के शुद्ध होता रहता और निकलते रहने की बजह से रोम मार्गों को नहीं रोकता है यह विदेता चार्य का मत है कार्तिक चार्य केमत से इन्द्रलुप्त ढाडी में खालित्ल मस्तक में और रुह्य सर्वाङ्ग में होता है।

दारुण के लक्षण ।

दारुणाकंडुरारूक्षाकेशभूमिःप्रपच्यते ।

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

कफमारुतकोपेनविद्याद्दारुणकंतुतम् ॥२९॥

कफ और वायु के कोप से बालों की जगह अत्यन्त कठोर हो जाती है तथा उसमें खुजली चलती है और खुरदरी हो जाती है। तथा सूक्ष्म फुंसी होकर पक जाती है ऐसे रोग को दारुणक कहते हैं। इसमें पित्त का अनुबन्ध होता है विदेह के मत से।

अरुंषिका के लक्षण

अरूंषिबहुवक्त्राणिबहुक्लेदानिमूर्ध्नितु ॥
कफासृक्कृमिकोपेननृणांविद्यादरूंषिकाम् ॥३०॥

कफ, रक्त तथा कृमियों के प्रकोप से मस्तक में अल्प आकार की फुन्सियां पैदा होती हैं और उनमें पीव बहता है तथा गीली रहती है इसको अरुंषिका कहते हैं।

पलित के लक्षण।

क्रोधशोकश्रमकृतःशरीरोष्माशिरोगतः ॥
पित्तेचकेशान्पचतिपलितंतेनजायते ॥१३॥

अत्यन्त कोप शोक अथवा परिश्रम से तन की गर्मी तथा पित्त मस्तक में स्थित होकर बालों को पका देते हैं उसे पलित कहते हैं।

मुख दूषिका पिडिका के लक्षण

शाल्मलीकंटकप्रख्याःकफमारुतरक्तजाः ॥
जायतेपिडकायूनांविज्ञेयामुखदूषिकाः ॥३२॥

कफ वायु और रक्त के प्रकोप से सेमर के कंटक समान युवा मनुष्य के मुख के ऊपर जो पिडिका पैदा होती है उनको मुख दूषिका कहते हैं इनसे मुह कुरूप हो जाता है।

पद्मिनी कंटक के लक्षण

कंटकैराचितंबृतंमंडलंपाण्डुकण्डुरम् ॥
पद्मिनीकंटकप्रख्यैस्तदाख्यंकफवातजम् ॥३३॥

कफ वायु के विकार से कमल के कंटक तुल्यगोल स्तु पीले वर्ण का

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

खुजली युक्त एक मन्डल पैंदा होता है उसे पद्मिनी कंटक कहते हैं ।

जन्तु मणिके लक्षण

सममुत्सन्नमरुजंमंडलंकफरक्तजम् ।।
सहलक्ष्मचैकेषांलक्ष्योजंतुमणिःस्मृतः ।।३४।।

कफ और रक्त के दोष से किन्चित् ऊँचा तन के तुल्य वर्ण का मँडल पड़ जाता है उसमें वेदना नहीं होती है उसे लक्ष्म, लक्ष्य व जन्तु मणि कहते हैं यह स्त्री मनुष्यों के अंग भेद से शुभाशुभ फल का सूचक होता है ।

माष के लक्षण

अवेदनंस्थिरंचैवयस्मिन्गात्रेप्रदृश्यहे ।।
माषवत्कृष्णमुत्सन्नमनिलान्माषामादिशेत् ।३५।

वात के प्रकोप से कफ मथा मेद के दूषित होने से उर्द के सदृश वेदना हीन स्थिर एवं कठोर कुछ ऊंची उठी हुई जो ग्रंथि पैदा होती है उसे मस्सा कहते हैं ।

तिल कालक के लक्षण

कृष्णानितिलमात्राणिनीरुजानिसमानिच ।।
वातपित्तकफोच्छोषात्तान्विद्यात्तिलकालकान् ।३६

वात पित्त कफ की प्रधानता से सूख जाता है जब तिल के समान काले काले खाल के ऊपर मिले हुए दाग पड़ जाते हैं ये वेदना हीन होते हैं इनको तिल कहते हैं "इस श्लोक में बात पित्त से कफ का शोष लिखा है परन्तु चरका चार्य के मत से पित्त रक्त के सूखने से तिल होते हैं कहीं कहीं तीनों दोष रक्त का शोषण करते हैं ।

यथा

मारुतःपित्तमादायकफरक्तसमाश्रितः ।।
चिनोतितिलमात्राणित्वचितेतिकालकाः ।।३७।।

वायु पित्त कफ को लेकर रक्त स्थित हो तिल के समान चिन्ह पैदा करती है त्वचा में, उसे तिल कालक कहते हैं ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

न्यच्छ के लक्षण

महद्वायदिवाऽल्पंश्यावंवायदिवासितम् ॥
नीरुजंमण्डलंगात्रेन्यच्छमित्यभिधीयते ॥३८॥

मुख के अतिरिक्त अन्य जगह में शरीर के ऊपर दीर्घं अथवा लघु आकार की कृष्ण अथवा सफेद वेदना हीन जो दाग उत्पन्न होता है उसे न्यच्छ कहते हैं।

व्यंग के लक्षण

क्रोधायासप्रकुपितोवायुःपित्तेनसंयुतः ॥
मुखमागत्यसहसामण्डलंविसृजत्यतः ॥३९॥
नीरुजंतनुकंश्यावंमुखेव्यंगंतमादिशेत् ॥४०॥

कोप अथवा व्यायाम से कोप को प्राप्त हुआ वायु मुख स्थित हो वेदना हीन द्रव श्याम वर्ण का एक मंडल पैदा करता है उसे व्यंग कहते हैं।

नीलिका के लक्षण

कृष्णमेवंगुणंगात्रेमुखेवानीलिकाविदुः ॥४१॥

पूर्वोक्त लक्षणों युक्त मुख तथा अन्य स्थानों पर कृष्ण वर्ण के होने वाले मंडल को नीलिका कहते हैं

परिवर्तिका के लक्षण

मर्दनात्पीडनाद्वापितथैवाप्यभिघाततः ॥ मेढ्चर्मयदावायुर्भजतेसर्वतश्चरन् ॥ ४२ ॥ तदावातोपसृष्टत्वात्तच्चर्मपरिवर्त्तते ॥ मणेरधस्तात्कशोस्तुग्रंथिरूपेणलंबते ॥४३ ॥ सवेदनंसदाहंचपाकंचव्रजतिक्वचित् ॥ परिवर्त्तिकेतितांविद्यात्सरुजांवातसंभवाम् ॥४४ ॥ सकंडूःकठिनाचापिसैवश्लेष्मसमुत्थिता ॥

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

गुप्तेन्द्रित को मीड़ने अथवा रगड़ने से वालिङ्ग में किसी भी प्रकार की चोट के लगने से ब्यान वायु दूषित हो चर्म स्थित हो बिचरण करता है तब खाल शोथ युत्य ग्रन्थि के तुल्य काठी के नीचे लटक जाती है इसमें दाह युक्त तकलीफ होती है । इसे परिवर्ति का कहते हैं यदि कफ सो होय तो खुजली युवत कठिन शोथ होता है । पित्त से दाह युक्य होता है ।

अपवाटिका के लक्षण

अल्पीयःखायदाहर्षां द्बलाग्दच्छेत्स्त्रियंनरः ।।४५।।
हस्ताभिघातादथवाचर्मण्युद्धर्तितेबलात् ।।
मर्दनातापीडनाद्वापिशुक्रेवेगविघाततः ।।४६।।
यस्यावपाट्यतेचर्मतांविद्यादवपाटिकाम् ।।

जिस स्त्री की योनी का छोटा छिद्र होता है उससे बल पूर्वक प्रसंग करने से अथवा हाथ की चोट से वा बल से लिङ्ग की त्वचा को हटाने से वा मोड़ने से जोर करके दबाने से अथवा वीर्य के वेग को रोकने से मनुष्य की गुप्तेन्द्रिय (लिंग) की खाल फट जाती है इसे अब पाटिका कहते हैं भोज के मत से इस रोग में तीनों दोषों के न्यारे न्यारे लक्षण कहे हैं ।

निरुद्ध प्रकाश के लक्षण

वातोपसृष्टेमेढे तुचर्मसंश्रयचेमणिम् ।।४७।। मणिश्च-
र्मेपनद्धस्तुमूत्रस्त्रोतोरुणद्धिच ।। निरुद्धप्रकशेतस्मिन्मं
दधारमेवदनम् ।।४८।। मूत्रंप्रवर्ततेजंतोर्मणिर्विब्रिय-
तेनच ।। निरुद्धप्रकशंविद्यात्सरुजंवातसंभवम् ।।४९।।

वात के प्रकोप से लिंग में मणि के ऊपर की खाल सिकुड़ जाती है खाल के संकोच होने से मूत्र का मार्ग रुक जाता है । तब मनुष्य का पेसाव थोड़ा थोड़ा वेदना हीन निकलता है मणि खुल सकती नहीं है इसी से इस बात दूषित रोग को निरुद्ध प्रकाश कहतें हैं । अन्य आचार्यों के मत से इस में अन्य दोषों का लक्षण सहित समागम होता हैं ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सन्निरुद्ध गुद के लक्षण

वेगसंधारणाद्वायुर्विहतोगुदसस्थितः ।। निरुणद्धिम-
हास्रोतःसूक्ष्मद्वारंकरोतिच ।।५०।। मार्गस्यसौक्ष्म्या-
त्कृच्छ्रेणपुरीषंतस्यगच्छति ।। सन्निरुद्धगुदंव्याधिमे-
नंविद्यात्सुदारुणम् ।।५१।।

मल और पेसाव आदि के वेग के रोकने से गुदा स्थित अपान वायु दूषित हो गुदा मार्ग को रोक देती है गुदा मार्ग को छोटा होने से सकष्ट मल का निर्गमन होता है। इस घोर व्याधि को सन्निरुद्ध कहते है।

अहिपूजन के लक्षण

शकृन्मूत्रसमायुक्येऽधौतेऽपानेशिशोर्भवेत् ।। स्विन्नमें-
बाऽस्नाप्यमानेवाकंडूरक्तकफोद्भवा ।।५२।। ततःकंडू-
यनात्क्षिप्रंस्फोटाःस्रावश्च जायते ।। एकीभूतंव्रणंघोरं-
तंविद्यादहिपूतनम् ।।५३।।

बालकों के मल मूत्र करने के पश्चात यदि उनकी गुदा अच्छी तरह से नहीं धोई जाती है तो मल मूत्र और स्वेद के लगे रहने से कफ और रक्त दूषित होकर खूजली उत्पन्न कर देते हैं। खुजाने से शीघ्र ही पिडिका हों जाती है उनमें स्राव होने लगती है इस रोग को अहिपूतन कहते हैं। अन्य आचार्यों के मत से यह रोग माता के दूषित दुग्ध पान से होता है ऐसा कहा हैं।

बृषण कच्छू के लक्षण

स्नानोत्सादनहीनस्यमलोवृषणसंस्थितः ।। यदाप्रक्लि
द्यतेस्वेदात्कडूःसंजायतेतदा ।। ५४ ।। कंडूयनात्ततःक्षि
प्रंस्फोटाःस्रावश्चजायते ।। प्राहुर्वृषणकच्छूंताँश्लेष्म-
रक्तप्रकोपजाम् ।।५५।।

स्नान करने की वजह से मैल को न साफ करने से वह मैल अण्ड

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

कोशों के ऊपर जम जाता है पसीना आने से वह मल गीला हो जाता है तब खुजली पैदा हो जाती हैं खुजाने से फुन्सीं निकल आती हैं स्राव होनें लगता है कफ और रक्त से पैदा हुई इस ब्याधि को वृषण कच्छू कहसे हैं।

गुद भ्रंश के लक्षण कहते हैं

प्रवाहणातिसाराभ्याँनिर्गच्छतिगुदंबहिः ॥
रूक्षदुर्बलदेहस्यगुदभ्रंशंतमादिशेत् ।५६।

रुक्ष और कमजोर देह वाले मनुष्य के दस्तों का प्रकोप होने से काच बाहर निकल आती है इसी से इस रोग को गुदभ्रंश कहते हैं।

सूकर दंष्ट के लक्षण

सदाह रक्तपर्यंतस्त्वक्पाकीतीव्रवेदनः ॥
कंडूमानज्वरकारीचसस्याच्छूकरदष्ट्कः ॥५७॥

पित्त और रक्त के कोप से दाह युक्त सर्वत्र लाल वर्णन की त्वचा का पाक वाली करने वेदना तथा खुजनी और बुखार पैदा करने वाली सूजन तथा पिडिकाओं घोरको सूकरंद्रष्ट्र कहते हैं।

॥ इति क्षुद्र रोग निदानम् ॥

मुखरोगनिदानम्

मुख रौगकी गणना

दंतेष्वष्टावोष्ठयोश्चमूलेषुदशपंचच ॥ नवतालुनिजिह्वायांपंचसप्तदशामयाः ॥ १ । कंठेत्रयःसर्वएकषष्टिचतुःपरे ॥

८ दन्तरोग ८ ओष्टरोग १५ दन्तमूल रोग व ९ तालु रोग ५ जीभ के रोग १७ कण्ठ के रोग ३ सर्वसर रोग इस तरह से मुख रोग ६५ प्रकार का है यह श्लोक क्षेपक हैं।

निदान

अनूपपिशितक्षीरदधिमाषादिसेवनात् ॥
मुखमध्येगदान्कुर्युःक्रुद्धादोषाःकफोत्तराः ॥२॥

जलाधिक देशस्थ जीवजन्तुओं के मास भक्षण से तथा उर्द, दुग्ध आदि पदार्थों के अत्यन्त सेवन से कफ आदि दोष कोप को प्राप्त हो मुख रोग की उत्पत्ति करते हैं ।

वातज ओष्ठ रोग के लक्षण

कर्कशौपरुषौस्तब्धौकृष्णौतीव्ररुजान्वितौ ॥
दाल्येतेपरिपाट्येतेओष्ठौमारुतकोपतः ॥३॥

वात के प्रकोप से होट कर्कश रुक्ष कठिन तथा काले होते हैं घोर वेदना युक्त तथा त्वचा फटी हुई दो टूकों के सदृश हो जाते हैं ।

पित्तज ओष्ठ के लक्षण

चीयतेपिडिकाभिस्तुसरुजाभिःसमंततः ॥
सदाहपाकपिडिकौपीताभासौचपित्ततः ॥४॥

पित्त के विकार से ओष्ठ सर्वत्र पिडकाओं से व्याप्त हो जाती है । वेदना होती है तथा पीत वर्ण से होते हैं और पाक तथा दाह युक्त होते हैं ।

कफ जन्य ओष्ठ रोग के लक्षण

सवर्णाभिस्तुचीयेतेपिडिकाभिरवेदनौ ॥
भवतस्तुकफादोष्ठौपिच्छिलौशीतलौगुरू ॥५॥

जो होट चर्म के सदृश पिडिकाओं से युक्त हो कुछ वेदना युक्त मला के तुल्य स्निग्ध तथा गुरू और शीतल हो जाय उसे कफ जन्य कहते हैं ।

सन्निपात जन्य ओष्ठ के लक्षण

सकृत्कृष्णौसकृत्पीतौसकृच्छ्वेतौतथैवच ॥
सन्निपातेनविज्ञेयावनेकपिडिकान्वितौ ॥६॥

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

त्रिदोष से ओष्ठ काले, पीले, सफेत तथा विविध प्रकार की पिडकाओं से युक्त हो जाते है।

रुधिर जन्य ओष्ठ के लक्षण

खर्जूरीफलवर्णाभिःपिडिकाभिर्निपीडितौ ॥
रक्तापसृष्टौरुधिरंस्रवतःशोणितप्रभौ ॥७॥

रक्त विकार से उत्पन्न होठ खजूर के फल सदृश फुन्सीयों से व्याप्त रक्त वर्ण के स्राव युक्त होते हैं।

मांसज ओष्ठ रोग के लक्षण

मांसदुष्टौगुरुस्थूलोमांसपिंडवदुग्दतौ ॥
जन्तवश्चात्रमूर्च्छतिनरस्योभयतोमुखम् ॥८॥

मांस के प्रकोप से ओष्ठ स्थूल तथा मास पिंड के तुल्य ऊँचे हो जाते हैं इस रोग में ओप्ठौं में तथा किनारे में कृमि पड़ जाती है।

मेदोज ओष्ठ के लक्षण

सर्पिर्मंडप्रतीकाशौमेदसाकंडुरौगुरू ॥
स्वच्छंस्फटिकसंकाशमास्रावंस्रवतोभृशम् ॥९॥
तयोर्ब्रणोनसंरोहेन्मृदुत्वंचनगच्छनि ॥

मेद के प्रकोप से होठ घी के फैन तुल्य खुजली । [illegible] तथा भारी होते हैं और उनमें स्फठिक मणि के सदृश निर्मल स्राव होता है तथा इसमें उत्पन्न ब्रण भरते नहीं है। न नरम ही होते हैं।

अभिघातज ओष्ठ रोग के लक्षण

ओष्ठौपर्यवदीर्येतेपीड्येतेचाभिघाततः ॥
ग्रथितौचतदास्यातांकंडूक्लेदसमन्वितौ ॥१०॥

चोट के लगने से होट चिर जाते हैं तथा उनमें तकलीफ होती है। गांठ पड़ जाती है खुजली चलने से स्राब होंता है। कतिपय आचार्य कहते हैं कि अभिघातज ओष्ठ रोग में सिर्फ ऊपर का ही ओष्ठ फटता है इस व्याधि में कफ पित्त भी सहायक होते हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

दन्त मूल गत १५ रोग

शीताद के लक्षण

शोणितंदन्तबेष्टेभ्योयस्यात्कस्मात्प्रवर्त्तते ।।दुर्गन्धीनि
सकृष्णानिप्रक्लेदीनिमृदूनिच ।।११।। दंतमांसानिशी
र्यन्तेपचंतिचपरस्परम् ।। शीतादोनामसव्याधिःकफ-
शोणिथसंभव ।।१२।

कफ और रक्त के विकार से उत्पन्न जिसके मसूढ़ों में से अचानक रक्त का स्राव हो और दन्तों का मांस गल कर पतित हो, और एक मसूढ़ा पकने से दूसरा भी पके इस व्याधि को शीतादि कहते हैं।

दन्त पुप्पुट के लक्षण

दंतयोस्त्रिषुवायस्य श्वयथुर्जायतेमहान् ।।
दंतपुप्पुटकोनामसव्याधि कफरक्तजः ।।१३।।

कफ और रक्त से उत्पन्न जिस रोग में मनुष्य के दो अथवा तीन दांतों की जड़ में भारी सूजन उत्पन्न हो उसे दन्त पुप्पुट कहते हैं।

दन्त वेष्ट के लक्षण

स्रवन्तिपूयरुधिरं चलादंताभवन्तिच ।।
दंतवेष्टःसविज्ञेयोदुष्टशोणितसंभवः ।।१४।।

रक्त के विकार से जिस रोग में दन्तों में से रक्त तथा राध का स्राव हो और दांत हिले उसे दन्त वेष्ट कहते हैं।

सौषिर के लक्षण

श्वयथुर्दन्तमूलेपुरुजावान्कफरक्तज ।।
लालास्रावीसविज्ञेयःसौषिरोनामनामतः ।।१५।।

कफ रक्त के दोष से वेदना युक्त दांतों की जड़ में सूजन पैदा हो जाय। तथा स्राव हो उसे सोषिर कहते हैं पूर्व कथित दन्त पुप्पुट में पीड़ा और स्राव नहीं होता है इतना ही भेद है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

महासौषिर के लक्षण

दन्ताश्चलन्तिवेष्टेभ्यस्तालुचाप्यवदीर्यते ॥
यस्मिन्सर्वतोऽव्याधिर्महासौषिरसंज्ञकः ॥१६॥

त्रिदोष के विकार से जिस रोग में दाँत हिले और तालु होठ तथा दांत फट जाय तो उसे महा सौषिर कहते हैं इस रोग में मनुष्य सात दिन में मृत्यु को प्राप्त हो जाता है।

परिदर के लक्षण

दंतमांसानिशीर्यन्तेर्यस्मिन्ष्ठीवतिचाप्यसृक् ॥
पित्तासृक्कफजोऽव्याधिर्ज्ञेयःपरिदरोहिसः ॥१७॥

पित्त कफ रक्त के विकार से, मसूढो का माँस सड़ जाता है और रुधिर थूक में आने लगता हैं इन लक्षणों से युक्त व्याधि को परिदर कहते हैं।

उपकुश के लक्षण

वेष्टेषुदाहःपाकश्चताभ्यांदन्ताश्चलंतिच ॥ अवाक्कृ-
ताप्रस्रवतिशोणितमन्दवेदनाः ॥१८॥ आध्मायन्तेस्रु
तेरक्तेमुखोपूतिश्चजायते ॥ यस्मिन्नुपकुशोनामपित्त-
रक्तकृतोगदः ।१६।

पित्तऔर रक्त के विकार से जिसके मसूढ़ो में दाह तथा पाक हो और दाँत हिले अल्प वेदना के साथ रुधिर निकले रक्त के निकल ने से मसूढे फूल जाय मुख में दुर्गन्धि आवे ऐसी व्याधि को उप कुश कहते हैं।

वैदर्भ के लक्षण

घृष्टेषुदन्तमूलेषुसंरम्भोजायतेमहान् ॥
भवंतिचपलादन्ताःसवैदर्भोऽभिघातजः ॥२०॥

दातुन आदि के करने से मसूड़े घिस जातें है तब सूजन उत्पन्न हो जाती है। और दाँत हिलने लगते हैं इन लक्षणों से युक्त रोग वैदर्भ

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

कहते है

खल्ली वर्धन के लक्षण

मारुतेनाधिकोदन्तोजायतेतीव्रवेदनः ॥
खल्लीवर्द्धनसंज्ञोवैजातेरुक्चप्रशाम्यति ॥२१॥

वायु के कोप से दातों के ऊपर दूसरा दांत ऊत्पन्न हो उस वक्त वेदना होती हैं और जब उत्पन्न हो जाता है तव पीडा शान्त हो जाती है इसे खल्लीवर्धन कहते है

कराल के लक्षण

शनैःशनैःप्रकुरुतेवायुर्दन्तसमाश्रितः ॥
करालान्विकटान्दंतान्करालोनससिध्यति ॥२२

वायु शनैः शनैः मसूढा प्राप्त हो दांतों को टेड़े तथा तिरछे करदे उस रोग को कराल कहते हैं ।

अधि मासिक के लक्षण

हानव्येपरिश्चमेदंतेमहाञ्छोथोमहारुजः ॥
लालास्रावीकफकृतोविज्ञयोह्यधिमांसकः ॥२३॥

कफ के कोप से नीचे की सबसे पिछली डाढ के नीचे मसूढ़े में सूजन हो घोर वेदना होय तथा लार ज्यादा गिरे उसे अधिमांस कहते हैं ।

नाड़ी व्रण के लक्षण

दन्तमूलगतानाड्यःपंचज्ञेयाथेरिताः ॥२४॥

दांतों की जड़ मैं (वात पित्त कफ, सन्निपात आगन्तुक) इत्यादि भेद से पांच प्रकार के नाडी व्रण होते हैं उनके लक्षण पूर्व कथित नाडी व्रण निदान में कथित की लक्षणों की तरह होंते हैं ।

कन्ठगत ८ रोग के लक्षण कहते है

दालन के लक्षण

दीर्यमाणेष्विवरुजायस्यदन्तेषुजायते ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

दालनोनामसव्याधिःसदागदातिनिमित्तजः ॥२५॥

वायु के प्रकोप से दाँतों में फोंडने की सी वेदना हो उले दालन कहते हैं ।

कृमि दन्त के लक्षण

कृष्णच्छिद्रश्चलस्त्रावीससंरम्भोमहारुजः ॥
अनिमित्तरुजोबातात्सज्ञेयःकृमिदन्तकः ॥२६॥

वात और रक्त दूषित होने से दातों के मूल भाग में कृमि पड़ जाती है, तब दांतो में काले छिद्र हो जाते है । तब दांत हिलने लगते हैं सूजन हों जाती है तथा वेदना होती हैं दाँतो में से खून निकलता हैं इस रोग को कृमि कहते हैं ।

भंजनक के लक्षण

वक्रं वक्रं भवेद्यस्यदन्तभंगश्चजायते ॥
कफवातकृतोब्याधिःसभंजनकसंज्ञितः ॥२७॥

कफ और वात के दोष जिससे रोग में ब त गिरने लगे तो तथा मुख वक्र हो जाय उसे भंजनक कहते हैं ।

दन्तहर्ष के लक्षण

शीतरूक्षप्रवाताम्लस्पर्शांनामहाद्विजाः ॥
पित्तमारुतकोपेनदन्तहर्षःसनोमत. ॥२८॥

पित्त और वायु के दोष से दातों में शीतल रुखी बायु तथा खटाई आदि का स्पर्श सहन नही होय उसे दन्त हर्ष कहते हैं ।

दन्त शर्करा के लक्षण

मलोदन्तगतोयस्तुपित्तमारुतशोणितः ॥
शर्करेवखरस्पर्शासोज्ञेयादन्तशर्करा ॥२९॥

दातों में पित्त वायु के कोप से संक्षिप्त मैल सूख कर जम जाता है जमे हुये रेत के तुल्य खर्दरा हो जाने से इस रोग को दन्त शर्करा कहते हैं ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

कपालिका के लक्षण

कपालेष्विवदीयेत्सुदन्तानांसैवशर्करा ॥
कपालिकेतिसाज्ञेयासदादन्तविनाशिनी ॥३०॥

वही पूर्वोक्त शर्करा अस्थि के तुल्य कठिन हो जव फट जाती है तो दांतों के नष्ट करने वाली इस व्याधिकी कपालिका कहते हैं ।

श्याव दन्त के लक्षण

योऽसृङ्मिश्रेणपित्तेनदग्धोदन्तस्त्वशेषतः ॥
श्यावतांनीलतावापिगतःसश्यावदन्तकः ॥३१॥

पित और रक्त के विकार से दाँत जले हुये के तुल्य काले पड़ जाते हैं इसी से इस रोग को श्याव दन्त कहते हैं ।

हनुमोक्ष के लक्षण

वातेनतैस्तैर्भावैस्तुहनुसंधिर्विसंहतः ॥
हनुमोक्षइतिज्ञेयोऽव्याधिरर्दितलक्षणः ॥३२॥

ठोडी में चोट के लगने से वायु के दोष से दांत चलायमान हो जाते हैं इसे हनुमोक्ष कहते हैं ।

जिह्वा गत ५ रोगों का वर्णन करते हैं

वातज और पित्तज के लक्षण

जिह्वाऽनिलेनस्फुटितासप्रसुप्ताभवेच्चशाकच्छदनप्रकाशा ॥
पित्तेनपीतापरिदह्यतेचदीर्घैःसरक्तैरपिकंटकैश्च ॥३३॥

वायु के प्रकोप से जीभ फटी सी रस ज्ञान हीन व पर्वती तरु के पत्र तुल्य काँटे दार और खरदरी हो जाती हैं और पित्त विकार से दाह युक्त पीले वर्ण की ताम्र के तुल्य लम्वे कंटकों से व्याप्त हो जाती है ।

कफ जन्य जिह्वा रोग के लक्षण

कफेनगुर्वीबहुलाचिताचमांसोच्छ्रयैःशाल्मलिकंटकाभैः ॥ ३४ ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

कफ के विकार से जीभ स्थूल तथा भारी और सेमर के कंटक तुल्य मांसांकुरो से व्याप्त होती है।

अल्लास के लक्षण

जिह्वातलेयःश्वयथुःप्रगाढःसोऽल्लाससंज्ञःकफरक्त
मूर्तिः ॥ जिह्वांसतुस्तंभयतिप्रबृद्धौमूलेचजिह्वाभृ-
शमेतिपाकम् ॥ ३५ ॥

उप जिह्वक कें लक्षक्त

कफ रक्त के दोष से जिह्वाके नीचे भयङ्कर सूजन हो जाती है उसे अल्लास कहते हैं। इसके बृद्धिगत होने से जिह्वा का स्तम्भ तथा पाक हो जाता हैं त्रिदोष से उत्पन्न इस को असाध्य कहते है।

जिह्वाग्ररूपःश्वयथुःसजिह्वामुन्नस्यजातःकफरक्तमूर्त्तिः ॥
लालाकरःकण्डुयुतःसचोषःसातूपजिह्वाकथिताभिष-
गिभ ॥ ३६ ॥

कफ रक्त के दोष से जिह्वा के अग्रभाग के तुल्य जीभ के ऊपर सूजन हो जाती है जिससे जीभ ऊँचो उठ जाती है उसमें खुजली तथा दाह होती है तथा उसमें से लार गिरतीं है इस व्याधि को उप जिह्वक कहते है।

तालु स्थिति ६ रोगों का वर्णन करते हैं

कंठ शुन्डी के लक्षण

श्लेष्मासृग्भ्यांतालुमूलात्प्रबृद्धोदीर्घःशोथोध्मातवस्ति
प्रकाशः ॥ तृष्णाकासश्वासकृत्तंवदन्तिव्याधिंवैद्याः-
कंठशुडीतिनाम्ना ॥ ३७ ॥

कफ और रक्त के प्रकोप से तालु की जड़ में फूधीवस्ति के सदृश शोथ उत्पन्न होता है इसमें प्याह खांसी श्वास ये विकार पैदा हो जाते हैं इन लक्षणों से युक्त व्याधि को कण्ठशुंडी कहते हैं।

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

तुन्डिकेरि तथा अध्रव के लक्षण

शोथःशूलस्तोददाहप्रपाकीप्रागुक्ताभ्यांतुंडिकेरीमतातु॥
शोथःस्तब्धोलोहितस्तालुदेशेरक्तोज्ञेयःसोऽध्रुवोरुग्ज्वरश्च ॥३८॥

कफ और रक्त के दोष से तालु में कपास के फल के समान सूजन होती है उसमें वेदना सुई छिदने के तुल्य दुःख होता है और दाह हो कर वह सूजन पक जाती है इसे तुन्डिकेरि तथा रक्त से तालु में रक्त वर्ण की स्तब्ध वेदना तथा बुखार युक्त जो शोथ होता है उसे अध्रुव कहते हैं

कच्छप और अर्बुद के लक्षण

कूर्मोन्नतोऽवेदनोऽशीघ्रजन्मारोगोज्ञेयःकच्छपश्लेष्मणावा ॥
पद्माकारंतालुमध्येतुशोथंविद्याद्रक्तादर्बुदंप्रोक्तलिंगम्

कफ के प्रकोप से तालु में कच्छप की पीट के तुल्य ऊँची उठी हुई अल्प वेदना युक्त सूजन पैदा होती है और शीघ्र न बढ़ने वाले इस रोग को कच्छप तथा रक्त से तालु में कमल के तुल्य लाल वर्ण की सूजन पैदा होती है। उसे अर्बुद रोग कहते हैं। जो लक्षण रक्तार्बुद में होते हैं वे ही इसमें जानिये।

मांससघात तथा तालुपुप्पुट के लक्षण

दुष्टंमांसंनीरुजंतालुमध्येकफाच्छूनंमांससंघातमाहुः ॥
नीरुक्स्थायीकोलमात्रःकफात्स्यान्मेदोयुक्तःपुप्पुटस्तालुदेशे ॥४०॥

कफ के प्रकोप से तालु में दूषितमांस से वेदना हीन जो सूजन होती है उसे मांससंघात तथा मेदयुक्त कफ तालु में वेदना रहित स्थिर वेर के समान जो सूजन होती है उसे तालु पुप्पुट कहते हैं

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

तालुशोष और तालुपाक के लक्षण

शोषोऽत्यर्थदीर्यतेघापितालुःश्वासश्चोग्रस्तालुशोषोऽनिलाच्च ।।
पित्तंकुर्यात्पाकमत्यर्थघोरंतालुन्येवंतालुपाकंवदन्ति ।। ४१ ।।

वायु के प्रकोप से तालु अत्यन्त सूख कर फट जाता है तब घोर श्वांस की उत्पत्ति होती उसको तालुशोष तथा पित्त के कोप से तालु में अत्यन्त घोर पकी हुई पिडिका उत्पन्न होती है उसे तालूपाक कहते हैं ।

कंठगत १७ रोगों का बयान करते हैं

रोहिणी की सम्प्राप्ति

गलेऽनिलःपित्तकफौचमूर्छितौप्रदूष्यमांसंचतथैवशोणितम् ।। गलोपसंरोधकरैस्तथांकुरैर्निहंत्यसून्व्याधिरयंहिरोहिणी ।। ४२ ।।

गले में बात पित्तकफ कुपित होकर माँस और खून को दूषित कर गले का अवरोध करने वाले मांसाकुर पैदा करते हैं यह त्रिदोष से उत्पन्न व्याधि प्राण हर्ता असाध्य होती है इसे रोहिणी कहते हैं ।

नोट—इस व्याधि का असाध्यत्व अन्य ग्रन्थान्तर के मत से इसमें लिखा है त्रिदोषजारोहिणी तत्क्षण कफजा ३ दिन पित्तजा ५ दिन वातिक ७ दिन में प्राणान्त कर देती है ।

वातिक रोहिणी के लक्षण

जिह्वासमन्ताद्भृशबेदनास्तुमाँसाकुराःकंठनिरोधनाय ।।
सारोहिणीवातकृताप्रदिष्टावातात्मकोपद्रवगाढयुक्ता ।।

जीभ के सर्वत्र वेदना सहित कण्ठ को रोकने वाले मांसांकुर पैदा होजाते हैं और कंप आदि वायु सम्बन्धी उपद्रव होते हैं

पैत्तिका रोहिणी और श्लैष्मा के लक्षण

क्षिप्रोद्गमाक्षिप्रविदाहपाकातीव्रज्वरापित्तनिमित्तजातु
स्रोतोनिरोधिन्यपिमन्दपाकास्थिरांकुरायाकफसंभवासा

पित्त के प्रकोप से तीव्र बुखार युक्त शीघ्र बढने वाली और शीघ्र पाकयुक्त रोहिणी पैदा होती हैं और कफ के दोष से जो रोहिणी पैदा होती हैं वह कठिन मासाकुरों से व्याप्त कंठ का अवरोध कर धोरे धीरें पकती है।

सन्निपातज तथा रूमजा रोहिणी के लक्षण

गम्भीरपाकिन्यनिवार्यवीर्या त्रिदोषलिंगात्रितयोत्थितासा
स्फोटैश्चिनापित्तसमानलिंगासाध्याप्रदिष्टारुधिरात्मा
कातु ॥४५॥

सन्निपात से प्रगटरोहिणी गम्भीर पाक राध के स्राव युक्त त्रिदोष के लक्षण युक्त चिकित्सा हीन तत्क्षण प्राण हर्ता और रक्तरोहिणी के लक्षण समान होती है तथा फोड़ों व्याप्त साध्य होती है

कंटसालूक के लक्षण

कोलास्थिमात्रःकफसम्भवोयोग्रंथिर्गलेकंठकशूकभूतः ॥
खरःस्थिरःशस्त्रनिपातसाध्यस्तंकंठशालूकमितिब्रुव-
न्ति ॥ ४६ ॥

कफ से प्रकोप से गले मे बेर के तुल्य सूक्ष्म कंठकों से व्याप्त खरदरी और कठोर शस्त्र साध्य जो ग्रन्थि पेंदा होती होती हैं उसे कंठशालू कहने है।

अधिजिह्व के लक्षण

जिह्वाग्ररूपःश्वयथुःकफात्तु जिह्वपरिष्टादपिरक्तमिश्रात् ॥
ज्ञेयोऽधिजिह्वःखलुरोगएषविवर्जयेदागतपामेनम् ॥४७

कफ और खून के दूषित होने से जिह्वा के अग्र भागके सदृश जीभ के ऊपर जो सूजन पैदा होती है उसे अधि जिह्व कहते हैं पकने पर यह असाध्य हो जाती है ।

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

वलय के लक्षण

बलासएवायतमुन्नतंचग्रंथिंकरोत्यन्नगतिंनिवार्य ॥
तंसर्वथैवाप्रतिवार्यवीर्यविवर्जनीयंवलयं वदन्ति ४८

कफ के दोष से कंठ में ऊंची लम्बी गले कौ रोकने वाली सूजन पैदा होती इसकी वजह से रोगी कुछ खा नहीं सकता है न उसमें कोई चिकित्सा सफल होती है अतः वैद्यों से त्याज्य इस व्याधिको बलय कहते हैं।

बलास के लक्षण

गलेतुशोथंकुरुतः प्रवृद्धौश्लेष्मानिलौश्वासरुजोपपन्नम् ।
मर्मच्छिदंदुस्तरमेनमाहुर्बलाससंज्ञंनिपुणाविकारम् ॥ ४९ ॥

वृद्धिगत कफ वायु गले में सूजन प्रगट कर देते हैं इस सूजन में वेदना होती है तथा श्वास हो जाती है मर्म स्थानों में वेदना करनें बाली इस व्याधिको बलास कहते हैं।

एक वृन्द के लक्षण

बृत्तोन्नतोंतःश्वयथुःसदाहःसकंडुरोऽपाक्यमृदुर्गरुश्च ॥
नाम्नैकबृंदःपरिकीर्तितोऽसौव्याधिर्बलासक्षतजप्रसूतः ॥ ५० ॥

कफ रक्त के प्रकोप से गले में गोलसी ऊंची कुछ दाह तथा खुजली से युक्त कुछ पकने वाली तथा किञ्चित मृदु एवं वारी जो सूजन पैदा होती है उसे एक वृन्द कहते हैं।

बृन्द के लक्षण

समुन्नतंबृत्तममंददाहंतीव्रज्वरंबृंदमुदाहरंति ॥
तंचापिपित्तक्षतजप्रकोपाद्विद्यात्सतोदंपवनात्मकंतु ५१

रक्त पित्त के कोप से गले में एक वृन्द के तुल्य तीव्र बुखार तथा अधिक दाह करने वाली सूजन पैदा होती है उसे बृन्द कहते हैं वायु के सम्बन्ध से सुई चुभाने की सी बेदना होती है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

शतघ्नी के लक्षण

वर्तिर्घनाकंठनिरोधिनीयाचिताऽतिमात्रंपिशितप्ररोहैः
अनेकरुक्प्राणहरीत्रिदोषाज्ज्ञेयाशतघ्नीतुशघ्निरूपा

तीनों दोषों के कोप से कंट में लम्बी और अनेक मांसाकुरों के तुल्य कंटकों से व्याप्त तथा गले का अवरोध करने वाली सूजन पैदा होती है उसमें वेदना दाह खुजली आदि तीनों दोषों के उपद्रव होते है इसे शीघ्र प्राणनाशिनी शतघ्नी के आकार तुल्य असाध्य होने से शतघ्नी कहते हैं ।

गिलायु के लक्षण

ग्रथिर्गलेत्वामलकास्थिमात्रःस्थिरोऽल्परुक्स्यात्कफरक्तमूर्तिः ।।
संलक्ष्यतेसक्तमिवाशनंचसशस्त्रसाध्यस्तुगिलायुसंज्ञः ।।५३।।

कफ रुधिर के प्रकोप से गले में आमकी गुठली के तुल्य कठोर मन्द वेदना वाली सूजन पैदा होती है इसके होने से ऐसा प्रतीत होता है मानो गले में अन्न रुका हुआ है शस्त्र द्वारा छेदन करने से यह साध्य होती हैं इसे गिलायु कहते हैं ।

गलविद्रधि के लक्षण

सर्वंगलंव्याप्यसमुत्थितोयःशोफोरुजःसंतिचयत्रसर्वाः
ससर्वदोषैर्गलविद्रधिस्तुतस्यैवतुल्यःखलुसर्वजस्य ।५४।

त्रिदोष के कोप से सब प्रकार की वेदना युक्त सम्पूर्ण गले में व्याप्त जो शोथ होता है उसे गल विद्रधि कहते हैं इसमें त्रिदोष विद्रधि के सब लक्षण होते हैं ।

गलौघ के लक्षण

शोथोमहानन्नजलावरोधीतीव्रज्वरोवायुगतेर्निहन्ता ।।
कफेनजातोरुधिरान्वितेनगलेगलौघःपरिकीर्त्यतेस५५

कफ और रक्त के दोष से गले में तीव्र बुखार युक्त जलान्न मार्गों व रोधिनी सूजन पैदा होती है इससे उदान वायु का संचार नहीं होता है

इसे गलौघ कहते हैं ।

श्वरघ्न के लक्षण

यस्ताम्यमानःश्वसितिप्रसक्तं भिन्नस्वरःशुष्कविमुक्तकंठः
कफोपदिग्धेष्वनिलायतेषुज्ञेयासरोगःश्वसनात्स्वरघ्नः ॥

कंठ में वायु के मार्ग में कफावरोध से निरन्तर श्वास का आवागमन होता है मूर्छा आती है तथा नेत्रों के सामने अन्धकार सा प्रतीत होता है । स्वर भंग हो जाता है गला सूख जाता है बोल निकलता नहीं है न कुछ खाया पिया नीचे उतरता है इस वातज व्याधिको स्वरघ्न कहते हैं ।

मांसे तान के लक्षण

प्रतानवान्यःश्वयथुःसुकष्टोगलोपरोधंकुरुतेक्रमेण ॥
समांसतानेतिबिभर्तिसंज्ञांप्राण प्र णतत्सर्वकृतोविकारः ॥

तीनों दोषों के कोप से कंठमें महा कष्ट दायक क्रमसः फैलने वाली जो सूजन पैदा होती है उसे मांस तान कहते हैं यह प्राण नाशिनी है ।

बिदारी के लक्षण

सदाहतोदंश्वयथुं सुतीव्रमन्तर्गलेपूतिविशीर्णमांसम् ॥
पित्तेनविद्याद्वदनेविदारींपार्श्वेविशेषात्सतुयेनशेते। ५८ ।

पित्त के प्रकोप से गले में दाह तथा चवक युक्त जो सूजन पैदा होती है उसे तिदारी कहते हैं इसमें सड़ा हुआ मांम निकलता है । रोगी जिस करवट से विशेषयन करता है उसी तरफ यह रोग होता है ।

मुखपाक

वातज सर्वसर के लछण

स्फोटैःसतोदैर्वदनंसमताद्यस्याचितंसर्वरःसवातात् ॥

वायु के प्रकोप से मुख, होट, तालु, जीभ इनमें छोटी २ फुन्सियां सूई के चुभाने से उत्पन्न व्यथा निकलती हैं ।

पैत्तिक और श्लेष्मिक सर्वसर मुखपाक के लक्षण

रक्तैः सदाहैःपिडकैःसपीतैर्यस्याचितंचापिसपित्तकोपात्

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अवेदनैःकण्डुयुतैःसवर्णैर्यस्याचितंचापिसतैःकफेन ॥६०॥

पित्त के विकार से मुख में लाल तथा गीले दाह युक्त छाले होते हैं तथा कफ दोष से त्वचा के वर्ण तुल्य मंद वेदना कारक छाले हो जाते हैं ।

असाध्य मुख से पाक के लक्षण

ओष्ठप्रकोपेवर्ज्याःस्युर्मांसरक्तत्रिदोषजाः ॥ दन्तमूलेषुवर्ज्यौतुत्रिलिंगगतिसौषिरौ ॥६१॥ दन्तेषुनचसिध्यन्तिश्यावदालनभंजनाः । जिव्हारोगेवकाशस्तु लव्येष्वर्बुदन्तथा ॥ ६२ ॥ स्वरघ्नोवलयोबृन्दोबलासश्चविदारिका ॥ गलौघोमांसतानश्चशतघ्नीरोहिणीगले ॥ ६३ ॥ असाध्याःकीर्त्तिताह्येतेरोगानवदशैवतु तेषुचापिक्रियांवैद्यःप्रत्याख्यायसमाचरेत् ।६४।

ओष्ठ रोगों में मांसज रक्तज और सन्निपातज ये तीन असध्य हैं। मसूढ़ों में तीनों दोषों के प्रकोप से नाड़ी व्रण और सौषिर, दांतों के रोगों में श्याव, दालन, और भंजन जीभ रोगों में अल्लास, तालुक रोगों में अर्बुद तथा कंठ के रोग में अर्बुद तथा कंठ के रोगों में स्वरघ्न वलय, वृन्द, वलास, विदारिका गलौघ, मांस तान शतघ्नी और रोहिणी ये १९ रोग असाध्य हैं। चिकित्सकों को इन रोगों के अतिरिक्त अन्य रोगी की चिकित्सा करनी उचित है ।

इति श्री पं० चोखेलाल कृतायां कृष्णा नीन्दनी भाषा टीकायां माधव निदाने

मुख रोग निदानम् ।

* * *

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

कर्णरोगनिदानम्

शूल के लक्षण

समीरणःश्रोत्रगतोऽन्यथाचरन्समंततःशूलमतीवकर्णयोः ॥ करोतिदोषैश्चयथास्त्रमावृतःसकर्णशूलः-
कथितोदुरासदः ॥१॥

वायु कर्ण में जब प्रतिलोभगति सें विरचण करती हैं तब कानों में घोर वेदना होती है उसे कर्ण शूल कहते हैं पित्त कफ रक्त से आवृत हो वायु प्रति लोभ गति को प्राप्त हो जाती है यह रोग कष्ट साध्य होता है नोट—अन्य ग्रंथान्तरों के मत से मूर्छा, दाह, बुखार, खांसी, क्लम इत्यादि उपद्रव कर्ण रोग में कहे हैं।

कर्ण नाद के लक्षण

कर्णस्रोतःस्थितेवातेशृणोतिविविधान्स्वरान् ॥
भेरीमृदंगशंखानाकर्णनादःसउच्यते ॥२॥

कुपित वायु के कान के छिद्र में स्थित होने से विविध प्रकार के स्वर भेद मृदंग, शंख आदि के शब्द सुनाई पड़ते हैं इसे कर्णनाद कहते हैं।

वाधिर्य के लक्षण

यदाशब्दवहंवायुःस्रोतआवृत्यतिष्ठति ॥
शुद्धश्लेष्मान्वितोवापिबाधिर्यंतेनजायते ॥२॥

केवल, वात, अथवा कफ युक्त, शब्द वाहिनी नसों में प्राप्त हो जाती हैं तब मनुष्य सुनता नहीं है उसे वधिर्य रोग कहते हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

कर्ण क्ष्वेड के लक्षण

वायुःपित्तादिभिर्युक्तोवेणुघोषसमंस्वनम् ॥
करोतिकर्णयोःक्ष्वेडंकर्णक्ष्वेडःसउच्यते ॥४॥

पितादि दोषों से युक्त वायु कान में बंशी का सा शब्द प्रगट कर देता है उसे कर्ण क्ष्वेद कहते हैं।

कर्ण स्राव के लक्षण

शिरोभिघातादथवानिमज्जनाज्जलेप्रपाकादथवापि-
विद्रधेः ॥ स्रवेद्धिपूयंश्रवणोऽनिलार्दितःसकर्णसंस्रा-
वइतिप्रकीर्त्तितः ॥५॥

मस्तक में प्रहार लगने से अथवा न्हाते वक्त कानों में पानी भर जाने से अथवा कानों में विद्रधि के पक जाने से वायु दूषित हो रांध को निकाले उसे कर्ण स्राव कहते हैं।

कर्ण कडू दकर्ण गूथ के लक्षण

मारुतःकफसंयुक्तःकर्णकंडूंकरोतिच ॥
पित्तोष्मशोषितःश्लेष्माजायतेकर्णगूथकम् ॥६॥

कफ मिश्रित वायु कानों में खजली पैदा कर देता हैं उसे कर्ण कंडू और पित्त की उष्णता से कफ सूखकर कान में मैल जाता है उसे कर्ण गूथ कहते हैं।

कर्ण प्रतिनाह के लक्षण

सकर्णगूथोद्रवतांयदागतोविलायितोघ्राणमुखंप्रपद्यते
तदासकर्णप्रतिनाहसंज्ञितोभवेद्विकारःशिरसोऽर्द्धभे-
दकृत् ॥७॥

वही पूर्वोक्त कर्ण गूथ स्नेह स्वेदादि से जब द्रव हो जाता है तब मुख व नाक में प्राप्त हो आधाशीशी की वेदना उत्पन्न कर देता है उसे

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

कर्ण प्रतिनाह कहते हैं ।

कृमिकर्णं के लक्षण

यदातुमूर्च्छंत्यथवापिजंतवःसृजन्त्यपत्यान्यथवापिमक्षिकाः ॥ तदंजनत्वाच्छ्रवणौ निरुच्यतेभिषग्भिराद्यैः कृमिकर्णकोगदः ॥८॥

जब कान में कृमि हो जाती है अथवा मक्खियां अण्डे रख देती हैं तब कानों में कृमि लक्षण उत्पन्न होने से इसे कृमि वैद्यों ने कहा है (यह सन्निपातज है)

कान प्रविष्ण पंतांदि के लक्षण

पतंगाःशतपद्यश्चकर्णस्रोतःप्रविश्यहि ॥ अरतिंव्याकुलत्वं चभृशंकुर्वन्तिवेदनाम् ॥ ९ ॥ कर्णोनिस्तुद्यतेतस्यतथाफुरफुरायते ॥ कीटेचरितरुक्तीव्रानिस्पन्देवेदना ॥१०॥

कानों में पतंगा, खन खजूरा गिजाई आदि जीव प्रवेश कर जाता है तब बैचेनी व व्यकुलता तथा कानों में नोंचने की सी व्यथा और वेदना होती है जब प्रविष्ट हुआ कीड़ा कान में फिरे चले तब घोर वेदना पैदा होती है जब वह चले नहीं शांति होय ।

कर्ण विद्रधि के लक्षण

क्षताभिघातप्रभवस्तुविद्रधिर्भवेत्तथादोषकृतोऽपरःपुनः ॥ सरक्तपीतारुणरक्तमास्रवेत्प्रतोदधूमायनादाहचोषवान् ॥११॥

कानों में खुजाने की वजह से अथवा चोट से व्रण हो कर विद्रधि हो जाती हैं अथवा वातादि दोषों से दूसरी विद्रधि उत्पन्न हो जाती है। तब उसके फूटने से लाल, पीला रक्त निकलता है । धूमसा निकलना

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ज्ञात होता हैं और दाह तथा चूसने कीसी व्यथा होती है।

कर्णपाक के लक्षण और पूति कर्ण के लक्षण

कर्णे पाकस्तुपित्तेनकोथविक्लेदकृद्भवेत् ॥
कर्णे विद्रधिपाकाद्वाजायतेचाँबुपूरधत् ॥१२॥

पित्त विकार से अथवा कान के पकने से अथवा कान में पानी भर जाने से कान धुर्गन्धि आती है तथा कान गीला रहता है उसे कर्ण पाक कहते हैं और कानमें राध निकले व दुर्गन्धि मारे उसे पूति कर्ण कहते हैं

कर्णशोथ कर्णार्बुद कर्णार्श के भेद

कर्णशोथ, कर्णर्बुद कर्णार्श इनके लक्षण

पूयंस्रवतिवापूतिर्ज्ञेयःपतिकर्णकः ।
कर्णशोथार्बुदार्शांसिजानीयादुक्तलक्षणै ॥१३॥

पूर्वोक्त निदानों में कहे हुए लक्षणों के समान जानने चाहिए उनके भेद कहत हैं कर्णशोथ ४ प्रकार का होता है वात का पित्तका, कफका, रक्तका उसी प्रकार कर्णार्शि चार तरह का होता हैं कर्णार्बुद वात, पित्त, कफ रक्त माँस, मैदा और शिरा इन भेदों से सात तरह का होता है सुश्रुत के धेय से कर्ण रोग २८ प्रकार के है परन्तु चरक ऋषि के मत से ४ चार ही प्रकार के हैं उनका कथन करते हैं।

४ कर्ण रोगों के लक्षण

नादोऽतिरुक्कर्णमलस्यशोषःस्रावस्तनुश्चावणंच
वातात् ॥
शोथःसरागोदरणंविदाहःसपीतपूतिस्रवणंचपित्तात् १४
बैश्रुत्यकन्डूस्थिरशोथशुक्लास्निग्धस्रुतिःश्लेष्मभवेतिं
रुक्च ॥
सर्वाणिरूपाणिचसन्निपातात्स्रावश्चतत्राधिकदोषवर्णः

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

वायु के प्रकोप से कानों में शब्द होता है पीडा होती है तथा कान का मैल सूख जाता है और स्राव द्रव होता है शब्द सुनाई नहीं देता है। पित्त विकार से कान दाह युक्त चिरासा किञ्चित पीला तथा लाल सूजन युक्त होता है तथा उसमें दुर्गन्धि युक्त स्राव होता है। कफ से उत्पन्न कर्ण रोग में विरुद्ध शब्द सुनाई देता है, खुजली युक्त कठोर सूजन हो जाती है तथा सफेद वर्ण का चिकना स्राव होता है।

त्रिदोष से सब लक्षणों युक्त स्राव होता है तथा तीनों दोषों के लक्षण होते हैं उसी से जो दोष प्रधान होता है उसी के अनुसार स्राव होता है।

कर्णपाली के रोग

कर्ण शोथ के लक्षण

सौकुमार्याच्चिरोत्सृष्टेसहसापिप्रवर्धिते ।।
कर्णशोथोभवेत्पाल्यांसरुजःपरिपोटवान् ।।१६।।

सुकुमार स्त्री तथा बालक चिरकाल में बढ़ने वाले कर्ण छिद्रको सहसा बढ़ाने का साहस करते हैं तो कर्ण पाली सूज जाती है फूल जाती है और दुखती है।

परि पोट के लक्षण

कृष्णारुणनिभःस्तब्धःसवातात्परिपोटकः ।।१७।।

वायु के प्रकोप से यदि कर्ण पाली रोग काला लाल कठोर हो कर फूल जाता है उसे परिनोट कहते हैं।

उत्पात और उन्मेथक के लक्षण

गुर्वाभरणसंयोगात्तांडवाद्धर्षणादपि ।।
शोथःपाल्यांभवेच्छ्यावोदाहपाकरुजान्वितः ।१८।
रक्तोवारक्तपित्ताभ्यामुत्पातःसगदोमतः ।।
कर्णंबलाद्वर्धयतःपाल्यांवायुःप्रकुप्यति ।।१९।।
सकफंगृह्यकुरुतेसशोफंस्तब्धवेदनम् ।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

उन्मंथकःसकन्डूकोविकारःकफवातजः ॥ २० ॥

कान में भारी आभूषणों के धारण करने से, अथवा चोट के लगने से वा कान के खींचने से रक्त पित्त दूषित होकर कर्ण की पाली में हरी पीली लाल दाह और वेदना करने वाली सूजन पैदा कर देते हैं और उसमें से रक्त का स्राव होता है उसे उत्पात कहते हैं। और कान को बल सहित बढ़ाने से कर्ण पाली में स्थित वायु कुपित हो कफ को साथ लेकर कठिन मंद वेदना युक्त खुजली से व्याप्त सूजन पैदा करदेता है उसे कफ वात के दोष से प्रगट व्याधि को उन्मेथक कहने हैं।

दुःखवर्धन के लक्षण

संवर्ध्यमानेदुर्विद्धे कंडूदाहरुजान्वितः ॥
शोफोभवतिपाकश्चत्रिदोषोदुःखवर्द्धनः ॥२१॥

कुत्सित रीति से कानों को छेदने से तथा बढ़ानें का साहस करने से खुजली व दाह कारक शोथकी उत्पत्ति होती हैं पक जाने के कारण उसी दुःख वर्द्धन कहते हैं।

परिलेही के लक्षण

कफासृक्कृमिसंभूतःसविसर्पन्नितस्ततः ॥
लिहेच्चशष्कुलींपालिंपरिलेहीत्यसौस्मृतः ॥२२॥

कफ–रुधिर कृमि इनके दोष से प्रगट हुई सर्वत्र गामिनी सूजन कान की पाली में होने से उसे खाजाती है अर्थात उसका मांस गिरने लगता है उसे पहिले ही कहते हैं।

इति कर्ण रोग निदानम्

नासारोगनिदानम्

—:—:—

पीनस के लक्षण

आनह्यतेयास्यविशुष्यतेचप्रक्लिद्यतेधूप्यतिचैवनासा ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

नवेत्तियोगंधरसांश्चजन्तुर्जुष्टंव्यवस्येत्सतुपीनसेन १
तंचानिश्लेष्मभवंविकारं ब्रूयात्प्रतिश्यायसमानलिंग

जिस मनुष्य की नासिका रुक जाय वायु शोषित कफसे नाक शुष्क हो जाय आद्र रहे, धूम्रसानिफले और गंध ज्ञान नष्ट हो जाय, तथा जिह्वा का रस ज्ञान भी जाता रहे तो कफ के विकार से प्रगट इस व्याधि को पीनस (जुकाम) कहते हैं ।

पूति नस्य के लक्षण

दोषैर्विदग्धैर्गलतालुमूलेसंमूर्च्छितोयस्यसमीरणस्तु ।
निरेतिपूतिर्मुखनासिकाभ्यांतंपूतिनस्यंप्रवदंतिरोगम् २

कंठ तथा तालु में पित्त कफ रक्त के दूषित होनें से वायु कुपित हो मुख तथा नाक में वास पैदा हो करदे उसे पूतिनस्य कहते है ।

नासिकापाक के लक्षण

घ्राणाश्रितंपित्तमरूंषिकुर्याद्यस्मिन्विकारेबलवांश्चपाकः
तंनासिकापाकमितिव्यवस्येद्विक्लेदकोथावथवापियत्र:३

पित्त के प्रकोप से जिसकी नासिका के भीतर पकने वाली पिड़िका उत्पन्न हो जाय और राधका स्राव होय उसे नासिका पाक कहते हैं ।

पूयरक्त के लक्षण

दोषैर्विदग्धैरथवापिजन्तोर्ललाटदेशोभिहतस्यतैस्तैः
नासास्रवेत्पूयमसृग्विमिश्रंतं पूयरक्तं प्रवदन्तिरोगम् ॥४॥

वायु आदि दोषों के प्रकोप से अथवा शिर में चोट के लगने से नासिका द्वारा राध तथा रक्त का स्राव हो उसे पूयरक्त कहते हैं ।

क्षयथु के लक्षण

घ्राणाश्रितेमर्मणिसंप्रदुष्टोयस्यानिलोनासिकयानिरेति
कफानुयातोबहुशोऽतिशब्दंतंरोगमाहुःक्षवथुंविधिज्ञा५

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

नाक के शृंगाटक नाम मर्मस्थान में वायु कुपित हो कफको साथ लेकर नासिका से घोर शब्द युक्त बाहर निकले उस रोग की क्षवथु कहते हैं ।

आगन्तुज क्षवथु के लक्षण

**तीक्ष्णोपयोगादतिजिघ्रतोवाभान्कटूनर्कनिरीक्षणाद्वा ॥
मूत्रादिभिर्वातरुणास्थिमर्मण्युद्धाटितेऽन्यक्षवथुर्निरेति ६**

तीक्ष्ण पदार्थ (राई आदिक भक्षण से अथवा कटु कड़ई चीज खाने से मिर्च कायफलादि तीक्ष्ण औषधियों के सूघने से, सूर्य की तरफ देखने से कपड़े की वत्ती आदि का प्रयोग नाक में करने से अथवा नासिका वंशस्थि वा मर्म में चोट के लगने से आगन्तुज छींक आती हैं ।

भ्रंशथु के लक्षण

**प्रभ्रस्यतेनासिकयाहियस्यसांद्रोविदग्धोलवणाःकफश्च ॥
प्राक्संचितोमूर्द्धनिसूर्यतप्तेतंभ्रंशथुंव्याधिमुदाहरंति ७**

सँचित हुए शर स्थित कफ दूषित हो सूर्य की गर्मी द्वारा मस्तक के तप्त होने से गाढा और खारी होकर निकलता है उस रोग कों भ्रंशथु कहते हैं ।

दीप्त के लक्षण

**घ्राणभृशंदाहसमन्वितेतुविनिश्चरेद्धूमइवेहबायुः ॥
नानाप्रदीप्तेवचस्यजंतोर्व्याधिंतुतंदीप्तमुदाहरन्ति ।८।**

नासिका में विशेष दाह होने से बायु धूम्र के तुल्य विचरण करती हैं जिससे नाक गरम रहती है उसे दीप्त कहते हैं ।

प्रतिनाह और नासा स्राव के लक्षण

**उच्छ्वासमार्गंतुकफःसवातोरुंध्यात्प्रतीनाहमुदाहरेत्तम् ।
घ्राणाद्घनःपीतसितस्तनुर्वादोषःस्रवेत्स्रावमुदाहरेत्तम् ।९।**

कफ वायु युक्त हो श्वास के मार्ग का अवरोध कर देता है जिससे नासिका का स्वर अच्छी तरह नहीं चलता है उसे प्रतिनाह तथा नासिका से गाढा पीला सफेद द्रव कफ निकले उसे नासा स्राव कहते हैं ।

नासा परिशौथ के लक्षण

घ्राणाश्रितेस्रोतसिमारुतेनगाढंप्रतप्ते परिशोषितेच ।
कृच्छ्राच्छ्वसेदूर्ध्वं मधश्चजंतुर्यस्मिन्सनासापरिशोषउक्तः

वायु के प्रकोप से नासिका का मुख सूख जाता है जिससे मनुष्य सकष्ट श्वास लेता है उसे नासा परिशोद कहते हैं।

आम तथा पक्व पीनस के लक्षण

शिरोगुरुत्वमरुचिर्नासास्रावस्तनुःस्वरः ।। क्षामःष्ठी
वेत्तथाऽभिक्ष्णमामपीनसक्षणम् ।।११।।
आमलिंगान्वितःश्लेष्माघनश्चाप्सुनिमज्जति ।।
स्वरवर्णविशुद्धिश्चपक्वपीनसलक्षणम् ।।१२।।

मस्तक का भारी रहना, अन्न में अनिच्छा रहना, नाक द्वारा उष्ण जल का निर्गमन होना, मन्द स्वर पड़ जाय, और तन कृश हो जाय, बारम्बार थूक का आना ये आम पीनस में होते हैं और इनहीं लक्षणों युक्त कफ गाढ़ा हो जाने से स्पष्ट शब्द आवाज के निकलने से मुख की कांति बदल जाने से पक्व पीनस के लक्षण जानने चाहिए।

प्रतिश्याय की सम्प्राति

संधारणाजीर्णरजोतिभाष्यक्रोधर्त्तुवैषम्यशिरोभितापैः
प्रजागरातिस्वपनाम्बुशीतैरदश्ययामैथुनवाष्पशोषैः
संस्त्यानदोषेशिरसिप्रवृद्धोवायुःप्रतिश्यायमुदीरयेच्च ।।
चयंगतामूर्द्धनिमारुतादयःपृथक्समस्ताश्चतथैवशोणि
तम् ।।१४।।

मल मूत्रादि वेगावरोध से, अजीर्णकर्ता पदार्थ भक्षण से धूल आदि के नाक में प्रविष्ट हो जाने से, अति भाषण तथा अत्यन्त कोप करने से तथा ऋतु विरुद्धाचरण से, ग्रीष्म काल में शिरोभिताप से, रात्रि में जागरण करने से, दिवाशयन से, और सीतल पदार्थों कें अत्यन्त

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

भक्षण करने से इस तरह वर्फ आदि के भक्षण से तथा विशेष स्त्री प्रसंग से स्वेद अथवा अश्रुःपातावरोध से कफादि दोषों के मस्तक में कुपित होने से वायु बृद्धिगत हो पीनस रोग की उत्पत्ति कर देता है। शिर में वातादि दोष अलग २ रहो अथवा रक्तादि सर्व दोष स्वकारणों से कोप को प्राप्त हो प्रतिश्याय उत्पन्न कर देते हैं।

पूर्वरूप

प्रकुप्यमानाविविधैःप्रकोपनैस्ततःप्रतिश्यायकराभवन्तिहि
क्षवप्रवृत्तिःशिरसोऽतिपूर्णतास्तम्भोऽगमर्दःपरिहृष्ट
रोमता ॥१५॥

प्रतिश्याय होने के पूर्व छींकें आती हैं तथा शिर में गुरुता अंगों का जकड़सा जाना तथा टूटने की सी पीड़ा होना रोमाञ्च और घूमादिक बहुत से उपद्रव होते हैं।

उपद्रवाश्चाप्यपरेष्यपृथग्विफानृणांप्रतिश्यायपुरःसराः ॥
स्मृताः आनद्धापिहितानासातनुस्रावप्रसेकिनी ॥१६॥
गलताल्वोष्ठशोषश्चनिस्तोदःशंखयोरति ॥
भवेत्स्वरोपघातश्चप्रतिश्यायेऽनिलात्मजे ॥१७॥

वाकज प्रतिश्याय के लक्षण

वायु के दूषित होने से जिसकी नासिका का मार्ग रुक जाय, पतला पानी निकले और कंठ तालु होट इनमें खुश्की हो जाय तथा कनपटी दूखे और स्वर भंग हो जाय उसे वात का प्रतिश्याय कहते हैं।

उष्णःसपीतकःस्रावोघ्राणात्स्रवतिपैत्तिके ॥१८॥
कृशोतिपाण्डुःसन्तप्तोभवेदुष्णाभिपीडितः ॥
सधूममग्निंसहसावमतीवचनायसा ॥१९॥

पित्त जन्य प्रतिश्याय के लक्षण

पैत्तिक प्रतिश्याय में नासिका से दाह युक्त पीला स्राव होता है तथा

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

वह कृश और पीला हो जाता है। शरीर में उष्णता तथा नासिका से वन्हि सदृश धूम्र का निर्गमन होता है।

कफ जन्य प्रतिश्याय के लक्षण

घ्राणात्कफःकफकृतेश्वेतःपीतःस्रवेद्बहुः ।।
शुल्कावभासःशूनाक्षोभवेद्गुरुशिरानरः ।।२०
कंठताल्वोष्ठशिरसांडूमिरभिषर्कीडितः ।।

कफ जन्य प्रतिश्याय में नासिका से सफेद पीला कफ निकलता है। और शरीर भी सफेद हो जाता है तथा नेत्रों के ऊपर सूजन एवं शिर भारी तथा कंठ तालु ओष्ठ मस्तक इनमें खुजली ज्यादा चलती है।

त्रिदोषज प्रतिश्याय के लक्षण

भूत्वाभूत्वाप्रतिश्यायोयस्याकस्मान्निवर्त्तते ।।२१।।
संपक्वोवाप्यपक्वोवासर्वंतुसभवःस्मृतः ।।२२।।

त्रिदोषज प्रतिश्याय में पूर्वोक्त सम्पूर्ण लक्षणों युक्त पीनस बारम्बार उत्पन्न होकर बिना पके अथवा पक कर स्वयं ही शाँत हो जाता है। यह विदेह आचार्य के मत से दूषित होकर असाध्य हो जाता है।

दुष्ट प्रतिश्याय के लक्षण

प्र क्लद्यतेपुर्नासापुनश्चपरिशुष्यति ।। पुनरानह्य-ते
चापिपुनर्विव्रीयतेतथा ।।२३।। निश्वासोवातिदुर्गंधा-
नरोगंधंनवेत्तिच ।। एवंदुष्टप्रतिश्यांयंजानीयात्कृ-
च्छ्रसाधनम् ।।२४।।

बारम्बार नासिका से स्राव हो और शुष्क हो जाय नासिका के रुकने से श्वास अच्छी तरह न आवे तथा स्वास में दुर्गन्धि आवै, नासिका का सुगन्ध और दुर्गन्धि ज्ञान नष्ट हो जाय, इन लक्षणों से युक्त रोग को दुष्ट प्रतिश्याय कहते हैं यह कष्ट साध्य है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

रक्त जन्य प्रतिश्याय के लक्षण

रक्तजेतुप्रतिश्यायेरक्तस्रावःप्रवर्त्तते ।। ताम्राक्षश्चभवेज्जंतुरुरोघातप्रपीडितः ।।२५।।

रक्त जन्य प्रतिश्याय में नासिका से रक्त का स्राव होता है, तथा नेत्र लाल और उरक्षत के तुल्य वेदना और श्वास में तथा मुख में बुरी गन्ध आती है तथा गन्ध का ज्ञान नष्ट हो जाता है। पैत्तिक प्रतिश्याय के लक्षण भी होते हैं।

असाध्य के लक्षण

दुर्गंधोच्छ्वासवदनोगंधनापिनवेत्तिसः ।।२६।।
सर्वएवप्रतिश्यायानरस्याप्रतिकारिणः ।। दुष्टतांयान्तिकालेनतदाऽसाध्याभवंतिच ।।२७।।

चिकित्सा बिना सब प्रतिश्याय प्राचीन होने पर दोष को प्राप्त हो असाध्य हो जाते हैं। और सफेद चिकने सूक्ष्म कीड़े नासिका में पड़ जाते हैं और क्रमिज शिरों रोग के लक्षण हो जाते हैं।

वृद्धिगत प्रतित्याय के अन्य लक्षण

मूर्छंतिकृमयश्चायश्वेताःस्निग्धास्तथाऽणवः ।। कृमिजोयःशिरोरोगस्तुल्यंतेनांस्यलक्षणम् ।।२८।।

प्रतिश्याय के बढ़ने से वधिरता और मन्द दीखना दुर्गन्धि ज्ञान नाश, घोर नेत्र रोग की उत्पत्ति शोथ मन्दाग्नि, खांसी, इत्यादि उपद्रव होते हैं।

बाधिर्यमांद्यमघत्वंघोरांश्चनयनामयान् ।।
शोथाग्निसादकासादीन्वृद्धाःकुर्वन्तिपीनसाः ।।२९।।
अर्बुदंसप्तधाशोथाश्चत्वारोऽर्शश्चतुर्विधम् ।।
चतुर्विधंरक्तपित्तमुक्तंघ्राणेऽपितद्विदुः ।।३०।।

सप्त अर्बुद चार प्रकार के शोथ, चार प्रकार के अर्श और चार

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

रक्तपित्त सुश्चतोक्त ये १६ रोग नासिका में और होते हैं ।

इति माधव निदानस्थ नासिकारोग निदानम्

अथनेत्ररोगनिदानम्

उत्पत्ति

उष्णाभितप्तस्यजलेप्रवेशाद्दूरेक्षणात्स्वप्नविपर्यपाच्च ।।
स्वेदाद्रजोधूमनिषेवणाच्चजर्देर्विघाताद्वमनातियोगात्
।।१।। द्रवान्नपानातिनिषेणाच्चविण्मूत्रवातक्रमनिग्रहाच्च ।। प्रसक्तसंरोदनशोककोपाच्छिरोभिघातादतिमद्यपानात् ।।२।। तथाऋतूनांचविपर्य येणक्लेशाभिघातादतिमैथुनाच्च ।। बाष्पग्रहात्सूक्ष्मनिरीक्षणाच्चनेत्रेविकाराञ्जनयंतिदोषाः ।।३।।

गर्मी से तपायमान हो, जल में स्नान करनें से दूर की चीज के देखने से, दिवा शयन और निशि जागरण से, नेत्र में स्वेद के आने से अर्थात् नेत्रों में धूल धूम्र वाफ आदि के जाने से, उल्टी के वेग को रोकने वा अत्यन्त वमन करने से, दवान्नपान से, मल मूत्र विष्ठा अपान वायु इनके रोकने से रोने से शोक क्रोध शिरोमिघात से सुरापान ज्यादा करने से, ऋतु विरुद्धाचरण से, अत्यंत शोक दु:खादि में रहने से, विशेष स्त्री प्रसंग से, आशुओं के रोकने से, छोटी वस्तु के देखने से वायु आदि तीनों दोष कुपित हो नेत्र में रोग पैदा कर देते हैं। सुश्रुताचार्य के मत से नेत्र रोगों की संख्या ७६ तरह की है यथा श्लोक:

शिरानुसारिभिर्दोषैर्विरूध्वमाश्रितैः ।।
जायन्तेनेत्रभागेषुरोगाःपरमदारुणाः ।।४।।

कोप को प्राप्त हुए वातादि दोष नेत्रों की नाड़ियों में प्राप्त हो नेत्रों के रोग की उत्पत्ति करते हैं ये वात पित्त कफ रक्त सन्निपात वाह्यज आदि भेदों से ७६ तरह के होते हैं।

सर्वनेत्र स्थित (गत) अभिष्यन्द के लक्षण

वातात्पित्तात्कफाद्रक्तादभिष्यन्दश्चतुर्विधः ॥
प्रायेणजायतेघोरःसर्वनेत्रामयाकरः ॥ ५ ॥

वातज पित्तज श्लेष्मज और रक्त ये चार प्रकार के अभिष्यन्द प्रायः नेत्र रोग के कारक हैं।

बाताभिष्यन्द के लक्षण

निस्तोदनस्तंभनरोमहर्षसंघर्षपारुष्यशिरोभितापाः ॥
विशुष्कभावःशिशिराश्रुताचवाताभिपन्नेनयनेभवन्ति। ६

वात के प्रकोप से नेत्रों में सुई चुभाने की सी ब्यथा तथा नेत्रों का स्तम्भित होना रोमांच धूलि कण के गिराने के तुल्य पीड़ा, रुक्षता, शिर में वेदना नेत्रों से सीतल पानी का गिरना परन्तु नेत्र सूखे ही रहें इत्यादिक लक्षण होते हैं।

पित्तज अभिस्यंद के लक्षण

दाहप्रपाकौशिशिराभिनान्दधूमायनंबाष्पसमुच्छ्रयश्च॥
उष्णाश्रुतापीतकनेत्रताचपित्ताभिपन्नेनयनेभवन्ति ।७।

पैत्तिक अभिस्यंद में दाह तथा नेत्र पाक होता है। सीतल पदार्थं लगाने की इच्छा उत्पन्न होती है। नेत्रों से धूम्रसा निकलता है तथा नेत्रों में धूम्र के जाने की सी वेदना होती है। गर्भ आश्रु पात तथा नेत्रों में कुछ पीलापन होता है।

श्लेष्मजाभिस्यंद के लक्षण

उष्णाभिनन्दागुरुताक्षिशोथःकण्डूपदेहावतिशीतताच ॥
स्रावोबहुःपिच्छिलएवचापिकफाभिपन्नेनयनेभवन्ति॥८॥

श्लेष्मज अभिष्यन्द में नेत्रों से गाढा और ज्यादा स्राव होता है।

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

उष्ण बस्तु की इच्छा होती हैं। अर्थात गर्म वस्तु के लगाने से आनन्द मालूम पड़ता है। नेत्रों में सूजन तथा भारापन होता है। खुजली और कीचड़ सी रहती हैं। तथा नेत्रों में सीतलता होती है।

रक्तजाभिष्यन्द के लक्षण

ताम्राश्रु तालोहितनेत्रताचनाट्र्यःसमंतादतिलोहितश्य
पित्तस्यलिंगानिचयानितारिक्ताभिपन्नेनयनेमवन्ति९

रक्तसे उत्पन्न अभिष्यनन्द में नेत्र ताम्र वर्ण युवत हो जाते हैं तथा रक्त वर्ण युक्त जल का स्राव होता हैं और नेत्रों के आस पास लाल रेखा सा हो जाती है तथा पिताभिष्यन्द के लक्षण मिलते हैं।

अभिष्यनदैदधिभथत्स्पोत्पत्ति मोह

बृद्धैरेतैरभिष्यंदैर्नराणामक्रियावताम् ॥
तावंतस्त्वधिमाथाःस्युर्नयनेतीव्रबेदनाः ॥१०॥

अभिष्यन्दरोग की चिकित्सा न करनें से बृद्धि को प्राप्त होयेबातज पित्त श्लेम्मज और रक्तज इनचार के अभिग्रन्थ रोगों का उत्पत्ति कारण हो जाता है। वातज अभिमन्द से तीब्र निस्तोदादि बेदना युवत वात.ज अभि मन्थ की उत्पत्ति होती हैं इस प्रकार पित्त कफ रक्त इन से पित्त कफ के पित्त कफ रवत के अभिमन्थ पैदा होते हैं।

सामान्य के लक्षण

उत्पाट्यतइवात्यर्थं नेत्रनिर्मथ्यतेतथा ॥
शिरसोऽर्द्धं चतंविद्यादधिमंथंस्वलक्षणैः ॥११॥

ब्याधि के योग में नेत्र और अर्घ मस्तक में मथने की सी तोड़ने की सी वेदना होती हैं और जिस वायु आदि अभिष्यन्द से यह अभिमन्थ होता है उसमें उसी अभिष्यन्द के से लक्षण होते हैं।

दोष भेद से समय की अवधि के लक्षण

हन्याद्दष्टिंश्लैष्मिकःसप्तरात्राद्योऽधीमंथोक्तजःपचरा-
त्रात् ॥ षड्त्राद्वावातिकोवैनिहन्यान्मिथ्याचारात्पै-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

त्तिकःसद्य एव ॥१२॥

कुपथ्य करने पर कफ का अभिमंथ सात दिन में रक्त का अभिमंथ पांच दिन में तथा वातिक छै, दिन में और पैत्तिक उसी समय नेत्रों की दृष्टी का नाश कर देता है ।

नेत्र रोग के सामान्य लक्षण

उदीर्णवेदनंनेत्रंरागोद्रेकसमन्वितम् ॥
घर्षनिस्तोदशूलाश्रुयुक्तमामान्वितंविदुः ॥१३॥

प्रवल वेदना युक्त नेत्र हों, लालामी हो चमक मारे तथा नेत्रों में धूलि के गिरने के तुल्य वेदना हो सुई चुभाने की सी वेदना हो दर्द हो अश्रुपात हो उनको आम युक्त जानना चाहिए ।

निराम नेत्र के

मन्दवेदनताकण्डूःसंरम्भाश्रुप्रशान्तता ॥
प्रसन्नवर्णताचाक्ष्णोःसपक्वंदोषमादिशेत् ॥१४॥

नेत्रों में अल्प वेदना होय खुजली चले तथा मंद सूजन होय, अश्रुपात होना बाद हो जाय नेत्र स्वच्छ हो जाय तब समझाना चाहिए कि दोष पक्व हो गये ।

शोथयुक्त नेत्रपाक के लक्षण

कण्डूपदेहाश्रुयुतःपक्वोदुंबरसन्निभः ॥
संरम्भीपच्यतेयस्तुनेत्रपाकःसशोफजः ॥१५॥
शोथहीनानिलिंगानिनेत्रपाकेत्वशोथजे ॥

पके हुए गूलर से फल सदृश रक्त वर्ण के नेत्र सूजन युक्त हो पक जाय और आंसुओं का स्राव हो उसे शोथ युक्त नेत्र रोग के हैं । और सूजन हीन नेत्रपाक में सूजन के अलावा सब लक्षण होते हैं, यह सन्निपातज है ।

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हतादिमन्थ के लक्षण

उपेक्षणादक्षियदाऽधिमंथोवातात्मकःसादयतिप्रसह्य ॥
रुजाभिरुग्राभिरसाध्यएषहताधिमंथःखलुनेत्ररोगः॥१६।

वातिक अभिमन्थ की उपेक्षा करमें से बृद्धिगत वायु नेत्रों को सुखा देता है तब सुई के चुभाने के सद्दश बहुत प्रकार की वेदना होती है इस असाध्य रोग को हतादिमन्थ कहते है विदेह ने इस रोग को दो प्रकार का कहा है हृष्स्यु त्क्षेपण सकलक्षिशोष इस में नेत्र कमल वत सूखे हो जाते है हृष्स्युत्क्षेरण में कुपित वायु दृष्टि को वाहर निकाल देता हैं और तोदशूलादि पीडा होती हैं ।

वातपर्यय के लक्षण

वारंवारंचपर्यैतिभ्रुवौनेत्रेचमारुतः ॥
रुजश्चविविधास्तीव्राःसज्ञे योवातपर्ययः ॥१७॥

बृद्धिगत वायु क्रमशः कभी नेत्रों में भ्रूभाग में स्थित हो कर विविध प्रकार की बेदना पैदा करता हैं उसे वात विपये कहते हैं ।

शुस्काभिपाक के लक्षण

यत्कूणितंदारुणरूक्षवर्त्मसंदह्यतेचाविलदर्शनंच ॥
सुदारुणंयत्प्रतिबोधनेचशुष्काक्षिपाकोपहतंतदक्षि १८

रक्त और वायु के प्रकोप से नेत्रों के पलक अति रुक्ष हो जाते हैं तथा उनके खोलने और मूदने से दाह युक्त बेदना विशेषहोती है इसरोग को शुष्कामिपाक कहते है

अन्यती वात के लक्षण

यस्यावटूकर्णशिरोहनुस्थोमन्यागतोवात्यनिलोन्यतोवा
कुर्याजंद्रु वैभ्रु विलोचनेचतमन्यतोवातमुदाहरंति ।१९।

ग्रीवाका पिछला भाग कर्ण शिर ठोडी, मन्या नाडी इनमें अथवा अन्य स्थान में कुपित वायु भ्रु कुटी और नेत्रोंमें बेदना करता हैं इस रोग को अन्यतो वात कहते है

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

अम्लान्ध्युषित के लक्षण

श्यावलोहितपर्यन्तं सर्वं चाक्षिप्रपच्यते।।
सदाहशोथंसास्रावमम्लाध्युषितमम्लतः ।।२०।।

खट्टी वस्तु के अधिक भक्षण से नेत्रों में दाह युक्त शोथ होता हैं। नेत्रों में अश्रुपात होता है। तथा नेत्र कुछ किञ्जितनील वर्ण के लाल हो जाते हैं तथा पक जाते हैं एंव पीत वर्ण की पिडिकाएं निकल आती हैं। इसे अम्लाध्तुषित कहते हैं। पित्त विकार से होने की वजह से पित्ताध्युचित भी कहते हैं।

सिरोत्पात के लक्षण

अवेदनावापिसवेदनावायस्याक्षिराज्योहिभवंतिताम्राः
मुहुर्विरज्यंतिचयास्तदादृग्व्याधिःशिरोत्पातइतिप्रदिष्टः ।।२१।।

जिस मनुष्य के नेत्र की नाड़ी वेदना सहित अथवा बेदना हीन ताम्र वर्ण के के तुल्य हो जाय और कभी कभी ज्यादा लाल होना रक्तसे उत्पन्न इस रोग को शिरोत्पत कहते हैं।

शिरोहर्ष के लक्षण

मोहाच्छिरोत्पातउपेक्षितस्तुजायेतरोगस्तुशिराप्रहर्षः।।
ताम्राक्षमस्रं स्रवतिप्रगाढंतथानशक्नोत्यभिवीक्षितुच ।।

शिरोत्पात रोग की अज्ञानतासे चिकित्सान करने के कारण शिरा हर्ष रोघ की उत्पत्ति हो जाती हैं। इस में नेत्रों से स्वच्छ आशुओं का पतन होता है और नेत्रों से दीखता नहीं है।

इति सर्वंगत रोगः कथिता

नेत्रों के काले मण्डलके होने बाले रोगों का वर्णन करते है।

सव्रणशुक के लक्षण

निमग्नरूपंतुभवेद्धिकृष्णेसूच्येवविद्धं प्रतिभातियद्वै ।।
स्रावं स्रवेदुष्णमतीवयच्चतत्सव्रणशुक्रमुदाहरंति ।।२३

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

आंख के काले भाग में जो शुक्र गड्ढा सा हो जाय सुई चुभाने को सी वेदना होय और नेत्रों में से गर्म जल बहै, उसे सव्रण शुक्र कहते हैं ।

सव्रण शुक्र के साध्यासाध्य विचार

दृष्टेःसमीपेनभवेत्तु यन्तुमचावगाढंनचसंस्रवेद्धि ॥
अवेदनंवानचयुग्मशुक्लंतत्सिद्धिमायातिकदाचिदेव ॥ २४

दृष्टि के समीप न होने वाला शुक्र वेदना हीन तथा स्राव रहित पीड़ा न करने वाला और दो का एक जगह न होना साध्यता को प्राप्त होता है इसके विरुद्ध द्वितीय त्वचा गत स्राव तथा वेदना युक्त होने पर पूर्वोक्त शुक्र असाध्य होता है ।

अव्रण शुक्ल के लक्षण

स्यन्दात्मवं कृष्णगतंनचोषंशंखेन्दुकुन्दप्रतिमावभासम् ।
वैहायसाभ्रप्रतनुप्रकाशमथाव्रणंसाध्यतमंवदन्ति ॥२४॥

अभिष्यन्द से पैदा हो कर आंखों के कृष्ण भाग में शंख चन्द्रमा कुन्द पुष्प के सदृश सफेद और नभ के तुल्य पतला व्रण हीन शुक्र सुख साध्य होता है । उसको अव्रण शुक्ल कहते हैं ।

अवस्था विशेष से अव्रण शुक्ल की साध्यता

साध्यासाध्यता

गम्भीरजातंबहलंचशुक्लंचिरोत्थितंवापिवदन्तिकृच्छ्रम् ॥
विच्छिन्नमध्यंपिशितावृतंचाचलंशिरासूक्ष्मदृष्टिकृच्च ॥
द्वित्वग्गतंलोहितमन्ततश्चचिरोत्थितंचापिविवर्जनीयम्
उष्णाश्रुपातःपिडिकाचनेत्रेयस्मिन्भवेन्मुद्गनिभंशुक्लम्
तदप्यसाध्यंप्रवदंतिकेचिदन्यच्चयत्तित्तिरिपक्षतुल्यम् ।२८।

दो तीन त्वचा गति स्थूल तथा गम्भीर शुक्ल को कृच्छ्र साध्य कहते हैं । और शुक्ल के मध्य भाग का मांस गिर जाय, इसी से शुक्ल की जगह में गड्ढा हो जाय और चारों ओर मांस से व्याप्त, तथा स्थिर न रहने

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

वाला शिराओं से आच्छादित होने से सूक्ष्म हो गया हो दृष्टि के रोकने वाला, परदों के भीतर उत्पन्न हुआ लाल वर्ण का चारों ओर से सफेद मध्य में सफेद और बहुत दिन का शुक्ल वैद्यों से त्याज्य है। और जिस शुक्ल युक्त नेत्रों में से उष्ण और आशु गिरकर पिडिका हों मूँग के बराबर शुक्ल हो तीतर के पंख सदृश काले वर्ण का शुक्ल असाध्य होता है।

अक्षिपा कात्यय के लक्षण

श्वेत समाक्रामतिसर्वतोहिदोषेणयस्यासितमण्डलंतु ॥
तमक्षिपाकात्ययमक्षिपाकं सर्वात्मकं वर्जयितव्यमाहुः ॥

त्रिदोष से उत्पन्न जो शुक्र नेत्र के कृष्ण भाग में दोषों के संसर्ग से सर्वत्र सफेद होकर फैल जाता है वह अक्षिपा कातपय नामक रोग त्याज्य होता है। उसे असाध्य जानना।

अजकाजात के लक्षण

अजापुरीषप्रतिमोरुजावान्सलोहितोलोहितपिच्छिला-
श्रुः ॥ विगृह्यकृष्णंप्रचयोऽभ्युपैतितच्चाजकाजाममि-
तिव्यवस्येत् ॥३०॥

जो शुक्र बकरी की शुष्क विष्ठा के सदृश पीडा युक्त रक्त वर्णी का गाढा हो तथा काले भाग में होने वाला काले पाशुओं के स्राव युक्त हो उसे अजकाजात कहते हैं।

इति कृष्णजा रोगः

दृष्टि के रोग

पहिले पटल में स्थित दोष के लक्षण

प्रथमेपटलेयस्यदोषोदृष्टिंव्यवस्थितः ॥
अव्यक्तानिचरूपाणिकदाचिदथपश्यति ॥३१॥
मसूरदलमात्रांतुपंचभूतप्रसादजम् ॥

दृष्टि के प्रथम पटल में जब दोष स्थिति हो जाते हैं तब मनुष्य सब पदार्थों को कभी साफ देखता है और कभी अव्यक्त रूप देखता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

क्षेपक

तेजोजलाश्रितंबाह्ये तेष्वन्यत्पिशिताश्रितम् ॥
मेदस्तृतीयंपटलमाश्रितंत्वस्थिचापरम् ॥३२॥

मंडल चार हैं प्रथम पटल रक्त और जल के आश्रित है द्वितीय पटल मांसाश्रित है और तृतीय पटल मेदा के आश्रित है। चतुर्थ पटल हड्डी के आश्रित है सुश्रुत में नेत्र रोग के बहुत से भेद कहते हैं।

द्वितीय पटलस्थ दोष के लक्षण

दृष्टिर्भृशंविह्वलतिद्वितीयंपटलंगते ॥
मक्षिकामशकान्केशाञ्जालकानिचपश्यति ।३३।
मण्डलानिपताकाश्चमरीचीन्कुण्डलानिच ॥
परिप्लवांश्चविविधान्वर्षमभ्रंतमांसिच ॥३४॥
दूरस्थानिचरूपाणिमन्यतेचसमीपतः ॥
समीपस्थानिदूरेचदृष्टेर्गोचरविभ्रमात् ॥३५॥
यत्नवानपिचात्यर्थंसूचीपाशंनपश्यति ॥

द्वितीय पटल में दोष के पहुँचनेसे दृष्टि विहृल हो जाती है। अर्थात् पदार्थ नहीं दीखते हैं। और नेत्रों के सामने मक्खी, मशक, वाल जाली मडल पताका किरन कुण्डल आदि विविध प्रकार के जल के यूथ वर्षा मेघ, तम ये नहीं दीखते हैं ये दृष्टि विहृल होने से होता है। और विपय भ्रान्ति से दूर की चीज निकट दीखती है और निकट की दूर दीखती है सुई का छिद्र विशेष यत्न करने पर भी नहीं दीखता है।

तृतीय पटल स्थित दोष के लक्षण

ऊर्ध्वंपश्यतिनाधस्तात्तृतीयंपटलंगते ॥३६॥
महांत्यपिचरूपाणिछादितानीवचाम्बरैः ॥
कर्णनासाक्षिहीनानिविकृतानिचपश्यति ॥३७॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

यथादोषंचरज्येतदृष्टिर्दोषेबलीयसि ॥
अधःस्थेतुसमीपस्थंदूरस्थंचोपरिस्थते ॥३८॥
पार्श्वस्थितेपुनर्दोषेपार्श्वस्थंनैवपश्यति ॥
समन्ततःस्थितेदोषेसंकुलानीवपश्यति ॥३९॥
दृष्टिमध्यस्थितेदोषोमहद्ध्रस्वंचपश्यति ॥
द्विधास्थितेद्विधापश्येद्बहुधाचाऽनवस्थितो ॥४०॥
दोषोदृष्टिस्थितोतिर्यगेकंद्वेमन्यतोद्विधा ॥

तृतीय पटल में दोष पहुँचने से ऊपर की वस्तु नीचे दीखती है। बड़े पदार्थ वस्त्र के ढके हुए के समान दिखाई पड़ते हैं। कर्ण नासिका नेत्र इनसे हीन पुरुष दीखता है। टेढ़े वक्र दीखते हैं। और जिस दोष की अधिकता होती है उसी दोष के वर्ण तुल्य वस्तुएं दिखाई पड़ती हैं और दृष्टि से नीचे भाग में दोष स्थिति होते हैं तब रोग समीप की वस्तुओं को नहीं देख सकता हैं। और ऊपर के भाग में दोष स्थिति हो जाते हैं तब ऊपर की वस्तु दिखाई पड़ती है। और दोष के पार्श्व भाग में स्थित हो जाने से पसवाड़े की वस्तु नहीं दीखती है। और शेष दृष्टि में सब जगह स्थित हो जाय तब सम्पूर्ण पदार्थों को मिले हुए देखता है। दृष्टि के मध्य भाग के स्थित दोष में बड़ी चीज छोटी दीखती है। दो जगह पर दोष स्थित होने से एक चीज दो चीज दीखती है। और एक जगह पर दोष के स्थित न होने से एक वस्तु के दो टुकड़े दीखते हैं। दोष के तिरछे होने से एक वस्तु के दो रूप दिखाई देते हैं।

चतुर्थपटलस्थ दोष के लक्षण

तिमिराख्यःसवैरोगश्चतुर्थपटलंगतः ॥४१॥ रुणद्धिसर्वतोदृष्टिंलिंगनाशमतःपरम् ॥ अस्मिन्नपितमोभूतेनातिरूढेमहागदे ॥ ४२ ॥ चन्द्रादित्यौसनक्षत्रावंतरिक्षेचविद्युतः ॥ निर्मलानिचतेजांसिभ्राजिष्णूनि-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

चपश्यति ॥४३॥

सएवलिंगनाशस्तुनीलिकाकाचसंज्ञितः ॥

चतुर्थ पटल में नेत्र रोग के प्राप्त होने से जो रोग होता है उसे तिमिर कहते हैं। यह तिमिर रोग दृष्टि के सम्पूर्ण भाग को रोक देता है। यह अन्धकारमय रोग बृद्धि गत हो जाता है तब पुरुष को नभ में चन्द्र सूर्य नक्षत्रादिकों का स्वच्छ तेज भी यथार्थ नहीं दीखता है। तेज के पुंज से दीखते हैं इस व्याधि को लोक में नजला कहते हैं और इसे लिंगी नाश भी कहते हैं। तृतीय पटल गत पांच रोग की उपेक्षा करने से जब वह रोग चतुर्थ पटल में प्राप्त हो जाता है तब उसे लिंग नाश अथवा नीलिका कहते हैं। यह रोग असाध्य होता है।

दोष विशेष से रूप का दर्शन

तत्रवातेनिरूपाणिभ्रमन्तीवहिपश्यति ॥
आविलान्यरुणाभानिव्याविद्धानीवमानवः ॥४४॥
पित्तेनादित्यखद्योतशक्रचापतडिद्गुणान् ॥
नृत्यतश्चैवशिखिनःसर्वंनीलंचपश्यति ॥४५॥
कफेनपश्येद्रूपाणिस्निग्धानिचसितानिच ॥
सलिलप्लावितानीवपरिजाड्यानिमानवः ॥४६॥
पश्येद्रक्तेनरक्तानितमांसिविविधानिच ॥
ससितान्यथकृष्णानिपीतान्यपिचमानवः ॥४७॥
सन्निपातेनचित्राणिविप्लुतानिचपश्यति ॥
बहुधाचद्विधावपिसर्वाण्येवसमंततः ॥४८॥
हीनांगान्यधिकांगानिज्योतींष्यपिचपश्यति ॥

वात विकार से मनुष्य को मैला किञ्चित् रक्त वर्ण, तिरछी और भ्रमण करती हुई वस्तु दीखती है। पित्त विकार से सूर्य पट बीजना

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

इन्द्र धनुष विद्युत इनको और नृत्य करने वाले मयूर तथा सम्पूर्णं वस्तु नील वर्णं की दीखती है । कफके विकार से स्निग्ध और सफेद तथा जलमें डुबी हुई निकालने के तुल्य भारी रूप दीखता है । रक्तज तिमिर रोग में मनुष्य विविध प्रकार अन्धकार देखता हैं और लाल वर्ण के सब पदार्थों को देखता हैं । श्वेत पदार्थं भी काले व पीत वर्णी के दिखाई पड़ते हैं । सन्निपात के तिमिर में नाना प्रकार के विरुद्ध एक रूप के बहुत से रूप वा दो रूप दीखते हैं हीनाङ्ग अथवा अधिकाङ्ग वह रूप रोगीं मनुष्य देखता है चमकदार वस्तु देखता है ।

परिम्लायि संज्ञक पित्तसे द्वितीय तिमिर रोग होता है

पित्तंकुर्य्यात्परिम्लायिमूर्छितंरक्ततेजसा ॥४९॥
पीतादिशस्तथोद्द्योतान्नवीनपिसपश्यति ॥
विकीर्यमाणान्खद्योतैर्वृक्षांस्तेजोभिरेवच ॥५०॥

रुधिर के तेज से मिले हुपे पित्त से परिम्लायि रोग होता है । उसके होने से रोगी मनुष्य दिशा-नभ-ओर सूर्य इन सबों को पीत वर्ण के देखता है । और सब जगह सूर्योदय सा प्रतीत होता है । तथा वृक्ष भी चमकदार दीखते है इस रोग की उत्पत्ति कतिपय आचार्य रक्तपित्त से बताते हैं ।

वातजादि लिङ्गनाश के रोग

वक्ष्यामिषड्विधंरागैर्लिंगनाशमतःपरम् ॥
रागोऽरुणोमारुतजःप्रदिष्टोम्लायीचनीलश्चतथैवपित्तात्
कफात्सितःशोणितजःसरक्तःसमस्तदोषप्रभवोविचित्रः ॥

इसके बात लिङ्गनाश के छः प्रकार के रोगों को कहते हैं बात से उत्पन्न लिङ्ग नाश में नेत्र लाल रंग के होते हैं तथा पित्तसे म्लायी पीले और नीले तथा केवल नील वर्ण के ही नेत्र होते हैं और कफ से सफेद तथा लाल और सम्पूर्ण दोषों से उत्पन्न लिङ्ग नाश नेत्र अनेक वर्णं के होते है ।

वातज रोग के विशेष लक्षण

अरुणंमण्डलंदृष्ट्यांस्थूलकाचारुणप्रभम् ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

परिम्लायिनिरोगेस्यान्म्लायिनीलंचमण्डलम् ॥५२॥
दोषक्षयात्कदाचित्स्यात्स्वयंतत्रप्रदर्शनम् ॥

दृष्टि के ऊपर स्थूल आकार के कांच के सदृश लाल मंडल वातिक लिङ्ग नाश रोग में होता हैं । और परिम्लायी रोग में लाल पीला नीला वर्णसमान मंडल होता हैं । उसमें दोष के न्यून होने से, कभी कभी दीखने लगता है । दोषका अर्थ कोई कर्म करते है ।

दृष्टि मण्डल स्थित रोग के लक्षण

अरुणंमण्डलंवाताच्चंचलंपरुषंतथा ॥५३॥
पित्तान्मण्डलमानीलंकांस्याभंपीतमेवच ॥
श्लेष्मणाबहलंस्निग्धंशंखकुन्देन्दुपाण्डुरम् ॥५४॥
चलत्पद्मपलाशस्थःशुक्लोबिन्दुरिवांभसः ॥
मृज्यमानेचनयनेमण्डलंतद्विसर्पति ॥५५॥
प्रवालपद्मपत्राभंमण्डलंशोणितात्मकम् ॥
दृष्टिरागोभवेच्चित्रोलिंगनाशेत्रिदोषजे ॥५६॥
यथास्वंदोषलिंगानिसर्वेष्वेवभवंतिहि ॥

वायु से दृष्टि मंडल रक्त वर्ण का चंचल और खरदरा होता है। पित्त विकार से दृष्टि मंडल कुछ नील वर्ण का तथा कांच तुल्य पीला होता है । कफ से उत्पन्न दृष्टि मंडल गुरु स्निग्ध, शख, कुंद पुष्प के तुल्य, और चन्द्रमा के तुल्य श्वेत वर्ण का होता है और उसका श्लैष्मिक दृष्टि मंडल के नेत्र में हलने वाला कमल पत्रके ऊपर जल की विन्दु के तुल्य वक्र तिरछी सफेद बिन्दु फैली हुई दिखाई देती हैं और रक्त से उत्पन्न दृष्टि मंडल में नेत्र मूगा के तुल्य लाल अथवा लाल कमल वत होते हैं । और त्रिदोषज लिङ्ग नाश रोग में दृष्टि मंडल अनेक प्रकार का होता है तथा सम्पूर्ण दोषो से लिङ्ग नाश मंडल में वातादि दोषो के पृथक पृथक लक्षण होते हैं ।

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सम्पूर्ण दृष्टि रोगों की गणना

षड्लिगनाशा षडिमेचरोगाहृष्ट्याश्रयाः षट्घषडेवचस्युः ॥ ५७ ॥

पूर्वोक्त कथित लिङ्ग नाश रोग ६ प्रकार के और आगे विदग्ध दृष्टि यादि कहे गये ६ मिलकर १२ रोग दृष्टि के हैं ।

पित्त विदग्ध दृष्टि के लक्षण

पित्तेनदुष्टेनवृद्धिंपीताभवद्यस्यनरस्यदृष्टिः ॥
पीतानिरूपाणिचतेनपश्येत्सवैनरःपित्तविदग्धदृष्टिः॥५८

पित्त के प्रकोप से जिस पुरुष की दृष्टि पीत वर्ण की हो जाय और सम्पूर्ण पदार्थ पीत वर्ण दीखे उस दृष्टि रोग को पित्त विदग्ध कहते है ।

दिवान्ध के लक्षण

प्राप्तेतृतीयंपटलंचदोषेदिवानपश्येन्निशिवीक्षतेसः ॥
रात्रौसशीतानुगृहीतदृष्टिःपित्ताल्पभावादपितानिपश्येत्

तृतीय पटल गत दोष पित्त के पहुचजाने पर दिन में नही दीखता है रात्रि में सीतलता के कारण पित्त के कम होने से दीखता हैं ।

कफ विदग्ध दृष्टि के और निशान्ध के लक्षण

त्रिषुस्थितोयःपटलेषुदोषोनक्तांध्यमापादयतिप्रसह्य६०
दिवाससूर्यानुगृहीतदृष्टिःपश्येत्तुरूपाणिकफाल्पभावात्
तथानरःश्लेष्मविदग्धदृष्टिस्तान्येवशुक्लानिहिमंथनेतु॥

कोप को प्राप्त हुआ दोष जब दृष्टि के प्रथम तथा द्वितीय पलट में प्राप्त होता हैं तब मनुष्य सम्पूर्ण पदार्थों को सफेद वर्ण के देखता हैं और जब कफ तीसरे पटल में पहुंच जाता है तब उस मनुष्य को रात्र्यन्ध कर देता है । दिनमें सूर्य के तेज से कफ के कम होने के कारण दीखता हैं । यह रोग अल्प दोष से होता हैं और दोष से बढ़जाने से दिनमेंभी नही दीखता है ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

धूम दर्शी के लक्षण

शोकज्वरायासशिरोभितापैरभ्याहतायस्यनरस्यदृष्टिः ॥
धूम्रांस्तथापश्यतिसर्वभावान्सधूमदर्शीतिनरःप्रदिष्टः ॥

चिन्ता, बुखार, परिश्रम—और शिरताप इन हेतुओं से पित्त दूषित हो जिस मनुष्य की दृष्टि में विकार पैदा करदेता हैं। उस मनुष्य को सम्पूर्ण वस्तु धूम्र के तुल्य दीखती है इस रोग को धूम्र दर्शी व शोक विदग्ध दृष्टि कहते हैं इसमें दिन में धूआं के तुल्य दीखती और रात्री में पित्त के तेज के कम होने से स्वच्छ दिखाई देता है।

ह्रस्व दृष्टि के लक्षण

योह्रस्वजाड्योदिवसेषुकृच्छ्राद्ध्रस्वानिरूपाणिचतेनपश्येत् ॥ ६२ ॥

जो मनुष्य ह्रस्व जात्य होता है उसको दिनमें दीर्घ पदार्थ लघु दीखते है। इसका हेतु यह ही उस वक्त दृष्टि के मध्यस्थ दोष होते है यह रोग पित्त जनित हैं।

नकुलान्ध्य के लक्षण

विद्योततेयस्यनरस्यदृष्टिर्दोषाभिपन्नानकुलस्ययद्वत् ॥
चित्राणि रूपाणिदिवासपश्येत्सवैविकरोनकुलांध्यसंज्ञः

दृष्टि दोषसे व्याप्त होने के कारण नौले की दृष्टि के सदृश चयके और दिनमें रूपों को विचित्र देखें इस रोग को नकुलान्ध्य कहते हैं।

गम्भीरिका के लक्षण

दृष्टिर्विरूपाश्वसनोपसृष्टासंकोचमभ्यंतरतश्चयाति ॥
रुजावगाढंचतमक्षिरोगंगम्भीरकेतिप्रवदंतितज्ज्ञाः ६४

वायुसे उपहत दृष्टि विकृत हो जाय संकोच को प्राप्त हो भीतर को चली जाय और गम्भीर वेदना से युक्त हो, इस रोग के विद्वान वैद्य गम्भीरिका कहते हैं।

अथस निमित्तालिङ्ग नाश के लक्षण

बाह्यौपुनर्द्वाविहसंप्रदिष्टौनिमित्ततश्चाप्यनिमित्ततश्च ॥

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

निमित्ततस्तत्रशिरोभितापोज्ञेयस्त्वभिष्यंदनिदर्शनःसः

सुश्रुत ने जो दृष्टि के जो बारह रोग कथन किए हैं । उनसे अधिक अन्य दो रोग चरक आदि ऋषियों ने कहे हैं वह एक तो सनिमित्त लिंग नाश कनना अनिमित्त लिंग नाश करना अनिमित्त लिंग नाश विषैले पुरुषों की गन्ध वाली पवन के स्पर्श रूप निमित्त से शिर में अभिताप होकर जो लिंग नाश होता है । वह सन्निमित्त लिंग नाश कहा जाता है । अभिष्यन्द के लक्षणों से इस रोग को जानना चाहिए ।

गदाधर वैद्य का कथन है कि 'रक्ताभिष्यण्द लक्षणों से इस रोग को जानना चाहिए । और कार्त्तिक वैद्य का कथन है त्रिदोष जनित अभिष्यन्द के लक्षणों से इस रोग का ज्ञान करना चाहिए ।

अथानिमित्त लिंग नाश निदान लक्षण कहते हैं ।

सुरर्षिगंधर्वमहोरगाणांसन्दर्शनेनापिचभास्करस्य ॥
हन्येतदृष्टिर्मनुजस्ययस्यसलिंगनाशस्त्वनिमित्तसंज्ञः।६६।
तत्राक्षिविस्पष्टमिवावभातिवैदूर्यवर्णाविमलाचदृष्टिः ॥

देव, ऋषि गन्वर्व बृहत्सर्व, अथवा अन्यान्थ प्रकाशमय पदार्थों को देखने से दृष्टि उपहत हो जाती है यह अनिमित्त लिंग नाश कहा जाता है देवादि लोक विशेष करके सर्व मनुष्यों को नहीं दीखते इस कारण उनके दर्शन रूप निमित्त से पैदा हुए लिंग नाश को अनिमित्त माना है अनिमित्त लिंग नाश में नेत्र तेजवाले दीखते हैं दृष्टि कृष्ण और निर्मल होती है । और उपघात के कारण दृष्टि फट जाती है कुच जाती है अथवा कम हो जाती है ।

अथ प्रस्तार्यर्म के लक्षण अर्म रोग निदान

प्रस्तार्यर्मतनुस्तीर्णं श्यावं रक्तनिभंसिते ॥ सश्वेतंमृदुशुक्लार्मशुक्लेतद्वर्धतेचिरात् ॥६७॥ पद्माभंमृदुरक्तार्मयन्मांसंचीयतेसिते ॥ पृथुमृद्वाधिमांसार्मबहलंचयकृन्निभम् ॥६८॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

स्थिरं प्रस्तारिमांसाढ्यं शुष्कंस्नायर्मपंचमम् ॥

नेत्रों के श्वेत भाग में पतला विस्तीर्ण कलौंसलिए अथवा लाली लिये जो सफेद चिन्ह हो तो उसे प्रस्तार्यर्भ कहते हैं और सफेद भाग में बहुत स्वेत कोमल जो चिन्ह हो तो उसे शुक्लार्म कहते हैं यह वहुत दिनों में बढ़ता है। शुक्ल भाग में लाल तथा कोमल जो मांस बृद्धिगत हो उसको रक्तार्म कहते हैं।

सफेद भाग में विस्तीर्ण, कोमल, गाढा और कुछ कलौंसलिये जो मांस बढ़े उसको अधिमांसार्म कहते हैं।

सफेद भाग में कठिन फैलने वाला और स्राव रहित जो मांस ऊँचा बढ़े उसे स्नाय्वर्म कहते हैं।

अथ शुक्ति के लक्षण

श्वावाःस्युःपिशितनिभास्तुबिंदवोये
शुक्तयाभाःसितिनियताःसशुक्तिसंज्ञाः ॥

नेत्र के शुक्ल भाग में कृष्ण वर्ण का जो माँस के तुल्य विन्दु होता है अथवा सीप के सहश होता है उसको शुक्ति कहते हैं।

अथार्जुन के लक्षण

एकोयःशशरुधिरोपमश्चबिन्दुःशुक्लस्थोभवतितदर्जुनंवदंति ॥६९॥

नेत्र के शुक्ल भाग में खरगोस के रक्त तुल्य जो विन्दु होता है। उसे अर्जुल कहते हैं।

अथ पिष्टक के लक्षण

श्लेष्ममारुतकोपेनशुक्लेमांसंसमुन्नतम् ॥
पिष्टवत्पिष्टकंविद्धिमलाक्तादर्शसन्निभम् ॥७०॥

नेत्र के सफेद भाग में कफ और वायु के प्रकोप से चून के तुल्य सफेद और मैल से मरे आदर्श के तुल्य जो मांस बढ़ता उसे पिष्टक कहते हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

शिरा जाल के लक्षण

जालाभःकठिनशिरोमहान्सरक्तःसंतानःस्मृतइहजाल-
संज्ञितस्तु ।।

नेत्र के सफेद भाग में जाले के समान कठोर शिराओं से व्याप्त और लाल शिराओं का जो समूह होता है उसे शिरा जाल कहते हैं।

शिराज पिडिका के लक्षण

शुक्लस्थाःसितपिडिकाःशिराबृताया-
स्यातबूयादसितसमीपजाःशिराजाः ।।७१।।

नेत्र के सफेद भाग में काले भाग के पास रहने वाली और शिराओं से व्याप्त जो सफेद फुन्सियां पैदा होती हैं उसे शिराजा पिडिका कहते हैं।

अथ वलास ग्रथित लक्षणम

कांस्याभोऽमृदुरथावारिबिंदुकल्पोविज्ञेयोनयनसितेब-
लाभसंज्ञः ।।७२।।

नेत्र के शुक्ल भाग में कासे के तुल्य सफेद कठोर और जल विन्दु के तुल्य कुछेक ऊँची जो बूंद होती हैं। उसको वलास ग्रथित कहते हैं।

इति शुक्लज रोग

नेत्र की संधि के रोग

पूयालस के लक्षण और उपनाठ के लक्षण

पक्वःशोथःसंधिजोयःसतोदःस्रावेत्पूयपूतिपूयालसाख्यः
ग्रंथिर्नाल्पोदृष्टिसंधौवपाकीकण्डूप्रायोनीरुजस्तूपनाहः।।

नेत्र की संधि में शोथ पैदा हो पककर फूट जाय और उसमें से दुर्गंधि युक्त राध बहै तथा सुई चुभाने की सी वेदना होय उसको पूयालस तथा नेत्र की संधि में बड़ी, कम पकने वाली बहुत खुजली युक्त कठोर लाल और अन्य वेदना वाली जो गांठ उत्पन्न हो उसे उपनाह कहते हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

अथ स्राव सम्प्राप्ति

गत्वासंधीनश्रु मार्गेणदोषाःकुर्यु :स्रावाल्लक्षणैस्वैरुपेतान्।
तंहिस्रावंनेत्रनाडीतिचैकेतस्यालिंगंकीर्तयिष्येचतुर्धा ॥

वातादि दोष सम्पूर्ण संधियों में जाकर आंसुओं के मार्ग से अपने अपने लक्षणों वाले स्रावों को पैदा करते हैं कतिपय आचार्य इस स्राव को नेत्रनाड़ी कहते हैं वायु सम्वन्धी स्राव नहीं होता क्योंकि केवल वायु से स्राव होना सम्भव नहीं है ।

चारों स्रावों के लक्षण कहते हैं ।

पाकासंधौसंस्रवेद्यस्तुपूयंपूयास्रावोऽसौगदःसर्वजस्तु ॥
श्वेतंसान्द्रं पिच्छिलंसंस्रवेद्धिश्लेष्मास्रावोऽसौविकारोम
तस्तु ॥ ७५ ॥ रक्तास्रावःशोणितोत्थोविकारःस्रावेदु-
ष्णंतरक्त प्रभूतम् ॥ हरिद्राभंपीतमुष्णंजलंवापित्ता-
स्रावसंस्रवत्संधिमध्यात् ॥७६॥

नेत्र की सन्धि में शोथ होकर पक जाय और उसमें से राध निकले इसे सन्निपातात्यक रोग को पूय स्राव कहते हैं और सफेद गाढ़ी तथा स्निग्ध राध बहे तो उसे श्लेष्मा स्राव कहते हैं । और जिसमें उष्ण रक्त विशेष वहै उसे रक्तास्राव तथा जिसकी सन्धि से हल्दी के तुल्य पीला जल वहै उसे पित्तास्राव कहते हैं ।

अथ पर्वण्य लज्यो लक्षणम्

ताम्रातन्वीदाहपाकोपपन्नाज्ञेयावैद्यैः पर्वणीवृत्तशोथा
जातासन्धौशुक्लकृष्णेऽलजीस्यात्तस्मिन्नेवख्यापिता-
पूर्वलिंगैः ॥७७॥

नेत्र के काले भाग की तथा सफेद भाग की सन्धियों में गोल सूजन वाली, लाल, सूक्ष्म और दाह युक्त तथा पकने वाली जो फुन्सी पैदा होती है उसे पर्वणी कहते हैं यह रक्त के प्रकोप से होती हैं । पहले

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

प्रमेहाधिकार में लिखे अनुसार लाल सफेद फुन्सियों से व्याप्त दारुण फुन्सी सन्धि में होय हो उसे अलजी कहते हैं अलजी और पर्वणी में इतना ही भेद है कि अलजी बड़ी फुन्सी तथा पर्वणी छोटी फुन्सी होती है विदेह मत से ।

कृमि ग्रन्थि के लक्षण

कृमिग्रंथिर्वर्त्मनःपद्मणश्च कण्डूं कुर्यु क्रमयःसंधिजाताः
नानारूपावर्त्मशुक्लांतसंधौचरंत्यंतर्नयनंदूषयंतः ॥७८॥

पलक के तथा पलक के रोगों की सन्धियों में पैदा हुए अनेक अनेक आक्रिति वाले कृमि खुजली को उत्पन्न करे और नेत्रों को बिगाड़ बिगाड़ कर पलक तथा सफेद भाग की सँधियों में जाते हैं उसको कृमि ग्रन्थि कहते हैं ।

॥ अथ वर्त्म रोग ॥

उत्गसपिडिका के लक्षण

अभ्यन्तरमुखीताम्राबाह्यतोवर्त्मतश्चया ॥
सोत्संगोत्संगपिडिकासर्वजास्थूलकण्डुरा ॥७९॥

नेत्र के कोये के भीतर मुखवाली बाहर से लाल भीतर से राध युक्त स्वयँ अनेक फुन्सियों से युक्त स्थूल और खुजली युक्त जो पिडका पलका पलक में रक्त के प्रकोप से होती हैं । उसको उत्सँग पिडिका कहते हैं । यह पिडिका नीचे के कोये में होती है । ऐसा जानना कारण यह है कि मनुष्य के नीचे के कोये में होती है । ऐसा जानना कारण यह है कि मनुष्य के नीचे के कोए में उत्सिनी होती है ऐसा विदेह का धेय है ।

अथ कुम्भीका लक्षण

वर्त्मांतेपिडिकाध्माताभिद्यंतेचस्रवंतिच ॥
कुंभीकाबीजसदृशा.कुंभीकासन्निपातजाः ॥८०॥

पलक के अन्त में ऊँची और कुम्मी की नामक लता के बीज के समान जो बीज के समान जो फुन्सी सन्निपात से होती है और फूटती है तथा फूट कर स्रवती है । वह फुन्सी कुम्भी का कही जाती है, कुम्भी का नाम लता कठिन देश में होती है और उसके फल अनार के समान होते हैं ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

अथ पोथकी लक्षण

स्राविण्यःकण्डुरागुर्व्योरक्तसर्षपसन्निभाः ॥
रुजावत्यश्चपिडिकाःपोथक्यइतिकीर्त्तिताः ॥८१॥

बहने वाली, खुजली युक्त, भारी लाल सरसों के समान और पीडायुक्त जो पिडिका नेत्र के कोये में होती है । उसको पोथकी कहते हैं ।

अथ वर्त्म शर्करा के लक्षण

पिडिकायाखरास्थूलासूक्ष्माभिरभिसंवृता ॥
वर्त्मस्थाशर्करानामसरोगोवर्त्मदूषकः ॥८२॥

जिसके कोये में होने वाली फुन्सी कठोर और बड़ी होकर सर्वत्र छोटी छोटी फुन्सियों से व्याप्त हो उसे वर्त्म शर्करा कहते हैं इससे कोए बिगड़ जाते हैं ।

अथार्शो बर्त्म के लक्षण

उर्वारुबीजप्रतिमाःपिडिकामंदवेदनाः ॥
श्लक्ष्णाःखराश्चवर्त्मस्थास्तदर्शोवर्त्मकीर्त्यते॥८३॥

पलक में ककड़ी के बीज तुल्य मन्द वेदना युक्त चिकनी और तीक्ष्ण पृथक २ होने वाली कठिन पिडिका को अर्श वर्त्म कहते हैं । यह सन्निपातज है ।

अथ शुष्कार्श के लक्षण

दीर्घांकुरःखरःस्तब्धोदारुणोऽभ्यन्तरोद्भवः
व्याधिरेषोऽतिविख्यातःशुष्कार्शोनामनामतः ।८४

पलक के भीतर खरदरे, जकड़े से और दारुण जो अंकुर होता है उसको शुष्कार्श कहते हैं विदेह के मत से यह भी सन्निपातज है ।

अथाजना लक्षण

दाहतोदवतीताम्रापिडिकाबर्त्मसंभवा ॥
मृद्वीमंदरुजासूक्ष्माज्ञेयासाऽजननामिका ॥८५॥

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

पलक में दाह वाली भौंकने सरीखी पीडा युक्त लाल–कोमल और मन्द वेदना वाली जो सूक्ष्म पिडिकाऐं होती हैं उनको अंजना कहते हैं यह त्रिदोषज है ।

अथ वहल वर्त्म के लक्षण

वर्त्मोऽपचीयतेयस्यापिडिकाभिःसमंततः ॥
सवर्णाभिःस्थिराभिश्चविद्याब्दहुलवर्त्म तत् ॥८६॥

पलक के समान रंग वाली और कठोर जो पिंडिका वर्त्म के सर्वत्र फैल जाती है उसको वहल वर्त्म कहते हैं ।

अथ वर्त्म बंधके लक्षण

कण्डूमताऽल्पतोदेनवर्त्मशोथेनयोनरः ॥
नसंसंच्छादयेदक्षियत्रासौवर्त्म बंधकः ॥८७॥

जल से परिपूर्ण और खुजली सहित पलक सूज कर के नेत्र बराबर हो जाते हैं जिससे मनुष्य को कुछ दीखता नहीं है त्रिदोष जनित इस व्याधि को वर्त्म वन्ध कहते हैं ।

क्लिष्टवर्त्म के लक्षण

मृद्वल्पवेदनंताम्रं यद्वर्त्मसममेवच ॥
अकस्माच्चभवेद्रक्तंक्लिष्टवर्त्मेतितद्विदुः ॥८८॥

नेत्र के दोनों पलक नरम रहे उनमें अल्प वेदना हो सर्वत्र लाल रहे या अकस्मात लाल हो जाय उसको क्लिष्ट वर्त्म कहते हैं । यह रोग प्रथम कफ के सम्बन्ध से होकर रक्त से होता है ।

अथवर्त्म कर्दम के लक्षण

क्लिष्टं पुनःपित्तयुतंशोणितविदहेद्यदा ॥
तदक्लिन्नत्वमापन्नमुच्यतेवर्त्मकर्दमः ॥८९॥

पूर्वोक्त क्लिष्ट वर्त्म के लक्षणों युक्त तथा फिर पित्त से संयुक्त रक्त दाह करता है । इस कारण पलक मिच जाते हैं इस रोग को वर्त्म कर्दम कहते हैं ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अथ श्याव वर्त्म के लक्षण

वर्त्मयद्बाह्यतोऽन्तश्चश्यावंशूनंसवेदनम् ॥
तदाहुःश्याववर्त्मेतिवर्त्मरोगविशारदाः ॥६०॥

नेत्र के पलक जो बाहर भीतर काले हो सूजन तथा वेदना युक्त हो खुजली चले तथा गीले रहे इसे श्याव वर्त्म कहते हैं ।

अथ प्रक्लिन्न वर्त्म के लक्षण

अरुजंबाह्यतःशूनंवर्त्मंयस्यनरस्यहि ॥
प्रक्लिन्नवर्त्मं तद्विद्यात्क्लिन्नमत्यर्थंमंततः ।६१।

नेत्र के पलक किञ्चत वेदना युक्त सूजे हुए और अधिक तर कीचड़ सहित गीले होय उसको प्रक्लिन्न वर्त्म कहते हैं ।

अथाक्लिन्न वर्त्म के लक्षण

यस्यधौतान्यधौतानिसंबध्यतेपुनःपुन ॥
वर्त्मान्यपरिपक्वानिविद्यादक्लिन्नवर्त्मतत् ॥६२॥

धोने से वा नहीं धोने से जो नेत्र के पलक बारम्बार चिपक कर मिच जांय और पकें नहीं अर्थात् कच्चे रहें उसे आक्लिन्न वर्त्म कहते हैं ।

अथ वात हत वर्त्म के लक्षण

विमुक्तसंधिनिश्चेष्टं वर्त्मयस्यनमील्यते ॥
एतद्वातहतंवर्त्मजानीयादक्षिचिन्तकः ॥६३॥

जिसके पलक की संधि पृथक हो जाय पलक न मिचे और न खुले पीड़ा सहित वा रहित इस व्याधि को वात हत वर्त्म कहते हैं ।

अथ वर्त्मार्बुद के लक्षण

वर्त्मान्तरस्थंविषमंग्रन्थिभूतमवेदनम् ॥
आचक्षतेऽर्बुदमितिसरक्तमविलंबितम् ॥६४॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

पलकों के भीतर विषम अर्थात गोल नहीं । अल्प वेदना वाली । कुछ लाल और शीघ्र वढ़ने वाली कठोर ग्रन्थिको वर्त्मार्बुद कहते है ।

अथ निमेष के लक्षण

निमेषिणीःशिरावायुःप्रविष्टोवर्त्मसंश्रयः ॥
प्रचालयतिवर्त्मानिनिमेषंनामतंविदुः ॥९५॥

पलकों में रहने वाली वायु पलकों का खोलने तथा वन्द करने वाली नसों में स्थित हो पलकों को चलायमान करे उसे निमेष कहते हैं यह असाध्य है।

अथ शोणि ताशों के लक्षणम्

वर्त्मस्थोयोविवर्द्धेतलोहितोमृदुरंकुरः ॥
तद्रक्तजंशोणितार्शश्छिन्नंच्छिन्नंप्रवर्द्धते॥९६॥

पलकों में रहने वाले कोमल अंकुर बढ़े उसको शोणि तार्श कहते हैं यह रक्त से होता है।

इसको जितना काटा जाय उतना ही वृद्धि को प्राप्त होता है।

अथ लगण के लक्षण

अपाकीकठिनःस्थूलोग्रंथिर्वर्त्मभवोऽरुजः ॥
सकण्डूःपिच्छलःकोलसंस्थानोलगणस्तुसः ॥९७॥

नहीं पकने वाला कठोर–स्थूल, अल्प वेदना कारक, खुजली युक्त स्निग्ध वेर के तुल्य जो ग्रन्थि पलक में होती है उसको लगण कहते हैं।

अथ विसवर्त्म के लक्षण

त्रयोदोषावहिःशोथकुर्युश्छिद्राणिवर्त्मनोः ॥
प्रस्रवत्यं तरुदकंबिसवद्बिसवर्त्मतत् ॥९८॥

तीनों दोष वाहर पलकों में सूजन पैदा करें भीतर छिद्रों को उत्पन्न करें और उनमें से कमल की नाल के तुल्य जल स्राव होय तो उसे विस वर्त्म कहै हैं ।

कुंचन के लक्षण

वाताद्यावर्त्मसंकोचंजनयंतियदामलाः ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

तदाद्रष्टुं नशकोतिकुंचनंनामतद्विदुः ॥९९॥

वातादि दोषों के कारण पलक संकोच की प्राप्त हो जाय और देखने की शक्ति नष्ट हो जाय उसको कुंचन कहते हैं।

अथपक्ष्म कोप के लक्षण

प्रचालितानिवातेनपक्ष्माण्यक्षिविशंतिहि।घृष्यंत्यक्षिमुहुस्तानिसंरम्भंजनयंतिचि ॥१००॥ असितेसितभागेचमूलकोशात्पतंत्यपि ॥ पक्ष्मकोपःसविज्ञेयोव्याधिःपरमदारुणः ॥१०१॥

वायु से चलाय मान पलकों के वाल नेत्रों में प्रवेश करते हैं। प्रवेश करके नेत्रों को बारम्वार घिसते हैं घिस घिस कर काले अथवा सफेद भाग में सूजन को पैदा करते हैं। और जड़ से उखड़ कर गिर जाते हैं। इस रोग को पक्ष्म कोप कहते हैं यह महा घोर व्याधि है।

अथ पक्ष्म शात के लक्षण

वर्त्मपक्ष्माशयगतंपित्तंरोमाणिशाततेत् ॥
कण्डूं दाहंचकुरुतोपक्ष्मशातंतमादिशेत् ॥१०२॥

पक्ष्माशयमें स्थित पित्त पलक के वालों को पतित कर देता है। और खुजली तथा दाह को पैदा कर देता है इस रोग को पक्ष्म शात कहते हैं।

इति वर्त्मज रोग।

नवसंध्याश्रयास्तेषुवर्त्मजास्त्वेकविंशतिः ॥ शुक्लभागेदशैकश्चचत्वारःकृष्णभागजाः ॥ १०३ ॥ सर्वाश्रयाःसप्तदशदृष्टिजाद्वादशैवतु ॥ बाह्यजौद्वौसमाख्यातौरोगौपरमदारुणौ ॥१०४॥ अथएतान्प्रवक्ष्यामिसंख्यारूपचिकित्सितैः ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अथ नेत्र रोगों की संख्या कहते हैं

सन्धि में होने वाले नेत्र रोग ६ तरह के है और पलकों में होने वाले २१ है ओर नेत्र के सफेद भाग में होने वाले ११ तथा ४ काले भाग के होने वाले हैं और सब नेत्रों में होने वाले १७ हैं और १२ दृष्टि में होने वाले है और २बाहर के होने वाले हैं ।

इति श्री पं० चोखेलाल कृतार्यां कृष्णा नन्दिनी भासा
टीकाया माधव निदाने नेत्र रोग निदान समाप्तम्

* * *

अथशिरोरोगनिदानम्

* * *

शिरोरोगाश्च जायंतेवातपित्तकफैस्त्रिभिः ॥ सन्निपाते नरक्तेनक्षयेणक्रुमिभिस्तथा ॥१॥ सूर्यावर्तानतवाताद्र्धावभेदकशँखकैः ॥

वातज पित्तज कफज सान्निपातक रक्तज, क्षयसे, कृमिसे, सूर्यावर्त से अनतावात से अर्धाव भेदक और शंखक सब मिलकर ११ प्रकार के मस्तक रोग होते हैं ।

अथ वातज शिरो रोग के लक्षण

यस्यानिमित्तं शिरसोरुजश्च भवन्तितीव्रानिशिचातिमात्रम् ॥ बन्धोपतापैःप्रशमश्चयत्रशिरोभितापःससमीरणेन ॥२॥

अकस्मात् दूरके कारणों से जो शिरमें तीव्र वेदना होय रात्रि में शीत के कारण वायु की अधिकतासे ज्यादा दूखे । और मस्तक को बाँधने तथा सेकने के आराम मालूम होय उसको वातिक शिरो रोग जानना चाहिये

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

अथपितज शिरो रोग के लक्षण

यस्योष्णमंगारचितंतथैवभवेच्छिरोदह्यतिवाऽक्षिनासाम्
शीतेनरात्रौप्रशमंचयातिशिरोभितापःसतुपित्तकोपात्

जिसका मस्तक तप अगारों के तुल्य उष्ण होय नेत्र और नासिका में दाह होय, और रात्रि में शीत के कारण पीडा शान्त होय उसे पित्ताज शिरो रोग जानना

अथकफज शिरो रोग के लक्षण

शिरोभवेद्यस्यकफोपदिग्धंगुरुप्रतिस्तब्धमथोहिमंच ।।
शूनाक्षिकूटंवदनंचयस्यशिरोभितापःसकफप्रकोपात् ४

भीतर से मस्तक कफ से ल्हिसासा प्रतीत हो भारी तथा स्तब्ध, हो सीतल हो और नेत्रो के पलक तथा मुख पर सूजन होय उसे कफज शिरो रोग जानना

सन्निपातिकासिरो रोग के लक्षण और रक्तज के लक्षण

शिरोभितापेत्रितयप्रवृत्ते सर्वाणिलिंगानिसमुद्भवन्ति ५
रक्तात्मकःपित्तसमानलिंगःस्पर्शासहत्वशिरसोभवेच्च ।

शिरो रोग में पूर्वोक्त तीनों दोषो के लक्षण मिलतें हैं । उसे त्रिदोषज और पित्तज शिरो रोग के सम्पूण लक्षणों युक्त मस्तक किसी भी पदार्थ का स्पर्श नही सह सकता हो उसे रक्तज शिरो रोग कहते है मस्तक का स्पर्श सहना इतना ही मेर रक्तज और पैत्तिक शिरो रोग में है ।

अथ धातुक्षयजय शिरो रोण के लक्षण

असृग्वसाश्लेष्मसमीरणानांशिरोगतामिहसंक्ष
येण ।।६।। क्षयप्रवृत्तिःशिरसोऽभितापःकष्टोभवेदुग्ररु
जोऽतिमात्रम् ।। संस्वेदनच्छर्दनधूमनस्यैरसृग्विमोक्षै
श्चविवृद्धिमेति ।।७।।

मस्तक में अत्यन्त और तीव्र वेदना हो और वह वेदना सेकने से

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

वमन करने से धूम्रपान से नस्य देने से और रक्त को निकलवाने से ज्यादा बढ़े तो जानना चाहिए कि शिर स्थित चरबी कफ और अत्यन्त रक्त के क्षय होने से हुआ है यह शिरो रोग कष्ट साध्य है। क्षयज शिरो रोग में शरीर घूमता है। शिर में सुई चुभाने की सी वेदना होती है नेत्रों की पुतली बारम्बार फिरती है मूर्छा और अवयवों में ग्लानि होती है।

अथ कृमिज शिरो रोग के लक्षण

निस्तुद्यतेयस्यशिरोऽतिमात्रंसंभक्ष्यमाणंस्फुरतीवचां
तः ॥ घ्राणाच्चगच्छेद्रुधिरंसपूयंशिरोभितापःकृमिभिः
सघोरः ॥८॥

शिर में अत्यन्त तोड़ने सरीखी वेदना होय कृमि के भक्षण करने के कारण भीतर से मस्तक फड़कता हो ऐसा मालूम हो और नासिका में से राध सहित रक्त निकले तथा कृमि भी निकले तो ज्ञात करना चाहिए कि यह घोर शिरो रोग कृमियों से पैदा हुआ है।

अथ सूर्या वर्त के लक्षण

सूर्योदयंयाप्रतिमंदमंदमक्षिभ्रुवंरुक्समुपैतिगाढा ॥
विवर्द्धतेचांशुमतासहैवसूर्यापवृत्तौविनिवर्ततेच ॥९॥
शीतेनशान्तिंलभतेकदाचिदुष्णेनजंतुःसुखमाप्नुयाद्वा
सर्वात्मकंकष्टतमंविकारंसूर्यापवर्तंतमुदाहरन्ति ॥१०॥

सूर्योदय होने पर धीरे धीरे नेत्रों में और भ्रकुटियों में मन्द २ वेदना शुरू होती आवे। जिस तरह सूर्य आकाश में चढ़ता है उसी तरह यह वेदना भी बढ़ती जाय और ज्यों ज्यों सूर्य अस्ताचल को जाय त्यों २ यह वेदना शांति को प्राप्त होती जाय। किसी समय यह पीड़ा शीत से शान्ति होती है। और कभी उष्णता से शांत होती है। त्रिदोष से उत्पन्न अत्यन्त कष्ट साध्य इस रोग को सूर्यावर्त कहते हैं।

अथानन्त वात लक्षणम्

दोषास्तुदुष्टास्त्रयएवमन्यांसंपीड्य ढंसरुजांसुतीव्राम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

कुर्वंतिसाक्षिभ्रु विशंखदेशेस्थितिंकरोत्याशु विशेषतस्तु
गंडस्यपार्श्वेंचकरोतिकंपंहनुग्रहंलोचनजांश्चरोगान् ।
अनन्तवातंतमुदाहरन्तिदोषत्रयोत्थंशिरसोविकारम्।१२

कोप को प्राप्त हुए वातादि तीनों दोष मन्या नाड़ी को अत्यन्त पीड़ित कर निज निज स्वभाव के अनुसार व्यथा दाह तथा गुरता आदि तीव्र पीड़ा पैदा करते हैं। यह पीढ़ा नेत्रों में तत्क्षण भौओं से और कनपटियों में स्थित होती है। विशेष करके गण्डस्थल में पैदा होती है। तथा यह वेदनास्थित होकर कम्प, हनुग्रह तथा नेत्र पीढ़ा को उत्पन्न करती है। इसे त्रिदोषज अनन्त वात कहते हैं।

अथ अर्धाव भेदक के लक्षण

रूक्षाशनात्यध्यशनप्राग्वातावश्यमैथुनै ।। वेगसंधारण
यासव्यायामैःकुपितोऽनिलः ।। १३ ।। केवलःसकफो
वार्द्धंगृहीत्वाशिरसोबली ।। मन्याभ्रूशंखकर्णाक्षिल
लाटेर्धेतिवेदनाम् ।। १४ ।। शस्त्रारणिनिभांकुर्यात्तीव्रां
सोऽर्धावभेदकः ।। नयनंवाथवाश्रोत्रमतिवृद्धोविनाश
येत् ।।१५।।

रुक्ष भोजन आदि के करने से, भोजन के ऊपर भोजन करने से हिम वर्फ आदि के सेवन से पूर्व की पवन के लगने से, स्त्री प्रसंग से, मलमूत्रादि वेगावरोध से, अत्यन्त मार्गगमन तथा अत्यन्त बोझ आदि के ढोने के परिश्रम से दण्ड कसरत आदि के ज्यादा करने से, कोप को प्राप्त हुई बलवान-वायु अपने आप अथवा कफ की सहायता से मस्तक के अर्ध भाग को ग्रहण कर नाडी भौं, कनपटी, कान नेत्र और कपाल का आधा हिस्सा, इन स्थानों में शस्त्र धात के तुल्य, वज्र पात के सदृश घोर वेदना को उत्पन्न करे हैं। इसे अर्धावभेदक कहते हैं। इस रोग के ज्यादा वृद्ध गत होने से नेत्र व कान नष्ट हो जाते हैं इसे संसार में आधा शोशी नाम से बोलते हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अथ शंखक के लक्षण

पित्तरक्तानिलादुष्टाःशंखदेशेविमूर्च्छिताः ॥ तीव्ररुग्दाहरागंहिशोथंकुर्वन्तिदारुणम् ।१६। सशिरोविषवद्वेगीनिरुध्याशुगलंतथा ॥ त्रिरात्राज्जीवितंहन्तिशंखकोनामनामतः ॥ १७ ॥ त्र्यहाज्जीवतिभैषज्यंप्रत्याख्यायास्यकारयेत् ॥

दूषित और कनपटी प्रदेश से वृद्धिगत हुए पित्त रक्त वायु आदि दोष तीव्र वेदना तथा दाह और अत्यन्त रक्त वर्ण की सूजन को उत्पन्न करते हैं। वह सूजन विष के तुल्य अपने वेग के तत्क्षण मस्तक का तथा कण्ठ को रोक कर तीन रात्रि के भीतर प्राणों को नष्ट कर देती है। इस व्याधि को शंखक कहते हैं। इस शिरो रोग वाला व्यक्ति तीन दिन तक जीवित रहता है। इस कारण चिकित्सक इसको प्रत्याख्यन करने के पश्चात् चिकित्सा करें। सुश्रत के मत से तीनों के साथ कफ का भी सम्बन्ध होता है यह कहा है।

इति पं० चोखेलाल कृतायां कृष्णा नन्दिनी भाषा टीकायां

माधव निदाने शिरोरोगनिदानम् समाप्तम्

* * *

अथ प्रदररोगनिदानम्

* * *

प्रदर रोग की संख्या

विरुद्धमद्याध्यशनादजीर्णाद्गर्भप्रपातादतिमैथुनाच्च यानाध्वशोकादतिकर्षणच्च भाराभिघाताच्छयनाद्दिवा च ॥१॥ तंश्लेष्मपित्तानिलसन्निपातैश्चतुष्प्रकारंप्रदरं वदंति ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

विरुद्ध भोजन करने से मद्य पान से भोजन पर भोजन करने से अजीर्ण से गर्भ के पतित होने से, अत्यन्त मैथुन करने से, हाथी, घोड़ा आदि पर चढ़ कर उनको भगाने से, अधिक मार्ग गमन से, अत्यन्त शोक करने, अत्यन्त कर्षण करने से अधिक भार के उठाने से अपघात से और दिवा शयन से स्त्रियों के प्रदर नामक व्याधि पैदा होती है। कफज, पित्तज वातज और त्रिदोषज इस तरह ४ प्रकार का होता है।

अथ प्रदर रोग के सामान्य लक्षण

असृग्दरं भवेत्सर्वसाँगमर्दं सवेदनम् ॥२॥

दुष्ट रज का अत्यन्त स्राव होना अवयवों का टूटना और दर्द की वेदना होय ये प्रदर के सामान्य लक्षण हैं।

अथ प्रदर रोग के उपद्रव

तस्यातिवृद्धौदौर्बल्यंश्रमोमूर्च्छामदस्तृषा ।
दाहःप्रलापःपाडुत्वंतंद्रारोगाश्चवातजाः ॥३॥

रक्त अत्यन्त बहै तो दुर्बलता, भ्रम, मूर्च्छा, मद प्याह. दाह, प्रलाप, पांडुता, तन्द्रा और बात जनित आक्षेपादि रोग होते हैं।

अथ कफ उत्पन्न से प्रदर के लक्षण

आमंसपिच्छाप्रतिमंसपांडुपुलाकतोयप्रतिमंकफात्तु ॥

कफ के प्रदर में आम अर्थात् अपक्व रस वाला सेमल आदि के गोंद के समान स्निग्ध, किंचित पाण्डु वर्ण और तुच्छ धान के धोवन तुल्य रक्त निकलता है।

अथ पित्त के प्रदर के लक्षण

सपीतनीलासितरक्तमुष्णांपित्तार्त्तियुक्तं भृशवेगिपित्तात।४

पैत्तिक प्रदर में पीला, नीला, काला, लाल, उण्ण और पित्त जनित दाह आदि वेदना सहित रक्त बारंबार निकलता है।

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अथ वातज प्रदर के लक्षण

रूक्षारुणंफेनिलमल्पमल्पंवातार्तिवातात्पिशितोदकाभम्

वातज प्रदर में रुक्ष, लाल, भागों सहित व्यथा युक्त और माँस के धोवन के समान रक्त थोड़ा थोड़ा निकलता है ।

अथ सन्निपातिक प्रदर के लक्षण

सक्षौद्रसर्पिर्हरितालवर्णंमज्जाप्रकाशंकुणपंत्रिदोषम्।
तच्चाप्यसाध्यंप्रवदंतितज्ज्ञानतत्रकुर्वीतभिषक्चिकित्साम्

त्रिदोष से उत्पन्न प्रदर में मधु, घी, यथा हरिताल के तुल्य वर्ण वाला मज्जा के सदृश और शंख के समान गन्धवाला रक्त स्रवता है। विद्वान वैद्य इसे असाध्य कहते हैं। यह चिकित्सा के योग्य नहीं हैं ।

अथ शुद्धार्तव के लक्षण

मासान्निःपिच्छदाहार्तिपंचरात्रानुबंधिच ॥ नैवातिवहु
लंनाल्पमार्तवंशुद्धमादिशेत् ॥ ६ ॥ शशासृक्प्रतिमंय
च्चयद्वालाक्षारसोपमम्ः ॥ तदार्तवप्रशंसन्तियच्चाप्सु
नविरज्यते ॥७॥

ठीक महीने के दिनों में स्निग्ध तन्तु रहित दाह और शूल हीन विकृत कफ वात पित्त के लक्षणों बिना पाँच रात्रि तक रहने वाला न बहुत कमही ऐसा रजोदर्शन होय तो उसे शुद्धार्तव जानना चाहिए और जो आर्तव शशे के रक्त सदृश अथवा लाख के वर्ण समान लाल हो और जिसमें रंगे हुये कपड़ा का वर्ण जल में डालने से बदले उसको शुद्धार्तव कहते हैं ।

इति प्रदर रोग निदानम्

—:o:—

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

अथयोनिव्यापत्तिनिदानम्

—:०:—

विंशतिर्व्यापदो योनौर्निर्दिष्टा रोगसंग्रहे ।।
मिथ्याचारेणता: स्त्रीणां प्रदुष्टेनार्त्तवेन च ।।
जायंते बीजदोषाच्च दैवाच्चशुणुता: पृथक् ।।

रोग संग्रह में योनीं वीस रोगोंका कथन किया हैं । वह मिथ्या आहार तथा मिथ्या विहार से दूषित हुये वायु आदि दोषों से रज के दोष से तथा पुरुष के वीर्य से और समय पर दैवगति से भी योनि में रोग पैदा होते है ।

योनिरोग के लक्षण

साफेनिलमुदावृत्तारज:कृच्छ्रेणमुंचति ।।२।।वंध्यांनष्ट
तंबांविद्याद्विल्पुतांनित्यवेदनाम् ।। परिल्पुतायांभदित
ग्राम्यधर्मेणरुग्मृशम् ।। ३ ।। वातलाकर्कशास्तब्धाशू
लनिस्तोदपीडिता ।। चतसृष्वपिचाद्यासुभवत्यनिलवे
दना: ।। ४ ।।

जिस योनी में अत्यन्त कष्ट के साथ झाग सहित रक्त निकले उसको उदावर्ता कहते हैं। और जो योनी सदैव रज रहित होय अर्थात कभी भी रजस्वला नहीं होय उसको वन्ध्या कहते हैं। और जिस योनी में हरसमय वेदना रहती होय उसको विप्लुता कहते हैं । मैथुन करने से जिस योनि में पीडा होती होय उसको परिप्लुता कहते हैं । और जो योनि कठोर स्तब्ध होय शूल तथा, तोड़ने सरीखी पीडा युक्त होय उसको वातला कहते हैं। यद्यपि उपरोक्त वात जनित योनि रोगों में तोड़ने कीसी पीड़ा वायु सम्बन्धी वदना होती है तथापि इस पाँचवी प्रकार की वातला योनि में तो वात जन्य वेदना अधिक होती हैं इस प्रकार जानना ।

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सदाहंक्षीयतेरक्तंयस्याःसालोहितक्षया ॥ सवातमुद्धमेद्बीजंवामिनीरजसान्वितम् ॥५॥ प्रस्रंसिनीभ्रंशते तुक्षोभितादुष्प्रजायिनी ॥ स्थितंस्थितंहंतिगर्भंपुत्रघ्नी रक्तसंक्षयात् ॥ ६ ॥ अत्यर्थंपित्तलायोनिर्दाहपाकज्वरान्विता ॥ चतसृष्वपिचाद्यासुपित्तलिंगोच्छ्योभवेत्

जिस योनि में से दाह वाला रक्त गिरता होय उसको लोहितक्षण कहते हैं। जो योनि मर्दन करने से निज स्थान से पृथक होजाय और विकृत सन्तान को पैदा करें उसको प्रस्रसिनी कहते हैं। और जो योनि वायु के साथ रज सहित वीर्य को वाहर निकाल देती है उसको वामनी कहते हैं। जो योनि स्थित गर्भ को रक्त के स्राव के कारण गिरा देती है उसको पुत्रघ्नी कहते हैं। और जिसमें दाह पाक तथा बुखार होय उसको पित्तला कहते हैं। यद्यपि पित्तजन्य उपरोक्त चारों तरह की योनियों में दाह तथा पाक वगैरह पित्त जनित वेदना होती है तथापि इस पांचवी पित्तला योनि में यह पित्त सम्बन्धी वेदना अधिक होती है ऐसा जानना क्यों पित्तला इस शब्द से जाना जाता है।

अत्यानन्दानसन्तोषंग्राम्यधर्मेणगच्छति ॥ कर्णिन्यां कर्णिकायोनौश्लेष्मासृग्भ्यांप्रजायते ॥ ८ ॥ मैथुनेचरणात्पूर्वंपुरुषादतिरिच्यते ॥ बहुशश्चातिचरणात्तयोर्बीजंनविंदति ॥९॥ श्लेष्मलापिच्छिलायोनिःकन्डूयुक्ताऽतिशीतला ॥ चतसृष्वपिचाजासुश्लेष्मलिंगोच्छ्योभवेत् ॥१०॥

जो योनी अत्यन्त मैथुन से सन्तोष को प्राप्त नहीं होय उसको अत्यानन्दा कहते हैं। और जिस योनि में कफ से तथा रक्त से माँस की डेली के तुल्य ग्रन्थि होय उसे कर्णिकाकहते हैं और जो योनि मैथुन के समय पुरुष से पहिले ही स्खलित होजाय उसको आनन्द चरण योनि कहते हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

इस योनि में वीर्य रुकता नहीं है और जो योनि मनुष्य से पहिले कई वार स्खलित हो जाय उसको अति चरण योनि कहते है इसमें भी वीर्य नहीं ठहरता है। और जो योनि अत्यन्त स्निग्ध खुजली युक्त और अत्यन्त सीतल होय उसको श्लेष्मला कहते हैं । यद्यपि उपरोक्त कफ जनित चारों प्रकार की योनियों में स्निग्धता आदि कफ के चिन्ह होते हैं । तथापि इस पांचवीं प्रकारकी श्लेष्मला योनि में यह कफ सम्बन्धी चिन्ह अत्यन्त होते हैं । ऐसा जानना । क्यों कि श्लेष्मला इस नाम से ही अर्थ निकलता है ।

स्राव और पात के लक्षण

आचतुर्थात्ततोमासात्प्रस्त्रवन्दर्भं विद्रवः ॥
ततः स्थिरशरीरः स्यात्पातःपंचमषष्ठयोः ॥११॥

पांचवे माह के पश्चात् गर्भ पतली दशा में होने से स्रवे उसको स्राव कहते हैं और चतुर्थ मास से लेकर पांचवे छटवे महीने तक स्रबे शरीर के बनने पर पतित हो उसे पात कहते हैं ।

गर्भ के असमय में पतित होने का हेतु

गर्भोभिघातविषमासनपीडनाद्यैःपक्वंद्रुमादिवफलं पततिक्षणेन ॥ १२

चोट से विषम भोजन से पीडनादिक कारणों से जिस प्रकार परिपक फल वृक्ष से चोट लगने से पतित हो जाता है उसी प्रकार गर्भ भी चोटादिक के लगने से गिर जाता है ।

अथ भूढ़ गर्भ के निदान लक्षण समाप्ति

मूढःकरोतिपवनःखलुमूढगर्भंशूलंचयोनिजठरादिषुमूत्र संगम् ॥ १३ ॥
भुग्नोऽनिलेनविगुणेनततःसगर्भःसंख्यामतीत्यबहुधा समुपैतियोनिम् ॥ द्वारंनिरुध्यशिरसाजठरेणकश्चित्क

श्चिच्छरीरपरिवर्तितकुब्जदेहः ॥ १४ ॥ एकेनकश्चिद
परस्तुभुजद्वयेनतिर्यग्गतोभवतिकश्चिदवाङ्मुखोन्यः ।
पार्श्वप्रवृत्तगतिरेतितथैवकश्चिदित्यष्टधोगतिरियंहिप
राचतुर्धा ॥ १५ ॥ संकीलकःप्रतिखुरःपरिघोऽथबीज
स्तेषूर्ध्वबाहुचरणौःशिरसाचयोनिम् ॥ संगीचयोभव
तिकीलकवत्सकीलोदृश्यैखुरैःप्रतिखुरःसहिकायसंगी
॥ १६ ॥ गच्छेद्भुजद्वयशिराःसचबीजकाख्योयोनौ
स्थितःसपरिघःपरिघेणतुल्यः ॥१७॥

अपने कारणों से दूषित हुई और कुंठित गति वाली वायु गर्भ को मूढ अथवा वक्र गति वाला कर देती है और योनि में तथा उदर में दर्द पैदा करती है। तथा मूत्र का अवरोध करे हैं। फिर मूढ़ वायु से वह गर्भ रुककर चार प्रकार से योनी में आकर अड़ जाता है कतिपय वैद्य ऐसा कहते हैं और कतिपय आठ प्रकार से अड़ जाता है ऐसा कहते हैं परन्तु इन संख्याओं से कुछ काम नहीं निकलता अनेक प्रकार से योनि में आकर अड़ जाता है। कोई मूढ गर्भ मस्तक से योनि द्वार को रोक लेता है कोई मूढ गर्भ पेट से योनि द्वार को रोक लेता है कोई मूढ गर्भ कुवड़ा होकर पीठ से योनि द्वार को रोक लेता है कोई मूढ गर्भ योनि में से एक हाथ निकाल कर बाकी के सर्वांग से रोक लेता है। कोई मूढ गर्भ दोनों हाथों को निकाल कर बाकी के सब शरीर से अड़ जाता है। कोई आढा होकर अड़ जाता। कोई गर्दन के टूटने से तिरछा होकर योनि द्वार को रोक लेता है। कोई मूढ गर्भ पसलियों को फिरा कर योनि द्वारों में अड़ जाता है। और जिसके हाथ, पैर, शिर योनि में अड़ जाते हैं वह मूढ गर्भ कील के सदृश होता है। इसलिए उसे कीलक कहते हैं। जिसके दोनों हाथ और दोनों पैर बाहर निकल जावें बाकी सब शरीर योनि में अड़ जावें उस मूढ गर्भ को प्रति खुर कहते हैं। जिसके दोनों हाथों के मध्य में होकर मस्तक बाहर निकल आवे बाकी का सर्वांग योनि में अड़ जाय उस मूढ गर्भ को बीजक कहते हैं। और योनि में परिध के समान गर्भ अड़ जाय उसको परिध कहते हैं।

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

असाध्य मूढ गर्भिणी के लक्षण

अपविद्धाशिरायातुशीतांगीनिरपत्रपा ॥
नीलोद्धतशिराहन्तिसागर्भंसचतांतथा ॥१८॥

जिसका शिर गिर गिर जाता हो शरीर ठण्डा हो गया हो, लज्जा रहित हो गई हो और जिस के तन में नीले वर्ण की नसे उछर आई हों वह स्त्री गर्भ को नष्ट कर देती है तथा वह गर्भ स्त्री को नष्ट कर देता है ।

अथ मरे हुए गर्भ के लक्षण

गर्भास्यन्दनमावीनांप्रणाशःश्यावपाण्डुता ॥
भवेदुच्छ्वासपूतित्वंशूनतांतमृतेशिशौ ॥१९॥

जो गर्भ के भीतर बालक मृत्यु को प्राप्त हो गया हो तो वह हलता चलता मालूम नहीं होता है । न प्रसव की वेदना होती है तथा मूत्र कफ का आना आदि प्रसव के लक्षण नष्ट हो जाते हैं शरीर का रंग स्यामता लिए पीला हो जाता है बुरी गन्ध और मरे बालक के सूज जाने के कारण दर्द होता है ।

अथ गर्भ मरने का कारण

मानसागन्तभिर्मातुरुपतापैःप्रपीडितः ॥
गर्भोऽव्यापद्यतेकुक्षौऽव्याधिभिश्चप्रपीडितः ॥२०॥

माता के प्रहार आदि आगन्तुक हेतुओं से अथवा कुटम्बी, इष्ट धनादि क्षय आदि मानसिक हेतुओं से अथवा व्याधियों से व्यथित होने के कारण गर्भ उदर में ही नष्ट हो जाता है ।

गर्भिणी के अन्य असाध्य लक्षण

योनिसंचरणांसंगःकुक्षौमक्कल्लमेवच ॥
हन्युःस्त्रियंमूढगर्भेयथोक्ताश्चाप्युपद्रवा ॥२१॥

वात के प्रभाव से योनि का संकोच गर्भ का अटकना वात रक्त का शूल तथा अक्षेपक खांसी श्वासादि उपद्रव गर्भिणी को नष्ट कर देते हैं ।

इति योनिव्यापत्ति निदानम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

अथसूतिकानिदानम्

अंगमर्दोज्वरःकंपःपिपासागुरुगात्रता ॥
शोथःशूलातिसारौचसूतिकारोगलक्षणम् ॥१॥

अवयवों का टूटना, ज्वर, खांसी प्याह गात्रों में भारापन होना शोथ दर्द दस्त ये रोग प्रसूता के विशेष कर के होते हैं इसलिए इसे सूतिका कहते हैं ।

सूतिका का निदान

मिथ्योपचारात्संक्लेशाद्विषमाजीर्णभोजनात् ॥
सूतिकायाश्चयेरोगाजायन्तेदारुणास्तुतं ॥२॥

अत्यन्त वात कारक स्थानों को सेवन करने से, अयोग्य आचरण से जिनसे दोष कुपित हो ऐसे आचरणों के करने से विषम भोजन से और अजीर्ण से प्रसूता के जो रोग उत्पन्न होते हैं वे कष्ट साध्य होते हैं ।

प्रसूता के ज्वरादि रोगों का विशेषाभिधान

ज्वरातिसारशोथाश्चशूलानाहबलक्षयाः ॥ तन्द्रारुचि
प्रसेकाद्याःकफवातामयाद्भवाः ॥ ३ ॥ कृच्छ्रसाध्याहि
तेरोगाःक्षीणमांसबलाग्नितः ॥ तेसर्वेसूतिकानाम्नोरो
गास्तेचाप्युपद्रवाः ॥४॥

बुखार, दस्त, शोथ, दर्द, पेट का फूलना, वल का नाश, तन्द्रा अन्नद्वेष, मुख में पानी का भरना इत्यादि रोग प्रसूता स्त्री के मांस तथा वल की न्यूनता के कारण होते हैं यह सूतिका रोग कहे जाते हैं और कष्ट साध्य होते हैं इन रोगों में एक रोग प्रधान होता है । बाकी के सब उपद्रव होते है ।

इति माधव कर वरचितो माधव निदाने

सूतिका रोग निदानम् समाप्तम्

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अथस्तनरोगनिदानम्

सक्षीरोवाप्यदुग्धौवादोषःप्राप्यस्तनोस्त्रियः ॥ प्रदूष्य
मासरुधिरेस्तनरोगायकल्पते ॥ १ ॥ पंचानामपितेषां
हिरक्तजंविद्रधिंविना ॥ लक्षणानिसमानानिबाह्यविद्र
धिलक्षणै ॥२॥

सम्प्रप्ति

वातादि दोष दूध युक्त अथवा दूध रहित स्त्री के कुचों में प्राप्त होकर रक्त तथा मांस को दूषित करके स्तन रोग की उत्पत्ति करते हैं । वह स्तन रोग वात, पित्त कफ और सन्निपात तथा आगन्तुक भेद से पांच प्रकार का होता है । पांचों प्रकार के स्तन रोगों के लक्षण रक्तजंध विद्रधि को छोड़ कर बाहर की विद्रधि के सदृश होते हैं अभिघात और शल्य से जो स्तन रोग होता है उसे अभिघातज कहते हैं ।

इति स्तन रोग निदानम्

स्तन्य, दुग्ध के रोग

गुरुभिर्विविधैरन्नैर्दुष्टैर्दोषैः ॥ प्रदूषितम् ॥
क्षीरं धात्र्याःकुमारस्यनानारोगायकल्पते ॥३॥

भारीपन तथा अनेक प्रकार के अन्न भक्षण से दोष दूषित हो माता के दूध को दूषित कर देते हैं । उस दुष्ट दुग्ध पान से बालक के नाना प्रकार के रोग हो जाते हैं ।

वातादि दोषों से दूपित दुग्ध के लक्षण

कषायंसलिलप्लाविस्तन्यंमारुतदूषितम् ॥ कट्वम्ललव
णपीतराजीमत्पित्तसंज्ञितम् ॥ ४ ॥ कफदुष्टंघनंतोये
निमज्जतिसुपिच्छिलम् ॥ द्विलिंगंद्वंद्वजंविद्यात्सर्वलि
गंत्रिदोषजम् ॥५॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

जो दूध कषेला अथवा जल के ऊपर तैरने वाला हो वह वात दूषित होता है और खारी हो चरपरा नमकीन हो तथा जिसमें पीत रेखा सी प्रतीत हों उसको पित्त दूषित कहते हैं । और जो दूध सघन स्निग्ध हो जल में गेरने से नीचे वैठ जाय उसे कफ दूषित जानना दो दोषों के लक्षण मिलने से द्वन्द्वज तथा तीनों दोषों के मिलने से त्रिदोष जानना ।

शुद्ध दूध के लक्षण

अदुष्टंचाम्बुनिक्षिप्तमेकीभवतिपाण्डुरम् ॥
मधुरंचाविवर्णं चतत्प्रसन्नंविनिर्दिशेत ॥६॥

जो दुग्ध जल में गेरने से मिल जाय और कुछ पीला हो और मीठा हो दुर्विर्ण न हो उसे शुद्ध जानना अब कहते हैं कि स्त्रियों के दुग्ध होता है परन्तु दीखता नहीं है । इसका निर्णय वीर्य के दृष्टांत से करते हैं ।

विशस्तेष्वपिगात्रेषुयथाशुक्रंनदृश्यते ॥
सर्वदेहाश्रितत्वाच्चशुक्रलक्षणमुच्यते ॥७॥

जैसे सब प्राणियों के शरीर में वीर्य व्याप्त है परन्तु काटने से भी नहीं दीख सकता उसी प्रकार स्त्रियों के शरीर में दूध व्यपत है परन्तु दीखता नहीं है ।

तदेवचेष्टयुवतेर्दर्शनात्स्मरणादपि ॥ शब्दसंश्रवण
त्स्पर्शात्संहर्षाच्चप्रवर्त्तते ॥८॥ सुप्रसन्नंमनस्तेवंहर्षणोह
तुरुच्यते ॥ आहाररसयोनित्वादेवस्तन्यमपिस्त्रियाः ॥
तदेवाऽपत्यसंस्पर्शाद्दर्शनात्स्मरणादपि ॥ ग्रहणाच्चश
रीरस्यशुक्रवत्संप्रवर्त्तते ॥१०॥ स्नेहो निरंतर स्तत्र
प्रसवे हतुरुच्यते ॥

वह वीर्य स्त्री के देखने से, उसकी याद करने से उसकी वाणी सुनने स्पर्श से निकलता है उसी प्रकार स्त्रियों का दुग्ध बालक

के देखने स्मरण करने सुनने तथा स्पर्श करने से हर्षित होने पर निकलता है।

हर्ष का हेतु मन की प्रसन्नता है। ईर्षा आदि से हीन होकर जब मन खुश होता है तब स्त्री के दर्शन आदि से मनुष्य का वीर्य यथा बालक दर्शन आदि कारण से स्त्री का दूध प्रकट हो हैं अतः दुग्ध के पैदा होने का हेतु सन्तति का प्रेम है।

—:०:—

अथ बालरोगनिदानम्

—❀—

त्रिविधःकथितोबालःक्षीरान्नोभयवर्तनः ॥
स्वास्थ्यंताभ्यामदुष्टभ्यांदुष्टाभ्यांरौगसम्भवः ॥१॥

दुग्ध पान करने वाला अन्न भक्षण करने वाला दुग्ध अन्न दोनों का खाने वाला, इस तरह तीन प्रकार के बालक होते हैं। यदि वे अन्न और दुग्ध दूषित होते हैं तो बालक निरोग रहते हैं और अन्न दुग्ध के दूषित होने से बालकों के नाना प्रकार की व्याधि हो जाती है।

वात से दूषित दुग्ध पान जन्य बाल रोग के लक्षण

वातदुष्टं शिशुःस्तन्यंपिबन्वातगदातुरः ॥
क्षामस्वरःकृशांगःस्याद्बद्धविण्मूत्रमारुतः ॥२॥

जो बालक वात दूषित दुग्ध का पान करता है उसके वायु के रोग पैदा होते हैं। उसका शब्द क्षीण होता है तथा तन कृश हो जाता है पेसाब और मल तथा अपान वायु नहीं निकलती है।

पित्त से दूषित दुग्ध पान जन्य बाल रोग के लक्षण

स्विन्नोभिन्नमलोबालःकामलापित्तरोगवान् ॥
तृष्णालुरुष्णसर्वांगःपित्तदुष्टंपयःपिबन् ॥३॥

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

जो पित्त दूषित दूध को पीता है उस बालक के स्वेद का आगमन तथा मल का पतला होना एवं कामला रोग की उत्पत्ति और प्याह सर्वाङ्ग में भड़क दाह आदि पित्त के रोग होते हैं ।

कफ से दूषित दुग्ध के लक्षण

कफदुष्टं पिबन्क्षीरंलालालुःश्लेष्मरोगवान् ।
निद्रार्दितोजडःशूनःशुक्लक्षश्छर्दनःशिशुः ।।४।।

कफ से दूषित दुग्ध से पीने से लार का अधिक आना कफ जन्म वेदना से युक्त निन्द्रा से व्यथित, भारी शरीर का होना, सूजन युक्त वक्र दृष्टि वाला और वमन को करता हैं । इत्यादि लक्षण बालक के होते हैं ।

बालकों की शरीरस्थ वेदना जानने का प्रयत्न

शिशोस्तीव्रामतीव्रांचरोदनाल्लक्षयेदुजम् ।।
सयंस्पृशेद्भृशंदेशंयत्रचतत्पर्शनाक्षमः ।।५।।
तत्रविद्याद्रुजंमून्धिरुजांचाक्षिनिमीलनात् ।।
कोष्टेबिवंधवमथुस्तनदंशांत्रकूजनैः ।।६।।
आध्मानपृष्ठनमनजठरोन्नमनैरपि ।।
वस्तौगुह्यं चविरायमूत्रसंगत्रासदिगीक्षणः ।।७।।
स्रोतांस्यंगानिसंधींश्चपश्येद्यत्नान्मुहुर्मुहु ।।

शिशुओं के रोने से अल्पवा ज्यादा वेदना जाननी, जो बालक जिस स्थान पर बारम्बार अपना हाथ धरे और किसी को उस जगह हाथ न धरने देतो उसके उस स्थान में वेदना जाननी, आंखों के मींचने से शिर में वेदना जाननी, मल का रुकना तथा उल्टी, स्तन को चबाना तथा उदर का गूंजना एवं फूलना तथा उछलना इन लक्षणों से बालक के उदर में व्यथा जाननी । मल और पेसाव के अवरोध तथा भयभीत होने एवं सब जगह देखने से मूत्रेन्द्रिय और गुदा में वेदना जाननी ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

चिकित्सक बालक के नाक मुख कर्ण आदि छिद्रों को हाथ पाँव से लेकर सर्वाङ्ग को और सन्धियों को देखे तो रोग का यथार्थ ज्ञान होता है।

द्वन्द्वज और सन्निपातज दूषित दुग्ध के व कुकूणक लक्षण

द्विलिंगद्वंद्वजंविद्यात्सर्वंलिंगंत्रिदोषजे ॥
कुकूणकःछीरदोषाच्छिशूनामेववर्त्मनि ॥८॥
जायतेतेननेत्रंचकण्डुरंचस्रवेन्मुहुः ॥
शिशुःकार्याल्ललाटाक्षिकूटनासाविघर्षणम् ॥९॥
शक्तोनार्कप्रभांद्रष्टुंनवर्त्मोन्मीलनक्षमः ॥

पूर्व कथित वातादि दो दौषों के लक्षणों के मिलने से द्वन्द्वज और तीनों दोषों के लक्षण मिलने से त्रिदोष दूषित दुग्ध रोग जानना चाहिए। बालकों के पलक में दूध के दोष से कुकूणक रोग होता है। इससे वह नेत्र बारम्बार खुजलाता और स्राव करता है। बालक ललाट नेत्र-कूट और नाक को रगड़ता है। धूप की ओर नहीं देख सकता और पलक चलाने में समर्थ नहीं होता।

पारिगर्भिक के लक्षण

मातुःकुमारोगर्भिण्याःस्तनंप्रायःपिबन्नपि ॥१०॥
कासाग्निसादवमथुतंद्राकार्श्यारुचिभ्रमैः ॥
युज्यतेकोष्ठवृद्ध्याचतमाहुःपारिगर्भिकम् ॥११॥
रोगंपरिभवाख्यंचदद्यात्तत्राग्निदीपनम् ॥

दुग्ध के दोष से बालकों के पलकों में कुकूणक रोग की उत्पत्ति होती है। जिससे आंखों में वेदना तथा खुजली चलती है और स्राव होता है इस रोग से बालक अपने शिर को नेत्रों के भाग को तथा नासिका को घिसता है। सूर्य की धूप को देख नहीं सकता न आंखों को खोल सकता है।

तालु कंटक के लक्षण

तालुमांसेकफःक्रुद्धःकुरुतेतालुकंटकम् ॥१२॥
तेनतालुप्रदेशस्यनिम्नतामूर्ध्निजायते ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

बालक गर्भवती माता का दुग्ध पान करे अथवा नहीं करें, तो भी उसके बहुधा खांसी मन्दाग्नि, उल्टी, तन्द्रा, कृशता, अन्नद्वेष, भ्रम, और कोष्ठ बृद्धि को प्राप्त होता है । इस व्याधि को पारगर्भिक कहते हैं पारिभव भी कहते हैं इस व्याधि के होने पर अग्नि को दीपन करने वाली औषधियों का प्रयोग करना चाहिए ।

तालु कंटक के लक्षण

तालुपातःस्तनद्वेषःकृच्छ्रात्पानंशकृद्द्रवम् ॥१३॥
तृडक्षिकंठास्यरुजाग्रीवादुर्धरतावमिः ॥

तालु के मांस में कोप को प्राप्त हुआ कफ तालु कंटक नाम रोग की पैदा करता है । इस रोग से मस्तक में तालु नीचे को झुक जाता हैं । अर्थात् लटक आता है । इस कारण माता के दुग्ध को पी नहीं सकता है अति कष्ट के साथ थोड़ा थोड़ा दूध पीता है दस्त पतले होते हैं प्याह लगती है नेत्रों में कंठ में तथा मुह में वेदना होती है । गरदन को गिराता है और उल्टी करता है ।

अथ महापद्म विसर्प के लक्षण

विसर्पस्तुशिशोःप्राणनाशनोबस्तिशीर्षजः ॥१४॥
पद्मवर्णो महापद्मो रोगोदोषत्रयोद्भवः ॥
शंखाभ्यांहृदयंयातिहृदयाद्वागुदंब्रजेत् ॥१५॥

बालक के शिर तथा मूत्राशय में तीनों दोषों के कोप से प्राणों का नष्ट कारक लाल वर्ण का विसर्व रोग पैदा होता है । इसे महापद्म कहते हैं । शिर में पैदा हुआ विसर्प कनपटियों में से हृदय में आता है और हृदय से गुदा में जाता है । उसी प्रकार मूत्राशय में पैदा हुआ विसर्प गुदा में जाता है । गुदा से हृदय में जाता है और हृदय से मस्तक में जाता है । ऐसा जानना चाहिए ।

बालकों के अन्य विकारों को कहते हैं

क्षुद्ररोगेचकथितोस्वजगल्यहिपूतने ॥
ज्वराद्याव्याधयःसर्वेमहतांयेपुरेरिताः ॥१६॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

बालदेहेपितेतद्वद्विज्ञेयाःकुशलैःसदा ॥

क्षुद्र रोग निदान में जो अजगल्ली और अहि पूहना कही है वे दोनों और ज्वरादिक सब व्याधि जो बड़े मनुष्यों के शरीर में होती है और जिन रोगों का पीछे कथन कर चुके है वे सर्व रोग बालकों के शरीर में होते हैं ।

सामान्य वलगृह ग्रसित के लक्षण

क्षणादुद्विजतेबालःक्षणात्त्रस्यतिरोदिति ॥१७॥
नखैर्दन्तौर्दारयतिधात्रीमात्मानमेचच ॥
ऊर्ध्वं निरीक्षतोदन्तान्खादेत्कूजतिजृम्भतो ॥१८॥
भ्रुवौक्षिपतिदंतोष्ठं फेनंवमतिचासकृत् ॥
क्षामोऽतिनिशिजागर्तिशूनांगोभिन्नविटश्वरः।६१
मसिशोणितगन्धिश्चनचाश्नातियथापुरा ॥
सामान्यंग्रहजुष्टानांलक्षणंसमुदाहृतम् ॥२०॥

क्षण भर में बालक विह्वल हो जाय. क्षण भर में रुदन करे नख तथा दातों को चबावें, किलकारी मारें, जम्भाई लेय, भृकुटियों को टेड़ी करै, होटों को काटे, बारम्बार झाग मिश्रित वमन करे, कृश हो जाय, रात्रि में जागरण करे, शरीर में शोष हो जाय, दस्त पतले हो जांय, कंठका पाक हो जाय, और शरीर में मीन के सदृश तथा रक्त के समान दुर्गन्धि आवें । भूख कम हो जाय, कमजोर हो जाय अवयव मलीन हो जाय और बेहोशी को प्राप्त हो जाय ये सम्पूर्ण लक्षण बालग्रह ग्रसित के सामान्य हैं ।

स्कन्दग्रह ग्रसित बालक के लक्षण

एकनेत्रस्यगेत्रम्यस्रावःस्पंदनकंपनम् ॥
ऊर्द्धं दृष्ट्यानिरीक्षेतवक्रस्योरक्तगंधिकः ॥
दंतान्खदतिविस्रस्तःस्तन्यं नैवाभिनन्दति ॥२१॥
स्कन्दग्रहगृहीतानांरोदनंचाल्पमेचच ॥२२॥

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

बालक को एक आंख से पानी गिरे और अंगमें स्वेद वहैं, एक तरफ का अंग फड़के तथा कम्पायमान हो, और वह बालक अर्धं दृष्ट्रि से देखे। मुख टेढ़ा हो जाय रक्त कीसी दुर्गन्धि आवे तथा दांतों को चवावे अवयव शिथिल हो जाय, स्तन पान नहीं करसके, और अल्प रुदन करे ये लक्षण जब बालक को स्कन्द ग्रह पकड लेता है तब होते हैं।

स्कन्दापस्मार के लक्षण

नष्टसंज्ञोवमेत्फेनंसंज्ञावानतिरोदित ॥
पूयशोणितगन्धित्वंस्कन्दापस्मारलक्षणम् ॥२३॥

बालक चेतना हीन हो जाय मुख से झाग निकले, चेतना होने पर रुदन करे, और देह में से रक्त की सी दुर्गंध आवे इन लक्षणों से युक्त बालक को स्कन्दापस्मार से पीड़ित जानना।

शकुनी ग्रह गृसित के लक्षण

स्रस्ताङ्गोभयचकितोविहंगगन्धःसास्रवव्रणापरिपीडितः
समन्ताद ॥ स्फोटैश्चप्रचिततनुःसदाहपाकैर्विज्ञेयो भव-
तिशिशुःक्षतःशकुन्या ।२४॥

जिस बालक को शकुनी ग्रहने ग्रसा होय वह बालक शिथिलाङ्गोवाला, भय से चकित पक्षी के तुल्य गन्ध वाला, स्राव वाले व्रणों से व्यथित, दाह और पके हुए फोड़े से युक्त शरीर वाला होता है।

रेवती ग्रह ग्रसित शिशु के लक्षण

व्रणैःस्फोटैश्चितंगात्रंपंकगंधमसृक्स्रवेत् ॥
भिन्नवर्चाज्वरोदाहीरेवतीग्रहलक्षणम् ॥२५॥

जिसको रेवती ग्रह ने ग्रसित किया हो वह बालक सर्वाङ्ग में घाव और फोड़ों से व्यथित होता है तथा रक्त का स्राव होता है। और कीचड़ कीसी वायु से युक्त एवं ज्वर दाह और दस्तों से पीड़ित होता है।

पूतना गृह गृसितवालक के लक्षण

अतिसारोज्वरस्तष्णातिर्यक्प्रेक्षणरोदनम् ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

नष्टनिद्रस्तथोद्विग्नोत्रस्तःपूतनयाशिशुः ।।

जिसको पूतना गृहने ग्रसा हो वह दस्त, बुखार और प्याह से व्यथित होता है। तथा वक्र दृष्टि से देखता है। रोता है। सोता नहीं है व्याकुल हो जाता है और शिथिल हो जाता है।

अंधपूतना गृह गृसित बालक के लक्षण

छर्दिःकासोज्वरतृष्णावसागंधोऽतिरोदनम् ।।
स्तन्यद्वेषोंऽतिसारश्चाप्यंधपूतनयाभवेत् ।।२७।।

अंधपूतना गृह से पीडित बालक वमन करता है, खाँसी, बुखार, प्याह होती है और चर्बी के तुल्य शरीर से दुर्गन्ध निकलती है। अत्यन्त रोता है और मुख से स्तनों को दाव नहीं सकता तथा दस्तों से युक्त होता है।

शति पूतना गृह गृसित बालक के लक्षण

वेपतेकासतेक्षीणोनेत्ररोगोविगंधिता ।।
छर्द्यतीसारयुक्तश्चशीतपूतनयाशिशु ।।२८।।

शीत पूतना गृह से पीड़ित बालक के दस्त होते हैं मुख की क्रान्ति क्षीण हो जाती है। नेत्र रोग तथा देह में बुरी गन्ध आती है। तथा उल्टी होती है।

मुखमंडिका गृह गृसित बालक के लक्षण

मूत्रगन्धिश्चबह्वाशीमुखमण्डिकयाभवेत् ।।२९।।
प्रसन्नवर्णांव नःशिराभिरवसंबृतः ।।

मुख मंडिका गृह की पीड़ा से दुःखित बालक के आनन की काँति सुन्दर हो जाती है। और शरीर की कांति सुन्दरता युक्त एवं शिराओं से बँधी देह हो जाती है। मूत्र के समान दुर्गन्धि आती है तथा इस गृह से गृसित बालक रोटी ज्यादा खाता है।

नैगमेय गृह गृसित बालक के लक्षण

छर्दिस्यन्दनकंठास्यशोषमूर्छाविगन्धिताः ।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऊर्ध्वंपश्येद्दशेदन्तान्नैगमेयग्रहंवदेत् ॥३०॥

नैग मेष ग्रह से व्यथित बालक वमन करता है कांपता है और कंठ मुख सूख सूख जाते हैं ! मूर्छा दुर्गन्धि आती है और वह बालक दांतों को चबाता है ऊपर की ओर दृष्टि डालता है। जिसके नेत्र स्तब्ध हो गये हों जो दूध न पीता हो जो लगातार मूर्छित होता हो जिसमें गृह के सम्पर्क लक्षण मिलते हैं। वह शिशु मृत्यु को प्राप्त होता है।

इति बाल रोग निदानम्

* * *

अथविषरोगनिदानम्

ग्रह जुष्ट की साध्या साध्यता

प्रस्तब्धाक्ष स्तनद्वेषी मुह्यते चानिशंमुहुः। तंबाल
मचिराद्धन्ति गृहः सम्पूर्ण लक्षणः।
स्थावजंगमंचैवद्विविधंविषमुच्यते ॥
मूलात्मकंतदाद्यंस्यात्परंसर्पादिसम्भवम् ॥१॥

विष स्थावर और जंगम इस रीति से दो प्रकार का है मूलात्मक बिष स्थावर एवं सर्वादिको से उत्पन्न विष जंगम कहा जाता है। स्थावर विष के दम आश्रम है और जंगम बिष के १६ आश्रय हैं।

स्थावर विष के दस लक्षण।

दशाधिष्ठानमाद्यंतुद्वितीयंषोडशाश्रयम् ॥
मूलंपत्रफलंपुष्पंत्वक्क्षीरसारएवच ॥
निर्यासोधातवश्चैवकन्दश्चदशमःस्मृतः ॥ २ ॥

मूल, पत्ते, फल, फूल, छाल दुग्ध सार गोंद, धातु और कन्द इस प्रकार स्थाबर विष दस स्थान है। मूल विष कन्नेर आदि की जड़ में रहता है। पत्र बिष विष पत्रिका आदि में रहता है। फल बिष ककेटि आदि फूलों में रहता है। फूल बेल के पुष्पों में रहता है। छाल सार और गोंद बिष चोटनी आदि को छाल में रहता हैं। दुधीबिष थूहर आदि धातुओं में रहता है और कंद विश बत्सनाम कालकूट वालक कर्दभक आदि में रहता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

जॅंगम विष के १६ स्थान

जँगमस्यविषस्योक्तान्यधिष्ठानानिषोडश ॥
समासेनमयोयानिविस्तरस्तेशुवक्ष्यते ॥ ३ ॥

दृष्टि, निःश्वासदंष्ठ्राश्च, नख मूत्रनमलदानिच, शुक्रलालास्पर्शं मुख सम्देशशवर्दितम् गुदास्थि पित्त शूकानि दशषड़ जङ्गम श्रया ॥३॥ अर्थ दृष्टि निःश्वास, डाढ़, नख, मूत्र, विष्ठा, वीर्य लार स्पर्श उसना अधौवायू, गुदा हड्डी पित्त और शूक, इस प्रकार जङ्गम विष के १६ सोलह आश्रय हैं। दिव्य सर्पों की दृष्टि और निःश्वास में रहता है। भूमि के घोर सपों की दाढ़ में विष रहता है। और वाघ सिंह आदि हिंस्र जीवों की दाढ़ में तथा नाखूनों में विष रहता है। छिपकली आदि के मूत्र और विष्ठा में विष रहता है। चूहे आदि के वीर्य में विष रहता है। मकड़ी आदि कीं लार में विष रहता है चित्र शीवँ आदि को लार में स्पर्श में मूत्र, मल, में, शुक्र में, मुंह में दंश में, अधोवायु में और विष रहता है। सर्प आदि की हड्डियों में विष रहता है धाकुल आदि मीनों के पित्त में विष रहता है। और भौंरों आदि के मुंह के अगले अंग में विष रहता है।

जङ्गम के सामान्य लक्षण

निद्रातन्द्राक्लमंदाहमपाकरोमहर्षणम् ॥
शौथंचैवातिसारंचकुरुतेंजंगमंविषम् ॥ ४ ॥

नीद, तन्द्रा, क्लम दाह अन्न का पाचन न होना रोमाञ्च सूजन और दस्त ये लक्षण जंगम विश के हैं।

स्थाबर विष के सामान्य लक्षण

स्थावरंतुज्वरंहिक्कांदन्तहर्षंगलग्रहम् ॥
फेनच्छर्द्यरुचिश्वासंमूर्च्छांचकुरुतेभृशम् ॥ ५ ॥

बुखार, हिक्का दांतों का घिसना कण्ठ का अवरोध, झाग मिश्रत वमन अन्नद्वेष श्वाश और मूर्छा ये लक्षण स्थावर विष के हैं।

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

विष देने वाले मनुष्य के जानने के लक्षण

इंगितज्ञोमनुष्याणांवाक्‌चेष्टामुखवैकृतैः ॥ जानी
याद्विषदातारमेभिर्लिंगैश्चबुद्धिमान् ॥ ६ ॥ नददात्पु
त्तरंपृष्टोविवक्षुर्मोहमेतिच ॥ अकार्थं बहुसंकीर्णभाषतेचा
पि मूढवत् ॥ ७ ॥ हसत्यकस्मात्स्फोटयत्यंगुलींविलिखे
न्महीम् ॥ वेपथुश्चास्यभवतित्रस्तश्चान्योन्यमीक्षते ।८
विवर्णवक्त्रोऽश्यामश्चनखैःकिंचिच्छिनत्त्यपि ॥ आलभे
तासनंदीनःकरेणचशिरोरुहम् ॥९॥ वर्त्ततेविपरीतंच
विषदाताबिचेतनः ॥

विशेषतर भूपति और उन बड़े पुरुषों को उनके शत्रु सेवक खाने के पदार्थों में विष मिलाकर दे देते हैं अतः वर्ष देने वाले के पहिचानने के लिए लक्षण कहते हैं। पुरुषों के आयं आपको जानने वाले बुद्धिमान पुरुष वाणी चेष्टा और मुंह विकार रूप नीचे लिखे चिन्हों से विषदाता की पहिचान करे। विषदाता से पूछने पर वह जिन कूर कर्म का बेहोशी मे उत्तर न दे और मन का अवरोध करके बोलना चाहे तो बोल नहीं सके। बा घबड़ा जाय, मूढ़ मनुष्य के तुल्य व्यर्थ भाषण तथा गिड़ गिड़ कर अनर्थ वाक्य बोले भय से प्राप्त हुई सन्धियों की वेदना को अलग करने के लिए उंगलियों को चटकावे। निमित्त के बिना ही हँसे। भूमि पर लिखे वा खोदे कांपे भयभीत होकर प्रत्येक व्यक्ति की ओर देखे। मुह की द्युति बदल जाय वा उतर जाय, जले हुए तुल्य वर्ण हो जाय, नाखूनों से त्रण आदि का छेदन करें रँक के सदृश होकर बारम्बार केशों का कर से स्पर्श करें दरवाजे को छोड़े अन्य मार्ग जाने की इच्छा करे, विरुद्ध कार्यों की चेष्टा करे। पागल सा इधर उधर दृष्टि डाले और सब की ओर पीठ करके बैठे, ये लक्षण विष देने वाले मनुष्य के होते हैं। और ये ही लक्षण घोर अपराध करने वाले के होते हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

मूलादि प्रत्येक विष के लक्षण

उद्वेष्टनंमूलविषैःप्रलापोमोहए वच ॥ जृम्भणंवेपनंश्व
सोमोहःपत्रविषेणतुः॥१०॥ मुष्कशोथः फलजिषैर्दाहोऽ
न्नद्वेषयेवच॥भवेत्पुस्पविषैश्छर्दिराध्मानश्वासरावच ११
त्वक्सारमिर्यासविषैरुपयुक्तैर्भवन्तिहि ॥ आस्यदौर्ग
न्ध्यपारुष्यशिरोरुक्कफसंस्रवाः ॥ १२ ॥ फेनागमःक्षीर
विषैर्विड्भेदोगुरुजिन्हता ॥ हृत्पीडनधातुविषैर्मुर्छा
दाहश्चतालुनि ॥प्रायेणकालघांतीनिविषाण्येतानिनि
र्दिशेत् ॥ १३ ॥

मूल विष भक्षण से उद्वेष्टन वेहोशी तथा प्रलाप होता है पत्र विष के भक्षण से करने जम्भाई आती हैं कम्प और श्वास आती हैं
जाती हैंफल विष के भक्षण करने से अंड कोषों में सूजन दांत और अन्न में अरुचि हो

पुष्प के विषके भक्षण से उल्टी अफरा और मूर्छा होती है छाल सार औरगोंद के विष को खाने से मुँह में बुरी गन्ध, सिर में वेदना तन में रुक्षता और कफ का स्राव होता है।

क्षीर विष के भक्षण से, मुख में झाग आते हैं और भीर में जड़ती हो जाती है।

धातु विष भक्षण से हृदय में व्यथा और तालु में दांह होता है, पूर्वोक्त ९ बिषों के खाने से विशेषता कालान्तर में मनुष्यको प्राप्त होता है

विष लिप्त के शस्त्रहत के लक्षण

सद्यःक्षतंपच्यतेतस्यजन्तोः स्रवेद्रक्तंपच्यतेचाप्यभीक्ष्ण
म् ॥ कृष्णीभूतांक्लिन्नमत्यर्थपूतिक्षतान्मांसंशीर्यतेय
स्पचापि ॥१४॥ तृष्णामृच्छाज्वरदाहौचयस्यदिग्धाहतंम

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

नु नं त्तंऽयवस्येत्लिंगान्येतान्येवकुर्यादमित्रैर्व णेविषंय
स्यदंत्त प्रमादात् १५

घाव तत्क्षण पाक को प्राप्त हो जाय और रक्त का स्राव होता रहैं बारम्बार पके घावमें से काला क्लेद युक्त तथा अत्यन्त दुर्गन्धित माँस पतितहो जाय लगे बाहर संताप हो भीतर दाह हो और मूर्छा भी होय तो जानना कि इस पुरुष के विष से बुझे हुये शस्त्र का प्रहार हुआहै। है जंगम विष के आदि तीक्षण होने से उनका अ श्रन प्रथम सर्प विष के लक्षण कहते हैं।

बातपित्तकफात्मानोभोगिमण्डलिराजिलाः ॥
यथाक्रमंसमाख्याताब्द्यन्तराद्वंद्वरूपिणः ॥ १६ ॥

प्रधानता से प्राय: 'भोगी, मंडली, राजिल इस तरह तीन प्रकार के सर्प होते है। इनमें भोगी सर्प बात प्राकृति वाले तथा मंडली जाति के सर्पों की पित्त प्रकृति और राजिल जाति के सर्पों की कफ प्राकति होती हैं और जो एक जाति के सर्प से दूसरी जाति की सर्पिणी में सर्प उत्पन्न होता है। कि उसकी मिश्रित प्रकृति होती हैं फण वाले सर्पको भोगी कहते हैं और उसके बीस भेद हैं। जो सर्प अनेक मन्डलों से चित्रित स्थूल और मन्दगति वाले हैं वे मंडली जाति के सर्प–वह्नि तथा सूर्य के तुल्य तीक्ष विष वाले होते है। इनके छ: भेद हैं और जो सर्प स्निग्ध तथा आड़ा–सीधी ऊँची रेखाओं से चित्रित दीखते वह राजिल जाति के सर्प हैं छः प्रकार के होते हैं

भोगी सर्पादिकों के काटने के लक्षण

दंशोभोगिकृत्तः कृष्णःसर्वबातविकारकृत
पीतोमन्डलिजःशोथोमृदुःपित्तविकारवान् ॥ १७ ॥
राजिलोत्थोभवेद्दंशःस्थिर शोथश्चपिच्छिलः ॥
पान्डुःस्निग्धोऽतिसान्द्रासृक्सव श्लेष्मविकारवान् १८

भोगी सर्प का काटा हुआ स्थान कृष्ण बर्ण का होता है। और सम्पूर्ण वातादि लक्षणों को पैदा करता है मंडली सर्प का काटा हुआ स्थान पीला सूरज युक्त होता

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

है । कोमल और पित्त सम्बधी विकारों की उत्पत्ति करता है। राजिल सर्प की कसटी हुई जगह स्थिर सूजन युक्त स्निग्ध पाँडु अति गाड़े रक्त वाली और सम्पूर्ण कफ के विकारों को उत्पन्न करने वाली होती हैं ।

विशिष्ट देश तथा नक्षत्रमें काटने के असाध्य लक्षण

अश्वत्थदेवायतनश्मशानवल्मीकसंध्यासुचतुष्पथेषु ।
याम्येचदष्टाः परिवर्जनीयाऋक्षेशिरामर्मसुयेचदष्टाः

पीपल के वटके नीचे, देव मन्दिर में श्मशानभूमि में वांवी में चौराहे में, सन्ध्या काल में, भरणी और मघा नक्षत्र में हर्ष का काटा हुआ मनुष्य असाध्य हो जाता है सिरा मर्म स्थानों में काटा असाध्य है ।

दर्वीकर जाति के सर्पों का विष

दर्वीकराणांविषमाशुहन्तिसर्वाणिचोणेद्विगुणीभवंति

दर्वीकर जाति के सर्प का विष तत्क्षण मृत्युगत करदेता है और वह सर्पवर्षावायु और गर्मी के संयोग में दुगुने बढ़ते हैं अथवा इनके संयोग से उनका विष देना बढ़ता है ।

अजीर्णपित्तातपपीडितेषुबालेषुवृद्धेषुबुभुक्षितेषु ॥
क्षीणक्षतेमेहिनिकुष्ठयुष्टेरूक्षेऽबलेगर्भवतीषु चापि २०

अजीर्ण से व्यथित,पित्त से, और सूर्य की ताप से पीड़ित, बालक बृद्ध भुक्षति, क्षीण धाव,प्रमेह रोगों, कुष्ठ रोगी रुक्ष शरीर वाला कमजोर पुरुष, और गर्भ वाली स्त्री, ये विष से तत्काल मृत्यु को प्राप्त हो जाते है ।

सर्प के काटे के असाध्य लक्षण

शस्त्रक्षतेयस्यनरक्तमेतिराज्योलताभिश्चनसम्भवंति ।
शीताभिरद्भिश्चनरोमहर्षौंविषाभिभूतंपरिवर्जयेत्तम् २१
जिह्मंमुखंस्यखंचकेशशातोनासावसादश्चसकंठभगः॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

रक्तःमकृष्णश्वयथुश्चदंशेहन्वोःस्थिरत्वंचविवर्जनीयः२२

विष से व्यथित मनुष्य के शरीर में से शस्त्रसे घाव करने पर रक्त न निकले चाबुक मारने से शरीर में नही उछले, और शीतल जल के बारम्वार डालने से रोमान्च नहीं खड़े होय तो मनुष्य का जहर उतारना व्यर्थ है। और जिसका मुख टेड़ा हो गया हो छूने से वाल टूट कर गिर पड़े नासिका टेड़ी हो जाय, गर्दन झुक जाय लटक जाय काटने का स्थान काला लाल सजन युक्त स्थिर होय तो वह चिकित्सा के योग्य नहीं हैं।

और असाध्य लक्षण

वर्तिर्घनाय स्यनिरेतिवक्राद्रक्तं स्रवेदूर्ध्वंमधश्चयस्य ।।
दंष्ट्राभिघाताश्चतुरस्ययस्यतंचापिवैद्यःपरिवर्जयेत्तु २३
उन्मत्तमत्यर्थमुपद्रुतंवाहीनस्वरंचाप्यथवाविवर्णम् ।।
सारिष्टमत्यर्थमवेगिनंचजह्यान्नरंतत्रनकर्मकुर्यात २४

जिसके मुखसे गाढ़ी वमन निकले नासिका, मुख लिङ्ग तथा गुदा, आदि में से रक्त का स्राव हो। और जिसके चार दात लगे हो वहभी चिकित्सा के योग्य नहीं हैं। और जो मनुष्य उन्मत्त होय बुखार तथा दस्तों से व्यथित होय वोलनें में शक्ति हनी होय शरीर की काँति वदल गई हो नासिका बैठगया इन अरिस्ठ लक्षणों से युक्त और जिसके विषकीं लहर न उठे वह त्याज्य है इन लक्षणों से युक्त मनुष्य की कदापि चिकित्सा नहीं करनी चाहिये। क्यों कि ये बुखार के तत्काल मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं।

दूषित विष के लक्षण

जीर्णविषघ्नौभिर्हतंवादावाग्निवातातपशोषितंवा ।।
स्वभावतोवागुणविप्रहीनंविषंहिदूषीविषतामुपैति २५

जो विष अत्यन्त प्राचीन हो गया हो अथवा विष नाशकर्ता औषधियों से हीन वीर्य होय अथवा दावाग्नि वायु और सूर्य की ताप से सूख गयाहो अथवा स्वाभाविक

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

दस गुणों में से एक दो तीन चार गुणों सेरहित होगया हो तो उसे दूषी विष कहते हैं।

दूषीविष के कार्य

वीर्याल्पभावान्ननिपातयेत्तत्कफावृन्वतं वर्षगणानुबन्धि ।
तेनार्दितोभिन्नपुरीषवर्णो वैगन्ध्यवैरस्ययुतःपिपासा २६
मूर्च्छाभ्रमंगद्गदवाग्वमित्वं विचेष्टमानोऽरतिमाप्नुयाद्वा

ये दूषीविष हीन वीर्य होने वजह की से मृत्यु तो नहीं करता है । किन्तु कफ से उष्णादि गुणों के मन्द होने के कारण और कफ से अग्नि की मन्दता होकर यह विष पाक को प्राप्त नहीं होता है अतएव शरीर में चिरकाल तक रहता है । इससे पीडिका मनुष्य का दस्त पतला आता है शरीर का वर्ण वदल जाता है । विरुद्ध चेष्टा हो जाती है चैन नहीं प्राप्त होता और मूर्छा भ्रम वर्णा मग्ददपना और वमन आदि पैदा हो जाती हैं ।

स्थान भेदसे दूषा विष के विशेष लक्षण

आमाशयस्थेकफवातरोगीपक्वाशयस्थेऽनिलपित्तरोगी
भवेत्समुद्धस्तशिरोरुहाँगोविलूनहृत्त्यथाविहंगः २८

यदि दूषि आमाशय में प्राप्त होता है तो कफ और वात सम्बन्धी रोगों को उत्पन्न करता है और पक्वाशय में स्थित हो तो वात ओर पित्त सम्बन्धी रोगों की उत्पत्ति करता है । मस्तक वालों तथा अङ्गों के रोगों में प्राप्त होय तो पंख हीन पंक्षी के तुल्य करदेता है ।

कुपित हुये दुषी विष का पूर्व का पूर्वरूप तथा रूप

निद्रागुरुत्वंचविजृम्भणंचविश्लेषहर्षावथवाँगमर्दम् ॥
ततःकरोत्यन्नमदाविपाकावरोचकंमन्डलकोठजन्म २६
मांसक्षयंपादकरप्रशोथंमूर्च्छां तथार्छदिमथातिसारम् ॥
दूषीविषश्वासतृषौचकुर्यां ज्वरप्रवृद्धिं जठरस्यचापि ३०
उन्मादमन्यज्जनयेत्तथान्यद्दाहं तथान्यत्क्षपयेचशुक्र

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

म् । गद्गद्यमन्यज्जनयेच्चकुष्ठं तांस्तान्वि कारांश्च बहुप्रकारान् ॥ ३१ ॥

निद्रा, शरीर में गुरुता, जम्भाइयों का आना, अवयवों में शिथिलता रोमाञ्च अङ्गों का टूटना ये लक्षण कुपित हुये दूषी विष के पूर्वरूप के है। ये लक्षण प्रथम उत्पन्न होकर भोजन करने के पश्चात सुपारी के तुल्य मदको करता है अन्न का पाचन नहीं होने देता, और अन्न में द्वेष शरीर के चकत्तो तथा ग्रन्थियों का पैदा करता है मांसक्षय, हाथ पैरो में शोथ मूर्छा वमन दस्त श्वास प्यास बुखार और पेट को बढ़ाता है। ३१ और पूर्वोक्त दूषी उन्माद को पैदा करता है। कोई दूषी विष आनाह को पैदा करता कोई वीर्य को क्षीण तथा कोई बाणी को गद्गद करता है। और कोई कोढ़ तथा विविध प्रकार के बिसर्प तथा बिस्फोटआदि उपद्रवों को पैदा करता हैं।

दूषी बिष को निरुक्ति के लक्षण

दूषितंदेशकालान्नदिवास्वप्नैरभीक्ष्णशः ॥
कस्मात्संदूषयेद्धातून्तस्माद्दूषीविषंस्मृतम् ।३२॥

देश काल, अन्न, और दिवा निद्रा से बारम्बार दूषित हुआ यह विष धातुओं को दूषित करता है इस कारण यह विष कहा जाता है।

जल प्राय आदि देशों से, मेघों से घिरे हुये दिन आदि कालसे, और कुलथी, तिल, मसूर, आदि अन्नो से यह विष दूषित होता है। दूषी विष दो प्रकार का होता है। एक कृत्रिम दूसरा गर जिस में विष का सम्बन्ध होय वह कृत्रिम और निर्विष द्रव्यो के संयोग से होय उसको गर कहते हैं।

कृत्रिम विष के लक्षण

सौभाग्यार्थं स्त्रियःस्वेदंरजोनानांगजान्मलान् ॥ शत्रुप्रयुक्तांश्चगरान्प्रयच्छंत्यन्नमिश्रितान् । ३३ । तैःस्यात्पाण्डुःकृशोऽल्पाग्निर्ज्वरश्चास्योपजायते ॥ मर्मप्रधमनाध्यमानं हस्तयोःशोथलक्षणम् ।३४। जठरग्रहणो

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

दोषोयद्मगुल्मक्षयाज्वरः ॥ एवविधस्यचान्यस्यव्या
धेलिंगानिनिर्दिशेत् ॥३५॥

स्त्रियें पति को वश में करने के लिए स्वेद, रज और अंग के अनेक मलों को भोज्य पदार्थ मिलाकर पतियों को खिला दती हैं तथा शत्रु भी इसी तरह से भोजन में मिलाकर मनुष्यों को खिला देते हैं। पसीना आदि अधर्म पदार्थ को गर कहते हैं।

अथ गर का कार्य

स्वेद तथा रज आदि गर से पांडुता होती है, शरीर कुश हो जाता है। मन्दाग्नि, तथा बुखार आता है। मर्म स्थानों में बेदना, अफरा, धातुक्षय, और शोथ हो जाता है। उदर रोग गृहणी, राजक्षमा, गुल्म, क्षय, बुखार, इन रोगों के तथा इसी प्रकार के रोगों के लक्षण होते है।

दूषा विष के असाध्यादि लक्षण

साध्यमात्मवतःसद्योयाप्यंसंवत्सरोषितम् ॥
दूषीविषमसाध्यंतुक्षीणस्यादितसेविनः ॥ ३६ ॥

दूषी विष उदर में पहुँचने से उसी समय यत्न करने से और रोगी पथ्य में रहने से साध्य है। और एक साल बीतने पर याप्य हैं और क्षीण तक्षा अपथ्य सेवन करने वाले के असाध्य है।

लूता नामक जन्तु की उत्पत्ति

यस्माल्लूनंतृणंप्राप्तामुनेःप्रस्वेदबिंदवः ॥
तस्माल्लूताःप्रभाष्यन्तेसंख्ययातास्तुषोडश ॥३७॥

राजाओं में श्रेष्ठ विश्वामित्र किसी समय वशिष्ठ के स्थान में जाकर महामुनी वशिष्ठ को क्रोधित करते भये, तव कुपित हुए मुनि के ललाट में स्वेद विन्दु निकली वे विन्दु समीपस्थ गौ भक्षणार्थ जो बृक्ष कटे हुए पड़े उन पर पड़ी, इसी से लूता मकड़ी की उत्पत्ति हुई। उन लूताओं की सोलह जाति हैं। इन सोलहों के भी दो भेद हैं एक कृच्छ्र साध्य दूसरी असाध्य।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

लूना के काटने का लक्षण

ताभिर्दष्टेदंशकोथप्रवृत्तिःक्षतजस्यच ॥ ज्वरोदाहो
ऽतिसारश्चगदाःस्युश्चत्रिदोषजाः ॥ ३८ ॥ पिडिका
विविधाकारामन्डलानिमहान्तिच ॥ शोथामहान्तो
मृदवोरक्तश्यावाश्चलास्तथा ॥ ३९ ॥ सामान्यंसर्वलू
तानामेतद्दंशस्यलक्षणम् ॥

लूता यदि काटे तो वह काटा हुआ स्थान सड जाता है । रक्त का स्राव होने लगता है । बुखार आ जाता है दाह तथा दस्त हो जाते हैं । सन्निपातिक रोगों की उत्पत्ति होती है और विविध प्रकार की पिडिकाएं पैदा हो जाती हैं । बड़े बड़े जाते हैं और दीर्घ गम्भीर मृदु लाल चपल तथा कलौंस युक्त सूजन होती है । लूता के काटने के ये सामान्य लक्षण हैं ।

दंशमध्येतुयत्कृष्णंश्यावंवाजालकावृतम् ॥४०॥
ऊर्ध्वाकृतिभृशंपाकंक्लेदशोथज्वरान्वितम् ॥
दूषीविषाभिर्लूताभिस्तद्दष्टमितिनिर्दिशेत् ॥४१॥

देश में काला अथवा कछुक झाई वाला जाले सहित, जले से तुल्य अत्यन्त वाला और क्लेद, सूजन तथा बुखार ये लक्षण होंय, तो जानना कि दूषी विष नामक लूता का काटा हुआ है ।

प्रावहर लूता के लक्षण

सर्पाणामेवविण्मूत्रशवकोथसमुद्भवाः ॥
दूषीविषाःप्राणहराइतिसंक्षेपतामताः ॥४२॥
शोथाःश्वेताऽसितारक्ताःपीताःसपिडिकाज्वराः ॥
प्राणान्तकाभिजायन्तेदाहहिक्काशिरोग्रहाः ॥४३॥

सर्पों के मल मूत्र मे अथवा मृतक हुए सर्प के कीड़े के सड़ जाने से दूषी विष से कृमि पैदा हो जाते हैं । वे प्राण नाशक होते हैं उनका काटा हुआ

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

स्थान शोथ युक्त सफेद लाल तथा पीत पिडिकाओं से व्याप्त होता है। बुखार आता है और प्राण नाशक दाह श्वास हिचकी और मस्तक में व्यथा होती है।

मूषक विष के लक्षण

आदंशाच्छोणितंपांडुमण्डलानिज्वरोऽरुचिः ।।
लोमहर्षश्चदाहश्चाप्याखुदूषीविषार्दिते ।।४४।।

चूहे के काटने के स्थान का रक्त पीला हो जाता है। चकत्ते पड़ जाते हैं। बुखार अरुचि रोमाञ्च हो जाते हैं। और दाह होता है।

प्राण हर्ता मूषक विष के लक्षण

मूर्च्छाङ्गशोथवैवर्ण्यक्लेदोमन्दश्रुतिज्वरः ।।
शिरोगुरुत्वंलालासृक्छर्दिश्चासाध्यमूषकैः ।।४५ ।।

असाध्य विष वाले मूषे के काटने से मूर्छा, अंगों में शोथ, कान्ति का बदल जाना, क्लेद वधिरता ज्वर शिर में गुरुता, लार का गिरना और रक्त की वमन ये लक्षण होते हैं। अन्य ग्रन्थान्तर के मत से चूहे के काटने से शरीर में चूहे के समान सूजन होती है।

नीला के काटने के लक्षण

कार्ष्ण्यं श्यावत्वमथवानानावर्णत्वमेवच ।।
मोहोऽथवर्चसोभेदोदष्टेस्यात्कुकलासकैः ।।४६।।

नीला के काटने से शरीर का वर्ण कृष्ण वर्ण का, अथवा नीला हरा तथा विविध प्रकार का होता है तथा उस रोगी के भ्रान्ति और अतिसार होता है।

वृश्चिक विष के लक्षण

दहत्यग्निरिवादौतुभिनत्तीवोर्ध्वमाशुवै ।।
बृश्चिकस्यविषंयातिपश्चाद्दंशेऽवतिष्ठति ।।४७।।

बिच्छू के काटने से प्रथम आग के जलने के समान दाह होता है। फिर जल्दी से ऊपर को चढ़ कर मानों अवयवों को भेदता हो ऐसी वेदना करता है। पश्चात् कुछ काल में काटने के स्थान पर वह विष स्थित

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हो जाता है

वृश्चिक विष के असाध्य लक्षण

दष्टोसाध्यस्तुत्हृद्घ्राणरसनोपहरतोनरः ॥
मांसै पतद्भिरत्यर्थवेदनार्तोजहात्यसून ॥४८॥

असाध्य विष वाला विच्छू काटे तो हृदय नासिका जिव्हा ये निज-निज कार्य को नहीं करते हैं। इस प्रकार की पीड़ा होती है। मांस गल कर पतित हो जाता है। और इस व्यथा से प्राण भी नष्ट हो जाते हैं।

कणभ कृमि के काटने के लक्षण

विसर्पः श्वयथुःशूलंज्वरश्छर्दिरथापिवा ॥
लक्षणंकणभैर्दष्टेदंशश्चैवविशीर्यते ॥४९॥

कणभ नामक कृमि काटें तो विसर्प शोथ शूल, बुखार और उल्टी होती हैं और जैसे काटने की जगह गल जाती है।

अथ चीटा झींगुर काटने के लक्षण।

हृष्टरोमोच्चिटिंगेनस्तब्धलिंगोभृशार्तिमान् ॥
दष्टःशीतोदकेनेवसिक्तान्यंगानिमन्यते ॥५०॥

काले और दीर्घ रोम वाला झींगुर अथवा चीटा काटे तो, सम्पूर्ण स्तब्धता के लक्षण होते हैं व्यथा ज्यादा होती है और जैसे गर्म शरीर पर ठंडा जल छिड़क दिया हो ऐसा प्रतित होता है।

मंडूक विष के लक्षण

एकादंष्ट्रार्दितःशूनःसरुजःपीतकःसतृट् ॥
छर्दिर्निद्राचसविषैर्मण्डूकैर्दष्टलक्षणम् ॥५१॥

विषैले मंडूक के काटने से उस स्थान में एक ही डाठ उठ आती है। व्यथा युक्त पीली सूजन होती है। प्याह निन्दा तथा वमन आती है।

सविष मत्स्य के विप के लक्षण

मत्स्यास्तुसविषाःकुर्युर्दाहंशोथंरुजंतथा ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

विष युक्त मछली के काटने से दाह, सूजन और व्यथा होती है।

जलौका विष के लक्षण।

कन्डूशोथंज्वरंमूर्च्छांसविष स्तुजलौकसः ॥५२॥

विषैली जौंक के काटने से खुजली, शोथ ज्वर और मूर्च्छा इत्यादि लक्षण पैदा हो जाते हैं।

गृह गोधिका के विष के लक्षण।

विदाहंश्वयथुंतोदंस्वेदंचगृहगोधिका ॥

छिपकली के काटने से दाह तथा शोथ होता है भौंकने तथा तोड़ने सरीखी व्यथा होती है और अवयवों में स्वेद का निर्गमन होता है।

शतपदी के विष के लक्षण

दंशेस्वेदंरुजंदाहंकुर्याच्छतपदीविषम् ॥५३॥

कान खजूरा काटे तो काटने की जगह स्वेद आता है। पीड़ा और दाह होता है।

मशक विष के लक्षण

कन्डूमान्मशकैरीषच्छोथःस्यान्मन्दवेदनः ॥

मच्छर के काटने से खुजली सहित अल्प व्यथा युक्त कुछ सूजन होती है।

असाध्य मशक के विष के लक्षण।

असाध्यकीटसदृशमसाध्यमशकक्षतम् ॥५४॥

असाध्य विषैले मच्छर काटे तो असाध्य मकोड़े आदि के समान असाध्य होता है।

विष मक्षिका के काटने के लक्षण।

सद्यःप्रस्राविणीश्यावादाहमूर्च्छाज्वरान्विता ॥
पिडिकामक्षिकादंशेतासांतुस्थगिकाऽसुहृत् ॥५५॥

विषैली मक्खी काटे तो तत्काल स्राव वाली काली दाह युक्त मूर्छा सहित और बुखार वाली पिडकाएँ पैदा होती है सुश्रुतोक्त छः प्रकार की मक्खियों में स्थगिका नाम वाली मक्खी का तत्काल प्राण हन्ता है

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

व्याघ्रादि विष के लक्षण

चतुष्पद्भिर्द्विपद्भिर्वानखदन्तवि चयत् ।।
शूयतेपच्यतोचापिस्रवतिज्वरयत्यपि ।।५६।।

चार पैर वाले व्याघ्रादिक अथवा दो पैर वाले जंगली मनुष्यादिकों के नाखूनों से और दन्तों से जो व्रण होता है वह योथ युक्त तो पक जाता है स्राव होता है और बुखार को उत्पन्न करता है ।

विगत विष मनुष्य के लक्षण

प्रसन्नदोषंप्रकृतिस्थधातुमन्नाभिकांक्षंसममूत्रविट्कम् ।
प्रसन्नवर्णेन्द्रियचित्तचेष्टंवैद्योऽवगच्छेदविषमनुष्म् ।।

वातादिक दोष स्वाभाविक स्थिति में प्राप्त हो जाय, धातुएं भी स्वाभाविक स्थिति में हो जाय, अन्न भक्षण की इच्छा होय, मल मूत्रों का अच्छी तरह से निर्गमन होय, वर्ण इन्द्रिये चित्त तथा चेष्टा प्रसन्न हों जांय तो उस रोग को वैद्य विगत अर्थात् विष रहित जाने ।

इति विष निदानम्

। इति श्री पं० चोखेलाल कृतायां कृष्णा नन्दिनी भाषा टीकायां
माधव निदाने विष निदानम् समाप्तम्

इति माधवकर प्रणीत माधव निदानम्

❀ समाप्तम् ❀

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

चिकित्सक शिरोमणि माधवाचार्य ने बहुत से रोगों का वर्णन अपने ग्रन्थ में नही किया है अतः आधुनिक समय के वैद्यों को अन्य रोगों का बहुत काम पड़ता है इसलिए अन्य ग्रन्थान्तरों से अन्य रोगों का वर्णन इस ग्रंथ में करते हैं ।

सर्वप्रथम सोमरोगनिदानम्

सोम रोग की उत्पत्ति कहते हैं ।

स्त्रीणामति प्रसंगेन शोकाच्चापि श्रमादपि अती
सारिकयोगाद्वा गरयोगात्तथैवच ॥१॥
आपा सर्व शरीरस्थाः क्षुभ्यान्ति प्रस्रवन्ति च
तस्यास्ताः प्रच्युताः स्थानान्मूत्रमार्गः व्रजन्तिहि ॥२॥

अर्थ—अत्यन्त स्त्री प्रसंग से अति शोक से, अति परिश्रम से अतिसार के योग से, अति प्रयोग स्त्रियों के सर्व शरीर में स्थित जल क्षुभित होकर बहता है पीछे वह जल स्थान से भ्रष्ट होकर मूत्र के मार्ग में जाता है ।

अथ सोम रोग के लक्षण

प्रसन्ना विमलाः शीता निर्गन्धा नीरुजाः सितः
स्रवन्ति चातिमात्रं ताः सानशक्नोति दुर्वणा ॥ ३ ॥
वेगंधारयितुं तासां न विन्दन्ति सुखंक्वचित् शिरः
शिथिलता तस्या मुखंतालु च शुष्यति ॥ ४ ॥
मूर्छां ज्टम्भा प्रलापश्च त्वग्रूच्छा चाति मात्रतः भक्ष्यै-
भौंज्यैश्च पेयैश्च नतृप्तिं लभते सदा ॥ ५ ॥
सन्धारणच्छरीरस्य ता आपः सोमसंज्ञिताः स्वतः

स्त्रीणां सोमरोग इतिस्मृत

अर्थ—प्रसन्न, स्वच्छ, गन्धहीन, निर्मल, सफेद और वेदना हीन जल का अत्यन्त स्राव होता है उस जल के वेग को रोकने से शक्ति हीन होकर दुर्बल स्त्री निरन्तर बेचैन रहती है। शिर शिथिल हो जाता है। मुँह और तालु सूखने लगता है मूर्छा और जम्भाई आती है। प्रलाप होता है। त्वचा अत्यन्त रुक्ष हो जाती है और भक्ष भोज्य और पीने के पदार्थों से कभी तृप्ति नहीं होती है। यह जल शरीर को धारण करने वाला होने से सोम कहा जाता है। और यह रोग सोम धातु का क्षय रूप है।

इति सोम रोग निदानम्

—०—

अथ क्लीव के कारण

रेतोदोषोद्भवंक्लैब्यंयस्माच्छुद्धचैवसिध्यति ॥
अतोवक्ष्याभितेसम्यगग्निवेशयथातम् ॥१॥
बीजध्वजोपघाताभ्यांजरयाशुक्रसंक्षयात् ॥
वैक्लव्यसम्भवस्तस्यशृणुसामान्यलक्षणम् ॥२॥

वीर्य के दोष से ही नपुंसक होना कहा है। वीर्य शुद्धि से ही उसकी शुद्धि होती है। अतः हे अग्निवेश मैं तेरे आगे क्लीव के लक्षण कहता हूं। नपुंसक के चार भेद हैं। १—वीर्य के उपघात से २—ध्वजोपघात से ३—वृद्धापन से ४ वीर्य के नष्ट होने से जो नपुंसकता होती है। उसके सामान्य लक्षणों को तुम सुनो।

नपुंसक के सामान्य लक्षण

संकल्पप्रवणोनित्यंप्रियावश्यमथापिवा ॥
नयातिलिंगशैथिल्यात्कदाचिद्यातिवापुमान् ॥३॥
श्वासार्तःस्विन्नगात्रांसोमोघसंकल्पचेष्टितः ॥
म्लानशिश्नश्चनिर्बीजःस्यादेतत्क्लैब्यलक्षणम् ॥४॥

अपने को प्रिय तथा वशीभूत योषित के प्राप्त होने पर जो मनुष्य मैथुन नहीं करता है । और करता है । और करता है तो जब कभी करता हैं । वह मनुष्य श्वास से व्यथित होय, देह में श्वेद का आगमन हो, निष्फल मनोरथ और चेष्टा होय, लिंग शिथिल और बीज हीन हो ये नपुंसक के सामान्य लक्षण हैं ।

बीजोपघात नपुंसक के लक्षण

सामान्यलक्षणंह्येतद्विस्तरेणप्रवक्ष्यते ॥
शीतरूक्षाम्लसंक्लिष्टविरुद्धाजीर्णभोजनात् ॥५॥
शोकचिन्ताभयत्रासात्स्त्रीणांचात्यर्थसेवनात् ॥
अभिचारादविस्रम्भाद्रसादीनांचसंक्षयात् ॥६॥
वातादीनामोजसश्चतथैवानशनाच्छ्रमात् ॥
नारीणामनाभिज्ञत्वात्पंचकर्मापचारतः ॥७॥
बीजोपघातोभवतिपाण्डुवर्णःसुदुर्बलः ॥
अल्पप्रजोपहर्षश्चप्रमदासुभवेन्नरः ॥८॥
हृत्पाण्डुरोगतमककामलाश्रमपीडितः ॥
बीजोपघातजंक्लैब्यंध्वजभंगकृतंशृणु ॥९॥

पूर्वोक्त कहे हुए नपुंसक के सामान्य लक्षण का विस्तार सहित वर्णन करते है । ठण्डे, रुक्ष, अल्प मिश्रित तथा निषिद्ध कच्चा अन्न इत्यादि पदार्थों के भक्षण करने से अम्ल, चरपरा कषैला भक्ष पदार्थं खाने से शोक, चिन्ता भय और त्रास तथा अत्यन्त मैथुन से किसी शत्रु के जादू से तथा अविश्वास से रसादि धातुओं के नाश होने से, वातादि दोषों के बृद्धिगत होने से वृत और श्रम से, स्त्री सुख के बिना जानने से, पंच कर्म के अपचार से, बीज के विकार से वीज का रंग पीत वर्ण का हो जाता है । तथा शरीर बलहीन हो जाय । तथा अल्प सन्तान होने वाले पुरुष को और प्रसंग की इच्छा न हो हृदय रोग और पाण्डु रोग होय तमकश्वासी

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

कामला अनायास श्रम इनमे व्यथित हो ये लक्षण वीजोपघात क्लीव के हैं।

ध्वज भंग क्लीव की पैदा

अत्यम्ललवणक्षारविरुद्धाजीर्णभोजनात् ॥
अत्यम्बुपानाद्विषमपिष्टान्नगुरुभोजनात् ॥१०॥
दधिक्षीरानूपमांससेवनादतिकर्षणात ॥
कन्यानांचैवगमनादयोनिगमनादपि ॥११॥
दीर्घरोम्नींचिरोत्सृष्टांतथैवचरजस्वलाम् ॥
दुर्गंधांदुष्टयोनिंचतथैवचपरिस्रुताम् ॥१२॥
नरस्यप्रमदांमौहादतिहर्षात्प्रगच्छतः ॥
चतुष्पदाभिगमनाच्छेफसश्चाभिघाततः ॥१३॥
अधावनाद्वामेढ्स्यशस्त्रदंतनखक्षतात् ॥
काष्ठप्रहारानेश्शाषशूकांनचतिसेवनाम् ॥१४॥
रेतसश्चप्रतीघातोद्ध्वजभंगःप्रवर्त्तते ॥

खट्टा ज्यादा खाने से, नोंक दा खार कच्चा अन्न खाने से, अत्यन्त जलपान से, विषमात्र और गुरु पदार्थ भक्षण से, दही, दुग्ध, जलनिवासी पक्षियों के माँस भक्षण से, व्याधि से कृशि होने से, कन्या के संग मैथुन करने से, योनि हीन स्त्री के साथ रमण करने से अथवा गुदाभँजन से और दीर्घ वालयुक्त जिसकी योनि और जिसने चिरकाल से विषय करना त्याग दिया हो, तथा रजस्वला और बुरी गन्ध वाली योनि जिसकी होय और सोमादि स्रावित वा पुष्ट जिसकी योनि होय ऐसी स्त्रियों के साथ मैथुन करने से, वा उत्तम हो स्त्री प्रसंग करने से, सहर्ष गमन करने से तथा अजा कुतिया आदि की योनि में गमन करने स तथा लिंग में चोट के प्रहार से तथा लिंग ये अच्छी से न धोने से और शस्त्र, दांत नाखून इनके लगने से लकड़ी आदि के प्रहार से, लिंग के पिच जाने से तथा लिंग के स्थूल करने के कारण

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

निषिद्ध प्रयोग करनें से अर्थात् शूकादि का अत्यन्त सेवन करने से तथा वीर्य के दूषित होने से पुरुष के ध्वज भंग अर्थात लिङ्ग उन्नत जाय फिर मुरझा जाय यह रोगहोता है इसके लक्षण कहते है ।

ध्वज भग क्लीव के लक्षण।

श्वयथुर्वेदनामेढेरोगश्चैवोपलक्ष्यते ॥१५॥
स्फोटाश्चतीव्राजायन्तेलिंगपाकोभवत्यपि ॥
माँसबृद्धिर्भवेच्चापिव्रणाःक्षिप्रंभवंत्तपि ॥१६॥
पुलापोदकसंकाशःस्रावःश्यावारुणप्रभः ॥
वलयीकुरुतेचापिकठिनंपरिग्रहम् ॥१७॥
ज्वरस्तृष्णाभ्रमोमूर्छाच्छर्दिश्चास्योपजायते ॥
रक्तंकृष्णंस्रवेच्चापिनीलमाविललोहितम् ॥१८॥
अग्निनेवचदधतीव्रोदाहःसवेदनः ॥
बस्तौबृषणयोर्वाऽपिसीवन्यांवंक्षणेषुच ॥ १९ ॥
कदाचित्पिच्छिलोवापिपाण्डुस्रवश्चजायते ॥
श्वयथुश्चभवेन्मन्दस्तिमितोऽल्पपरिस्रवः ॥ २० ॥
चिरात्सपाकंव्रजतिशीघ्रंवाथप्रपद्यते ॥
जायन्तेकृमयश्चापिक्लिद्यतेपूतिगंधिच ॥ २१ ॥
प्रशीर्यतेमणिश्चास्यमेढ्रंमुष्कावथापिच ॥
ध्वजभंगकृतंक्लैब्यमित्येतत्समुदाहृतम् ॥ २२ ॥
एवंपंचविधंकेचिद्ध्वजभंगंवदंत्यपि ॥

ध्वज भंग वाले पुरुष के लिंग पर शोथ हो और वेदना हो । तथा रुकना हो । उसके भयंकर फोड़ा होते हैं । तथा लिंग का पाक हो ।

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

मांस की वृद्धि हो तथा लिंग में फोडा हो, चावल के तुल्य सफेद माडवत काला, लाल बहाव होय कंकण के तुल्य गोल लपेटा होय, जड़ कठोर होय तथा उस मनुष्य के बुखार, प्याह, भ्रत, मूर्छा उल्टी ये रोग हों तथा लिंग में से काला, नीला लोहित और खराब रक्त निकले और लिंग बन्हि से दुग्ध के तुल्य हो जाय, मूत्राशय अंड कोश उसकी सन्धियों में भयंकर दाह और बेदना होय, कभी २ गाढ़ा और पीत बर्ण का स्राव हो और मन्द सूजन स्तैमित्य होय अल्प स्राव हो देर में पाक हो अथवा शीघ्र वाक हो और लिंग में कृमि पड़ जाय क्लेद और बुरी गन्ध आवे लिंग के ऊपर की सुपारी गल जाय तथा लिंग और अण्ड दोनों गलित होकर पतित हो जाय। ये लक्षण ध्वज भंग क्लीव के हैं। सुश्रुत आदि आचार्य इस ध्वज भंग क्लीव के ईर्ष्यक, सौगन्धिक, कुम्भिक, आसेक्य महाखंड इन भेदों से पाँच प्रकार का बताते हैं प्रसंग वश से उनका वर्णन करते हैं।

आसेक्यादि नपुंसकों के लक्षण

पित्रोरत्यल्पवीर्यत्वादासेक्यःपुरुषोभवेत ॥
सशुक्रंप्राश्यलभतेध्वजोच्छ्रायमसंशयम् ॥१॥
यःपूतियोनौजायेतससौगंधिकसंज्ञितः ॥
सयोनिशेफसोर्गंधमाघ्रायलभतेवलम् ॥२॥
स्वगुदेऽब्रह्मचर्याद्यःस्त्रीषुपुंवत्प्रवर्तते ॥
कुम्भिकःसतुविज्ञेयःईर्ष्यकंश्रृणुचापरम् ॥३॥
दृष्ट्वाव्यवाययन्येषांव्यवायेयःप्रवर्त्तते ॥
ईर्ष्यकःसतुविज्ञेयोदृग्योनिरयमीर्ष्यकः ॥४॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

निषिद्ध प्रयोग करनें से अर्थात् शूकादि का अत्यन्त सेवन करने से तथा वीर्य के दूषित होने से पुरुष के ध्वज भंग अर्थात लिङ्ग उन्नत जाय फिर मुरझा जाय यह रोगहोता है इसके लक्षण कहते हैं ।

ध्वज भग क्लीव के लक्षण।

श्वयथुर्वेदनामेढेरोगश्चैवोपलक्ष्यते ॥१५॥
स्फोटाश्चतीव्राजायन्तेलिंगपाकोभवत्यपि ॥
माँसबृद्धिर्भवेच्चापिव्रणाःक्षिप्रंभवंत्तपि ॥१६॥
पुलोपोदकसंकाशःस्रावःश्यावारुणप्रभः ॥
वलयीकुरुतेचापिकठिनंपरिग्रहम् ॥१७॥
ज्वरस्तृष्णाभ्रमोमूर्छाच्छर्दिश्चास्योपजायते ॥
रक्तंकृष्णंस्रवेच्चापिनीलमाविललोहितम् ॥१८॥
अग्निनेवचदधतीव्रोदाहःसवेदनः ॥
बस्तौबृषणयोर्वाऽपिसीवन्यांवंक्षणेषुच ॥ १९ ॥
कदाचित्पिच्छिलोवापिपाण्डुस्रवश्चजायते ॥
श्वयथुश्चभवेन्मन्दस्तिमितोऽल्पपरिस्रवः ॥ २० ॥
चिरात्सपाकंव्रजतिशीघ्रंवाथप्रपद्यते ॥
जायन्तेकृमयश्चापिक्लिद्यतेपूतिगंधिच ॥ २१ ॥
प्रशीर्यतेमणिश्चास्यमेढ्रंमुष्कावथापिच ॥
ध्वजभंगकृतंक्लैब्यमित्येतत्समुदाहृतम् ॥ २२ ॥
एवंपंचविधंकेचिद्ध्वजभंगंवदंत्यपि ॥

ध्वज भंग वाले पुरुष के लिंग पर शोथ हो और वेदना हो । तथा रुकना हो । उसके भयंकर फोड़ा होते हैं । तथा लिंग का पाक हो ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

मांस की वृद्धि हो तथा लिंग में फोडा हो, चावल के तुल्य सफेद माडवत काला, लाल बहाव होय कंकण के तुल्य गोल लपेटा होय, जड़ कठोर होय तथा उस मनुष्य के बुखार, प्याह, भ्रत, मूर्छा उल्टी ये रोग हों तथा लिंग में से काला, नीला लोहित और खराब रक्त निकले और लिंग बन्हि से दुग्ध के तुल्य हो जाय, मूत्राशय अंड कोश उसकी सन्धियों में भयंकर दाह और बेदना होय, कभी २ गाढ़ा और पीत बर्ण का स्राव हो और मन्द सूजन स्तैमित्य होय अल्प स्राव हो देर में पाक हो अथवा शीघ्र वाक हो और लिंग में कृमि पड़ जाय क्लेद और बुरी गन्ध आवे लिंग के ऊपर की सुपारी गल जाय तथा लिंग और अण्ड दोनों गलित होकर पतित हो जाय। ये लक्षण ध्वज भंग क्लीव के हैं। सुश्रुत आदि आचार्य इस ध्वज भंग क्लीव के ईर्क्ष्यक, सौगन्धिक, कुम्भिक, आसेक्य महाखंड इन भेदों से पाँच प्रकार का बताते हैं प्रसंग वश से उनका वर्णन करते हैं।

आसेक्यादि नपुंसकों के लक्षण

पित्रोरत्यल्पवीर्यत्वादासेक्यःपुरुषोभवेत ॥
सशुक्रंप्राश्यलभतेध्वजोच्छ्रायमसंशयम् ॥१॥
यःपूतियोनौजायेतससौगंधिकसंज्ञितः ॥
सयोनिशेफसोर्गंधमाघ्रायलभतेवलम् ॥२॥
स्वगुदेऽब्रह्मचर्याद्यःस्त्रीषुपुंवत्प्रवर्तते ॥
कुम्भिकःसतुविज्ञेयःईर्ष्यकंश्रुणुचापरम् ॥३॥
दृष्टाव्यवायमन्येषांव्यवायेयःप्रवर्त्तते ॥
ईर्ष्यकःसतुविज्ञेयोदृग्योनिरयमीर्ष्यकः ॥४॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

योभायायामृतौमोहादंगनेवप्रवर्तते ॥
ततःस्त्रीचेष्टिताकारोजायचेत्खण्डसञ्ज्ञितः ॥५॥
ऋतौपुरुषवद्वापिप्रवर्त्तेतांगनायदि ॥
तत्रकन्यायदिभवेत्साभवेन्नरचेष्टिता ॥६॥

माता पिता के वीर्य और रज के कम होने से आसेक्य नपुंसक होता है जब वह अन्य मनुष्य का वीर्य भक्षण करता है तब मदोन्मत होकर विषय शक्ति को प्राप्त होता है। इसका द्वितीय नाम मुखयोनि है और जो दुर्गन्धित योनि में पैदा होता है। उसको सौगन्धिक नपुंसक कहते हैं। वह जब लिंग की और भग की गन्ध सूंघता है जब पुरुषता को प्राप्त होता है इसका द्वितीय नाम नासायोनि है। और जो क्लीब पहले स्वयं गुदा में भोग करा कर स्त्री में मनुष्य के तुल्य आचरण करता है उसे कुम्भिक नपुंसक कहते हैं। उसका द्वितीय नाम गुदयोनि हैं। जो पुरुष दूसरे को मैथुन करता हुआ देखकर फिर विषय करने में तत्पर होता है ईर्ष्यक नपुंसक कहते हैं इसका द्वितीय नाम दृष्टि योनि है। और जो मनुष्य अज्ञान तोस मोह के वशीभूत हो स्त्री के सदृश स्वयं नीचे शयन कर और स्त्री को ऊपर चढ़ाकर उससे मैथुन करता है उसके जो पुत्र पैदा होता है वह स्त्री के तुल्य लक्षण वाला होता है अर्थात डाढ़ी मूछ रहित और लिंग युक्त होने पर कुछ पुरुषार्थ महीं कर सकता उसको खन्ड कहते हैं। तथा स्त्री यदि ऋतु समय में आप ऊपर होय और पुरुष को नीचे लिटा कर सम्भोग करे तब उसके जो कन्या जन्मे वह मनुष्यों के लक्षणों युक्त होती है और वह सर्वदा मनुष्य के तुल्य स्त्री ऊपर चढ़ कर उसकी भग से अपनी भग को घिसती रहती है तथा उसके डाढ़ी मूछ के कुछ चिन्ह मालूम होते हैं।

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

नपुंसक विशेष को कहते हैं ।

आसेक्यश्चसुगंधीचकुम्भिकश्चर्ष्यंकस्तथा ॥
सरेतसस्त्वमीज्ञेया अशुक्रःषण्ढसंज्ञितः ॥७॥

आसेक्र, सुगन्धी, कुम्भी और ईर्ष्यंक ये चार नपुंसक वीर्य युक्त होते हैं और षंढ नामक नपुंसक वीर्य रहित होता है ।

मन्थर ज्वर के लक्षण ।

ज्वरो दःहो भ्रमो मोहो हृयति सारो वमिस्तृषा
अनिद्राच मुखरक्तं तालुजिह्वाच शुष्यति ॥८॥
सप्ताहाद् द्वादशाहाद्वा स्फोराश्च सर्ष पोपमाः
ग्रीवायां परि हृश्यन्ते एकविंशेऽन्हि शाम्यति ६
एभिस्तु लक्षणैर्विन्द्यान्मन्थराख्यं ज्वरं नृणाम

अर्थ—बुखार, दाह, भ्रममाह दस्त उल्टी, प्याह नींद का न आना मुख का लाल हो जाना, तालु और जीभ का सूखना, सात या दस दिवस में सरसों के तुल्य कंठ में फुंसिये हो जाना और इक्कीसवें दिवस शान्ति को प्राप्त हो होना ये लक्षणों से व्याप्त व्याधि को मन्थर ज्वर कहते हैं ।

अथ कृण्ठा मधुर ज्वर के लक्षण ।

ज्वर स्तन्द्रा चस्पुर्यस्य दन्तौष्ठेषु च श्यायता
॥ १० ॥ घ्राणीजिह्वास्य कंठेषु रक्तता चाच्चि-
कबुरम् । मुक्ताहारो गले यस्य सप्ताहा द्धार्थं ते न
॥ चेत् ११ तत्रि सप्तदिना दर्वाक स्फोटाःस्पुःसर्ष

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

योपम:एतच्चिन्तं भवेद्यस्प समधूरक उच्यत ॥१२॥

बुखार. तन्द्रा, आतसार, और औठों में कृष्ठता, नाक जीभ मुंह और गले का वर्ण लाल होना चक्षु फटे के तुल्य हो जाय इन लक्षणों से व्याप्तियदि रोगी मनुष्य को सात दिवस में कण्ठ में मोती की माला न धारण कराई जाय तो इवकीस दिवस के मध्य ही सरसों के तुल्य फुन्सियें पैदा हो जाती है इसको कृष्ठा मधुर ज्वर कहते हैं ।

पुस्तक विक्रेता—

पुस्तक मंदिर मथुरा

२१७ से ४४४ पेज तंक सुमन प्रिंटिंग प्रेस, हाथरस में छपा ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

9/

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.